

भूमिका ।

—०—

जिाने को, प हिन्दीभाषा में प्रकाशित हो चुके हैं उन में ऐसे बहुत ही कम निकलेंगे कि जिन में पूरी सहायता मिल सके। भाषा के तन्त्र जानने के लिये कोष का होना आवश्यक है, मैं इसी सोच विचार में था कि बाबा बैजूदास जी महात्मा का बनाया हुआ बिंबक नामक एक अपूर्व कोष महात्मा शानी दास महेश स्थान फतुहा (जिला पटना) से मेरे हाथ लगा और देखने से सब भांति उपकारी जान पड़ा। मैं उस को सर्वसाधारण के लाभ के लिये प्रकाशित करना हूँ। आशा है कि लोगों का उम से उपकार होगा। इस स्थान पर यह कहना अनुचित न होगा कि बिंबक कोष में मैंने अनेक पुस्तकों के कठिन शब्दों को भी जोड़ दिया है।

उदाहरण में ऐसे २ दोंहे दिये गये हैं कि जिन से एक शब्द के अनेक नाम मालूम होने हैं। जैसे पंकज लिख कर कमल के सब नाम लिख दिये गये हैं। अनेकार्थ वाले शब्द भी रखे गये हैं। रामचरितमानस के भायः सब शब्द इसमें आगये हैं। दोहा, चौपाई, छंद इत्यादि। उदाहरण में लिख कर उन का अर्थ भी लिखा है।

इस कोष में चमत्कार यह है कि साहित्य जाननेवालों के सिवाय वैद्य, कवि, व्याकरणज्ञ इत्यादि को भी लाभ पहुंच सकता है क्योंकि औषधि तथा रोगों के नाम, पिंगल के छन्द, नातिराचक शब्दों के भेद और यौगिक शब्द इत्यादि पढ़ाने की रीति उत्तम प्रकार से लिखी गई है। इस की उत्त-

मता के विषय में मेरे कहने की आवश्यकता नहीं पाठकगण आप ही अनुभव कर लेंगे ।

मेरा यह कहना तो अभिमान समझा जायगा कि विवेक कोष के सद्य कोई दूसरा कोष ही नहीं छपा परन्तु इस कहने का मैं साहस कर सकता हूँ कि अनेक शब्द जो इस कोष में आये हैं आज तक हिन्दी के किसी कोष में पाये नहीं जाते । मैं इस बात को भी भली भाँति जानता हूँ कि यह कोष दोष रहित नहीं बल्कि अनेक दृष्यों से परिपूर्ण होगा । परन्तु यदि इस से लोगों को कुछ भी सहायता मिलेगी तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूँगा ।

इस कोष के संकेतवाले अक्षरों का अर्थ नीचे लिखा जाता है ।

- स = संस्कृत
- प = प्राकृत
- फ़ = फ़ारसी
- द = देशी भाषा
- क = कदाचित्
- मु = मुहाविरा
- गु = गुणवाचक
- स्त्री = स्त्रीलिंग
- पु = पुल्लिंग

दारनपुर
संवत् १९२७
रामनवमी रविवार ।

शीतल प्रसाद सिंह.

मङ्गलाचरण ।

दोहा ।

- नमो प्रथम श्री गुरुचरण , जिन ते भयौ विचैक ।
 जनम जनम की अज्ञता , मिट्टी सकल छन एक ॥१॥
 दूजे सन्त समाज पुनि , जाते चित खर सान ।
 बन्दों सादर कर जुगल , लहत सकल कल्याण ॥२॥
 रामायन शब्दार्थ कुन , श्री तुलसी परवानी ।
 और ग्रंथ के शब्द कछु , कंठहि लहत कठीन ॥३॥
 नव स्वर चौतिस अच्छरहि , आदि नाम परबन्ध ।
 नाम रूप कठोरता , एक जाइ निरबन्ध ॥४॥
 जय जाको जहि नाम का , अर्थ समुझि नाहि जात ।
 अच्छर आदि विचारि ते , सहज होत सरव्यात ॥५॥
 संस्कृत प्राकृत फारसी , विविध देस के बोल ।
 सगहिं इति सुनि यथामति , रञ्जित कोप अबोल ॥६॥
 पदति सय के मध्य में , अच्छर चारि प्रकार ।
 संस्कृत वार्णिक सकार ते , प्राकृत बोल पकार ॥७॥
 फारस बोल फकार ते , बानी वेस दकार ।
 या प्रकार ते जानिये , चारहुं वर्ण विचार ॥८॥
 पण्डित ताहि सराहिये , मुनि परवानी तूक ।
 बिगरी बात मुझारिहैं , नाहि धरि राखें चुक ॥९॥
 राम चंद निधि अत्रिसुत , सम्यक्त अगहन मास ।
 कोस विवेक प्रचार किय , श्रीजुत बैजू दास ॥१०॥

सोःटा ।

- मदा रहहिं सुत रूप , अधिकारी सय याहि के ।
 राखें छोड़ अनुर , दास विवेक अति बिनबड़ ॥१॥
 मुन्दीचक गो ग्राम , भागलपुर महं जानिये ।
 तहां जपत गुरुनाम , सिद्ध होत मानस विमल ॥२॥

विवेक-कोष ।

प.]

[अंश.

प. (स) विष्णु संज्ञा. विष्णु का
नाम, निषेधार्थ. वर्णमात्रा
का पहिला अक्षर. निषेध
वाचक अव्यय जैसे अभर्म.
और जब यही प ऐसे
शब्द के पहिले पावे कि
जिसका पहिला अक्षर
खर हो तो प को पन्
ही जाता है जैसे अनंत,
अगादि, अनेक इत्यादि ।

अक्षयः अकष्य, कहने के योग्य
नहीं ।

अक्षयनीय जो न कहा सके,
अक्षय, जो कहने के योग्य
नहीं ।

अकारोत् (स) किया ।

अं. (स) असम, फिरप ।

अंकुरः (स) उत्पत्ति, आरंभ.

पहले का निकला पत्ता,
रुधिर, यास, जल अनंत,
असंख, अंकुरा, फुनगी ।
अंशुषा । [आयुध ।

अंकुश (म) हाथ के मेरुण का
अंगः (म) कंधा. खंड, भाग,
हिस्सा किम्मत, टुकड़ा ।

अंशु (म) किरण, झिझक ।
अंशुमत्फला (म) रिव बेल्ला ।
अंशुमती सरिवन ।

अंगूटः अंगूठक (द) सूर्य चंद्र-
मा के किर्ण कृती पानी ।

अंशुमान (म) नामराजा सगर
पौत्र पर्यात् अममंजम-
पुत्र, मूर्ख, दियाकर ।

अंशुकः (म) पत्ता, वस्त्र, कप
ड़ा । बहुवचन अंशुकानि ।

अंश (स) पाप, अपराध ।

पंक्ति (म) चरण, पगु, पादु ।
 पञ्चटक, (म) कंठक बिना,
 निर्भय, वेष्टका, शत्रुबिना
 निरुपद्रव वेष्टक के ।
 पञ्चनि (म) कमगार के, पुनि
 के, पुनि कर के ।
 पञ्चरथ पञ्चरथ, बिना का-
 रण । , नागति ।
 पञ्चरथ (म) नाम राक्षस मे
 पञ्चर्षी (म) पञ्चरथ, निर्भय ।
 पञ्चल (म) दास पाद भंगहीन,
 दास पाद पाद भंग के
 बिना, कोष, कल्पनाहीन,
 ककारहित ।
 पञ्चमर (म) भारभार, पुनः-
 पुनः, पञ्चमर, देवल ।
 पञ्चमरान् (म) देवान् यका
 यक, पञ्चमर, दूनकाकन ।
 पञ्चमर, (म) दिन मगोजन,
 अर्ध बिनाकारण ।
 पञ्चम (म) दुर्जन, कहत,
 पञ्चमर, कुनमय, बिना
 चरण के ।
 पञ्चाक्ष (म) शरीर रहित ।

पञ्चाक्ष के- (म) कृतबिना ।
 पञ्चाक्षको, (म) विजयी, दा-
 गिनो । [मरन ।
 पञ्चाक्षपञ्चाक्षकिया, मरना,
 पञ्चाक्ष, कामनाहीन, लिख को
 कुछ दण्डा नहीं ।
 पञ्चाक्ष की कुसुम- (म) केनता-
 रा, जाके उदयविग्रहोत्त ।
 पञ्चाक्ष, (म) पञ्चाक्ष, शरीर ।
 छद्ममहंस—नभ ओम
 तारापथ गगन र्वं पुष्कर ।
 पञ्चाक्ष नाम चरन्त विद्यतं
 पञ्चरं । मुरवर्त पञ्च बिहा-
 य हरिपद शोदिधे । पुनि
 पञ्चकृत बिहायमी नामं
 दवं । दौष्ट । अविम नाम-
 न चर धर, होय पमर न-
 निनीय । सोम वात अग
 नयत वन, द्वाद कला दण्ड-
 सोम १ १ १
 पञ्चिष्य- (म) अविम, दक्षिण,
 दोन, निध के नाम कुछ
 नहीं, दक्षिणी केनाक्ष अ-
 यम रहित ।

चक्रिन्ध्रप (म) निष्ठाप, वेगु-
नाह । [मी ।

चकीर्त (म) प्रवर्ण्य, घटना-
चक्रिन्ध्र, (प) बादागामी, सुगि
के, कगयाएके ।

चकीर्तनी (म) मेना चिन्धिप
लिममे २१८००, रघु पीर
२१८०० हापी ६१६१०
घोड़ी के सवार १०८१५०
पेटक घोषा हो । [हीन ।

चकुल (स) कुल रहित, कुल-
चकुलाना, चकुलाना । दुष्की
होना ।

चकीर्त (म) समुद्र, समस्त ।
चकुल (म) निर्माशक, चलय,
तोलय, मायारहित, चौथा
चक्रिन्ध्र ।

चकुल (स) सुजाहना ।

चकुल (स) चक्रिन्ध्र का नाम हो-
कर का चक्र, चोटी के चक्र

चक्रिन्ध्र चक्र, जिस का चक्र
महो, माय रहित । जिस
का नाम हो ।

चक्रिन्ध्र (स) चक्रिन्ध्राना ।

चक्रिन्ध्र (स) चक्रिन्ध्र ।

चक्रिन्ध्र (म) चक्रिन्ध्र ।

चक्रिन्ध्र (म) टेका ।

चक्रिन्ध्र (म) चक्रिन्ध्र मारा, पूर्ण,
मर्यद, एक रम, चक्र

रहित, जिस का नाम
न हो, जिसका टुकड़ा न
हो, चक्रिन्ध्र ।

चक्रिन्ध्र (स) जिस का चक्र
न हो मरे । [चक्रिन्ध्र ।

चक्रिन्ध्र, (प) चक्रिन्ध्र, भूमि
चक्रिन्ध्र (प) नाह, चक्रिन्ध्र की
कगद, चक्रिन्ध्र का चक्र
चक्रिन्ध्र चक्रिन्ध्र की कगद ।

चक्रिन्ध्र, (स) पूर्ण, चक्रिन्ध्र
चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र,
चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र,
चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र ।

चक्रिन्ध्र, (स) चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र,
चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र ।

चक्रिन्ध्र (स) चक्रिन्ध्र चक्रिन्ध्र,
चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र ।

चक्रिन्ध्र (स) चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र,
चक्रिन्ध्र, चक्रिन्ध्र ।

चंगुठ (न) चंगूठा ।

चंगुठादि (म) चंग चदि, चानर

विज्ञायठ चादिभूषण ।

चंगुरि } (न) हाथ पाथी
चंगुरी } की उंगलियं ।
चंगुली } [प्रियङ्गु ।

चङ्गना (म) स्त्री, मिहरी, नारी.

चङ्गनापिना (म) विरंगु ।

चङ्गवनि-चंगवनिद्वारा (द)

महना, लगा चंगेजन-

द्वार, माहमी ।

चङ्गारक (म) गङ्गनवार, चमि.

मेगराज रवि ।

चङ्गार कङ्कटी (म) जिह्वा गोह

मादि अथ के पिनाम का

जो होता है । [करगनी ।

चङ्गावली (म) बभगेली जाल

चङ्गाव हल (म) ईगुन, दरखत ।

चङ्गिरा (म) छहस्यति, तारा

नक्षत्र ।

चङ्गिरी चाङ्गरी (द) करती,

रथवत्त, वक्तार । [ङि ।

चङ्गि (म) चरण, पगु, पैर चं-

चनकरी चनगरी (द) पगुनता,

रिङ्गी, मनपरी, ठठोनी,

लम्पटता, सेनाङ्गन, दु-

हता, बहदे ।

चनवत (प) पान करत ।

चनभा (प) चवरन, पातय्यं ।

चनन (म) विष्णु, पन्थन, पदाउ

चादि स्थिर, स्थिर, चटन ।

चनर (म) जो न चल सके ।

चनका (म) अङ्गी, पुष्पाचादि

स्थिरा, चटका ।

चण्ड (म) चरण रक्षित, स्थिर

परमात्मा ।

चण्डन (म) स्थिर, शांत ।

चण्डन, (प) वर्त्तमान, रहने,

जाते सब प्रकारको कुमनता ।

चण (म) चितेया, बकरा,

शोबन, चन्त, लम्पटन,

लम्पटित, ईश्वर, ओ

लम्पटा नहीं, मछ मछी,

चात्र, चव, जी ६, पञ्जति,

राजा दमयन्त के पिता का

नाम ।

चणक (म) सुपेद वर्जरी ।

चणक (म) मनेपा ।

पञ्चम्या (म) पञ्चवादन ।

पञ्चम्याहा. (म) पञ्चवादन ।

पञ्चम्यिका. (म) वज्ररी ।

पञ्चहा. (म) कवाह ।

पञ्चमीदा. (म) पञ्चमीदा ।

पञ्चमीटिका. (म) पञ्चवादन ।

पञ्चम्यटिका. (म) मिट्टामिंदी ।

पञ्चम्यट्टी. (म) बकरामिंदी ।

पञ्चम्य. (म) गिवधनुष ।

पञ्चगर. (म) विशालमर्षमिट्ट ।

पञ्चग. (म) गिव, गंकर, मदा-
देव ।

पञ्चर. (म) पट्टह, जराहटित,
सुदीती बिना, बिना बु-
दाया. चमर, युवा ।

पञ्चे (ट०) पञ्च, पञ्च ।

पञ्चा. (म) पञ्चादी, कछी,
पार्थी, हरी, बकरी,
नाया ।

पञ्चाटि (म) बकरी का दही ।

पञ्चादुध (म) बकरीका दूध ।

पञ्चानिल (म) एक पापी का
छन्द नाम । [मदा ।

पञ्चा (म) का लोता मदी

पञ्चातरिपु. (म) राजायधि-
ठिर ।

पञ्चाचक (म) लो फिर जानता
मे रहीत होजाय ।

पञ्चाम. पञ्चानु (म) पञ्चान,
आंध्रप्रदेशनम्या ।

पञ्चिन (म) बघडाया, हरिन
की खास, मृग हाया, मृग-
चर्म, समहा, आ पूजाया-
अ मे प्रमिह चर्म ।

पञ्चिर (म) पंगिना, थोड़ ।

पञ्चिद्वग. (म) बाए, तीमर ।

पञ्चीर्ण (म) पोगुप, नवीन,
अपच ।

पञ्च (म) मूर्ख, देवकुप विद्या-
हीन, पञ्चान, पञ्चानी
पञ्चान, बिनाजाने ।

पञ्चता (म) मृदा, मूर्खता,
देवकुपी, पञ्चानता ।

पञ्चात (म) बिनाजाने, न जा-
ना दूदा, नामानुम, पञ्च-
जान, पञ्चम, पञ्चोध, प-
कमभ । [ना ।

पञ्चान (म) जानाभाह, मूर्ख

अपने अनुसार । [ना।
अनुकृति (म) होर, विहस्य-
अनुक्रम (स) परिपाटी, रीति,
भाति ।

अनुकीय (म) छपा, दया,
दयालुता, निर्या चेमा ।

अनुग- (अ) योग्य, सज्ज, दृढ़,
दास, भेगक, पीछे चलने-
वाला ।

अनुग्रह (म) दया, छपा, मे
हर्षाणी, मुदा दया, प्रस-
न्नता ।

अनुनामी- अनुग्रह, (म) पक्ष-
अनुया, दास भेगक,
दृढ़, दाताकारी, मोक्षर,
आचर, पीछे चलनेवाला,
टहकपा, मारी ।

अनुचरी- (अ) दास, टहलिनो,
सीढ़ी बाँधी ।

अनुचित (अ) अयोग्य, जो
मीमांसित नहीं, अयोग,
टीक नहीं ।

अनुव- (अ) पीछे से जग्या दया,
अनुभाता, सीढ़ा भाँति ।

अनुजा (म) छोटी बहिनो,
सप्तगा भगिनो, बहिन ।

अनुदिन (म) सदा, प्रतिदिन,
दिन पीछे, हरएक दिन,
दिनदिन । [सम्यग् ।

अनुमत्य- (म) मित्र, सुहृद,
अनुवाद (म) बारम्बारकथन,
बारबार कहना, 'पीछे
कहना । [वर्गीभूत ।

अनुमतो (अ) विदुसगुण,
अनुभव (अ) पट्ट, जो खोच
वास्तव में पाप से जाना
जाय वा सुना जाय, ज्ञान,
दयाईबोध, अनुमान, वि-
चार, दयाईज्ञान, सोच-
ना, समझना, वृत्तना ।

अनुपायनी () बिना मोड़ के
पथ ।

अनुभवही (द) अंतममय सुख
पावना जो बचन से न
कहा जाय ।

अनुभवति (द) जानति ।

अनुताप (अ) क्षमा करके पक्ष-
ताप ।

अनुभाउ (द) नदिमा ।

अनुभावनी (स) अंत समग ।

अनुमति (म) पात्रा, भूमति,

सनाह, राय, हुक्म, विचार

अनुमान (स) अन्दाज़, अटकारा,

व्यास, विचार, विचारांश,

अनुमार, प्रमाण, अटकारा ।

अनुमानी (स) नेयाविक

विचार किया ।

अनुमदगम्य (स) अनुभवति

गमने में जो आवै ।

अनुमोदन (म) गर्भमा, सरा-

हना पर सुख देखि दो

सन्तोष ।

अनुराग (म) अद, प्री, प्रीति,

ममता, अत्यंतआर्द्र, अति

प्रीति, बहुत सुखवत मोद,

छोद, सनेद, प्यार ।

अनुरागी (द) प्रीतिहरनेवाला ।

अनुरूप (स) सदृश, लायक,

तुल्य, योग्य, बराबर, अनु-

सार, समान, एरुसा, अपने

योग्य, अनुकूल, जैसा भावे ।

अनुपम (स) उपमारहित,

अनूप, उत्तम ।

अनुपेक्ष } (म) रोक, रोकना,
अनुपेक्ष } अनुसार, उपकार,
अपेक्षा ।

अनुविह (म) गडा हुआ ।

अनुगासग (स) आशा, हुक्म

अनुमति, बग करना,

गिष्ठा, नीति ।

अनुदिन (स) सदा ।

अनुसन्धाग (म) सामगा, सा-

गस, अन्वेषण, खोजना,

तत्ताम, खोज पता ।

अनुसर (द) चलना ।

अनुसरण (द) बीच में पड़ना ।

अनुसारी (स) गम, विचार,

आसुस, समान, चलन,

सदृश, तुल्य, न्यायिक,

साधक, योग्य ।

अनुसारी (म) कही, अनुकूल ।

अनुसूया (स) अविमुनि की

पत्नी ।

अनुसरणी (द) स्वकर्म को

करते हैं । [सर्वमय]

अनुस्यूत (स) मय व्यापक,

अनुहर (स) अनुसार, योग्य,

अप (म) पानी ।

अप (म) जल, लोहा, नील,
नष्ट, मुरा, पुरे, दूर ।

अपकर्म (म) भागना ।

अपकीर्ति (म) अपयश, नद
नामी । [दूर ।

अपकारी (म) नष्टकारी, दुःख

अपगति (म) दुर्गति, अपनी
गति । [नाना ।

अपमम (म) जना जना मिट

अपगा (म) नदी, सरिता ।

अपभय (म) चक्र । [गतिहा ।

अपत्य (म) पापी वा बिना

अपहर (म) मिथ्याहर, पाप
घोर से भय, कुमार्ग, भूठ,
हर, निजघ्न, निज चार
से हर ।

अपति } (म) पापी, बिनु म
अपत्य } तिहा, अनादर ।
अपत } [हर, भूठा हर ।

अपभय (म) भय, हर, अपगी

अपय (म) राह रहित ।

अपत्य (म) पुत्र, सन्तान,
कन्या ।

अपद्रु (म) मूर्ख, गड़ ।

अपदति (म) समुद्र ।

अपद्रुः (म) तिमिस ।

अपमयन मिटाना ।

अपयस्ये (म) मूर्ख, कन्याहर,
मोक्ष । [अपमय ।

अपवाद (म) निन्दा, दोष,

अपभ्रंश (म) भाषाव्यय, अप-
गच्छ, भाग, विगड़ा रूप,
असुख गच्छ, घातभाषा ।

अपमुष (म) मोन मत्स्य ।

अपयः (म) करीब ।

अपमान (म) अनादर, तिर-
स्कार, प्रतिष्ठा भंगहोना,
मानरहित, वैदग्ध्यती ।

अपयगम् (म) अपकीर्ति, बद-
नामी ।

अपर (म) दोष, ग्यारा, चौर
भिन्न, दूसरा, चौर एक,
चौर दुधरा कोई ।

अपरंज (म) अन्धदृष्टि, चौर भी ।

अपराजिता (म) दोनो विष्णु-
साक्षा । [अपहृता ।

अपराधुननैवा (म) भास गद-

अपवर्गः (स) मोक्षः ।
 अपेक्षः (स) इच्छा, दृष्टि ।
 अपराधः (स) भट्ट पाराधनः ।
 अपर्णः, पाप, दोष, क्लृप्तः ।
 अपरिगपदगन् न गिनता
 हुषा, न विचारताहुषा ।
 अपरिमितः (स) अचञ्चलः,
 अनन्तः ।
 अपरोक्षकः (स) साक्ष रेहः ।
 अपस्तः (स) अस्त ।
 अपसीदः (स) अवश, दोष,
 निन्दा, अप्योक्त, अपयमः ।
 अपनयः (स) भाषा, पाठन, वायु
 त्याग, अग्न्ययः, नटवादी ।
 अपचक्षुः (स) समक्षरः । नाश
 अपमर्त्यः (स) निर्मल, अन्नगः ।
 अपहं (स) नाशकम् । [शिना ।
 अपहरही (द) भीरावरी इह
 अपहरतः (स) मागत, दूर
 करतः ।
 अपहारः (स) नाश, घातः ।
 अपहर्ता-दूर करना ।
 अपहारी (स) नाशक, घातक,
 नाश करनेवाला, नाशकर्ता

अपहरण करनेवाला ।
 अपचः (स) पंचहीन, पंचशाय ।
 अपचक्षुः (स) जिते जिते दिन
 रितित दे सो घोष होत ।
 अपधानः (स) भागभा ।
 अपाङ्गः (स) आंघ का दारर
 बाका कोया, आंघ की
 मोक्ष । [हो चितवन ।
 अपाङ्गमरः (स) कटाक्ष, तिर-
 पानः (स) } अशुद्धि, आपा,
 (प) } चेत, अपगा अ-
 पने को ।
 अपासार्गः (स) विरचिरी ।
 अपासार्गकलः (स) विरचिरी
 का बीज ।
 अपायः अपादनः (स) पागामी,
 अयः, नाग, दानि, दूर
 होना, मिटना ।
 अपारः (स) पार रचित,
 अपाराः समुद्र, अगम ।
 अपि (स) निश्चय, भी ।
 अपुर्णः (स) निर्जन, सुक्ति ।
 अपूर्णः (स) आर्ष्य, उत्तम,
 अनूप । [अक्ष ।
 अपेक्ष (प) पक्ष पक्ष, प-

अवदातः (म) अवज्ञा, निर्ममता ।

अवदातः (म) शान्त ।

अवधः (म) दीप, विहार, नि
ज्वाली, प्रकाश ।

अवधः (म) अवधी, पुरी ।

अवधपतिः (स) अवधका राजा ।

अवधिः (स) अवधि, समय,
अर्जुन पाण्डव, कपार,
निदान, इद ।

अवनिः (म) पृथ्वी ।

अवधिवैराग्यः (म) तीनिहंस्तोक्त
विषय मन त्याग ।

अवधूतः (स) योगी, संन्यासी ।

अवधेगः (स) अवध का राजा ।

अवभृथः (म) स्नान, गन्धन ।

अवराधः (म) सेवा, टहल ।

अवराधकः (म) वैष्णव, टहलू,
पूजक ।

अवरेवः (म) शिवाष्टुषा, डाह,
वरन्त, विहार । [रचना ।

अवरेवः (द) चौर परदीप

अवरोधः अवरोधनः (स) रधि-
वास, रोक, पटक ।

अवरोहः (स) सीढ़ी, संपादन,

अवरोः (प) } खण्डान्य यन्त्र
अवरेवः (म) } अर्थ की कलटि के

अर्थ लगावना या तोड़ि
तोड़ि अर्थ लगावना ।

काहे कि अर्थ लगाने का
लक्षण दू, एक खण्डान्य,

को कलटि के, तोड़ि ताड़ि
के, दूजी दण्डान्य, को

सीधी अर्थ लगावना और
जागा चाहिये को अर्थ

लगाने का लक्षण तीनि
भांति धुनि, ११ अवरो, ११

कवित्त गुण, २१

अवर्त्तः (म) लक्ष्मण, गौर ।

अवर्त्तः (म) निर्धन, दुबरा,
कथ, अवर्त्त, दुबल ।

अवर्त्तनः (म) पायय, ध्यान,
पाधार, पासा पकड़ के

रटना ।

अवर्त्ताः (स) स्त्री, वस्त्रोमा,
नारी, मेरारु ।

अवर्त्तीः (स) पंक्ति, सतर, जेपी,
पांती, लकीर । [पत ।

अवर्त्तीकृत (स) तत्कृत, या दे-

पवित्रिचः (स) निरन्तर, अचल ।

पवुषः (स) मूठ, पञ्चमी ।

पलः (स) कगल, चन्द्रमा, गुरु
इत्यादि, लल मे श्री जम्मे ।

पथि (स) जलमसुद्र, नीर-
सागर ।

पव्यक्तः (स) निरूप, वल्ल, मूल
गल्लति, पमगट, गिदींष,
गुग या ईश्वर । [हेहृजः ।

पव्यवाः (स) पीडारहित, हर
पव्यवः (स) पविनाजी, निर्दि-
ष्ट, मूल, नागरहित, व्यय
रहित । [रुपा ।

पव्यवाः (स) नाया, इत्यन-
पव्याहत (स) रोकहित ।

पव्यक्तः (स) सठ, भलिहीन ।
पव्यवः (स) निडर, निर्भय,
बिनाडर ।

पव्यव्यवाः (स) सलीवनी ।
पव्यवाः (स) हरहेहृज, हरै-
पव ।

पव्यवः (स) न होला ।
पव्यवः (स) पुष ।
पवि (स) हरहेहृज, हर पौर

मे, चौफेरा, पानी ।

पविकरणः (स) गकाग, गोभा,
भूयष ।

पविष्टाः (स) गोभा ।

पविगमः (स) मिलाप ।

पविचंतर (स) भीतर, चंतस-
की दासता । [पादिकर्म

पविचारः (स) गारव, उपाटग,

पविष्ठातीः (स) गव ।

पविषः (स) प्रवीष । [ग ।

पविज्ञात (स) कुलीन, बिदा

पविताः (स) सनीष ।

पविनवः (स) गया ।

पविनितः (स) सुदुर्त विजिय,
नक्षत विजिय ।

पविज्ञानः (स) विद, पता ।

पविष्ठाः (स) नाग, पद्वी ।

पविष्ठातः (स) गण्डार, कोप,
नाग, संज्ञा ।

पविनन्दनः (स) पकागट, प्रम-
सा, पविष्ठाप, सराहना ।

पविष्ठातः (स) पागव, मनोर
ट, मनोरिचार, प्रदीप्त,
मनस्य ।

अभिधादन्- (म) नमस्तार,
प्रथाम ।

अभिभव- (म) पराजय, हार ।

अभिभूत (म) पराजित, हारा ।

अभिगतस्मान्- (वि) हासम्)
मन मी भया है स्वाद
जिस का ।

अभिगत- (स) वांछित, रुच्यत,
इष्ट, वाचागया, चंतष्क-
रण का संकल्प प्यारा,
मनभाया । [गहर ।

अभिमान (म) गर्व, प्रहङ्कार,

अभिसुख- (स) सुखुल, जागे
आमने । [सुख करहु ।

अभिरचय- (स) रक्षाकरह, प्र

अभिराग (स) सुन्दर, गोमा,
गोमायमान, सुखद, प्रिय
आनन्ददाता, सुखदाई,
सुख । [मनोरथ ।

अभिधाय (म) रक्षा आगमा,

अभिनायी (द) आहनेवाला ।

अभिनीत (म) छाया हुआ,
मिला हुआ ।

अभिलुलित (म) चित्तता हुआ,

अभिप्रेक- (स) तिमक, लज्ज,
द्विरक, शालि, खान,

पूना, राजमहो, जनहि
रकना, वा खानकरना ।

अभिमार- (स) लो का अपने
पति वा गीतम से मिलने
को आना ।

अभिचारिका- (स) नटाक्षो,
भटानारी । [गित ।

अभिहित- (स) कथित, प्रका-

अभीष्ट- अभिहित (स) इच्छा,
मनोरथ, कल्याण, वांछित,
आहागया । [टूटे ।

अभीष्ट- (स) मीटविला, लो न

अभंग- (द) लो न टूटे, लो
कभी न टूटे । [खार ।

अभीष्ट- (स) पुनः, पुनः, बार-

अभूत्- (म) हुआ ।

अभूतरिपु (स) मल्लोत, जा-
कोरिपु कथय नहीं, है,

मल्ल-हित । [नहीं ।

अभीष्ट- (म) भीतने के योग्य

अभ्यपिचत्- (स) छिड़कता

हुआ ।

अमानुषः (म) ईश्वर जो मनुष्य

से न हो सके । [कर्म]

अमानुषी कर्म (म) ईश्वरी

अमाया (म) मायावहित,

काममावहित कलरहित ।

अमित (स) अमल, अकृत,

अवमाज, जिगसा अंत

नहीं ।

अमो (म) अमृत, यह सब,

मापी, आसन ।

अमोक्षर (द) अमृता, आनंद ।

अमोघ अतिय (द) अमृतवीर्य,

सुधा विमल, मंजीवनी ।

अमोघमूर्ति } (द) मनीषण

अमिषमूर्ति } नहीं ।

अमोघ (म) अमृत ।

अमृत नल खा, नल का ।

अमृत न लह हुआ ।

अमृत (म) कोई यह, यह,

कहा । [मरु २]

अमृत न अमृतन १ का

अमृत न मृदा लक, पानी,

अमर, मृत्ति, पय, निर्विष ।

अमृत, मृत्ति ।

अमृतफल (म) आगपाती ।

अमृतवल्ली (म) मृत्ति १ पा

माग २ । [इरें, पीता]

अमृता (म) इरंडेहृष, मृत्ति

अमृतं (स) देवता, निजो

अमृत्य (स) अमृत, अमर

मल ।

अमृत्य (म) अनूपमायोग्य ।

अमोघ (स) मृत्य, अमोघ, फल-

दाता, अमृत, पादि, अमृत,

मध्य, जिसकी मृद नहीं

जागता, सफल जो निष्कल

नहीं ।

अमोघा (स) अमोघ ।

अमृत (स) देवता, देवता ।

अमृत्य (द) } आकाश-

अमृत्य (म) } जल ।

अमृत्य (म) मृत्य, मृत्य ।

अमृतमो (म) आकाशमो ।

अमृतमो (म) अमृतमो ।

अमृत्य (स) अमृत, आकाश, अ-

मृत, पीता, मृत्य । [इरें]

अमृतमृत्ति (म) मृत्य, दिवा

पञ्चा. (स) माता, जननी,

माचिका । [माचिका ।

पञ्चिका. (स) देवी, भवानी,

पञ्चु. पञ्चम. (प) जल, नीर,

पानी, पप् ।

पञ्चुगण्डाको. (स) गाहूहट्ट ।

पञ्चुग. (स) इज्जर ।

पञ्चुद. (म) गोघा । [रिप ।

पञ्चु मरापिका. (स) जलमि

पञ्चुग. (म) कमल, पद्म ।

पञ्चुद. पञ्चुष. (स) मेघ,

घटा, वर्षा । [सागर ।

पञ्चुधि. (स) समुद्र, चर्यव.

पञ्चु, पति (स) बरुवदेवता,

जलदेवता ।

पञ्चुदार (स) दादल ।

पञ्चा. (स) पानी ।

पञ्चो. (म) कमलादि, कल ।

पञ्चोद. (म) मेघ, कल, दादल ।

पञ्चोनिधि. (स) जलरमुद्र ।

पञ्चोद. (स) कमल ।

पञ्चोबिन्दुपदपरमसाम्. (वि.

पातकानो) पानी की हुन्ने

मेने में तपर ।

पञ्चा. (प) माता, जननी ।

पञ्चु. (स) पागो ।

पञ्चुद. (म) सुगन्धवाता ।

पञ्चुनागा. (स) सुगन्धवाता ।

पञ्चुमार. (स) केला ।

पञ्चदधि. (स) घडा दही ।

पञ्चमयक. (स) तिली लीक ।

पञ्चवेतस. (स) पमसवेत ।

पञ्चा. (स) इमली ।

पञ्चाटन. (स) बाणपुष्प गौड़-

देम में प्रसिद्ध ।

पञ्चातक. (स) माल्दही पाम ।

पञ्चिका (स) इमली ।

पञ्चिकागणपक (स) इमली

का पदा ।

पञ्चि (स) का बटक इमली

का भिगाया बरा ।

पञ्ची (स) इमली ।

पञ्चदही. (स) पाटो ।

पञ्चटा. (स) पाटो । जही-

पूज २ कीनीदाकाग ३

माचिका ४ ।

पञ्चात (स) बाणपुष्प, गौड़देम

में प्रसिद्ध । पञ्चाटन २ ।

अभ्यासक (स) अभ्यासक ।

अवः (स) गति, प्राप्ति, वस्तु
लोहतपत, लोहा ।

अवत (स) गति, प्राप्ति, वि-
शाल, चौड़ा, अस्त्र, धूप ।

अवत (स) अष्ट प्रवेगकी मार्ग,
मूर्त्यकी गति, चर, व्यान ।

अवम् (स) एह एह, यह ।

अवमित (स) बिना कटा हुआ
बिना बना हुआ ।

अवमितनयेन (वि० करिष्य)
बिना वेम नृह है निमके ।

अवग (स) अचीति, अक्षय,
निम्न ।

अवम् (स) वस्तु, लोहा । [मूर्त्य

अवान अवाना (प) भूठ,

अवुत (स) मकल, विस्तार,
दमदजार, १०००० दय

अवस्तु । [दयियार ।

अवुध (स) सामान्य शस्त्र,

अवु (स) मदार हल वा मूर्त्य

अवगाई } धूप ।
अवगामो }

अवगच्छ मरन समय लक्ष देना

अवगाना (द) अवग होना,
धूप ।

अवग्यव (स) अवगततास ।

अवगी- अगम मद्यमेकी लकड़ो ।

अवगि- (स) भाषी लोहारक,
काष्ठविशेष ।

अवगी अवगी- (स) यज्ञ में
अग्नि निकालने का काठ,

मद्यी के अगम निकालने
की लकड़ी ।

अवगु (स) रेहवृक्ष, अण्डरी ।

अवगु (स) वनहलदी ।

अवगु (स) वन, जङ्गल,
आगम ।

अवगु (स) समुद्र ।

अवगिन् (स) कमल, अत्यल ।

अवग (द) अर्थ, आधा ।

अवगुः (स) सोमपरा । [रना ।

अवगु- (द) तिचरी, देह कि-

अवगि- (स) कण्टक, शत्रु, बैरी

अवगि- (स) दुष्ट, बैरी, शत्रु, दुष्ट
मान ।

अवगि- (स) कौन्दी ।

अवगि (स) दाह १ अदधन

२ नीम ३ रीठा ४ ।

परुष (स) रत्नवर्ण, सुखे सार-
ही, ज्ञान, सूर्य ज्ञान रंग ।

परुष चटु परुष } सुखा
मिथ्या (म) } पत्नी ।
परुषचूड ।

परुषाते (द) सात ।

परुषाई (प) सातोमा, भोर ।

परुष (स) पत्नी १ पीडहुन
फूल २ मशीठ ३ ।

परुषोदय (स) प्रातः ज्ञान,
विज्ञान ।

परुष्यती (म) वगिठ सुनि की
पत्नी, वगिठ की स्त्री ।

परुष्यते } (म) मेजावा ।
परुष्यते }

परुष (म) छेद, चिर ।

परुष (स) रोकरहित ।

परुष-परुष (स) सूर्य, चाल,
मन्दा, वृक्ष ।

परुषपरी (स) तानागही ।
ज्ञान परुषन २ ।

परुषपुष्पी (स) कुटुम्बिनी वृक्ष ।

परुषवध (म) समस्ततास ।

परुष फल (स) सूर्य कोइडा,

पाक फल ।

पर्व (स) मूर्त्यादि पुत्रानिमित्त
ज्ञान गोचे गिरागा, मादर
निमित्त सामग्री, मोल ।

पर्व (स) पर्व के योग्य ।

परुष (म) धनी ।

पर्वक (स) पूजारी, सेवक ।

पचारी (स) दुकान, पंगति ।

पर्वी (म) पूजा, सेवा ।

पर्विस् (स) सीई ।

पर्विव (स) करुणा, दया, चर-
ल, खोमल, नरम ।

पर्वुन (स) दुम, वल्लभ, सह-
सा, तोसरा पांडव ।

पर्वुनाडा (म) कहूपा ।

परधंग परधंग, पाधा शरीर,
पाधा अंग ।

पर्व (स) लल, नीर, पानी ।

पर्वी (द) दिया ।

परुष (स) समुद्र, सागर ।

पर्व साधन (स) रीठा ।

पर्वीस (म) नैवेद्य समाना,
नुति ।

पर्व (स) प्रयोजन, वस्तु, याचना,

द्रव्य गन्धार्थः ।
 दैम्- निमित्त, स्थिते ।
 दैत्य चर्चोपन, मङ्गलापन ।
 दनय- (द) चर्चय, समुद्र ।
 दै (स) पाषा, मध्य ।
 दैवष्टिका (स) देवीमतावर ।
 दैवम्- (स) पतिरक्ष ।
 दैवित्तः (स) मेवासी निरेता ।
 दैवदम्, पाषा निक्षला
 दुषा (जेने फुल का वपा)
 दैवद- मरतीवार, मरन, समय
 में जल देना ।
 दैरात्रि (स) पाषीरानि,
 महाविद्या ।
 दैवमौलिः शिव, महादेव,
 (पाषा जन्मा है मुकुट
 निम जता ।
 दैव (स) सोहा, निमिबिगेय,
 दैव्याविमेष, दैवकोटि ।
 दैव- (स) बासक, शिमु,
 पुन, लहना । [यम ।
 (स) पादित्य, सूर्य ।
 दैवः (स) सोम ।
 दैवो तुम्ह योग है ।

परं- (द) रेंडव ।
 अक्ष- (स) अक्षय, व्यर्थ, समर्थ,
 पूर्णोदी । अक्षममर्थ अ-
 क्षरय मुनि, अक्ष पूरण
 नाम । अक्ष अक्षय अक्ष
 अक्षय तजि, अक्षमममो-
 क्षयाम ॥ २८ ॥
 अक्ष (स) (अक्षय) व्यर्थ, समर्थ
 पूरण, पाभरण, अक्षय,
 अक्ष ।
 अक्षय- (स) अक्ष, अक्षय, अक्षि-
 या बास, बासी की जूट ।
 अक्षय (स) लाही ।
 अक्षय (स) लहना, अक्ष ।
 अक्षय (स) पुरी विगेय, अक्षे-
 मक्ष पिता पुत्र व्याम,
 अक्षे की पुरी यत्ती को
 पुरी का नाम ।
 अक्षय (स) लहना अक्ष ।
 अक्षय अक्षय (स) शोभित,
 सुन्दर । [गहना ।
 अक्षय (स) शोभा भूषणयुक्त,
 अक्षय (स) शोभा अक्षय नाम सुख ।
 अक्षय अक्ष, अक्षय ।

पञ्चमः (म) रक्षित, पञ्चम,

पञ्चमी, साँचा, जितेंद्रिय ।

पञ्च (स) क्षिप्रित, घोड़ा ।

पञ्चमुखा (म) पञ्चमी की खेत की

पञ्च (स) मुपेदे फूल का

पञ्चवर्ग । [जाय ।

पञ्चदित (न) जो सखा न

पञ्चम (न) पावन, सिद्धि-

पता । [सीता ।

पञ्चमी (न) पञ्च तीसी, न

पञ्च (स) दनिद्र, चीन, प-

दृष्टि, पदुम ।

पञ्चदित (स) पञ्चदित, जो

सखा नहीं जान ।

पञ्चाग (स) पञ्चाग पञ्चाग ।

पञ्चाग (प) बेही गजदमी,

करद, गजदन्त, लंभीर,

हाथी की बेही ।

पञ्चाग (स) बहुदा जोन बी

सामा । [दरिद्र ।

पञ्चद्वि (स) पञ्चद्वि, धनहीन,

पञ्चि (स) मोर छवि, समूह :

मनर, मीरा, नदी ।

पञ्चि (स) नगाट, नगाट ।

पञ्चोक्तोक्तो (स) मिथ्या-

वादी ।

पञ्चिनी (स) मंवरौ छमि

पञ्चिनी (स) मनरी, मीरी ।

पञ्चिरक्षमा (स) पोंडर ।

पञ्चिर्षी [न] पिठवन् ।

पञ्ची (स) सखी, मदिरा, मं-

वर मनूह ।

पञ्चीक पञ्चीका (स) मिथ्या,

पञ्चार, भूठ, पण्डित,

पञ्चापी, मिथ्यावादी ।

पञ्चीक (स) रिक्कपंच या तरेका

तरकारी बेसन सपेटकर

बीर से तथा जाय ।

पञ्चीन (स) पञ्चुदि, नलीन ।

पञ्चीका (प) मिथ्या, पञ्चनाप,

भूठ, पण्डित रक्षित ।

पञ्चुक्ति (न) पञ्चुक्त करके सर-

भूठ, नग कर के, सख-

भवा ।

पञ्चुद (द) पण्डित ।

पञ्चीका (स) पिर ।

पञ्चीका (द) सोक के परे,

भीरु से ।

अशोच (स) खेच, झूठ, धिर,
घटन ।

अशोचिक (स) अट्टि, अच
रण, जो भीक में नहीं,
जैसा दूसरा नहीं, भीक में
जैसा दूसरा नहीं, लीला,
प्रकृतिरहित ।

अश्लक्ष्ण (स) थोड़ा थोड़ा ।
अश्लक्ष्णभासम् (वि. दृष्टिम्)
थोड़ी थोड़ी दे चमक
किस में ।

अश्लक्ष्णमारिष (स) चौराई साग ।

अश्लक्ष्णः (स) फातमा ।

अश्लिषा (स) समीहय ।

अश्लिषासदा (स) वन मूंसा ।

अश्व (द) आवा कुंभार का ।

अश्वकलित (स) निधित ।

अश्वगति (स) अश्वान ।

अश्वगाह (स) अश्वान, अश्वान,
गहाना ।

अश्वघट (द) अश्वघट ।

अश्वघट (स) अश्वघट, कुठांव ।

अश्वघ्रा (स) अश्वगान, अश्वान,
तिरस्कार ।

अश्वरि (स) अश्वान कर के पेश
में लाने के ।

अश्वर (स) जो भीच पर भी
दरता, अश्वान भीच पर
टेर दया करता ।

अश्व (स) अश्वान ।

अश्वधि (स) अश्वान, अश्व,
अश्वान, अश्वान, अश्व,
अश्वान, अश्वान ।

अश्वानि (भी) अश्वान, अश्वान,
अश्वान । [अश्वान ।

अश्वान (स) अश्वान, अश्वान,

अश्वानधक (स) अश्वान ।

अश्वानधना (द) अश्वान ।

अश्वानधि (द) अश्वान ।

अश्वाने (द) अश्वान ।

अश्वाने (स) अश्वान के अश्वान
को अश्वान, अश्वान ।

अश्वाने (स) अश्वान, अश्वान ।

अश्वाने (स) अश्वान, अश्वान ।

अश्वाने (स) अश्वान, अश्वान,

अश्वाने (स) अश्वान, अश्वान ।

अश्वाने (स) अश्वान, अश्वान ।

अश्वाने (स) अश्वान ।

अविदितः (स) बिना रोकानुपा ।

अविकृतः (स) सम्पूर्णः ।

अविषयाः (स) मुहागिनि, सो-
भाग्यवती । [तार ।

अविरतः (स) निरन्तर, लगा-

अविरतोत्कण्ठम् (वि) अहम्)

निरन्तर दे चाव जिस में ।

अविर्विष्यः (स) भेड़ा, चारपाया

अविद्यापांचः (स) अविद्या पादि
पांच क्लेश ।

अविनयः (स) ठिठारें । [नहीं।

अविनायो (स) जिस का नाम

अविरोध (स) बिना विरोध ।

अविवेक (स) अज्ञान, विवेक
रहित ।

अव्याहत (स) अरोक, जिस
का रोक नहीं ।

अव्ययाः (स) २१ १ दही
भुङ्गलो २ गुलाब ३ ।

अव्यापकः (स) जीता हुआ ।

अविदारीः [स] विदाररहितः ।
लक्ष्म पादि विकारहीनः ।

अविगतः [स] व्यापकः ।

अविद्याः [स] अज्ञान ।

अविचलः (स) स्थिर ।

अवहोत [स] निरन्तर ।

अविद्याः [स] अज्ञान ।

अवगतं (स) भुका हुआ ।

अवनिग्रयनाम् [वि साधीम्]

पृथ्वी दे ग्रन्था जिस की ।

अवनीपः (स) राजा, भूप, नृप,

ठिठारें, पृथ्वी पति ।

अवहित [स] भिन्न ।

अवतीर्णः (स) अवतार मानो

अंश नदण ने नीचे उतरि

पावना उतरा हुआ ।

अवधूतः (स) इनाया हुआ ।

अवगो अवनि (स) धरती,

पृथ्वी, भूमि, माता ।

अवनीकुमारी (स) लानकी,

सीता, भूवर्गा ।

अवलीर्णः (स) फैला हुआ ।

अवलुलः (स) बहुरी ।

अवतंस (स) गटुक, गोमा, क-

रनफूल, मायेदा गहना ।

अवतरे (२) अवतार लिया ।

अवकाम (स) अवसर फुलत,

रावकाम, बीकाम ।

अवनीम (स) राजा, नृप, भू-
पति ।

अवली (स) उज्ज्वल नगरी ।

अवलिक्ता (स) उज्ज्वल नगरी ।

अवयव (स) अङ्ग, देह, शरीर,
आदि अन्तः ।

अवकाश (स) अटकाव, बाधा, रु-
काव ।

अवकाशे धारण कपता हं मे ।

अवसेव (स) अवसृज ।

अवसृज (स) गह्वरानि मिला,
बुधा पतका पाटने लायक
सेवे अटनी ।

अवसृष्ट (स) अवसृष्ट, बाकी ।

अवस्थापित (स) अस्थापित
भरसा न हो ।

अवसेव (स) अन्तः, मूल्य, द-
क्षिण वपन, मेघवपन स
अट, जेम् ।

अवसृ (स) अन्तर ।

अवसेवित अवसेवा (स) अव-
सेवदुत, अन्तर्गत, जेमित,
अन्तः, बाकी । [अवसृ ।

अवसेव (स) निवसेव कर के,

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः,

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः ।

अवसेव (स) अवसेव अन्तः ।

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

अवसेव (स) अन्तः, अन्तः,

अन्तः, अन्तः, अन्तः, अन्तः,

पञ्चमः ।

पञ्चमः (म) दास, दसु ।

पञ्च (म) किरिद ।

पञ्चवः (म) दस ।

पञ्चम (म) पञ्चमः ।

पञ्चविंशति (म) अपवित्र, पञ्चदश, पञ्चोष । पञ्चोष । [लक्ष]

पञ्च, पञ्चुः (न) पांसू पांसुका

पञ्चदश (ध) गम्भीर, तमस्त ।

पञ्चद्रुतम्, (विशेषम्) पांसु

। पांसु मे गीगा इषा ।

पञ्चदश (द) अपवित्र । [विशेष]

पञ्चोक्त (म) शोकादित, वृत्त

पञ्चम (म) पापाप, पत्थर ।

पञ्चमः (स) घोड़ा, पञ्च, दासी, दस ।

पञ्चोक्तः (म) पञ्चोक्त वृत्त, वृत्त विशेष, शोक रचित ।

पञ्चोक्तः (म) कृष्ण ।

पञ्चमः (म) } पञ्चमः ।
पञ्चमः (स) } पञ्चमः ।

पञ्चमेष्टान्तकः (ध) बहुवार ।

पञ्चकर्मः (स) साले वृत्त ।

पञ्चकर्मिकः (स) साले वृत्त ।

पञ्चमः (म) पञ्चमः ।

पञ्चवत्स (म) पीपर वृत्त,

पीपन वृत्त, तमस्त ।

पञ्चमः (म) भुविद जतरन ।

पञ्चमः (स) पीपन वृत्त ।

पञ्चमः (स) वृत्त वी रमेर ।

पञ्चमः (म) देसिपा

पीपर ।

पञ्चमः (म) पञ्चमः ।

पञ्चमः (स) पांसी, पञ्चम

नवम् ।

पञ्चमः (म) नामदेव

वैद्य रवि पुत्र एकहिंगाम

का दो भ्राता श्री पञ्चमः

के शर्मन्त सत्यमि जीवा ।

पञ्चमः (स) पाठका ।

पञ्चमः (स) नेदः, महानेदः,

काकोशी, चिरकाकोशी,

चट्टि वृद्धि शिष्टवत्त वृत्तः

भक्त, एव पाठ द्रव्य पठ

वर्ग हैं ।

पञ्चमः (स) पञ्चमः ।

पूर्व, पञ्चम, दस, वायु-

कोन, रमानकोन, पञ्चमः ।

कोम, नीरित कोम ।

पट्टमिहि विमेषय (स) पट्टिमा,
महिमा, गरीमता, कविमा,
प्राप्ति, काम, समीकरण,
ईश्वरता । शीत । पट्टिमा
कविमा प्राप्तिः प्राकम्पं
महिमा तथा । ईश्वरत्वं,
वमिल्यं, तथा कामाव-
सायिना ॥ १ ॥

पट्टादयः (स) पठारह । [मै ।
पट्टाह (स) पाठ है पट्ट निरु
पट्टादयभार (न) वनस्पति १८
भार ।

पट्टापदः (न) सीमा, द्रव्य, स्वर्ण ।
पस (स) आसन, कवित्त, गुण,
लक्षण, द्वार, सेवा ।

पसन् (स) सङ्गित, यहारहित
तप, शीत, दान आदिक ।

पसभ्य (स) श्री सभा के योग
न हो, धूर्त, दुष्ट, नासायक ।

पसंभव (स) सम्भवहित गौर-
सुमकित ।

पसंख (स) वेतादाद, वेमुतार ।
पसज्ज (स) पस ।

पसंख (स) योहा सा ।

पसकस्यति (स) (वि) सुखम्
कुरु एव दीप्तता दुपा ।

पसक्त (स) बारबार ।

पसति (स) तलवार, वज्र ।

पसिनिहृत् (स) तलवारके ।

पसन् (स) भोजन ।

पसन्त (स) पसुर, दैत्य ।

पसम (स) पसक, कामदेव ।

पसमश्चस } (स) द्विविधा, सु-
पसमेतस } नेह, नामराजा,
सगरपुत्र संश्रमान
का पिता, दुःख ।

पसमय [स] विपत्ति काम,
पकाश, कुपमय, दिना
पटु ।

पसमयर } (स) कामदेव,
पसमयर } कामदेव मर ।

पसम्भावना (स) अनियय,
शेष, पदवा सचित स-
मुक्त कही सम्भावना,
नहीं, नित्य के अनित्य
अथ अनित्य की नित्य
जानना ।

पसईन (स) श्री सुहृ न छके ।

पञ्चदशः (८) विनाशदायक ।
 पञ्चरैः (स) सरांशरहित ।
 पञ्चाधीः (स) पञ्चाध्य, जो दूर
 न हो । [न हो ।
 पञ्चाध, पञ्चाधि (स) जो दूर
 पञ्चिः (स) तलवार, खड्ग,
 खाँड़ है ऐसी, तू ।
 पञ्चितः (स) वक्त, वादना, देव
 ऋषि विशेष, काणा, (जो
 म्लेत न हो) [वाक्ता ।
 पञ्चितनयनः (स) काशी पाँख-
 पञ्चितसारथः (स) तेंदुहत्त ।
 पञ्चिताः (स) पीड़ित ।
 पञ्चिनः (स) तलवार, खड्ग ।
 पञ्चिपतः (स) चेतारी ।
 पञ्चीः (प) पाज्जा, तछा ।
 पञ्चिवः (८) पञ्चंगत ।
 पञ्चुष्टिन् (स) जो सुखी न हो
 पश्चात् दुखी ।
 पञ्चुरः (स) राक्षस, राक्षस,
 भस्मविरोधी, दैत्य, दानव ।
 पञ्चूयाः (स) निंदा, जिसी के
 गुह में दोष समाना ।
 पञ्चुरपरोक्षः (स) शक्त,

समना । [तीर्थ ।
 पञ्चुरसेनः (स) दैत्यसेना, गया
 पञ्चमत्तः (स) प्रतिकूल ।
 पञ्चिमात्र } (स) डाङ्गुल ।
 पञ्चिमात्र }
 पञ्चकः (स) रुधिर, रक्त, लोहू ।
 पञ्चकू (स) सूका ।
 पञ्चीः (स) यह एक प्राणी,
 यह वयं यह ।
 पञ्चाः (स) क्षिपाव, लुकाव,
 पञ्चहान, नीचेगया हुआ,
 हुआ हुआ ।
 पञ्चकोपः (वि० घनेशः) जिस
 का कोप दूर हो गया है ।
 पञ्चम् (स) हुआ हुआ, नीचे]
 गया हुआ ।
 पञ्च [म] रक्त । [चासनेस ।
 पञ्चव्यष्ट [स] क्षिप्रभिन्न,
 पञ्चावस [स] पञ्चत विशेष ।
 पञ्चिः (स) है, वह ।
 पञ्चुः (स) होय, पात्रायावत् ।
 पञ्चुतिः (८) पञ्चदश ।
 पञ्चः (स) मलपद्मादि विनि
 य, खड्ग, तलवार, गुहमल, या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

८ सोर आदि इक्ष्वाक ।

अथ मन्त्रः । (ग) हाँ हाँ
 अथ मन्त्रः । (ग) हाँ हाँ

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥

१. अथर्ववेदः ।
 २. अथर्ववेदः ।
 ३. अथर्ववेदः ।

अथर्ववेदः भा. शीतल धारा का
अथर्ववेद १. शीतल धारा का
अथर्ववेदः

अथः ॥ १ ॥ अथः ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथवा 'म' इति चिह्ने ।
अथवा 'म' इति चिह्ने ।

संस्थानम् अथ इयं विधिं इयमे
इयमे अथ विधिं इयमे

५५५ (५) ५५५, ५५५, ५५५
५५५ (५) ५५५, ५५५, ५५५

ਅੰਕ (ਸੰ. ਨੰ. ੧੧), ੧੯੭੧

‘हरिम् ।’ (सहकारं, सैव)।

पङ्कः (मं) पायथ्ये, दिन कंष्ट,
पङ्कद्वार (मं) गच्छे, दृष्टा, पंमि
मंमि, गच्छर ।

पञ्चमं (स) दिन । [पञ्चकार]

पञ्चमिति (म) मीनः, खनः
 षष्ठमिति (ष) षष्ठमेव, मगः

सोम, शश्वी । [दिन ।
पञ्चम (२) दिने दिने, प्रति-

पहलिय (म) दिन रात, दिना

परमेश्वर (स) परमेश्वर,

पहल (म) गुरुद्वय, गुरुना,
गुरुना, गुरु, गुरु

॥ १ ॥

(१) } वाचस्पत्युदा. अदि
 . } वाचस्पत्युदा. अदि

पुनि, यदि एक दानव
नाम। यदि भक्तानां नाम।

दमन, बलनार्थी धनव्यास

पहिल (म) गज, (द्वि) गज

पंडिता (१) दया, चमत्कार.

पट्टिनाह. (स) जेपनाग, पट्टी-
म । (नी ।

पट्टिनी. (स) नागिनी, सांवि-
पट्टिनी. (स) } पट्टिनी ।
पट्टिनीकः । }

पट्टिनी. (स) नागवेसी,
पान की । (नाग ।

पट्टिराज. पट्टिराजा. (स) जेप.

पट्टिवात. (स) मुहाग, मीभाग्य.

पट्टिवेदि. (स) वर्षविशेष
पान संज्ञा ।

पट्टिमची. (स) मोरपची. म-
चूर । (पट्टी ।

पट्टिहा. (स) गीतममुनि की

पट्टिन्द्र. (स) कपूर, हापूर ।

पट्टिग. (स) जेपनाग, नाग
पति । (रुगया ।

पट्टेर. (प) मिहार, पट्टिट.

पट्टेरी. (प) मिहारी, बट्टेनिया.

पट्टेरु. (स) देसौ शतावर ।

पट्टी. पट्टीवत. (स) पट्टय,
पायर्थ, कठिन, पट्टमा,
पट्टरज, भाग्य, दुःख, इर्थ,
धन ।

पट्टीराज. (स) टिगराज ।

पट्टे. (स) में । [उच्चारण ।

पट्टन. पट्टान. (स) पुकार,

पट्ट. (स) बट्टेहा हट्ट, पाया,
जूवा, नेत्र ।

पट्टः. (स) एक पैसा भर वजन ।

पट्टफलः. (स) बट्टेरा । [हट्ट ।

पट्टयवट. (स) प्रयाग का बट

पट्टर. (स) वर्ष, जीव, मोक्ष,
पौर ककारादि वर्ष ।

पट्टि. (स) नयन, नेत्र ।

पट्टिः. (स) सुनगा ।

पट्टीवः. (स) वकारन ।

पट्टीकः. (स) पट्टरोट ।

पट्टीभ. (स) निर्वोद, पट्टोद,
निर्वन्देह, पट्टीक ।

पट्टोद्विपी. (स) सेनापूर्व. तिस
के दिवरण, श्लोक । "नव-

नाग सहस्राणि नामाष्टत'
गुणान् रघान् । रघाष्टत

गुणान् रघान् । रघाष्टत
नागरान् ॥१॥ दयकचदली

विगुणोरघानां नवकोटियो-
ध्यादयसंतिवाणी," इति

सुनयोवदन्ति ॥१०॥ स्वस्य
भामवत ४८ अध्याय प्रमाण

पञ्च- (स) पञ्चानी ।

पञ्चात- (स) विना जाने ।

पञ्चता (स) मूढता ।

आ

पा (स) उपमर्ग इति, आस-
मलाभान्, आदि, पूर्व,
इतिदिदिदि ।

पाः (प) कट मुनक गज्ज ।

पा (स) पयसा, तन (जैसे यही
तन, वही तन)

पांज (द) निधय ।

पांकी- (द) पंमुपा ।

पाइ (स) जीवन, समिर ।

पाकर (स) रक्षादि व्याग,
'प्राणि, प्रीति, गहर, कडा,
मे रत्न धान' पादि निक
कते हैं, जान, (प्राणि) ।

पाकार- (स) पाजति मूरत ।

पाकप्यं (स) मुनि के, युवा ।

पाकप्यं (स) घसापट, वत
से 'खोचसापना, मंत
विशेष, खेपना, समिर ।

पाकाग (स) चकाग, गु-
माको ।

पाकागवशी (स) चमरलती

पाकापिन (स) पादता दुप

पाकाय प्रणिहित भुजम्- (।

माम्) पाकाय की पं

बाइ उठाए हुए को ।

पाकिपत (स) चति दि

द्रता, कडाज, कपिण ।

पाकशि (स) तिरका, टे

बाइ मीठा । [क,

पाकुपित (स) सज्जित, अ

पाकुल (स) विचक, पूर्ण भ

हुपा व्याकुल उदास ।

पाकुलग्रामधेत्याः (प दशा

वसियों से भरे हुए घर

हय निम के ।

पाकति (स) मूर्ति, 'का

मूर्ति' होके, पाका

स्वरूप, शरीर ।

पापेय- (स) किसी के मेख ।

अथन में दीप निकासन

परखंडन की युक्ति कहन

तकेशरना, एतराज कर

पाचण्डवः (म) इन्द्र, मधवा,

इन्द्रदेवता । [इ. ममन्तु

पाचुरः (र) दधर, दध, मन्तु

पाचुः (म) चूरा, नूदा, चौर ।

पाचुकर्पणर्षीः (म) । समाका-

पाचुवर्षीः (म) । नी ।

पाचुः (म) नूदा । [मिकार ।

पाचैठः (म) चहैर, नूगदा,

पाचुः (म) मंजा, नाम ।

पाचुः (म) नाम, पट ।

पाचुः (म) कदा दूपा ।

पाचुः (म) हस्तान्त, कदा ।

विदरव ।

पाचुः (म) कर्तुने द्वे योग्य ।

पाचुः (म) पादा दूपा ।

पाचुः (म) शास्त्र ताम्र, भ-

विदत, पाता ।

पाचुः (म) पाहता, संपाति,

पाचुः, पाता ।

पाचुः (म) दधीद, चतुर,

कृष्ण, देव, भवन, घर,

मुदकुशमी ।

पाचुः (म) भीजत रसुतर ।

पाचुः (म) (कोटि, दधीदी,

पाचुः ।

पाचुः (म) चपराध, पाप ।

पाचुः (म) पाचनेदारा,

भाषी ।

पाचुः (म) घर, प्यान, गृह ।

पाचुः (र) होनहार ।

पाचुः (र) चोटनगना, धका,

चोटना, कूटना ।

पाचुः (म) मूँव कर ।

पाचुः (म) इन्द्रपति, लीव ।

पाचुः (म) दधी करके दधि ।

पाचुः (म) (मः धीवदार, चनन,

पाचुः (म) कर्म दिसचनन,

पाचुः (म) कर्तुत, पाचार ।

पाचुः (म) मंथादिकर्तुमं

पट कर तीन बार धीका

धीका जल धीका ।

पाचुः (म) पक्षितता-वेष्टी

कर्मकरता ।

पाचुः (म) दधीपरीत करा द्वे

वेष्ट पटानेवाका गृह ।

पाचुः (म) दधीपरी, पाचा-

री, चकनहार ।

पाचुः (म) दधीपरी । [ना ।

पाचुः (म) पाचुः, दधी

पाचुः ।

पानि- [प] चोट, साइके ।

पापः (स) } जन, पामी, पपने
पाप (प) } [२६]

पापक- [स] दोकान, घाट,

पापटा : पापटकान, [स] वि-

प्रति काश, धर्म, दुष

विपत्ति । [पुत्रादि]

पापदा [स] लक्षदागा, मस्तान

पापेन् [स] शरणागती ।

पापल [स] विपत्ति सहित,

प्राप्त, शरणा, विपत्ति में

पहो, सद्यमे रचित ।

पापुच्छ (स) पूछने तू, पञ्चा,

फेले तू ।

पापुक्कः (स) पफीम ।

पापेरणः पापण, [स] पच्छा-

दन, टाल पपनेपञ्चानते

पपने खच्छे टंवि रञ्ची ।

पापल- [स] पुमापट; किरापट ।

पाप (स) पायुस, ठमिर ।

पाप (स) पापिदृष्टा ।

पापहमाला (वि० वलाकाः)

पामाकामी बापिदृष्ट ।

पापली (प) पंक्ति, पञ्चति, स

तर पवली । [पकाने का]

पापा [प] पञ्चामिदी के वसु

पापाइन- [स] पादान, पुकारा

पादर मे बोसाना, पुवाना,

पाविजः (स) पावजोगे

पाविदुधः (स) मीही का दूध ।

पाविट- (स) तत्पर, निवेष्टित,

पस्त, सीन ।

पाहत (स) डाँका, घेरा ।

पाहति (स) छडरणी, पछीय ।

पाभरक- (स) मयण, पमहार,

मदना, पाभूपण ।

पाभा (स) पाभा, वमक ।

पाभायण (स) कथन, मन्ना-

पण ।

पाभामयण

पाभामयणमोहनी (स) } बहर ।

पाभीर (स) सीप, पचीर,

भीन । [ना ।

पाभूपण- (स) पमहार, मय-

पाभोग (स) पमला गरीर ।

पामय (स) रोग, काण्ड, वि-

कार पडविकार, सोमारी ।

पामय (स) मोव, मोध, डाइ ।

पामनकः (म) पोला, चंवरा,
फल, पावरा ।

पामण्डः (म) सदैव रेंड ।

पामनीरः (म) कसा दूध ।

पामान्यः (म) मंषी वलीर ।

पामिषः (म) मांसादि पखाद्य
वस्तु, काम, मोक्ष, मास ।

पामोदः (स) सुगन्ध, पानन्द,
रस ।

पामोक्ष्यन्तिः हलेंगी, फेंकेंगी ।

पायायः (म) वेद, पादि, गान्ध,
परम्परा ।

पानन्दः (म) कुह, मन्दी छनि ।

पाखनकः पाखताः (स) पौला
हव ।

पासः { (स) एकहिं वस्तु की हि
पासः { तौतिवार छज्जार करप
पासः { नाम वन निकट मरज
नही तोर, पामफल, पाम
का हव, पखाफल ।

पामकूटः (म) एक पहाड का
नाम है जिस पर पाम के
वृक्ष बहुत हैं ।

पामगन्धः हरिद्रा }
पामगन्धः } पामारहदी
पामगन्धिः }

पामपमरः (म) पाम का पत्ता ।

पामपुष्पः (म) धैत १ पाम का
फल २ । [पचा ।

पामपदापकः (म) पाम का

पामबीजम् (म) पाम का
बीज ।

पामावर्तः (म) चंमवट ।

पायतः (स) चौडा, लम्बा, वि-
शाल, धूप, पाधोन, बहा ।

पायतचित्तः (स) जिस के पा-
मने सामने का भुजा तुल्य
हो और चारी कोने सम-
कोन हो ।

पायतन (स) स्थान, भेवन,
पोमार, घर ।

पायतः (म) नमू, पधीन, बहा ।

पायसः (स) { चौडा ।
पायसी }

पायसुः (स) पाजा, पनुमति ।

पायानः (स) विस्तार, चौडा,
धैर्य, लम्बा । [यल ।

पायाघः (म) लोथ, दासना,

पायुः (म) पाखेल, पावर्हा,
जीवन काल, उम्र ।

चायुतः (स) दृग्मन्त्र, विद्यास ।

चायुधः (स) सामान्य हथियार

खड्ग, शस्त्र चक्र शस्त्र,

हथियार । [तुमः]

चायुधम् (स) बड़ी चायुधाने

चायुनिन्दिषा (स) मीथो ।

चायोधन (स) युद्ध, संघाम ।

चारकूटः (स) पीतल ।

चारम्बः (स) चमस्ततास ।

चारण (प) नाम राजा दृग्मन्त्र

को चार नाम एक देश वा

को माध्य किए ताते प्रशंसित

नाम चारण भए, खसुर,

श्रेष्ठ ।

चारण्यः (स) वन, विपिन ।

चारण्यकुकुटः (स) वन सुर्मा ।

चारत (स) दृष्टित, दोन,

दुखी, पात ।

चारति (प) पीडा, चति

प्रीति, चति दुःखी ।

चारतिहरः (स) विष्णु दुःख

हरण, क्षेत्रमात्रक ।

चाररीतिः (स) पीतल ।

चारुनाभः (स) चिकी भक्त का ।

चाराता (स) बैरी, चाराति,
यत्तु ।

चारव (प) चोट, चतर ।

चारथ (स) नदय, नवकम,

प्रारंभ, युद्ध, सद्योग, नये

काम का चलाता ।

चारसी (व) दर्पण, मकर ।

चाराति- (स) बैरी, कष्टक ।

चाराधन (स) पूजा, भजन,

सेवा, सवासना ।

चाराध्यः (स) पूतकर ।

चारामः (स) { बाटिका, सपेवन,
सुखट, चंगा, चैन,
(क) सुखदाता, बगी-
चा, बागु ।

चारण्यः (स) बैठि के, चढ़ि के,
चढ़ कर ।

चारुदः चारुदाः (स) स्त्रिय,
चढ़ा, चढ़ना, चढ़ा हुआ ।

चारो- (द) चाट ।

चारोवतः (स) चमस्ततास ।

चारोव्यः (स) रोगरहित ।

चारोपितः (स) चाच्छादित,
दांका, सीपा ।

पारोहः पारोहः (म) बीड़ी,
चढ़ाव, चढ़ना ।

पारोहः (म) पमलतान ।

पार्यः (म) ग्रहणः ।

पार्ष्णिः (म) पीड़ा, रोग दुःख ।

पार्ष्णिः { (म) करण, नरम,
पार्ष्णिः { कोमल, मजबूत कर्ण
पार्ष्णिः { है समान व्यापार,

कहना, दया, दयालुता,
सीधापन, शुभीतलता ।

पार्ष्णिः (म) पीड़ित, दुःखी,
हीन । [चटमरेषा ।

पार्ष्णिमलः (म) गुलाबी फूल के

पार्ष्णिमल्लुला (म) देवती ।

गुलाब, कोमल ।

पार्ष्णिः (म) बीजा, पाला ।

पार्ष्णिः { (म) पदरथ ।

पार्ष्णिः ।

पार्ष्णिः (म) मित्र, कल्याण,
प्राप्ति, कुलीन, देह, पिता,
पूज्य, देव की यात्रा का
पार्ष्णि करनीयाका ।

पार्ष्णिः (म) देह पुत्र, नरु,
पति, गुरु, गुरु पुत्र ।

पार्ष्णिः (म) पार्ष्णी, गिरजा,
देहा ।

पारोः पारोः (द) पारो ।

पार्योवर्त्तः (म) पूर्व समुद्र से
ले के पश्चिम समुद्र तक
घोर हिमालय विंध्याचल
का मध्य ।

पारः (म) { हव विजिप, किं
(प) { यारी, स्नान ।

पारः (म) इरतान ।

पारकः (म) साही ।

पारकः (म) यत्र, नेध, बलि-
दाग । [पारसरा ।

पारकः (म) सहारा, आधार

पारकः (म) दध करना, मा-
रना । [उत्पद्य हृषा ।

पारकः (म) सी बध से

पारकः (म) घर, स्नान, भवन,
गुरु, नरुग ।

पारकः, पारकः । [री, यासा ।

पारकः (म) चद्रोरा, विद्या-

पारकः (म) सुफी ।

पारकः (म) गजबन्ध, देही ।

पारकः (म) १२: २५००००,

स्वर गिताना ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न कर ।

पाणिन्य (म) कदापि भे नगा

- गा । [गाया दूपा ।

पाणिन्य (म) कदापि भे न

पाणी (म) मण्डो मन्त्री,
(क) पंक्ति, नकीर ।

पाण (म) गुण, महिमा, व्याग

पाण्डुर (म) धंधला होना ।

पाण्डु (म) पाण्डो नन्दा ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) दृष्टि देवता ।

पाणिन्य (म) देविता, तकिने

पाण (म) पाण्डु, नन्दि, पाण्डु

पाणिन्य (म) पाण्डो, पण्डित ।

पाणिन्य (म) गुणाना [टान् ।

पाणिन्य (म) पाण्डु, पोट

पाणिन्य (म) कदापि, किरा

कर, माटा कर

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।
पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

पाणिन्य (म) निष्पन्न ।

जगह । [वाता ।

पोटा, बैठने की दस्त, बदन,
चटाई ।

पायमन्त्रः (म) पायम ने ठेने

पामनः (स) पामन वृक्ष ।

पायमी- (म) ब्रह्मचारी पादिवा

पामवः (म) निकट ।

पाययः (स) ग्रहदायिनि, पामि,

पाधार, रक्षक, पनाह ।

पामनद्विरपः (म) पदामन,

पायितः { (म) ग्रहदायिनि, प-
पासितः { भीन, पवसंवाच्य,
पायायुक्त ।

बीरामन, गुरुहामन, भट्टा-

मन, पामिकासन, दृष्टा-

मन, मोनापूयामन, तुग-

स्कामन, ह्यागामन, मयू-

रासन, व्याघ्रासन, बाघी

पामन, समहान, पामय-

सुष, दृष्टासुष, इत्यादि ।

पाययिनि (स) पद्वै ।

पायिष्ट (स) सगा हुआ ।

पायिष्टकानुम् (वि) निवन्

मिखर पर सगा हुआ ।

पासवः पामवमयः (स) मदिरा

मद, दाह । [छीन ।

पायिष्टः (म) निवन् । [हुआ ।

पायमन्त्रः (म) टाहस देता

पायमन्त्रः (म) प्रसूतित विष

प्री, टाहस पाई हुई प्री ।

पायमन्त्रः (स) टाहस देकर ।

पायिन् (स) नास विमिय,

कुवार ।

पासा वसनः (स) नंगा, दृष्टा

पासायत् (स) प्राप्त करना ।

पासायः (म) नूपल धार नीह ।

पासारप्रयनितहनोपप्लवम्, (वि

त्वान्) नूपलधार नीह से

मिटारि है वन की पीड़ा

लिखने ।

पासकः (स) निविष्ट, पनुरक,

मन, पतितान, तत्प,

नमगूह । [पनुगाम ।

पासकः (स) निविष्ट, खेह,

पासकः (स) बैठकी, खीकी,

पामोनः (स) स्थिर बैठा हुआ ।

पामुरः (स) कासा नीन ।

पायमन्त्रः (स) बुद्ध, संप्राप्त ।

आदि (म) मकारवाचक है ।

आदि (म) ईश्वरवादी,

साधु ।

आदि (म) सेवन करने हैं ।

आदि (म) मुख, वदन ।

आदि (स) आदि ।

आदि (स) वायु, लक्ष्मी ।

आदि (म) निश्चय, अंक ।

आदि (म) अंकुर, अंगुष्ठा ।

आदि (म) वह कहता है ।

आदि (स) पीटा हुआ, व-

लिया हुआ ।

आदि (स) गुरु, समर ।

आदि (स) सिद्ध मुक्त मन्त्र ।

आदि (म) भीजन, आना ।

आदि (स) है, सिद्ध युक्त वचन ।

आदि (म) वे कहते हैं ।

आदि (स) शास्त्र, होम

की वस्तु । [मन्त्र]

आदि (स) अर्थ, लक्ष्य, या

आदि (म) सम वचन ।

आदि (म) पुकार, आवाहन

आदि (स) पकड़ता हुआ,

पौरुषता हुआ जैसे वचन

आदि (स, दुर्लभ, मित्र) ।

आदि (म) सुगंध, शिखर ।

इ

इ (म) अर्थ, एक ।

इ (स) एकपक्षी, अंग,

एक पक्षी ।

इ (स) गति, जाय,

भी फिरने आदि की चेष्टा ।

इ (स) इन्द्रजित् ।

इ (स) बीजा, आदि,

वादि, अभिलाषा ।

इ (स) वादता हैं मैं ।

इ (स) दाक्षिण्य, वादत

वादा गया ।

इ (स) इन्द्र । [भूमि]

इ (स) मरचतो, भूदेवता,

इ (स) समुत्ति । [इन्द्र]

इ (स) मर वाचक पद्य,

इ (स) कोटा, अष्ट, अक्षि

पद्य, पद्य, मोक्ष, यो

भिय, वादर ।

इ (स) पेट के वस्तु ।

इ (स) ।

इ (स) माराज, विम, अ

माय । [ठग]

इ (स) निराति, अर

इत्तरी. (स) अष्ट स्त्री ।

इति. (म) समीप बोधक शब्द,
एव, यत् उपाधि च,
हेतु, प्रकरण, यादि. स-
माप्ति, पूर्ति, समाप्त, इस
प्रकार, प्रस्ताव, प्रकाश,
समाप्तः श्लोकः । अति हृष्टि
रणा हृष्टिर्मूय का श्लाकभा
श्रुताः । अन्त्याः श्रुत्याः ।
ज्ञानः यद्दे ते इत्ययः श्रुताः
॥ १ ॥ [देश ।

इतिर. (ट) परम्परा का उप-
इतिहास. (स) कथा, प्राचीन,
हस्तान्त, पूर्वहस्तान्त, जैसे
महाभारत यादि ।

इत्यं. (स) ऐसी प्रकार सी,
ऐसा. प्रहभाव विज्ञेय कि
चौर को चौरने उपचार ।
करण, नकल, खिल, सीमा
इस भांति ।

इत्यन्त. (स) इस भांति हुआ ।

इदं. (स) यह सामने, प्रत्यक्ष ।

इदम्. (स) यह ।

इदमित्यं. (स) यह परसो

प्रकार, एकै हेतु सीता.

ऐसे ही यह ऐसा ही है ।

इदानीं. (स) अब, एवम् ।

इत. (स) मूर्त्य । [कमला ।

इन्दिरा. इन्दी. (म) कन्यो,

इन्दोवर. (स) सखीपति, ग्याम,
कमल । [वर ।

इन्दोवरी. (स) पहाड़ी, सता-

इन्दु. (स) चन्द्रमा, शशी,

कपूर ।

इन्दुप्रिया. [स] चन्द्रकान्तमपि

इन्दुर. (स) मूषा, चूड़ा ।

इन्दुसन्नेमिहिस्ता. [वि. या]

चन्द्रमा से जगे हैं तरङ्ग

रूपी हाथ जिस है ।

इन्दोः. [स] चन्द्रमा का ।

इन्द्र. (स) स्वर्गपति, वासव,

इन्द्र, तथा, देवताओं

का राजा, पूर्वदिमा का

स्वामी ।

इन्द्रबाप. [स] इन्द्रधनुष ।

इन्द्रताप्त. इन्द्रबाप. (स) बाकी

विमः (न) विमला
(भीमः) महती ।

विमः (न) हुम, रसो, लैडे,
रहम, बराबर ।

विमः (न) लार के नहीवा ।

विमः (न) बाव, इच्छा ।

विमः (न) बरम, लज्जत, भूल,

नामित, बाबा हुआ, मन

माना (इहवचन इहान)

विमहापदकम् [न] नामप्रदे

विमः [न] रचना, विदा ।

विमद्वय [न] मूल देवता ।

विमद्वय [न] कुबदेवता ।

विमः [न] [पम] एही विमि

रहे न, यही, इस मोह

म, मय, संनिधि ।

विमः [न] लय, कुशरी ।

विमद्वय [न] लालन लाना ।

विमः [न] विमः रसो देव ।

विमद्वय [न] विमद्वय ।

विमद्वय [न] लालन लाना

विमद्वय [न] रसमही

विमः [न] लालन लाना

विमद्वय [न] लालन लाना

विमद्वय [न] लालन लाना के
तारी के रम, लाली ।

विमद्वय [न] विमद्वय, एव
राधा का नाम ।

विमद्वय [न] कुम ।

विमद्वय [न] लाल ।

ई

विमः [न] लाल, लालन ।

विमः [न] लाल लाली की
लाली ।

विमः [न] लाल, लालन, लाली
लाल लाल, लाल लाली की

विमद्वय लाल लाल लाल ।

विमः [न] लाल ।

विमः [न] लाल, लालन, लाली
लाली, लालन की लाली ।

विमः [न] लाल, लालन, लाली
लालन, लाल लाल ।

विमः [न] लालन, लालन ।

विमः [न] लाल, लालन, लाली

विमः [न] लाल, लालन, लाली
लाल, लालन लाल लाली

विमः [न] लालन ।

विमद्वय [न] लाल ।

विमः [न] लालन, लालन, लालन

उचितः (स) योग्य, सुनासिब ।

उद्यावत् (स) नागा प्रकार ।

उद्यः उद्यै, (स) जंघा, बड़ा ।

उद्यैर्भुजतरुः (वि० वनम्) जंघे
वृक्ष ही हैं भुजा जिसको ।

उद्यैयवाः (स) इन्द्र का घोड़ा ।

उच्छङ्गः उच्छङ्गः (स) गोदी, कोर,
तट, गोदा, उच्छङ्ग ।

उच्छङ्खलाः (स) उदासी, त्यागी ।

उच्छिष्टः (स) खा कर बचा
इष्टा, छूटा ।

उच्छिष्टोन्मूः (स) कठफुला,
कुकरमुत्ता ।

उच्छिन्नीभ्यातवाम् (वि० म-
हीम्) कठफुला हैं कृष
जिस का ।

उच्छूनः (स) सूखा इष्टा ।

उच्छ्रायः (स) उंघाई, चोटी ।

उच्छ्रासितः (स) खुसा इष्टा, खास
लेता इष्टा, प्रफुल्लित ।

उच्छ्रासः (स) खास ।

उच्छ्रासितः (स) खास लेते लेते
यखा इष्टा । [भरा इष्टा ।

उच्छ्रासितः (स) जंघी खासों से

उज्जयनीः { (प) उज्जयिन नगरी,
उज्जैनीः { पञ्जयन एक नगर
का नाम ।

उज्जरुपाः (द) रोग छानन,
सपेट काढ़ ।

उज्जागरः (स) प्रसिद्ध, उज्ज्वल,
यशस्वी, शोभित, नारा ।

उज्ज्वलः (स) सफ़ेद ।

उद्गुः (स) बिड़ङ्ग, ताडवर्त्तक,
तारागण, नक्षत्र । [गण ।

उद्गुगणः (स) तारागण, नक्षत्र

उद्गुपः (स) नीला, चन्द्रमा,
गरुड़, वराह ।

उद्गुम्बरः (स) गूबर । [उत्तंग ।

उतङ्गः (स) दीप, दिया, जंघा,

उतराईः (द) खेवाई, उवसाई ।

उतादलः (प) उताहुल, जलद ।

उतः (म) जंघा, जपर, धितक,
उदाई, दूर ।

उत्काटः (स) तण ।

उत्काः (स) चाहा भरा इष्टा (सह-
वचन उत्काः)

उत्काण्डः { (स) जंघराग, उम-
उत्काण्डाः { ग, अभिज्ञाप, खेद,
बाध, प्रेम ।

चत्कण्डित (स) बाव में दुखी ।

चत्कण्डाविरचितपदम् (वि०
१८८) बाव में रचे गए हैं
पद जिस के ।

चत्कण्डोष्णसिन्धुदया (वि०
सा) बाव से फूला है हृदय
जिस का ।

चत्कण्डः (स) बड़ा है ऐठपन,
चत्कण्डः (स) चत्कण्ड, मुख्य ।

चत्कण्ड (स) कावना ।

चत्कण्ड (स) इन में जीतना,
नपाड़ना ।

चत्कण्ड (स) चत्कण्ड, ऐठ, चत्कण्ड
विगिट चत्कण्ड ।

चत्कण्ड (स) विजय किया,
जीता हुआ ।

चत्कण्ड (स) खोटा हुआ ।

चत्कण्ड (स) मटुका, भूषण, गि
रोभूषण ।

चत्कण्ड (स) ऐठ, प्रधान, बहुत
चत्कण्ड, सुन्दर ।

चत्कण्डा (स) चत्कण्डी पुष्प ।

चत्कण्डा (स) मस्तक ।

चत्कण्डा (स) मस्तक (वि० दत्ता) ।

सुन्दर स्त्री हैं साथ जिसके ।

चत्कण्ड (स) { गीत, प्राय, चित्त,
(प) { मन्त्र, लंघ, उद्य
मा लंघ ।

चत्कण्ड (स) प्रति-
वाक्य, लवाव, चत्कण्ड
द्विगता ।

चत्कण्ड (स) मकर को सं-
क्रांति में मिथुन को संक्रां-
ति तक ।

चत्कण्ड (स) प्रति वाक्योत्तर,
लवाव का लवाव ।

चत्कण्ड (स) चत्कण्ड, लगा
कर । [हुआ ।

चत्कण्ड (स) चत्कण्ड, जाग-
र ।

चत्कण्ड (स) लाल रेंड ।

चत्कण्ड (स) चत्कण्ड कर ।

चत्कण्ड म कवर का पठ नू ।

चत्कण्ड उत्पन्न (स) लम्बा, ल-
मम, अवतार, पैदायम,
पैदा हुआ ।

चत्कण्ड (स) कमल, कंज, कीर्ति,
भूषण, मणि, गोलाकमल ।

चत्कण्ड चत्कण्डम् (स) कमल १
कविकार २ कूट ।

उत्पुल्ल (स) फुला हुआ ।

उत्पल (स) ऊपर की उठ तू ।

उत्पश्यामि (स) सोचता हूँ मैं ।

उत्पाद्य (स) उत्पन्न करके ।

उत्प्रेक्ष (स) दया कर निष्का-

सा हुआ ।

उद्योग (स) यत्न, इष्ट, युक्ति ।

उत्थङ्ग (स) गोद, कोख, कोर ।

उत्थीसा (स) गिरावणी, उ-

थीसा ।

उत्थङ्ग (स) गोद ।

उत्सर्ग (स) निष्कसना ।

उत्सर्ग (स) पर्यट करण ।

उत्पात } उपद्रव, प्रवृत्तात ।
उत्पात }

उत्सर्जन (स) दान ।

उत्सव (स) उत्साह, यज्ञ, पर्व,

पक्षीरज, पानन्द, पाल-

हाद जनक, व्यापार, वि-

दाहादि, खुशी । [नष्ट ।

उत्साद्यन्त (स) लुप्त, सोप, भ्रष्ट,

उत्साह-उत्साह (स) उद्योग,

यत्न, इष्ट, पानन्द, उद्यम,

प्रसाध्य ई साधन की

वामना ।

उत्सुक (स) चाह भरा हुआ ।

उत्सेक (स) बहुतात, बहुलता,

बढ़ती । [भीर उठाना ।

उत्सेप (स) फेंकना, ऊपर की

उत्साहवर्धन (स) वीररस ।

उदकी (स) ऋतुगुण स्त्री ।

उद-उदक (स) जल, नीर,

पानी-उत्तरदिशा, सन्निभ

पाथा ।

उदकम (स) पानी ।

उदकीर्य (स) परार ।

उदगारगोधन (स) ग्राहनीरा ।

उदच्छा (स) बहुत पानी मिखा

मठा दही का ।

उदघट-उदघाटी (स) प्रगटता,

ख्यात, मिन्नान, वा उद-

यावत्त की घाटी ।

उदङ्मुख (स) ऊपर भीर

मुख है जिस का ।

उदक्ष-उदीची (स) उत्तरदिशा-

उदन्त (स) संदेश ।

उद्यान (स) उद्योग । [गर ।

उदधि (स) लक्षधि, समुद्र, सा-

उत्कण्ठित (स) चाब में दुखी ।

उत्कण्ठाविरचितपदम् (वि०
इदम्) चाब में रचे गए हैं
पद जिस के ।

उत्कण्ठोच्चसितहृदया (नि०
सा) चाब से फूला है हृदय
जिस का ।

उत्कर्ष (म) बढ़ाई, श्रेष्ठपन,
उत्कर्ष (म) उत्तम, मुख्य ।

उत्क्रम्य (स) काँपना ।

उत्क्षय (म) जन से जातना,
उपाड़ना ।

उत्कृष्ट (म) उत्तम, श्रेष्ठ, उत्कर्ष
विशिष्ट, प्रतिमय ।

उत्क्रान्त (स) विमय किया,
लीता हुआ ।

उत्खान्त (म) खोदा हुआ ।

उत्तंस (म) मटुका, भूषण, शि-
रोभूषण ।

उत्तम (स) श्रेष्ठ, प्रधान, बहुत
पक्का, सुन्दर ।

उत्तमयन्ता (स) चमेरी पुष्प ।

उत्तमांग (स) भस्त्र ।

उत्तम जो सदाया (वि० यथा)

सुन्दर जो हैं माय जिम्मे ।

उत्तान- (म) { शीघ्र, चाय, चित्त,
(प) { समुद्र, ऊँच, उद्य
मा ऊँच ।

उत्तर भस्त्राया (स) प्रति-
वाक्य, जबाब, उत्तीची
दिगा ।

उत्तरायन (स) मकर की सं-
क्रांति से मेषुन की संक्रां-
ति तक ।

उत्तरोत्तर (स) प्रति वाक्योंत्तर,
जबाब का जबाब ।

उत्थाप्य (स) उठाकर, जगा
कर । (हुपा ।

उत्थित (स) उठा हुआ, जागा-

उत्तामपथकः (म) जान रेंड ।

उत्तीर्ण (म) उत्तर कर ।

उत्पत्त (स) उत्पत्ति की उत्पत्ति ।

उत्पत्ति-उत्पन्न (स) जन्म, उ-
त्पत्ति, अवतार, पैदायश,
पैदा हुआ ।

उत्पन्न (स) कमल, कंज, कीर्ति,
भूषण, मणि, भीलाभमल ।

उत्पन्न उत्पन्नम् (स) कमल ।
कविचार रे सुंदर ।

चतुष्पुल्ल (स) फुला हुआ ।

चतुष्पत्त (स) ऊपर की चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्तमि (स) सोचता हूँ मैं ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त करके ।

चतुष्पत्त (स) दया कर निष्ठा-

साधना ।

चतुष्पत्त (स) यत्न, इष्ट, युक्ति ।

चतुष्पत्त (स) गोद, कोख, कोर ।

चतुष्पत्त (स) गिरहणी, स-

शीसा ।

चतुष्पत्त (स) गोद ।

चतुष्पत्त (स) निष्कलना ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त करण ।

चतुष्पत्त } चतुष्पत्त, चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्त } चतुष्पत्त, चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्त (स) दान ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त, यत्न, पक्ष,

पक्षीरज, चानन्द, चाल-

साद जनक, व्यापार, वि-

दाहादि, सुखी । [नष्ट ।

चतुष्पत्त (स) लुप्त, सोप, अष्ट,

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त, चतुष्पत्त,

यत्न, इष्ट, चानन्द, चतुष्पत्त,

चतुष्पत्त के साधन की

वाचना ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त भरा हुआ ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त, चतुष्पत्त,

चतुष्पत्त । [भीर चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त, ऊपर की

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त स्त्री ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त, नीर,

पानी, चतुष्पत्त, सन्निव

पाया ।

चतुष्पत्त (स) पानी ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त पानी मिठा

मठा दही का ।

चतुष्पत्त-चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त,

चतुष्पत्त, मिठा, वा चतुष्पत्त-

चतुष्पत्त की चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त भीर

मुख है जिस का ।

चतुष्पत्त-चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त-

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त । [गर ।

चतुष्पत्त (स) चतुष्पत्त, चतुष्पत्त, चतुष्पत्त-

उत्कृष्टित (स) चाव में दुधो ।

उत्कृष्टादिरचितपदम् (वि०
इदम्) चाव में रचे गए हैं
पद जिस के ।

उत्कृष्टीर्धमिगुदया (वि०
मा) चाव से फूला है गुदय
जिस का ।

उत्कृष्टे (म) बड़ाई, येठवन,
उत्कृष्टे (म) उत्तम, सुध ।

उत्कृष्ट (म) कावना ।

उत्कृष्ट (म) जल में जोतना,
जवाड़ना ।

उत्कृष्ट (म) उत्तम, येठ, उत्कृष्ट
विगिट, पतिघात ।

उत्कृष्ट (म) विभय किया,
जोना दुप ।

उत्कृष्ट (म) छोटा दुप ।

उत्कृष्ट (म) मटुल, सुधन, मि
होमपुव ।

उत्कृष्ट (म) येठ, प्रधान, बहुत
चच्छा, सुलर ।

उत्कृष्ट (म) चमकी दुध ।

उत्कृष्ट (म) मल्ल ।

उत्कृष्ट (म) उदाया (वि दला)

सुन्दर जो है साथ जिसके ।

उत्ताम (म) { गीत, पाग, चित,
(प) मन्मुख, लंघ, उग्र
मा लंघ ।

उत्तर उत्तराग्रा (म) प्रति-
वाक्य, लबाव, उन्नीची
दिशा ।

उत्तरायन (म) मकर को सं-
क्रांति में मिथुन को संक्रां-
ति तक ।

उत्तरोत्तर (म) प्रति वाक्योत्तर,
लबाव का लबाव ।

उत्थाप्य (म) उठाकर, लगा
कर । (दुप ।

उत्थित (म) उठादुप, जागा-
उत्थापयक (म) लास रेड ।

उत्थीर्य (म) उत्तर कर ।

उत्थत (म) उत्तर का उठानू ।

उत्थति उत्थव (म) उत्थ, अ-
जम, चरता, पेदायम,
पेदा दुप ।

उत्थ (म) कमल, लंघ, कीर्ति,
भूध, मवि, नीलाचमल ।

उत्थ उत्थम् (म) कमल है
कथिवा २ कुट ।

उत्तम. (स) सुता इषा ।

दासगा !

ਭਗਵੰਤ (ਸ) ਵੱਧਰ ਵੀ ਬਠ ਨ੍ਹ।

उक्त क. (न) चाए गरारुपा ।

सत्यमि. (स) सो एता हं मे ।

उत्तरक. (म) बहतात, बहताता,

સત્યાય. (સ) સત્યમ કરહે ।

ਬਠਤੀ । [ਘੋਰ ਚਠਾਨਾ ।

उत्प्रेष. (स) दद्या कर निष्ठा.

सतधेप (स) फेंकना, लपर की

साइया ।

उत्तराखण्ड- (म) बीएस ।

સહોત. (૪) ચત્ર, હર્ષ, યજ્ઞિ ।

उदकी (स) चतसृषा स्त्री ।

उत्तरार्द्ध (स) गोद, खोख, वीर ।

उद. घटक (स) लख. नीर.

ਭਲਾਈਸ਼ਾ. (ਸ) ਬਿਰਧਸ਼ੀ. ਈ-

पानी, हृत्तरदिशा, सनिष

ਧੀਰਾ ।

... ପାଞ୍ଚା ।

सहस्र- (स) गीत ।

पटकन (स) पागो ।

सत्सर्ग. (स) निःसर्गः ।

सुदकीर्य (५) परा।

हस्तानि (स) पर्यन्तं कल्प .

सद्व्यवस्था (स) गृहविभाग।

सत्पातः } सपद्रव, पञ्चजातः ।
 सतपातः }

उद्देश्य (९) बहुत पानी मिखा

સત્સર્વન. (૪) દાન ।

सदस्य-उदघाटी- (स) प्रगटना.

हस्त- (म) उक्ताह, यज्ञ, पर्व,

સ્થાત, નિજાન, વા હટ-

सधीरन, सानन्द, सालु.

याचत की घाटी ।

शाह जनक, व्यापार, वि

४६६५५५ (४) लपर श्री

दाहादि, खुमी । [मह]

मुख है जिस का ।

सत्तायन्तः (स) तुम, सोप, भेट,

उद्घ-सदीषी- (स) उत्तरदिगा.

ଶ୍ରୀମତୀ. ଚନ୍ଦ୍ରାଘ (୫) ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର,

उदन्त (स) संदेश ।

यज्ञ, इर्ष, धानन्द, सुखम्,

सत्यान (रु) सद्योग । गिर ।

ਦਸਾਖੀ ਦੇ ਸਾਖੀ ਕੀ

उदधि. (स) जलधि, समुद्र, सा.

८५५ (५) पृथक् ।

ବହୁଧର୍ମ (କ) ବହୁଧର୍ମ, ବାସ୍ତବିକ ।

ବହୁ (କ) ଛଦନା ପ୍ରତି ଲକ୍ଷଣ,
ଲକ୍ଷଣ ।

सद्विचारवश (ए) परमार्थ ज्ञान :

अद्वयनिर्दिष्टः (२) अद्वयानन्दः ।

अहमद (५) काग है एक राजा।
का अहमद गजराज।

अथ यथाशक्त्या विदुषा मनुजैः

(वि० अरकोट) ; अष्टम वर्ष

અવધાઈ આ મલ્લ જાનને

कान्ही से सम्बन्ध करके लकी

ॐ नमः । (४, अंगक)

अवध : पेट, कलर, ३ डी बूट

क. ३६३.६ (६) अर्द्धशतक

निष्कर्षः

중국어, 제 4권, 4월호, 1991년 4월

ਅੰਕ ੧੦: 'ਅ' ਕੁਝੀ, ਆਲੋਚਨਾ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

《古詩集》（明），《明倫彙編》，卷一百一十一，

१०५५३, १०५५४, १०५५५, १०५५६,

१३. १३३३, १३३३, १३३३, १३३३.

Figure 1

한글: 1945년 8월 15일, 8월 15일

उद।व।ए. (म) दृष्टान्त ।

तद्वान् (स) कंठ की वायु ।

महः (स) बलशोरो ।

जदास (न) विपरवर्ती ।

जदाभी जदानीन (स) यत्तु

મિત્ર માનરહિત જન, સં.

अधी, मधु. वजन, न

गुण न मिल ।

सहित (अ) मध्य, आनिर्भूत ।

सङ्कलनः (ग) भा.स. ।

उद्दीची (म) सुगन्धवासा ।

अद्वैतान्. (स) सूत्र ।

कनकमकर (५) कनक, कनक,

कथं, तस्मात् सातु ।

मनुष्यवर्ग (म) सामाजिकी

बहुमान्यः यः शान्तः ।

ਸਦਾਸਾਧੁਕਾਮਾ : ੪ ਗੁਣੇ ਵੀ

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अद्वैत (४) उद्धार, अमल,

ब्रह्म, श्रीकृष्ण, महात्म

१. चन्द्रमणिम् (४) चन्द्रमणिम्

ଅବସ୍ଥା ସମ୍ବନ୍ଧରେ କିଛି ସୂଚନା

1990

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

उद्गृहीत (स) ऊपर की उठा
हुआ ।

उद्गृहीतानुक्तानाः, (वि० व०
निताः) ऊपर की उठाए
पक्षों के छोर जिन्होंने ।

उद्गृह्ण (स) घिसना, रगड़ना ।

उद्गम (स) वेमझोट, खुले
बन्धन । [हुआ ।

उद्दिष्ट (स) कहा हुआ दिखलाया
उद्भूत (स) दिखाया हुआ,
भड़काया हुआ ।

उद्भूतपापाः, (वि० पद्वानाः)
हिस गये हैं पक्षवा दूर
हए हैं पाप लिखे हैं ।

उद्यत (स) तैयार, उपस्थित ।

उद्दीपन (स) प्रज्वलन, प्रकाशन ।

उद्देश (स) इकाशन ।

उद्देशः १ उच्चाट, उटपटी, भट
उद्देशः २ उत्कण्ठ, ईर्ष्या ।

उद्देश (स) उत्पत्ति, उत्पन्न ।

उद्दिष्ट (स) समीप की
हर की पानी का धारा
होय ।

उद्दिष्ट (स) हवादि के जो हवा
तोड़ कर उड़ते हैं ।

उद्यम (स) उद्योग, उपाय,
व्यापार । [हित ।

उद्यान (स) उपवन, बागोचा,

उद्योग (स) यत्न, उपाय, तद-
वीर ।

उद्गीर्ण (स) उद्घटना ।

उद्गृह (स) पुत्र ।

उद्देष्टव्य (स) बोधने योग्य ।

उद्देश (स) पारिपश्य, वि-
वाह, व्याह । [उत्कण्ठा ।

उद्देश (स) व्याकुलता, मय,

उद्भूत (स) उन्मा, ऊपर ।

उद्धार (स) मुक्ति ।

उद्गति (स) हृदि, तरङ्गी ।

उद्भिन्न (स) लाती रही है नोंद
जिस को ।

उद्भूत (स) विदित, शीराह,
मतवाला, पागल, धतूरा ।

उद्भाद (स) चित्तविभन्न, पा-
गलपन, चित्त का विदित,
होना । [है जिस का ।

उद्भूत (स) ऊपर की ओर मुख

उन्मेष (स) बुद्धि, ज्ञान, पक्ष,
उद्ग, पक्ष का दोहा

समकला ।

उप-उप- (स) उपसर्ग, समीप,
न्यून, बनाया ।

उपकण्ठ (स) तट, तीर ।

उपकथा (स) अवसरवार, क
हानी बनाई । द्वारा ।

उपकार (स) सहाय, मदद, स

उपकारक (स) उपकारी, सहा
यक, मददगार ।

उपकाशिका (स) व्याज-भीरा ।

उपकुञ्चिका (स) अपघटा इत्या
यची १ मगरैला २ ।

उपकुञ्ची (स) मगरैला ।

उपकुञ्चा (स) पोवर ।

उपकर्तुम्, उपकार करने को
मंदारा देने को ।

उपगत, (स) निजादुपा, पास
पहुँचा हुआ ।

उपगम, (स) पास पहुँचना ।

उपगूट, (स) छातीसे लगाना ।

उपहार- (स) प्रभुत, दिव्यत
युक्ति, कथन, उपाय सेवा,

मन्त्र प्रयोग ।

उपचित, (स) इच्छा, बढ़ा

- दुपा, रवा-दुपा ।

उपचितरवाः, (वि० 'ते) बढी
हुई चमिन्ताया वाले ।

उपचितवस्त्रिन्- (वि० चरणव्या-
सम्) ली गई है, पूजा जिस
की । [पड़वाला ।

उपचितवपुः, (वित्तम्) बढे हुए

उपजिगमियु, (स) पास जाने
का इच्छा माने ।

उपदेय (स) घातमय रोग ।

उपदेय- (स) हित अध्ययन, नवि-
हित, सिखाना ।

उपद्रव (स) उपाधि, उत्पात,
प्रसाद । [नही ।

उपचिता (स) बड़ा तामा

उपतट, (स) किनारा, तट ।

उपाय, (स) सेवा, मन्त्र प्रयोग ।

उपधातु- (स) समीप धातु,

लघु धातु, बनाया धातु,

मोना मक्की, कृपा मक्की,

तुलुहिया, चाँवा, पीतक,

सेदुर, गिलाजित, आदि ।

उपधान- (स) गिरहनी, तबिया

उपनिषद्- (स) वेदान्त शास्त्र,

वेटका ररस्य भाग ।

उपपातक (स) सजुपाप ।

नहापाप, होटेपाप ।

उपपाटन (स) सम्पाटन, सं-

यष्ट, सज्जट, वनाया यन ।

उपपाद्य (स) किये जाने के

योग्य ।

उपपन्न (स) दुःख, पीडा ।

उपवन (स) समोपवन, सधु-

वन, वाटिका, मनवि-

यान के निमित्त बन,

विहार करने की वाटि-

का, बाग़ीचा ।

उपवर्द्ध-उपवर्द्धना (स) शिर-

दही, वाक्निम्न, राजावि-

श्रेष्ठ, तद्विद्या, उपधन ।

उपवाम (स) उपवाम, निर-

उपवामा) दार भूषारदना ।

उपविद्य (स) संख्येन, सुठरि-

या सील, करिदारी, खन-

रस, धतूरा, पादि उप-

विद्य है । [निम्न ।

उपधीत (स) यज्ञोपनीत, ल-

उपभोग (स) विषयों का

मुखास्वादग ।

उपमा, (स) दृष्टान्त, पटतर ।

उपविद्या (स) पत्नी ।

उपमाग (स) साटमय ।

उपमेय (स) उपमा के योग्य ।

उपयम-उपयमन (स) पाणि

पट्ट, विवाह ।

उपयुज्य (स) लेकर, पीकर ।

उपरस्र (स) हाँस, फिटकि-

रिषा पत्तर, गीप, ग्रंथ,

पाटि ।

उपरति (स) शान्ति, विरती,

परमानन्दा, तीसरा पट

सम्पति भी पत्तर बाह्य-

उभय इन्द्रियों का वेग एक

रस, घोर रहना ।

उपरमः (स) गन्धक, सिंगरिफ,

अबरख, हरतास, मयन-

मिल, सुरमा, सोहागा, सु-

न्धक, फिटकिरी, धरी, ख-

परिया, संग्रराहत, नेह,

जामोस, कौड़ी, बोंस,

बाजू, कौड़वा, सुरठी,

मांटी, संख, पिहड़ी, यज्ञ

उपरस है ।

उपराग (म) { मूल्यादि सह-
उपरागा (प) { य, चङ्गीकार
अक्षरणा, दू

पण, गहन, अन्ध निवृत्ति ।

उपराजा (स) उपजाया, उप-
राजना । [ग्य, त्याग ।

उपराम (म) परिणाम, बैरा-
उपरि (स) ऊपर ।

उपरोध (म) सहायता, गौरव ।
उपर्षा (स) एकपट्टा वस्त्र,
अंधसा ।

उपश (म) जलबगोरी, पत्य-
लपकायो, भेल, गिरी,
पर्वत, शिवासमान, पत्यर,
पात्यर ।

उपशब्धि (म) बुद्धि ज्ञान ।

उपशब्ध (स) ज्ञान ।

उपशम (म) शमीचा ।

उपस (म) शिङ्गरुन्दी, स्त्री वा
पुरुष चिह्न ।

उपस्थित (म) मौजूद, हालिरा

उपसर्ग (म) पावनमन । [द्रव ।

उपसर्ग (स) अज्ञानज्ञ, उप-

उपहार (स) उपात, भोजन
वस्तु, सत्कार, भेंट, पूजा,
नेवेद्य, नम्र ।

उपहास (म) चट्टा, ठट्टा,
हास्य, परिहास, हंसी ।

उपाटो, (प) उपाङ्गना, उपा-
ङ्ग से उपाटना ।

उपाद-उपादय (स) पदव,
अंगव, चङ्गीकार ।

उपादान (स) कारण, विशेष,
पदव । [प्रव ।

उपाध (म) उपद्रव, अन्याय,
उपाध्याय (म) जो जोरें वेद,

और वेदांग को पढ़ावे,
ऐसा गुरु, पढ़ाने वाला ।

उपाधि (स) धर्म ध्यान, जल,
पदवी, उदारण, समीप

प्राप्ति, कपट, माया, उपद्रव,
उपाधी (स) अन्यायी, अधर्मी,

समीपप्राप्ति, बुद्धि, प्रेरक,
उपद्रवी, उदारण, उदार-

करण, तारण ।

उपानत-उपानह (स) पनही,
पादुका, जूती ।

१. अमाद अमासति (ह)
 २. अमारि अमारि (न)

133 (2) 241

જામા (મ) મેઢા ।

नदम (म) कातो, कनेमा ।

કુલ અનામત (સ) માત્ર, ચંપા ।

अथान्न (स) हृदयनाभी, हृदय
हृदये च ।

नदीकर्म (अ) संकीर्ण ।

ਅੰਕ (੧) ਖਾਸ ਵਿਸ਼ੇਸ਼, ਕਾ/ਧ,

जंवा, यद्विषयः ।

नवग्रह (अ + न। न रेड्)

बहीब न' ५११

१४३३ (अ) बहुरूपीय बहुरूपीय
१४३३ (अ) बहुरूपीय बहुरूपीय

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ਸ੍ਰੀ (ਸ ਮਰਨੀ ਸ਼੍ਰੀ ਮ

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

महोदय

[illegible][illegible]

କୌ ବିବାହ, କୌଣସି କାଳ

7-5-45

समीक्षा समीक्षा (प) बाविलि
 ज्ञान, उपलब्धि, ज्ञानात्मक,
 समीक्षा ।

नमूना नमूना (म) नमूना, देना
पत्नी, नमूना, यमुना, नमूना
या पत्नी, जो दिन में नहीं
देता।

समस्तपत्रिका (ग) मृगुल १

नलगी (स) म.न. म.प्र. म.प्र.

नमः । (म) चित्तगोरी, पतङ्ग ।

नक्षत्रास्तयितव्यमभीवाचमाहः,
(वि० देवाग्निः) चित्तमा-
दिगो मे ज्ञानादियेषु तम-
वी शृणोती मृगं मे वास-
नित्तमे ।

अज्ञात (म) कलाया वृत्ता ।
 अथ न ह्यन्यथा चान्यथा,
 प्रत्यक्ष ।

कथञ्च (स) गमोर्वचन, का.भी।
नमनः स मुक्तवत्॥

[illegible]

कर्मोत्तर (३) शिवचरणी, बालिका

अथवा, यः कर्तुं शक्यते ।

কর্তব্য (৭) প্রাণ, অদ্বৈত।

सोभता मरुत, मोषा ।

कृष्ण (स) कर्म, मार, सधार ।

कृतम् (स) मत्त, माष ।

कृतु (स) वसंत, शीष्ण, वर्षा,
शरद, हेमंत, मिशिर,
दो दा मास विशेष, स्नि-
यो का रक्षोधर्म, शोषमं
होना । [वासी स्त्री ।

कृतुमती (स) रत्नमती, देव

कृद् (ट) कृद्धि ।

कृतुगत्र (स) वसन्त काल,
वसंत कृतु मीन, मेघ,
दो मास ।

कृतुविज (स) यज्ञकरनेवाला ।

कृते- (स) विदूत, मित, वि-
ना, चलन, सिवाय ।

कृदि (स) धन, सम्पत्ति,
चोपनी, साधार, श्रुति,
उपसर्ग, धनदोषत, कृदि
इसके न मिलने में विस्तार
कन्द ।

कृपम (स) चोट ।

कृपमः (स) गेह, बैल ।

कृपमक (स) कृपमक इस के

न मिलने में विस्तारकन्द ।

कृपि (स) मुनि, वेद, पादि
ग्रास्त वेद का जानने
वाला मुनि । .

कृपिक (स) इन्द्रो, गङ्गरथ ।

कृपि (स) यज्ञ, करवाण,
यज्ञ, पाषाण्य ।

कृपमूक (स) गाम पर्वत,
सुषोष स्थान । [हरिन ।

कृपः (स) काका पण्ड का

कृप्या (स) देसो सतावर ।
कंगदिपा ।

कृत्त (स) भागू, राजा, जघ
न, रीछ, हिमंज्रा भण्ड्या
वाचक । १ ।

कृत्तेश (स) नास्वत्त, भागू,
भाष ।

कृ

क- (स) देवताओं को माता ।

कृतुविमादिषट् ॥ ६॥ (स)

विज कृतु पचक्य पूष ।

मिशिरकृतु माघ कागु-

न ॥ वसन्तकृतु मेष

वेगाय ॥ यीपम चतु ज्येष्ठ
चपाट ॥ वर्षाचतु था-
वष भादो ॥ शरदचतु
पाम्बिन कार्ति ॥ ६ ॥
दो ॥ पाम्बिन कार्ति ॥
शरद चतु, चगहन पुष
हिमनाल ॥ माघ फागुन
मिशिर कहत, मधु माघ
चतुराज ॥ ११ ॥ ज्येष्ठ चपा-
टहि यीपमहि, वर्षा चतु
हिमाम ॥ ए हो चतु, प
मिहं है, वेद हि कियो
प्रकाश ॥ २ ॥

श्रुति (स), मुनि, तपस्वी, यति ।

ए

एक (द) एकही, मुख्य, प्रथम ।
एकव (स) एकठा, एक जगह ।
एकटा (स) एक समय ।
एकधा (स) एक प्रकार, एक
तरह ।

एकरस दृष्टिकारहित अर्थात्
कामादि विचार से रहित
घटभाव विचार रहित ।
एकतन (स) एकदंती, टोंकरी

कोई जगह द्वारे दूसरा नहीं
एकदंत (स) गणेश ।
एकपत्री (द) पतिव्रता ।
एकवेणी (स) सब बालों का
एक जुड़ा ।

एकस्य (स) एकठा ।
एकाकी-एकाकिन्द-एकाकिन(स)
एकना, त्यागी, चडेसा ।
एकाग्र (स) एक चित्त, एक
मन, पाविट, स्वस्थ, अर्थात्
विशेषरहित ज्ञान जो और
विषयों से दटा कर एक
विषय में लगा हो ।

एकादश (स) ग्यारह, ११ संख्या ।

एकान्त (स) निर्जनस्थान,
अलहदह, सुन्य स्थान ।

एकान्तः (स) चडेसा, निरन्तर ।

एकाग्रन (स) हृष्ट, तब, एका-
एक ।

एकाटीना (स) पाठ १ बड़ी
मोनमरी २ । [बाला ।

एकाग्र (स) हाथा, एक पांख
एकः एक (स) हरिद मावज,
नग, दाखारंग का हरिद,

अथवा । [निम्नतः ।

प्रीति (म) उत्तम कला.

बोधायनः (न) महत् ।

सोद्वय (स) गुणरफल १

तादिवा भातु २ पेसा भर २ ।

બોદિદત્ત: (મ) રજ મિત્રો ।

ਬੀਨਿੰਦੁਲਾਖਕ (ਸ) ਕਾਮੀਨ

ਫੀਡ ਅਰ ਜੀ ਪਾਨੀ ਜਾ

ખાદ્ય નિબધે, [મુક્તા ।

ਬੀ. ਐਲ. (ਸ) ਸੁਲਥਾਗ, ਜਥੇ

ਘੋੜ (੪) ਘੋੜ ।

बोहाद (क) समाप्त, पृष्ठ ।

ਬੀ.ਐਚ. (੮) ਵਿਸ਼ਾ, ਸਮਝ,

सुट्टिका, गीत ,

पौष (म) द्वादश ।

ॐ

संख्या (४) गव. प. दि. गि. सी.

बभ्रु, मही । अग ।

संख्या (४) ४५८ यादि, राज्याबा

ସଂସ୍କୃତ (କ) ସଂସ୍କୃତ ।

संक्षेप (१) कृतम् ।

ਧੰਨ ਬਲਾ (੧) ਸਾਗਾ, ਸਨਾਗੇ

अथर्ववेदः ।

ସଂଗ୍ରହ (୧) ଯାହା ।

અંશ : (૧) હા, આજાય ।

अथर्वीय (स) एक राजा ।

अ. ३३

ਧੰਬੁ (ਸ) ਨਾਮ, ਪਾਨੀ ।

अंबुधर (५) सैध, बान्हर ।

अंशुषि
 अंशुमिधि
 अंशुवलि

असुद्र ।

अनुवृत्ति (अ) अक्षर, अक्षर ।

अंभोपर (म) बाटण ।

संभोज (म) कागस्य ।

પાંજરા (૪) ને ચમકાવવા ।

शुद्धि (५) संज्ञक शब्दाः ।

पूजा कर दे ।

ਪੰਛ (੧) ਸਦਾ, ਅੰਡਾ ।

पृष्ठकटिब (म) मध्यम ।

અલ્પજ્ઞતાથી (મ) સુધારાથી

અન્ય (મ) મિદ, મોતર, (જા

प्रा.स.सं.सं. (स) स.स.स.स.स.

योगशास्त्र
 योगशास्त्र

ਘਨਰਹਿਤ (੪) ਘਨਰਹਿਤ, ਲਿ

सुमः ।

५. लक्ष्मणजी (५) मरने के अनन्तर

अंतावरि (स) अंतही, आंत,
अन्त अनूद ।

अंदा-अंदा (द) आंदा, माता ।

क

क (म) काकाःसंघा, नक्षत्रसंघा,
गिर ।

कं (म) कुच, लज्ज, अनज,
ग्रीष्म, काम, लक्षण, पा-
लाय ।

कः (म) कौन ।

कंठ (म) कण्ठ का नामा, उप-
मेन का बेटा, कांसीधातु ।

कंठ (द) कहीं, कोई लगद,
कोईठाम । [कण्ठ ।

कंठारि (म) विष्णु, नारायण,
कच्छपद (स) कैवड़ा ।

कंठारः (म) भूरा कोईड़ा ।

ककुल (स) हल्ल, पेड़, टली ।

ककुत्स्थ (स) भागीरथ पुत्र,
देव । [मिखा ।

ककुद (म) रात्रिदिह, पर्वत

ककुदनी (स) मासकौनी ।

ककुम (स) दिग्, पीर, दिगा,

हृत्त विशेष पर्वत्त पर्वत ।

ककुमः (स) ककुमा । [वगुण ।

ककुरी (प) कांस, कोष,

ककु (म) दनिद्र, वगुना पत्रो,

कुही, पत्नी विशेष, मिह

ममान । [वासा ।

ककुद (प) ककुप, कड़ा,

ककुतिका (म) ककुदिपा ।

ककुवन्ध (म) लल, नीर, पप ।

ककु (म) कुरी, पत्नी ।

ककुठः (स) कौदवा ।

ककुलि (म) पयोक ।

ककुल (स) कंकाल ।

ककु (म) मासकौनी ।

ककु (म) } कौनी ।
ककु (स) }

ककु (फ) { पर्वत मिखर,
(प) { मन्दिरादिकटि-
(खोर, दुर्ल, गुंजन ।

ककु (स) बाल, हेश, रोम,
नेत्र, वादन ।

ककुललान (द) बाल का
जीव, टील, हेश, गुंजन, यूय ।

ककुल (स) कभी ।

कसुलि कसुलि (ट) कुचाको,

कुपाटी, बाढ़ ।

कसटः (स) चवराई भाग ।

कसूरः (स) कचूर ।

कसू (स) बग, अद्रम ।

कसूक (स) तून हथ ।

कसूपा-कसू (स) { बहुपा,
(व) { नामनि
धि ।

कसूरा (स) अवासा । दुरा-
सभा ।

कस (को) बाड़ा, टेढ़ा ।

कसक कसकगिरि (स) चंजन,
काजक, सूत्रमा पर्वत ।

कसुन (स) सुवर्ण, कर्ण, सोना ।

कसितः (व) घोड़ा, कस, पत्त ।

कसक (ट) केनेयी ।

कसु (व) मंथराजा, बोली,
चंगिया ।

कसु (स) कसक, पत्त ।

कट (स) कसर, कटि, काँड़ ।

कटहटेरी (स) दाबकसूदी ।

कटकस (स) कायकस ।

कटमी [स] माकलीनी, ।
करही २ ।

कटभरा [स] मोनपत्ता, ।

गन्धपसारणी २३ करही ।

कटसारिका [स] सुपेदफुल
का कटसरैया ।

कटु [स] मोनपत्ता ।

कटक कटाक. कटकाई [स]
दल मेना, वाता, 'कडा',
फोज, खहुंया ।

कटाई [स] कसा, कडाही
पात, डण्डा, दिम्तार, क-
साह, कोप ।

कटाच [स] भूकली, तीक्ष्ण-
चितवन, माझातकन, ति-
रकीमजर, तिरकी चित-
वन ।

कटि [स] काँड़, कसर, कट,
कसुपा, कसिवात ।

कटिपू [स] कसरमो, कस-
र को दारी ।

कटिपूर [व] ग्यामबहरी ।

कटिनी [व] खरी लिखने का ।

कटिम [व] करैला । [कडा ।

कटिमक [स] जाल गदहप-
कटी [स] एकाद्री ।

कटो. [म] खोदनीनां । कुट-
कोर । [कटुपा ।
कटु. [म] ककदा, तीता, ककपा
कटरानी. [म] तीतरनन ।
कटुसुखीर. [म] तीतासुखा,
तीता कटु ककपाव ।
कटुकछेर. [म] मरभो का नेस ।
कटुका [म] कुटकी ।
कटुतिक्त [म] बिरेता ।
कटुतिक. [म] धौठ, पीपर,
मिरीच ।
कटुसुखी. [म] तीता खोटा ।
कटुगद्र [म] धौठ, पदरस ।
कटुगोहिणी. [म] कुटकी ।
कटिहार कटिहार. [द] मसा-
ह, मांझी, कपेधार ।
कण्डक. [म] पोम ।
कपा कपी [म] टुकड़ा, खूर्च,
बुखनी, बूंद ।
कपा. [म] कपुषीपनि, पीपर,
कपिका, नेम, मकरा, सु-
पेदनीरा ।
कपिका. (म) छोटी बूंद ।
कपासूल. [म] पिपरनामू ।

कण्ठ. कण्ठक [म] मरु, बैरी,
मांझा ।
कण्ठकाया (म) कुटुम्ब १
मिमर वृक्ष । २ ।
कण्ठकारी (म) शमनी ।
कण्ठकारी फल (म) शमनी
के फल ।
कण्ठकिनी (म) रेमनी ।
कण्ठकी. (म) नपटाई ।
कण्ठफल. (म) कटुफल ।
कण्ठकीफल (म) धीरा दोनों ।
कण्ठफला. (म) कुटकी ।
कण्ठवी (म) खयरवृक्ष ।
कण्ठाभिका. (म) शमनी ।
कठोर (म) कठिन, दृढ़, पुट,
निर्देय, क्रूर, समुत्त ।
कण्ठ (म) गला, कटुभा, गर-
दन ।
कण्ठपुत्रिः. (वि० त्वम्) गले
की सो कृषि है जिस में ।
कण्ठपुत्रभुजसतापन्य. (वि०
उपगूढम्) कुट गई है मसे
मे दाँद सता की गाँठ
जिस में ।

कसुति कसवति (ट) कुपातो.

कुपाटी, बाढ़ ।

कसटः (स) चवराई भाग ।

कसूरः (स) कसूर ।

कसूर (स) बग, अद्वैत ।

कसूरक (स) तून सस ।

कसूरप कसूर (स) { बहुपा,
(प) { नामनि
धि ।

कसूरार (स) अवासा । दुरा-
सभा ।

कस (फो) बाढ़ा, टेढ़ा ।

कसक कसकगिरि (स) चंजन,
काजल, सुरमा पर्वत ।

कसून (स) सुवर्ण, सूर्य, सोना ।

कसित् (प) थोड़ा, कम, थोड़ा ।

कसूर (ट) बेबेयी ।

कसु (स) शंखवाजा, बीली,
चंगिया ।

कसूर (स) कमल, पद्म ।

कट (स) कमर, कटि, फाँड़ ।

कटकटेरी (स) दाढ़कट्टी ।

कटफल (स) कायफल ।

कटभी [स] मासकीनी, १
करही २ ।

कटभरा [स] मोनपत्ता, १

गन्धपसारणी २३ करही ।

कटसारिका [स] सुयेदफल

का कटसरैया ।

कटूर [स] मोनपत्ता ।

कटक कटाक कटकार [स]

दल, मेना, वाता, कडा,

फोड़, चहुंघा ।

कटाह [स] कला, कडाही

पात, दण्डा, विस्तार, क-

हाह, कोम ।

कटास [स] भूतकी, तीर्था-

चितवन, बाह्यातकन, ति-

रहीनगर, तिरकी चित-

वन ।

कटि [स] फाँड़, कमर, कट,

बहुपा, करिदावि ।

कटिपूष [स] करधनी, कम-

र की डारी ।

कटिचर [स] ग्यामबर्ही ।

कटिनी [स] खरी लिखने का ।

कटिल [स] करैला । [कटा ।

कटिलक [स] जाल गदहप-

कटो [स] एकाङ्को ।

कट्टी. [स] घोषघीनो १ कुट-
लीर । [कट्टपा ।

कट्ट. [स] कुरुवा, तीता, कडुपा
कट्टहानी. [स] तीतवचन ।

कट्टुम्बोर. [म] तीतातुम्बा,
तीता कडु, कलपाच ।

कट्टुकसेह. [स] सरसो का तेष ।

कट्टुका. [न] कुटची ।

कट्टुतिह. [म] बिरैता ।

कट्टुतिक. [स] सीठ, पीपर,
मिरीच ।

कट्टुतुम्बी. [स] तिता सीका ।

कट्टुभद्र. [स] सीठ, पदरख ।

कट्टुगोहिणी. [न] कुटकी ।

कट्टिहार कट्टिहार. [द] मला-
ह, मांझी, कपीधार ।

कट्टक. [स] पोस ।

कट्ट कट्टी. [स] टुलुहा, दूर्ण,
बुबनी, बूंद ।

कट्टा. [स] कट्टुपीपलि, पीपर,
कपिहा, जेय, मकरा, सु-
पेदलीरा ।

कट्टिका. (न) कोटी बूंद ।

कट्टान्न [म] पिपरनाम् ।

कण्ड. कण्डक. [स] मतु, बैरी,
कांटा ।

कण्डकाया (म) कुब्जक १
मिमर वृक्ष । २ ।

कण्डकारी (स) रेगनी ।

कण्डकारो फल (स) रेगनी
के फल ।

कण्डकिनी. (म) रेगनी ।

कण्डको. (स) कण्डार्द्र ।

कण्डफल. (स) कटहल ।

कण्डकीफल. (म) खीरा दोनों ।

कण्डकहा. (स) कुटकी ।

कण्डवी. (म) खयरवृक्ष ।

कण्डासिखा. (म) रेगनी ।

कठोर. (म) कठिन, दृढ़, पुट,
निर्द्वय, कूर, सखुत ।

कण्ड (म) गला, 'कडुबा, गर-
दन ।

कण्ड्युविः, (वि. त्वम्) गले
की सो हवि है निम में ।

कण्ड्युतभुजसतापन्य. (वि.
उपगूढम्) कुट गई है गले
में दाँद सता की गाँठ
जिस में ।

कचुसि कचयसि (ट) कुपातो.

कुपाटी, बाढ़ ।

कचुटः (स) चवराई साग ।

कचूरः (स) कचूर ।

कच्छ (स) धन, जङ्गल ।

कच्छक (स) तून घुघ ।

कच्छप कच्छ (स) { कहुपा,
(प) { नामनि
धि ।

कच्छुरा (स) जवासा १ दुरा-
लभा ।

कज (को) बाढ़ा, टेढ़ा ।

कज्जल कज्जलगिरि (स) शंजन,
आजल, सूरमा पर्यंत ।

कखन (स) सुवर्ण, स्वर्ण, सोना ।

कखित् (प) थोड़ा, कम, घटप ।

कइकर (ट) केहेयो ।

कखु (स) शंखवाजा, चोली,
शंगिया ।

कख (स) कमल, पद्म ।

कट (स) कमर, कटि, फाड़ ।

कटहटेरी (स) दाढ़हट्डी ।

कटफल (स) आमफल ।

कटभी [स] मासकीनी, १
करही २ ।

कटभ्राता [स] सोनपत्ता, १
गन्धपसारणी २ ३ करही ।

कटसारिका [स] सुपेदफल
का कटसरैया ।

कटुह [स] सोनपत्ता ।

कटक कटाक कटकार [स]
दल, मेना, वाता, कडा,
फोड़, खटुया ।

कटाह [स] जसा, कडाही
पात्र, डण्डा, बिस्तार, क-
छाह, कोय ।

कटास [स] भसकी, तीक्ष्ण-
चितवन, बाढ़ातकन, ति-
रहीनजर, तिरही चित-
वन ।

कटि [स] फाड़, कमर, कट,
कहुपा, करिदाव ।

कटिमूख [स] करघनी, कम-
र की डारी ।

कटिचर [स] ग्रामवर्चरी ।

कटिनी [स] खरी सिखने का ।

कटिह [स] करैना । [डवा ।

कटिपक [स] लाल गद्दप-
कटी [स] एकाहो ।

कट्टी. [म] खोदखोनी १ कुट-
कीर । [कट्टपा ।
कट्टु [म] कट्टवा, तीता, कट्टपा
कट्टुबानी. [म] तीतबनम ।
कट्टुग्वीर. [म] तीतागुग्वा,
तीता कट्टु. जलवाच ।
कट्टुकसेर. [म] सरसो का तैर ।
कट्टुका. [म] कुटकी ।
कट्टुतिरु. [म] बिगैता ।
कट्टुतिक. [म] सीठ, पीपर,
मिरीर ।
कट्टुग्वी. [म] तिता सीका ।
कट्टुभद्र. [म] सीठ, चदरख ।
कट्टुगोहिदी. [म] कुटकी ।
कट्टिहार. कट्टिहार. [द] मसा-
र, मंभी, कट्टिहार ।
कण्डक. [म] पील ।
कण. कदी. [म] टुडडा, रूई,
बुद्धनी, बूंद ।
कदा. [म] सधुपौपनि, पीपर,
कपिका, लेय, मकरा, सु-
पेटजीरा ।
कटिका. (म) कोटी बूंद ।
करान्ना. [म] पिपरनाम् ।

कण्ट कण्टक [म] गवु, बैरी,
कांटा ।
कण्टकाया (म) कुम्भक १
मिमर वृक्ष । २ ।
कण्टकारी (स) रोगनी ।
कण्टारो फल (स) रोगनी
के फल ।
कण्टकिनी. (म) रोगनी ।
कण्टको. (स) कण्टार ।
कण्टकस. (म) कट्टरस ।
कण्टकीफल. (म) खीरा दोनों ।
कण्टकडा. (स) कुटकी ।
कण्टवी. (म) खयरवृक्ष ।
कण्टानिका. (म) रोगनी ।
कठोर (म) कठिन, दृढ़, पुट,
निर्दय, क्रूर, सख्त ।
कण्ठ. (म) गला, 'कण्ठुवा, गर-
दन ।
कण्ठच्छविः, (वि. त्वम्) गले
की सी हडि है जिस में ।
कण्ठच्युतभुजलतापत्रि. (वि.
सपगूटम्) कुट गड् है गले
में बाँध सता की गाँठ
जिस में ।

कण्डूय (स) कंठ में प्राप्त, वरज
वान ।

कण्डोरव (स) सिंह, वनवर ।

कण्डूय (स) सेमारी ।

कण्डूरा (स) कमाच ।

कण्डू कण्डू (प) { योया मल-
(म) { वर, सुगन्धी
स्वात ।

कण्डूय (म) सुगन्धी स्वात ।

कण्डोवन (म) वृक्ष, कणिका ।

कण्ठाद (म) येमेपिच गात्र आ
कर्ता कटिपि ।

कणम (म) वृद्धी में ये कोन ।

कणर (म) दोनो में ये कोन ।

कण कति (म) { वैतिक, क्षेत्र
{ ने, कही, कहे
{ विम विद्ये ।

कणवार (द) टण ।

कति (म) कितना ।

कतिनिम् (म) कितने, एव ।

कतिनम (म) कितने कुछ एव ।

कतिनकटिनप्यायिहमः (वि.

वशाचा) कुछ दिन हंसी

क ठेके से ।

कणक (म) काश, नील ।

कैवहा १ निर्मली ।

कविष- (म) रोहित ।

कथं } (म) वेदि विधि, क्यों
कथम् } करि, क्योंकर ।

कथन (म) कहतव्य, कहन,
वर्णन कहना ।

कथयित् (म) किसी भांति ।

कथमपि (म) किसी भांतिभी,
कठिनार्ह से ।

कथयत् (स) कहता हुआ,
बतसाता हुआ ।

कथनीय- (म) कहने योग्य ।

कथा (म) बार्ता वृत्तांत, प्रबंध,
कल्पना, वर्णन, कहानी ।

कथित (म) बत कहा हुआ ।

कदत (म) दुःख, नाशक,
वधिक ।

कदम्बकः (म) मरसो ।

कदम्बरा (म) कुटुम्बी ।

कदम्ब कदम्ब कदम्ब (म) क-
दम्ब का वृक्ष, समूह, वृक्ष
विशेष । [हसी ।

कदम्बपुष्पिका (म) बहु भं-

कदर (म) पपरिया कल ।

कदराई. (प) कादर भाव, का-
दर होना ।

कदर्य. (म) कदर, धूरि ।

कदसी. (स) केरा, केकाफन
विशेष ।

कदतिकन्द. (प) केश का कन्द ।

कदाचित्. (स) कभी, कभी,
कभी ।

कदा. (म) कब ।

कदापि. (स) कभी भी ।

कद्रु. (स) नाग नाता ।

कद्रुबिन्ता. (स) समग्रमाम
स्त्री, राजा काश्यप ताके

एक कल्याण की कथा है कि जो राजा काश्यप की दो राणी बड़ी बड़, छोटी विनता, कद्रु के पुत्र नाग हैं । विनता के पुत्र गरुड़ हैं, एक दिन राजा विनता के पुत्र की गोद में लेके खेलते थे, एक कद्रु के पुत्र नीला पंहा था, कद्रु एक चरित देखि के मन में अपने खेल साईं, राजा को अपने छोटी भाव ने ऐसी अपने बारी किं

इतिहास ३ है

कन कनी कनिका

बुध, पाटा, कन

कनक स) सोनाद्रव

धधुरा, धतुरे का

कनककदलीवेष्टनः, (वि

सुनहरी केशों के

हुपा ।

कनकनिकापञ्चायय (वि

टामिन्या) समकतो

नामो कसोटो पर

की लकीर ।

कनकम् (स) सोना ।

जो राजा उस राजा को चि
को अपने विनता के तरफ
बठा लिए, विनता ने पुत्र सम
उस राजा को विनता ही र
बहु काश दुःखित मानी रही
एक एक कथा कद्रु विन-
ता की नाककटी की भी है,
किन्तु रामायण विषे उसकी
कथा चापु विशेष लंकाकाण्ड
में लिखा है वर्णन प्रयोजन
नहीं ।

कनकाक्षय (म) चतुर्था ।

कनकाक्षर (म) साक्षात् ।

कनकभूषणकार (म) सुमेरु
पर्वत के समान ।

कनककल्प (म) वृक्ष विशेष ।

कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकाटः,

(विकामी) साने का भुज-

वंट गिर कर सूनी हो गई

है बाट जिस की ।

कनकविन्दु (म) सुवर्ण की
टिफुली ।

कनकवेली (म) सती विशेष ।

कनकलोचन (म) हिरण्यलस,

दैत्य विजय चवतार, पृथ्वी,

चौरण्यात ।

कनककमिपु (म) हिरण्यकश्यप
एक दैत्य का नाम ।

कनकगीप (म) हिरण्यकश्यप
दैत्य जय चवतार ।

कनिष्ठपद्ममूल (म) दिघरोध १
चक्ररथं २ वनभांटा ३
रगनी ४ हरचिकार ५
एई पाँच ।

कनिष्ठः } (म) पतिपत्न्य, छोटा,
कनिष्ठा }

कपू काँटी अगुनी, छोटा
भाई ।

कल्प (म) पति, पक्ष, प्यासी

कल्पकल (म) निमेषी ।

कल्पा (म) स्त्री, नारी, पत्नी ।

कल्या (म) मुदहा कथनी ।

कल्प (म) मूल, जड़, जड़न,

रोगविशेष, १ गन्धाविरोधाः

पोल २ कट्ट मय ३ ।

कन्तः } (म) } उपदेश गुरुमयः

कन्दर कन्दरा (म) वन, गुफा,
खाइ ।

कन्दर्प (म) कामदेव, पतङ्ग ।

कन्दस (म) सहार, युद्ध मयाम

कन्दसा (म) कन्दरा, गुफा,
ढोका, खोइ ।

कन्दली (म) फूल विशेष ।

कन्दु (म) कदुवा फल, कड़ी,
वेही । [विशेष ।

कन्दुक (म) गेंद, छिनीना

कन्ध कन्धर (म) काँध, गला ।

कर्मोक्ती (म) जौन, खोशीर,
गद्दी ।

कन्य-कन्यक. (म) मन्तान. पुत्र
द्वय वर्ष का ।

कन्यका-कन्या. (स) पुत्री द्वा
वर्ष की, द्वय वर्ष तक की
सहकी, सहकी। [नार२।

कन्या. (स) फूटखेकसा १ टेक
कर्ना. (स) कंद, कनिका ।

कपट. (स) दगा, धोखा,
लज, भगल, फरेब ।

कपर्द (स) बोही ।

कपट भू. (स) माया भूमि ।

कपाट (स) किवाड़, पोटा.

हार, उपरीटा, बेवाड़ी ।

कपाश (स) मस्तक, समूर,
कलाट, खोपरी, सिर,
मुण्ड । [रुई ।

कपास (प) बाड़ा, कर्पास,

कपि. (स) दानर, प्रागविशेष
के नाम लस, लसमान
मुखा, तासुखा रूपाभक्ति
के पि कही पागकर्त्ता
पद्मदा ककार पात्मासंज्ञा
१, ता पात्मा को रस को
पान करै सो कपि, नर

दायक, देश पाषक ।

कपिश, (ट) कपासी रंग ।

कपित्य (म.) कैय का हथ ।

कपिश (ट) दानरों का राजा ।

कपिकण्डू (स) कमाह ।

कपिकृत (न) पलास, पीपर ।

कपिञ्जल (स) श्वेतगोतिर ।

कपितन (म) पलास, पीपर

१ गिरीस हथ २ चमड़ा

हथ ३ ।

कपितैल (स) गिहारस ।

कपित्य-कपत्य (स) कैया ।

कपित्यत्वक् (स) एकवालुक ।

कपिनामा (स) गिहारस ।

कपिपर्याय (स) गिहारस ।

कपिविषयी (स) लाल गिर-
चिरी ।

कपिप्रिय (स) कैया फल ।

कपिला (स) पीतल धातु १
रेणुका २ ।

कपिसेह (स) गिहारस ।

कपिकुंजर (स) कपिशेट,
दानर येह ।

कपिधन (स) रुयीव, मुकंठ,

वालिभ्राता ।

कपिध्वज (म) यज्ञर्जुन पा-
ण्डव, हनुमान ।

कपिन्दा (म) कपिविशेष
कपिश्रेष्ठ, कपिन्द्र ।

कपान्दरी का राजा ।

कपिल (स) मुनि विशेष,
जिसने सांख्य शास्त्र ब-
नाया ।

कपिला, कपिली, (म) गौ
विशेष, धेनु पीली ।

कपीश. (स) बानर का ईश
बन्दर का राजा ।

कपीवल्ली (म) गज पीपल ।

कपोतक (म) हारु कस्तूरी ।

कपुष (म) कप्त, कुपुष,
अपुष ।

कपूर. (व) कर्पूर, सुगन्ध द्रव्य
विशेष । [शिप ।

कपूरी (स) पान, पत्र वि-
कपोत-कपोतक, (स) कबू-

तर-यक्षी, परावत, परेवा
पक्षी ।

कपोतचरणा (म) नलुका ।

कपोतबद्धा. (स) बरगी ।

कपोताक्षन (म) घातमुर्मा ।

कपोक (म) गाक, गण्डव्यस ।

कपोलयाम. (म) कम्प, कांथा ।

कफ (व) झंझा, झंझार ।

कवच (म) देवविशेष, गीत,

भट्टविनायिर, वण्ड, दम-

मदस्तवाथी, दमनचषा-

हा, डेट्टमै महारथी, दम-

कोटिपद्मर कर्षीपेठर, ए-

तारथ गौ जूझि के शिता

शिर को गाचे ताको कर्ष

मंझा, दुर्वाया के शरायते

राक्षसभयी चक्र इन्द्र के

गाप घेव टेट रोए के

कवचपर रक्षो । [गुन,

कवच. (स) लक्ष्म, हुनर,

कवि (म) सामान्य कवीश्वर

शूक, वाल्मीकि मुख्य कवी-

श्वर, भाट, पंडित अन्य

कर्ता काव्यकर्ता ।

कविश (स) काव्य, कहतव्य,
कविता ।

कविशशुव (स) लो पद दो

तो न पक्षर का रहे, पौर
 बाहे लिये हृदय भट होय
 तो एत जगदी पक्षर पा
 दि नभ्य पक्ष का नाप
 हृदय निमित्त करि भिषो
 जान परन्तु पर्ये पाल
 कुन पक्षर समाय कै द्य
 दिते जात है। यथा शान्त
 दानं दुषा नहि जाय।
 कविनामा (स) कविनामा
 नही।

कक्षी (म) कक्षी चराने, प
 (म) चोमिद, पक्षीवि-
 (र) मेष, द्ये नही
 बलिपत्तु।

कक्ष (म) पितृनाम, पितर-
 निमित्तमान, पितृदाई।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।
 कक्ष (म) द्योना, दितित्।
 कक्ष (म) द्योना, दितित्।
 कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

कक्ष (म) द्योना, दितित्।

७- व्याधि, वनात्, लांघे, कम्प-
न इत्यादि ।

ॐ नमः (म) वल्लवर्ष, शङ्ख, गङ्गा,
इष्ट कण्ठ, गङ्गा ।

‘कम्बुज (म) शंखभारत ।

१७ म्यु.क.म. (म) कलशा पीदा.

• घंटे का रेखा ।

अवार्थीतः (अ) सुमद् वृष ।

अरि (५) काथी ।

(म) } राय, किरण मय्या
कर (र) } टि. गजगुण्ड, टोन,
विम. करन वीना,
कर्ताधारक, का. मामूल,
मंडा।

करका (म) } एनारबृत्त, पीडा।
(प) }

अर्का (२) पोसा ।

अ.सुति (६) करतप्य ।

आपत्ति (६) यत् । ।

करनाम् (न) नातिर, युष् ।

कारण- (घ) वरजनी, मद्य.

पेंगुलीहस्त की ।

અરણ્ય. (સ) સાધન, ચારણ,
જેત, રાષ્ટ્રો, મરીર ।

अरथो- (अ) कर्म, व्यवसाय.

इष्टमते ।

कारणयोगः (म) कारणयोगः,
साधनयोगः ।

कारतन्त्र- (स) तत्त्वज्ञान, अर्थ-
ज्ञान, वाचपर । (वाच्यत ।

करवेर (स) विषदा, चपाधि,
करवेर. (द) विषति ।

अरुणलसि (द) आनतक ।

करतारो- (६) बाधकी तारी ।

करण (स) ईन्द्रिय, काम, मा-
धन, कारण, करणा ।

करनीबर (स) हायीबा समूह
करनीया (ट) करणोय, करने
के योग्य ।

अथर्व (स) विषदा ।

करवाल- (अ) अथ, तत्तत् ।

अरक्षः (स) यनार ।

करवा जलम् (स) यथाश्रमे
पत्यर गिरता सोपानी ।

क. ष्टः (स) आरंभः ।

बराहो (स) बराह ।

करञ्जान्यः (स) करंज ।

अतः (स) निम्नी ।

જરમશ્ચિકા' (સ) ચરાર ।

करमर्हः (स) } करयंदा
करमर्हिचा (स) }

करवीरः (स) सुपेद कनरैल ।

करहाटः (स) कमल का लंदा ।

मयन फल ।

करपः करमा (स) बैर, रिच,

खेवना, बैरल, रैर्पा ।

करपि (प) खेवना, खेव कर

के रगह, करपना, कर्पणा,

रगह ।

करार (प) करार पत्तो विशेष

करवधः करिनी का शीकने

वाला । [का मुह ।

करहः (स) डाय की चंगुनी

करारा (स) { भयङ्कर, कठिन
(द) { कासट्रेषी, नटी
{ लो लंवी तट,

कागभेद, करार, बिनारा

कराल (स) भयंकर, कठोर,

रास, हच विशेष, पुष्प

फल हीन ।

कराला करारा (स) काल

देवी, कागविशेष ।

करिन् (स) डायी ।

करिपो (स) इस्तिनी, इयिनी

करी (स) डायी, मूर्य, पन्ड,

गोमरी, कसेनी कसाइन ।

करई (द) कटु, कटुई ।

करन करदा, (द) दया ।

करदाकरति (स) गुह कइ

कर के बिताप करती ।

करदापृति (वि० चत्तराजा)

चामल स्वभाव वाला ।

करीरः (स) वांस का पकुरा १

करीर हच २ ।

करील करीला (प) वृक्षविशेष

पतहीन, खारदार ।

करव करवा (स) दया, रीद-

न, कस्पित, लुपा ।

करवाकर (स) करवा के वर-

ममें वाले ।

करी (स) कान, पतवास्तनावह,

रवि तनय । लोव ।

कर्कटा (स) बीड़ी के भीतर का

कर्कटास्या { (स) ककरासिंहो ।
कर्कटमृगो {
कर्कटाया {

कर्कटोद्वा (स) कपड़ी १ बन्दास ।

कर्कश (स) बयर फल ।

कर्कशः (स) कमलागुणी १

कसौजी २ ।

कसौशब्दः (स) परवर ।

कसौदः (स) भरा कीटका ।

कसौटी (स) वस्त्राल ।

कसौटकी (स) खेकसा ।

कसूर (स) कधूर ।

कसिका (स) गुलाब र सेवती

२ कसस के बीज के रहने

का जगह का पसरियो

के भीतर २ ।

कसिकारः (स) कसिकार र

भमसतास २ ।

कसिकतः (स) निर्मलो ।

कसिभाण्डः (स) पलास, पीपल ।

कसिकः (स) सास धान ।

कसिरासः (स) पलास, पीपल ।

कसिरासः (स) पलरोट ।

कसिरासी (स) कपास ।

कसिरासः (स) कपास हल ।

कसिरासी (स) कपास ।

कसूरः (स) कपूर ।

कसूरानजिका (स) कासनी या

पेड़दिया ।

कसूर (स) कासा दसदी ।

कसूरामः (स) फिटकिया

पत्थर ।

कसूरग (स) कसरसु ।

कसूरः (स) दांस ।

कसूरः (स) र पैसा भर ।

कसूति (स) करता है ।

कसूग (स) कठोर, विवेकर-

हित, कपथ, निर्दय ।

कसूधार (स) मलाह, मांझी,

पतवारो । [के योग्य ।

कसूतय्य (स) कसूतय्य, करने

कसूतय्य (स) कसूतय्य, करने

राव ।

कसूम (स) करने का । [रतूत ।

कसूव्य (स) करे योग्य, काम, क-

कसू (स) मल, मैसा । [जला ।

कसूम (स) कादो, कोपड, स-

कसू (स) मथोन, मैसा । [र ।

कसूय (स) कपास, बागा, क-

कसूर (स) कपूर, सुनथ द्रव्य

[निगेप; काफूर ।

कसूर (स) कसूर, सुनथ द्रव्य

कसूर, रासस ।

कसूर (स) कसूर ।

कर्म (स) कर्मक्रियाः पाप,
 पावन सो क्रिया जाय,
 कार्य, कान, शरीर ।
 कर्मकृतिशाल (स) कर्म के
 कर्मरि, विम्वकर्मि ।
 कर्मनाश (स) नदी विम्व ।
 कर्म कर्म, कर्म (स) खैर,
 रठ, पत्तन, दामद्वय,
 रगह, बैर, इपा, लोतना,
 कर्मि । (फल, भूतवाम ।
 कर्मफल (स) बहेहावृत्त, बहेहा
 कर्म (स) { दम्भ, कर्म, खैर,
 (प) { बहुर, नीठा,
 { मन्दीधनि, भूठा,
 यम, गुण, कल्पना, फला,
 विवसित, मांभा, पति
 सुन्दर, कोदस पची ।
 कर्म (स) सुगा पची ।
 कर्मधीतः (स) मोना धातु ।
 कर्मधनिः (स) बितकावर
 पण्डित ।
 कर्मधीरति (स) सुंदर कीरत ।
 कर्मकर्म (स) पपीहा पची,
 कर्मकर्मि, कोदस ।
 कर्म (स) कीर, रिग, रिह,

पारा, पोप, दोष ।
 कर्म कर्मि (स) स्त्री,
 सोमार्द्र, भतनी, नाती ।
 कर्मधीत (स) सोना । (दवना
 कर्मपच (स) कल्पवृक्ष, देवतक,
 कर्मपत्रकः (स) दवना ।
 कर्म (स) बायनी धान ।
 कर्मवत् (स) सट नाडी, तोत-
 रो वचन, तोतरा दोस ।
 कर्म (स) हाथी का वच्चा,
 साधु, उच्छाल, कल्प ।
 कर्ममुखर (स) मंदर मृद ।
 कर्ममुख (स) पाप ।
 कर्ममलसरी, कर्ममलसरी (द)
 कर्मनाश नदी । (पटाई ।
 कर्ममनाई (स) रौंदाई, छट-
 कर्ममने (द) बचत भए, रौं-
 दाए, दिने, कर्ममलाना ।
 कर्म (स) बाप, हाथियार ।
 कर्ममिखा (स) गरवदया पची ।
 कर्म (स) करनीभाग ।
 कर्म (स) मधुरधनि, पुगपुग,
 कर्म (स) कर्मि, कर्मि, कर्मि ।
 कर्म (स) कर्म, कर्मि, कर्मि, कर्मि ।

कलम- कलसा (प) युद्ध,
मिथर, गुहा ।

कलमी (म) पिठवन । [कर्क ।

कलव (व) युद्ध, विरोध, क-

कलवंश (म) राजवंश वंशी ।

कला (ल) कलतरणादि,

६३३ पंग, दमा, माया,

चन्द्रमा के मंत्रक का संक-

चर्चाभाग ।

कलाय (म) बेराव । [माग ।

कलावयाच. (म) बेराव का

कलानिधि (व) चन्द्रमा, गगो ।

कलाय (व) युद्ध, कलावतून,

धामरच, बर्हिचन्द्र, चरि-

चरमचन, मयू, समूह ।

कलावी (व) मयूर, मोर, पयो ।

कलावतून य, कला कीदी

(व) का तार ।

कलावला (व, कलव, लावक

विशेष ।

कलावाचदेवाम् (वि० ललुम्

यक कलावाच वयो वृद्ध ।

कलिक (क) कलिका, मूत्रमा,

कलक, कलान, कलिकुल,

बहेडा, बहेडा का युद्ध,

संसार, क्षेम, चतुर्दश,

विवाद ।

कलिकवि. (व) कलियुग के

कवि काकोदासादि ।

कलिकुकाठ (द) बहेरा ।

कलिका. (म) कोपक, दूरी,

कलियुग की, चम्पाफूल,

हेटो ।

कलिकामंध. (व) चम्पाफूल ।

कलिक. (म) देव, कर्जना का

कोषा, इंदरवध, देवविमर्ष ।

कलिकुमः (व) बहेरा ।

कलिकी (म) कलिकारी ।

कलियुगालय (म) बहेरा ।

कलिकारी. (म) कलिकारी ।

कलिकीरती (व) सुन्दरीरत ।

कलिक (म) गोमित्र, रचित,

कला, पहिरे, फुलित,

विद्या, युवा, सुंदर ।

कलिक. (म) युद्ध, बहका,

कोप, बहटा, कोपक ।

कलिकलसर्ग. (व) कलिकाल

मदी ।

कली. (प) कलिङ्गा, कीपल,
दरी ।

कलीक. (फ) घोड़ा, पत्थ, च-
इटा, पंक, कीचर ।

कलुष. } (ग) पाप, मल, दोष ।
कलुष. }

कलेश्वर. (ग) मरीर, पद्म, देव,
लिङ्ग ।

कलेय. (प) दुःख क्लेश, विपद,
पौष्ट्यादि पांच, चंद्रमा ।

कलंक. (ग) साँझ, मिहपार ।

कलोच. (ग) क्रीड़ा, खेल, खेल
रूट ।

कल्य. (ग) कुशल, कपट, नद्या
का दिवस, नद्या का दि-
समय, कल्पवृक्ष, रचना,
प्रसव, कल्पना, स्वर्ग का
द्वेष, नगोरथ ।

कल्पः (स) कल्प । [संत ।

कल्पांत. (ग) नद्या के प्रायुर्वेक ।

कल्पतरु. (स) कल्पवृक्ष, सरद्रुम ।

कल्पना. (स) संबोधन, तर्क,

नाकछा, कट, रचना, सि

ताम्र, वाहिता, समर्प,

बनावट, सपाय । [रत्नवर्ण ।

कल्पवेणि. (स) मनोरथ,
पुष्पवृक्ष विमेष ।

कल्पास्ते. (द) योग्य होते हैं ।

कल्पित. (स) दुःखित, बनाया,
कृत्रिम, पसत्य, झूठ, झूठ
तर्क, बनाया हुआ, रचि-
त ।

कल्पि. (स) झूठ करके, कल-
पना, बना लेना ।

कल्पितार्घ्या. (वि. तर्क) बना-
या है पक्ष जिस के सिद्धे ।

कल्पय. (ग) पाप, मल, नरक ।

कल्पाय. (स) कुशल, मङ्गल,
शुभ, मोक्ष, प्रसव, सुख,
पुत्र ।

कल्पापी. (स) भाग्यवती ।

कल्पव. (स) विद्रुम, प्रवाली-
सता ।

कल्पाल. (स) तरङ्ग, वेग, गर्जन ।

कलोजिनी. (स) तरङ्गिनी, की-
राइसिनी, तरंगसमेत
नदी ।

कल्हा. (स) कुंभी, कनस ।

कवच. (स) दफ्ते, बकतराए

काकगङ्गाः (स) काग जंघा-
लही ।

काकगिलाः (म) कागजंघा ।

काकगुल्लफलाः (म) कदा
ठोठी ।

काकगुल्लीः (म) काग कर्जनी

काकगामाः (म) कौचाठोठी ।

काकपर्णीः (म) बनभूंग । [नी ।

काकपीनुः (स) कागकर्जनी-

काकपुष्पाः (म) गठिवन ।

काकसांभीः (म) मकोय या
बनभुटका ।

काकमुद्राः (म) बनभूंग ।

काकपहरीः (म) सपेवली ।

काकाहीः (स) कौचाठोठी ।

काकादनीः (स) कागकर्जनी ।

काकापुः (म) सपेवली ।

काकाघाः (म) मकोय या बन
भुटका ।

काकागदाः (म) कागजंघा ।

काकविद्याः (म) गुला, क-
लनी, कागकर्जनी । [र.]

काकपथः (स) मंग गुल्लफली,

[पी] ककद्वय, ककदा
काक (द) कक, काकी,

काकविहार, नारी होम,
इत्यमरः ।

काकैन्दुः (म) मकरतेद ।

काकैषुः (म) तातमखाना, र
कास २ कुग ३ । [नाग ।

काकोदरः (म) मण्ये, व्यःस,

काकोदुम्बरः (म) कौठादुम्बर ।

काकोपिः (म) कंकाल ।

कागः (ट) कौचा, काग, वादम ।

कागदः कागरः (ट) कागज,
लिपनी पात्र ।

काकासोमी (ट) पक २३ तल
काकासोमी (ला) दंगी कन्या मे

काखतक, काप तले की
कन्यापर पिछोड़ा भारि
के पोढ़त है या हवि
विशेष ।

काकन्याभीः (म) पांडुर ।

काकापुः (म) ककुला या मा-
ति रडा ककुला मा ।

काकृच्चतिः (म) काकता है ।

काकृच्चिः (म) कुरती गांठी ।

काकिः (म) ककाले, टने ।

काक (व) कीला, ककदा की-
काकिः (व) विशेष ।

काखन (स) सीना दृष्य,
 खर्ण, खर्ण, सीना ।
 काखनन (स) सीना ।
 काखनकः (म) लासधान ।
 काखनायः (म) नाग केसर ।
 काखनी (स) हरिद्रा, हलदी ।
 काखी (म) किट्टिणी भूषण,
 पुरी, तामडी ।
 काखिक (म) पानी, राख
 नील, एक साथ लव गूदा-
 दी ।
 काखी } (म) खटाई, खटा,
 काखी: } गडा, गडि, मिरका, ख
 हा पानी राई का ।
 काखीबटक (म) काजी का
 वर । [रहित ।
 काना (म) कादर-पधीर-धैर्य-
 काखी (र) दुग्ध का फटोम ।
 काण्ड (म) खण्ड, मकरण,
 खेज ।
 काण्डतिलः (म) चिरेता ।
 काण्डेयुः (म) तासकगुना
 र बेतारी एक तरंग का ।

काण्डेरः (म) चौराइ, भाग ।
 कातर (म) पातुर, मोहित,
 व्याकुल, निरुत्साहि, दहका
 हुआ, कांदर । [बोदावन ।
 कातरत्व (म) निरुत्साहीपन,
 कादमवः (स) परवा पघो,
 पानी का घेरनेवाला ।
 कादम्बरी (म) गदिरों, मद्य,
 दाह ।
 कान (प) खर्ण, खर्ण, लाज ।
 कानन (स) खन, खडल, गडा
 का मुख । [संकोच ।
 कानि (प) मर्याद, खर्ण,
 कानो (प) घेर, लाज, द्वेष
 हिंसा, संकोच ।
 कान्त (म) पुरुष स्वामी, सुन्दर
 मनोहर, मोभावमान ।
 कान्तलक्षः (स) तून मृष ।
 कान्तकीटः (स) कान्ती-
 मोडा ।
 कान्तः (म) पति ।
 कानूता (म) पत्नी, सुन्दरी,
 प्यारी (विधोग करके
 बडित ।) विग्रह ।

कान्ताविरहशुक्ला. (वि. ग्रापे
न) को के ।

कान्तारः { (स) वन, छाजन,
कांतारः { वंतारी, ऊछ ।

कान्ति. (स) दृष्टा, गोभा,
सुन्दर, सौंदर्य, प्रकाश ।

कान्तिमत् (स) गोमायनाम ।

कान्तिभोरः (स) काम्ती-
भोर । [लोहा ।

कान्तीमारः (स) कान्ती
कान्ता. (प) सुनिके, कनिया

के, संगीकार करके ।

कान्तिकुल (स) कर्नोतदेम ।

कापरः (द) दवा, कपडा ।

कापितः (स) सजी खार ।

काप्यः (स) कविता, मुक्त, पद,
हृद ।

काप्यार्धनकादः ४१ (स) धुनि,
चरित्र, गुण, क्षाति, ४ ।

(स) { कर्म, समिधा
काम (प) { द, मिदि, बाज,
(फ) { मोश, मुराद, सु-

न्दर, कामना, कामदेव,

विषय, धंरा, वादना,

इत्यादि ।

कामवारी. (द) जहाँ जाने की
दृष्टा हो वहाँ जाने की

सामर्थ्यवाला । [तप ।

कामतर (स) कामवृक्ष, देव
कामना 'मो' मेघी ।

कामद्वयम' (स) मालद्वय
का काम ।

कामाङ्ग (स) कामफल । [काम ।

कामाद्या (स) मालद्वय का

कामुकः (स) माधवी ।

काम्यकः (स) कमला गुठी ।

काम्यिनः (स) पतनधाम

काम्योत्ती. (स) धम छिट ।

कामद (स) कामनादायक,

मनोरथदाता, कामर दे-

नेवाले ।

कामदुगई. (द) कामसेतु ।

कामसेतु { (स) सुरंगी, का
कामदुगई { मनिबलीदिनय ।

कामना (स) कामना, समि
द्वि, दृष्टा ।

कामनि (द) पविं रिमो एक
की की । [कर्मा ।

कामध (स) काम के

कामरिपु (स) जिय गडर ।

कामरूप (स) दृष्ट्यापारीरूप,

कामरूपर दृष्ट्यारुधा-

वन करने वाता ।

कामागि (स) कामवृत्त ।

कामातुर (स) कामतेव्याकुल

कामास, कामी ।

कामानुश (स) कामम, कोर ।

कामारि (स) जिय गिरिग,

काम ले गदु, महादेव ।

कामिन् (स) कामी, प्रेमी, खेडो ।

कामिनी (स) रमणी, प्रेमी स्त्री,

काम के गदु, महादेव, स्त्री

प्रेमवती स्त्री, सुन्दर स्त्री ।

कामो (स) कामातुर, माने

का देता । [मागल ।

कामुक (स) मेघ कम्पट, का

कामुकत्व (स) प्रेमीपन, का-

मीपन । [जिप्य ।

काय (स) काया, शरीर, देह,

कायवदन (द) शरीर और

वचन से । [मान ।

कादर (स) कादर, नील, भय

कावज (स), रवे ।

कामाम्यका (स) काकोसी रस

के प्रभाव में प्रसमंभ ।

का (फ स) काज, कार्य,

कचोवाचक ।

कारण (स) हेतु मयज, प्रयो

अग, पिता, निमित्त,

प्रकृति । [मनह ।

कारागार (स) बधनालय जेल

कारक (स) कर्मा, करेया, व्या

करण की प्रकरणविशेष ।

विभक्ति को प्रये करने

वाता ।

कारमी (स) प्रग मोदा रमण

रेना २ माया ३ चनघर

४ सोफ ५ ।

कारवीलज (स) प्रगमादा ।

कारवज स कारवी ।

कारवेनी सो करेनी ।

कारवज (द) कोदना ।

कारज (द) कार्य प्रमगति ।

कारणकम्प (स) महत्त्वादि

के कारण ।

कारी (स) कामी ।

कादम्बिका कादम्बिका सु दया

नु, दयावान रोदनकार,
कनैतपुष्प । [सुवर्ण ।

कार्तस्वर (स) मोठा द्रव्य
कार्तिक (स) गहीमाविजय,
कार्तिक शिव पुत्र, एक
गहीने का नाम ।

कार्पण्य (प) दग्धता, दीन-
ता, कादरभाव, लपटता,
बंझतान । [रुद्र ।

कार्पास (म) कगस, बांगो,
काय (म) हेतु प्रयोजन काम ।

कार्मुक (म) बकाइन ।

कार्मुक (न) घनुपे, पाप ।

कार्य (स) दुःखापन ।

कार्यक (म) विमान, लपेट,
इलवाडा ।

काल } (म) समय, यम, मर्ष

पगित, पवसा, ललु,

मरप, मकरतेंद २ तेंदु ३

यहू, जमानद, मीच, का-

का, ग्याम, नेम ।

कालव्यास (म) काला मांष ।

काएरम (म) गोएवा साग ।

कानिरात्रि (स) कानिका-
देवी ।

कानकण्ड - } (म) पणीहा
कानकण्डकः } पचो, गरवैया
पचो २ ।

कानकटः (स) शिव, जनाइल ।

कानकजी (म) नील । [नाम ।

कानकूर (म) गिव का एक

कानकनेमि (म) पचुरविशेष,

पूर्वगर्वध इन्द्र सगा काया

देख कै हंसने कारप त्री

दुर्गमा मुनि के थाप ते

राजम होय रावप के

मःमा भयो, इति पुराण

प्रसिद्ध ।

कानपीलुकः (म) मकरतेंदु ।

कानमेपिक (स) मंजीठ ।

कानमेपिका (स) पनिसर ।

कानमेपी (स) बकुषो ।

कानमेवला (स) दाप, कुडारा

कानमाकः (स) गोएवा साग ।

कानमैरदः (स) पीत चंदन ।

कानव्यानी (म) पांडर हथ १

पांडर २ ।

कासा (स) गीत १, गीठ २

कासा रंग ३ ।

कासाभाजी (म) स्यादभीरा ।

कासानुसार्यः (ग) पीत चन्दन

१, तगर २ ।

कासानुसार्यकः (स) कुरीला १

पीत चन्दन ।

कासायसः (म) भीरा । [हित]

कासास्यासी (म) कठपांडुर

काशिष्ट (स) इंदरयव १ की

रैया २ ।

काशिन्दः (स) तरयूना ।

काशियकः (स) दादुहल्दी ।

काशियक (म) दादुहल्दी ।

काशिका (स) पगिर ।

काशिकेप (ग) समयविनाना,

गुना-८ गिवोड करना ।

काशिकेप (म) नरक विगेष ।

काशिकेप (स) तमान हल ।

काशि (म) बितिल, मण, गुजर

गति । [हल] रा ।

काशिका (म) देवी गमी, व्या

काशिकी (म) यमुना नदी

काशिकीदा (म) बन्नाट,

बन्नाट ।

कालो (प प) देवी, कादह,

श्याम, कालह, कालह ।

कासरति (स) समय की रात

कालीन (म) दिनी, पुराना

समय का ।

कालीय (स) मर्ष, नाग,

कालीयः (स) व्यास, पीत चन्दन ।

कावर (प) कागर, बहंगी ।

काशः (स) कांसा उपधातु ।

कागमीर (स) बेगरि पुष्प,

देग विगेष । [र हल]

काश्मरी काश्मिरी (स) गंगा

काश्मीरः (म) पुष्करमूल १,

बेसर या काफरान २ ।

काशी (स) देग, पुष्पविगेष ।

काश्या (म) धरती, भेदिनी

काट (म) ककड़ी ।

काटभगाकः (म) गोबरदाता ।

काटपाटका (स) काठपांडुर

पुष्प ।

काटा (म) दिग, दिगा ।

कासा (म) कांसा पशिलापु-

रादिग

काटालुः (म) } कन्दा का मुंटा ।
 पटालुकः }

कासरः (म) भैंसा चतुःपद ।

काममर्द्द (म) कसौजी ।

काममर्द्दचूलम् (स) कसौजी

का पत्ता ।

कासमर्दः (म) गम्भार वृष ।

कानार (म) सरोवर, ताम ।

कास (स) पांसी रोग ।

कानारी (म) कसौजी ।

कसोसः (म) कामोष ।

किं (स) प्या, सेवा, टहल,

पयवा ।

किंशुकः (म) } पन्नामवृष टांक,
 किंशुकः (प) } फूल ।
 किंसुकः }

किम्बित् (द) क्या । [कर, टास ।

किङ्कर (म) सेवर, नोकर, चा-

किङ्किगटः (म) } बहुर वृष ।

किङ्किरातः (म) }

किङ्किरातः (म) किङ्किरात ।

किङ्करी (स) दासी, बाकति-

पि, टहलगी ।

किङ्किनि-किङ्करी (स) कटि

भूप पंडुर, दुर्धमटिहा,

करधनी, नेषसा ।

किञ्चिन (स) कछु, कुछ ।

किञ्चलुकः (म) समस्त के फल

के पछारियों के भीतर का

केसर ।

किञ्चित्-किञ्चिन् (स) प्रप्य.

घोड़ा, झुरएण, घोड़ासा ।

किचक (स) दांस ।

किच-किच (प) कोन, को,

ल्लेय, घाव, क्यों नहीं ।

किट्टः (म) सोरे का नैस ।

किटिस्त (स) रम्य ताग ।

किट्टिः (स) सोर, सिद्धान,

पत्यन् ।

किट्टिही (स) पिरचिरी ।

किट्ट (स) हस्तिघा, कोर-

किट्टपदः (स) धतूरा ।

किट्टवगः (स) नकिट्ट-

किट्टर [म] काटल, नेषसा

इवरी इवरी-नेषसा

नेषसा

नेषसा

नेषसा

नेषसा

नेषसा

हे जो स्वर्ग में माने हैं ।

किमपि (स) कुछ भी, कुछ
- छोड़ा सा । [विधि ।

किम किमि [प] कैसे, कौन
किमिनाह [ट] क्योंकर पावे ।

किमुनर् [स] फिर क्या कह-
ना है । -

किम्ब [स] क्या प्रयत्न ।

किम्बुक् [स] पलाय, डोका ।

किरच [ट] कणिका, टुकड़ा ।
[स] देगधावच ।

किरन् [स] रश्मि, सूर्य का
- तैल । [धार ।

किरवान [स] क्षपण, गल

किरात [स] व्याधाकाति,
भिष्ट, निषाद ।

किरात [स] धरेता ।
किरातक [स]

किरातिनी [स] भिक्षुनी
किरातिन [स] व्याधाकाति ।

किरकिरा [स] रोड़ी, कड़वा ।

किरिच [ट] क्षण दुःखरा ।

किरीट [स] मटुक, पीतम
सुवट, ताभ ।

किरीटी [स] क्षण, पञ्चन,
मटुकधारी । [इट ।

किम [स] निश्चय, निश्चित,

किमक [स] हँसो, चटख, च-
मक, कदाचित ।

किमिग [स] देवदार ।

किमकिमा (न) मानरी की
विस्तारट हँसी ।

किमिच [स] पाप, गल ।

किमु [स] पक्षांतर केशिन ।

किमनय [स] कोमलपत्र, दुद-
दसो, पुट, कीपक, नवी-
मपत्ता, नरमपत्ता ।

किमुक [स] पक्षाग्रच, ठाँव ।

किमु (ट) किछ का ।

किमीर [स] वयसतिशय, वा-
लकमप्रा, बाल घोर युवा
पनस्या का कीच, लहवा ।

किमिना [स] पुरी निमिष ।

किमान (प) छेतिहर, गृहस्थ,
कीतदार ।

कीच [ट] बहटा ।

कीचक (ट) गोला बाँध ।

कीट (म) कीटा, कटुपविनेय ।

भूमि, नीच, गुटे ।

कीट-तोर-धीर-धीरे [नि]

कुपाड (द) कुपा सगाधार ।

इति जाति विनेय ।

कुकर (म) कुता ।

कीर-कीरेक [स] तोतापी,

कुंर (प) राजकुमार,

गुरु, गुमां, सुदा ।

राजकुप ।

कीरत [म] कन, कीर्ति ।

कुकाठ (प) कूर रत्नादि

कीरति [म]

काट काली खूटा होत

कीर्तन [म] योगदान, कुरप

ई पुष्ट, पर या काठ का

ऐन, कीर्तन करीन-हंसा-

मनेपरपन-कीं सुर्ति गदि-

रद ।

नंविग-करि का राज की-

कीर्ति (प) यम, सुति, कीरत-

दुष्ट माहते ई या विघ्न-स

गमना, विस्तर, तारीफ

हीत ।

नामवरी ।

कुकाः (म) कुनैर ।

कीर [स] नेप, कीला खंटी,

कुकाटमिषाः (म) गिरिपारी ।

कांटा, विरधा, जिन,

कुकाटमिषी-म) काठी धान ।

परिधा ।

कुकापरः (म) कुकरबंधा ।

कीरक [स] बन्धकारी, रीद ।

कुकाठु (द) महेष ।

कीर्तति [म] कटाहपा दूध ।

कुकाठ, कुकाटः (स) गुरमा

कीर्तन [म] कल, नीर, नां-

पक्षी, परप्रापुष, गोपप,

हंभाते का पागी ।

गिरिपारी ।

कीर्ति कीर्ति (द) जस ।

कुक्षि (म) कोष, कुदरे ।

[कुदरे]

कुक्षि (म) कुक्षि, कुक्षि, कुक्षि,

कीम कोकुचानू [म] कोनैर,

कुक्षि (म) कुक्षि, कुक्षि, कुक्षि,

कु (स) कुरी, किन्द, कुली,

कुक्षि (म) कुक्षि, कुक्षि, कुक्षि,

द्रव्य विशेष २. मेसर या
काफिरान ।

कुटुमा (स) गुमास्त या चकीर
रखने का पात्र जो रङ्ग
भारा सभा में फैलत है ।

कुव (स) म्यान, लाती, धन ।

कुवन्दनः (स) पतंग ।

कुचारे (प) पशुभ याताँ, च
सुद कया ।

कुचित (स) टेढ़ा ।

कुज (स) मङ्गल, अश्व, हुम
नाम, भीमासुर ।

कुभस्तः (स) गनेयरी मूर्ति,
मनि प्रह । (पुष्पीका ।

कुजा (स) मङ्गला, देवी,

कुन्पीती (स) निपथी, कुंभारी ।

कुचिदाः (स) मिथी ।

कुखी (स) मगरैला ।

कुचित् (प) केशवस्तः कोष
चाया, घुमुगार, घुमुगारे,
टेढ़ा ।

कुजोगी कुयोगी (द.स) विषयी ।

कुम्भ { (प) कुम्भवाप, निकुं
(स) मण्डवा, गोमा, कु
(प) रचवाप, कुमां
हय पम्पूर ।

कुम्भार, कुम्भस्तः (स) हाथी, गज ।

कुम्भनिवाः (स) दो तरह की
राई ।

कुम्भरा (स) धावा हय ।

कुम्भरासनः (स) पीवर ।

कुट (स) पर्वत शिखर, नि-
हाय कोट ताहन ।

कुटलः (स) कोरेया ।

कुटलबीजः (स) इन्द्रिय ।

कुटलवाः [स] सोनपता ।

कुटलटः [स] केवटी, गोया ।

कुटिल-कुटिलः [प.स] गल, कपटी
मट, भौ. टेढ़ा २ तगर ।

कुटुम्ब [स] परोवार, घर
सोम ।

कुटी कुटीर [प] भवन, स्ना-
न, भापडो, २ सृष्टा ।

कुटीरः [स] ग्लामवर्षी २
तूनपृथ ।

कुठारा [स] कुलहाडी, टांगी,
परगु, फरसा ।

कुठारी [प] कुलहड़िया, ग-
देया, टांगी ।

कुठावः [] पुरी प्रगह ।

कुठाहरः]

[८२]

[कुम्भः]

कुठाहरः [प] नीलनगद, नष्ट
लगद ।

कुत्तितमान्गसी [म] श्रीमर
का मेद ।

कुठिनः कण्ठितः [म] धारहीनः
सज्जित, भोषा, दानधी ।

कुम्भः [स] मातृछाग धारीपु-
रुप, पोषितः । [कुटि ।

कुण्डलनीः [म] नदीया ।

कुटावः [म] कुगति मे कलित
कुटालः [म] कचगार ।

कुण्डलीः [स] लिखी, जि
नी । [लीय ।

कुट्टि [स] नीवदृष्टि, पाप-
दृष्ट, खांटोगिगाह ।

कुण्डलीः [स] ग्ररिप, या नि
कुण्डोः [द] नीचे की टोपी, रप
यत्न ।

कुधरः [स] पर्वत, गिरी
पराह ।

कुतः [म] [पव्यय] कृष्टि,
विधर में, दाली ।

कुभान्तः [स] कीनी घत ।
कुधात कुधान् [द] नटवा
लोडा ।

कुतरत्नः [म] [पव्यय] कृष्टि-
विधे, कृष्टिपर ।

कुमटीः [म] धमिदां ।
कुनटी [म] नयननिल ।

कुतर्कः [स] कुतरक नीवनि-
चार, वृत्तर्क ।

कुनाचकः [म] यथाता
[स] दलन, प
कुन्त-द. } लय, कवा
माताकुन्त

कुतूहलः [म] कीतुल, परिहा-
स, खिल, पाययं, विविध,
सुन्दर ।

कुन्तः कुन्तन [स]
दल. बाधो की
गोमित ।

कुवचित् (स) कवहिं, कदरी ।
कुवः [स] कदा ।

कुत्ताः [स] निद्रा, पवशा,
अपमान । [नीव ।

कुम्भ, कुम्भ [स] गोत्र
पान्तिनमान,
नदक, फूल

कुम्भः [स] निद्रा, महीन,

हृद्युदिन, समुद्र, काश्चा ।

उम्ह [रा] अने ६ कूज ।

सूत्र ५] मन्त्रादिरीत्या ।

सु. ५ (५) कपड़ों का पीटा-
ग। १

॥ ५ ॥ [५] ॥ ॥ ॥

सुपुत्रः सः गोपः साधुः, गोपः
गोपः गोपः गोपः गोपः

E. coli, *S. aureus*, *P. aeruginosa*

ਸੁਰਦਾਸ (੨੧) ਪੁਰਖ ਪਾਉ ਭੀ, ਸਟ
ਪਾਉ ਭੀ, ਸਟ ਭੀ ਜਲ ।

संज्ञा 'म' मन्त्रः ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुविधा, ज. वि. वि. वि. वि. वि.

युवमय (४) कदम्ब, पद्म १८

總編輯 楊 永 明

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

(क.) सुप्रसन्नताही जल
 (ख.) दिना-कथासुख .

सुविचारित (५) पत्रिका प्रकाश

Figure 1

॥ १० ॥

समसंदिग्धः । १३३ । ३३३ ।

कुमारः (म) } गोशंख, समुद्र,
(प) }

राजपुत्र, विष्णु विद्यावा,

अथवा विधि, कामातुर,

सगुणादि, पिता, भीन्द्य,

गगो, काश्मिर, योद्धो नर

सुखाशांतः दिनः व्यहः

॥५॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

बिता सो भी जाइते हैं ।

कृ. ५. १. ३५ (ग), दखण्णम् ।

ਸਮਾਜੀ {ਸ}
{ਸ} ਫੇਲਿਆ, ਖੁਸ਼ੀ.

विनाय्याही, चांगोतुली

कमुष (न) बाजम सेना प.त,
परा मय ।

कृ. सु. १. १०। कविः दुःखं, भागवत
१०३०५, वासना, गङ्गा ११

महोदय त कर्मचारी, कासाद।

क.सू.द.४ (ग)पट्टरिचो।

समस्त (स) पञ्चमः गङ्गा

सं. १०८३ (४) श्री १०८३

कमजिनी, पद्मिनी ।

ਸਮੂਹੀ (ਅ) ਖੇਤਰ ੫ ਵਾਂਗ

६. पत्ता, छंटी, मूल, फल ।

वसीखोज: (न)। धी।

५५१०: (६५१०)

द्विधा: (रु)-सादमनः!

(म) घट, बंजरो.

[illegible]

कुशाकर- (म) निमिषर विमेष

१८५५, १८५६ नवम्बरा ।

कमलधर (सं) कुलकर्णी, कुमाय

कुम्भज (स) पद्मनाभम् १

कृषि (घ) बरमुपरी :-

कृषि (म) कायक

कुम्भसूक्तम् (च) अथ सूक्तम् ।

कृष्णिनी: [छ] वेमरिन्मय

श्री. [न] हाथी, नमस्ते
[न] नगर पानी

१०५५- [न] नरक दिनेम

मुन्नीपादः [न] नर...
[स] नर, लडा, पन

कुशल [स] नव, १९५१
हारीद्वे ।

हारीद्व

ਕੁਰ [ਹੋ] ਹੋਵੇ।
ਮਾਮ [ਮ] ਮਾਮ।

भारत २, तानि का सारंग

भात २, तमिः १
दा हरिन्, यमिः १

[illegible]

रंग का । [कटफरैया ।

क. ग. उ. क. : [स] पीसा मून ह्या

ହୁଅନ୍ତୁ: [ସ] ହାସନ୍ତୁ ।

कुररः [म] कृष्णकुत प्रधा ।

कुटुम्बः सत्ताल फल का

कटमरदा ।
— निरुः 'नी

वरविन्दः 'न। माया।
वरविन्दताना [मो]।

सुखदरदी पञ्ची
[म] विही संग

दुरी. दि. मसिह. २०००
२००० मसिह. २०००

नाम वीर
काशी (२) पृष्ठ ५२. योगी

ਬਰਕ ਹੋ ਬਲੀ ਕੀਤੀ ਤੇ ਪ

परि पंगु वा सीधारे ३
नदाकार होत हे वा ४

नौ पद अनुपादिक
है गिरत

फारसी नौ गदीया

...रोड़ो, दिरी दिरी
... दिना ।

पुनः प्रमाणित

कुरुक्षेत्र त्तः स्वाग

का सा रंग

याम्, पुनः ।

सुशुद्धि, समुद्र, क्षीर ।

पुष्प (प) मदि २ कुल ।

— १८८६ — (५) गन्धर्व विरोधा :

कु-२ (५) खपहो का - जोट-
३११

इष्ट [स] लुथी ।

कुपण्डः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

१. १५५, १५५, १५५, १५५ ।

[illegible]

सुधीन (१०) गकर न्द ।

दुःखं भवति ।

सुविधा (२) विद्यमान है।

सुबोध (४) तदर्थ पद्यम् ।

हुआ, १५ अक्टूबर, १९५१

सुविधा, सुविधा ५ वर
मार्ग १ वर

(ग.) सुप्रभण्डाची सजा
 (ख.) प्रिया, कृष्णसुख

सुबोधिनः (१) पृष्ठ ८ अक्षर १

सुखं च ॥४॥ सुखं च सुखं

କ୍ରମ: ୧୫୫୫ (୧୫୫୫, ୧୫୫୫)

गमगादि ।

कुमार. {म} } भा. वि. १. २०, समुद्र,
 {प} }

राजपुत्र, विष्णु विद्यावा,

अथस्या विशिष्य, कामातुर,

सगुकादि, पिता, पौन्द्ये,

ममी, काशी, योही पत्र-

सायनाशुतः दिनः स्यात्

एक कोरे दिग भी नहीं र-
हित को भी कहते हैं ।

कृमिहरणः (ग) दखणपुत्र ।

वृत्त (१) { (स) } ब्रह्मा, विष्णु,
(२) { (म) }

विनाय्याही, खाणातुंही।

कमुज (स) राजसं विना पत्त,
यरा मज्ज ।

१. मुद्रा १५ कोटि रुपैयाँ, बाण्डा
२. वार्षिक, वार्षिक १५ रुपैयाँ
३. मन्त्रालय, वार्षिक, वार्षिक

क. म. २०० (सु) प. ३३ (पं. १)

सप्तमः (७) अष्टमः (८) नवमः (९)

कमुनिनी (४) कीर्तिपुत्र
कमलिनी, पद्मिनी ।

समाप्त ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

कुछों ५, कुषा १०: } (१) की ५५।
कुम्ह ५, } (२) फ ५ १ -

पार्टी में। सुमन को (म) श्रीमद रंभा
श्रीदुर्गा देवी नाम . २०००

कृष्णगडवटी (स) कः पृथ्वी ।

कृष्णसूत्रः (मि. के. प्र. की. ग. प्र. की.)

कृष्ण एड. (मं) खो. ५६६ ।

करमः (सो भक्ति) ११११

कट (घ) दृढ ।

वधूः गोपिकः विना कीर्तने न भवति

युट्टमैर्थाऽ(सु) पसमन्थ ।

२०००

कुष्टघ्नी (म) वृक्षः । - ८

विष्णुः सत्यं च ॥ नैवेदिर्मा ॥

कुष्टगैः (हैम) पुष्पैः मूत्रैः ।

करी. (प) को सहायक कर ।

संक्रमितों की देखभाल, रोगी ।

अथ (स) ज्ञानं च ३० ॥ ३० ॥

कांवर (नं०) राजकुमार ।

(2) 100, 100, 100

कानून (२) शब्द कानून संघर्ष

कूण्डा (१) } नोडु कीटो-
(५) }

संज्ञा (म) संज्ञा है हीमने है

• पी, भद्र घोटने का पालि।

५३

कूबर कुबरा (पेटेड़ा, बाग़ा)।

$$f(\tau) = f(\tau) - f(\tau) = 0$$

(2) } 6-11-1958

पुष्प (पुष्प) का बलि

(प) सं. मिला, मिला, मिला

कट (म) } मित्रिकार यद्यपि

निर्देशा, अक्ष, पठोर, अप

$\sigma_{\text{max}} = \frac{\sigma_0}{1 - \beta}$

टी. डेवर्ली - न. न. राय

स्थित, पञ्च तं मिश्रित, पञ्च

कृष्ण (स) कीड़, खेपः॥

टह, गर, खण्ट, द्युग। ॥

कृष्ण- (ग). अङ्गुष्ठादङ्गुलिर्ब्रजिह्वा।

पहाड़ का-बाटी, निहाड़

१७. (स) अगदी, तट, विनिर्माण, ०

१. टिप्पणी (क) विवरण, गुण प्रकाश

कोर, मजदूरों को

म. मि. ति., दि. १६/११/२०१८

श्रीधरा: (म) घाभीरु वि. चरुने.

॥ १ ॥

पानि सप्तः पद १५ वृत्तः ५५

• **•**

॥ ३ ॥ (५) लोहोत्पत्तिः (६) पौर्णमासीः ॥ ३ ॥

कुछड़ा, कुछागडः } (प) कोइडा.
कुछड़ा, } (२) कल ।

कुछागडवटी (स) कोइगडी ।

कुछागडा (स) कोइडा ।

कुट (स) कट ।

कुटगोली (स) समगली ।

कुटघी (स) बकुली ।

कुटनी (स) पुंकोरमुन ।

कुंजमे. [ट] देगर, रोरी ।

कुवर (द) राजकुमार ।

कुगना (प) गल करना गुंगना ।

कुंगरि (स) कुजमे है, बोपने है

कुगना ।

कुजित (स) पछिघी का बोल

कुट (स) } निर्दिष्टकार, बहुग
(२) }

खज, पखत गिखर खज,

टेड, नर, खण्ट, देखनाग

पराड की-कोटी, निहाई ।

कुटव्य (स) खवेडा एक प्रकार

मे जित, खिर निर्दिष्टकार

परमाता ।

कुटजः (स) कोरेया ।

यूटनीलमशी (स) गीनर का
मिट्टी का बरतन, गली का

कूपगखयः (स) कूपी की मट्टी,

कूरमः (स) भाति (स) (स)

कूर गोपिकः (स) कोरेक केपे

भक्त देवता गीमेने मे

रिसारकंदः (स) मोरिंगर स

कुटी (स) कोरे बरतन ।

कूप (स) कोरे (स) (स)

कूपडी (द) } कोरे कोटी

(प) }

पी, मड घोटने का पात

कूबर कूबरा (स) टेडा, बाडा ।

कूर (द) } मिथ्या, बाडा,

(प) } निहाई, कूर, कठीर, कप
टी, टेडा (स) (स)

कुईन (स) कोइ, खेतः (स)

कुई (स) कडुपा, बायु बिजेव

कुन (स) लदीतट, (किंतार, स)

कोरा, कनार (स) (स)

कुनेवराः (स) पाभीर के चरने

स. मे चतुःपद (स) (स)

कुडी (स) कोरे की टीपी (स)

- कृष्णा. (म) पीपर १ पपरिपा । केतकी. (म) पृथ्वी विज्ञेय ।
 हय २ नेदती फूल ३ केतकाधानहेतोः, (वि० कल्प)
 स्वादलीरा ४ गम्भार ५ । केतकी के गर्म का हैतु ।
 लक्ष्मणा. (म) मिरिष भीषण ; केतु. (म) वाहन, ध्वजा, पट
 कृष्णा. (म) गुंजा, काकबिन्दु । भेद. पताका, भाही यह
 कृष्णासार, (म) हरसायव चर्चात् । विज्ञेय ।
 काशाहरिद । केतुपदवत्तमः (म) वेदार्थनपि ।
 कृष्णा. कुमगा, (म. द) कषु केतुतापा (स) पुच्छतारा,
 पीरनि, कैष, कारी, वसु धूमकेतु ।
 देव के पुत्र जाना, रंग । केर. (स) का, सम्बन्धकारण
 कृष्ण, (म) बनायाहुपा, मना का चिह्न ।
 कृष्णकेशैः, (वि पुत्रैः यदया केदारधान्यः (म) बिपारी की
 नरिनैः) टूट्ठों से बनाय धाम ।
 ६. शीत । केमुकः (म) केवपामाग ।
 हरे. लका. (म) मरुका मष्ट, केज. केमि (म) केन कीड़ा
 केटा (२) नीर की लूक । बिष्टार ।
 क्षिप्र. (म) व्यवहार, क्रिया केन्द्र (म) हतका, मध्यभाग,
 मष्ट का बहुवचन, मरकट ।
 यज्ञादि. प्रीति, भाव । केनि. केसी. (म) { छोड़ा, दि-
 यज्ञादि. प्रीति, भाव । केमि { दार, खेन,
 यज्ञादि. प्रीति, भाव । केमि { घर ।
 केकी. (म) नीरपत्नी, मरु । केवट. (म) मसाह, महुषा, खे-
 केचित्. (म) शीत से के, कोई यनी ।
 कोई । केवल. (स) मात्र, यकेनहिं,
 केतक (म) केतकी । पङ्कत, मिरिष, गुप्ता, पक

लोभी, होम ।

लगावु (म) दवावु मेहरवागी
लपित (म) गामा वल म
लपित (म) कोम ।

लपित (म) कोडा, कोट, काव,
लपित ।

लपित (म) दोनी राई ।

लपित (म) बाभिरा १५५५० ।

लपित (म) व्याव चतर ।

लपित (म) व्याव चतर ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

लपित (म) रंमनियाम ।

कृष्ण कापीतः (म) मेव वतुः
पद ।

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कृष्णमी (म) ग्याम गप

कौरवी (न) कीची ।

कोरात (न) बिरैता ।

कोमाश (म) पर्वत, विनोप,
नामपदाइ ।

कौवर (न) मलाइ, बोई ।

कौवर्त (म) मलाइ, भीर ।

कौवर्त्तिसुन्तः (स) चपटी
गोपा ।

कौर (स) कोई ।

कौवन्त (स) सुक्ति, कन्याए,
कोच, सुप्रभाति-पद्म मरण
से रक्षित होना ।

कोक (स) चकनापची, जाल
सेट, कमल ।

कोकमदः (स) शान, समतल ।

कोका (प) चकईपची, चक
वा दो मीठी ।

कोका (स) चकना-चकई ए
दुआ पची, दो पुरुष
यादक, का, कोकाचक,
कमल, कंटिया ।

कोकिल (स) कोईन पची,
दिश ।

कोविता (न) कोईन-पद्म ।

कोकिभाचः (स) तान्त-
मपाना ।

कोकी (म) नूर्त्तुची पुष्प,
चकई ।

कोकू मील्लु कनक ।

कोर (द) कोखा, जरायु,
पेट ।

कोइ (द) गोदी, कोर ।

कोलि (द) चंचल, गोदी ।

कोट (म) किका, घेरा, गढ़,
दुर्ग ।

कोठरे (प) कोठरा पृथ का,
पृथ की खोहर ।

कोठर (द) कोठरा ।

(म) } करोड़ संख्यावा-
कोटि (म) } चक, घुंघुंर, पूष
पद्म धनुष का कोर ।

कोटो (स) धनुष की गोमा,
पद्मभाग, करोड़ पद्म,
धनुष का कोर ।

कोठार (प) कुल्लारी, टांगी ।

कोरप (म) रुधिर, लोह ।

कोतन (फ) } खाली घोड़ा,
(प) } दस्तात ।

कोद (स) } नोधा, कुखित ।
(प) }

कुली, समय चक्षुःशालागाम ।

केश (स) बाल, रोम, माग ।

केशनामकः (स) सुगन्धवाला ।

केशवर्षी (स) जाल निधिरी ।

केशपाश (स) बालों का धारा ।

केशमुटोः (स) बजाइन ।

केशरध्वजः (स) } भैरवराज ।

केशराजः

केशवन्ती (स) समी हृष ।

केशर(स)हृषविशेष, कक्ष, फल

का कृषी ।

केशरि. (स) पृथ्विविशेष ।

केशरी (स) नाम बानर हनु

माग के पिता, मित्र ।

केशरीनन्द. (स) हनुमान,

बजाइन ।

केशव (स) विष्णु, कृष्ण ।

केशिनी (स) राजा सगर की

छेड़ा स्त्री ।

केशी (स) भाविष्य १ शतावरर

केशरः (स) नागकेशर या ना

गेशर ।

केशरी. (स) मित्र, भाता पिता,

केशरी, हनुमान के पिता ।

केशरीकुमुद (स) माता पिता

कोई वा ।

केशरी (स) मित्र, गृगराज,

केशरी, हनुमानजीका पिता ।

केश [स] कोई, कथित ।

केशयी [स] राजा केश की पुरी

कश्मीरवासी पक्ष राजा

दसरथ को मध्य स्त्री ।

केशभ. 'स' देवविशेष ।

केशव [स] कपट, कल, माया ।

केशय [स] राजा, देव विशेष ।

केशव्य (स) काय फल ।

केशववादिनी (स) दूती,

ठगिनी ।

केश (स) मुण्डाक्षर, मुड़िया,

नागरी चक्षर ।

केश [स] बन्धमान्, बन्ध ।

केशवध्व [स] कुंठ के सिद्धे

चन्द्रमा ।

केशरभक्षम् [स] विषादी का

पानी ।

केशर्ती [स] भेंट ।

केशर्ती फलः [स] बेरी ।

केशव (स) श्वेतकुमुदिन ।

केशवः (स) भेंट ।

कैरवी (न) अघी ।

कैरात (स) धिरेता ।

कैराज (स) पर्वत, विजय,
नामपदाङ्क ।

कैरा (म) मनाइ, पीर ।

कैरा (म) मनाइ, भीर ।

कैरासिद्धि (स) केपटी
मीघा ।

कैरा (स) कीर ।

कैरा (स) मुक्ति, कल्याण,
कीघ, सुप्रमाण-तया मरण
के रहित होना ।

कीघ (स) जलवापणी, जाल
मेड बनस ।

कीर (स) जान, बगल ।

कीरा (स) पर्वत, चर
वा की मीरी ।

कीरा (स) चक्रवा-चक्रं ए
दुनो पक्षी, की पुरुष
राज्य, का, कीराचक्र,
कमलें बोटिया ।

कीरि (स) म बाईन पक्षी,
विह ।

कीरि (स) कीरें पक्षी ।

कीरिभाषा (स) तान-
मवाया ।

कीकी (स) नृसिंहा, पुण,
चक्र ।

कीकू मेल्लु बनस ।

कीका (द) कीका, जरायु,
पेट ।

कीर (द) गोदी, कीर ।

कीर (द) खेन, गोदी ।

कीर (स) किरा, घेरा, गढ़,
दुर्ग ।

कीर (प) कीररा वृष का,
वृष की खोहर ।

कीर (द) कीररा ।

(म) करीह संख्यावा-
कीटि (म) चक्र, पुंशु, पुंशु
पक्ष धनुष का होर ।

कीटी (स) धनुष की मीमा,
पशुभाग, करीह पक्ष,
धनुष का होर ।

कीर (प) कुल्लारी, टीमी ।

कीर (द) रधिर, कीर ।

कीर (प) खाली कीर,
(प) दातात ।

कीर (स) मीमा, कुल्लार ।

प्राणी, सगंध चक्रमातमाग ।
 केश (स) दास, रोम, भाग ।
 केशवासकः (स) सुगन्धवान् ।
 केशवर्णी (स) लाल भित्तिरी ।
 केशपात्र (स) बाजों का छत्र ।
 केशमुद्रो (स) वज्रासन ।
 केशरक्षगः (स) } भोगराज ।
 केशराजः }
 केशवन्ती (स) सती वृक्ष ।
 केशर (स) वृक्षविशेष, शकुल, फूल
 का रूप ।
 केशरि. (स) पुष्पविशेष ।
 केशरी (स) नाम धानर वृक्ष
 भाग के पिता, सिंह ।
 केशरीगन्ध (स) इनुमाग,
 वज्रास्त्र ।
 केशव (स) विष्णु, कृष्ण ।
 केशिनी (स) राजा सगर की
 ज्येष्ठा स्त्री ।
 केशी (स) माचिच्छा १ गंगावरर,
 केशरः (स) नागकेशर या ना
 गेशर ।
 केशरी (स) सिंह, माता पिता,
 केशरी, इनुमाग के पिता ।

केशरीकमुद्र (स) माता पिता
 कीर्ति का ।
 केशरी (स) सिंह, गृगराज,
 केशरी, इनुमागजीका पिता ।
 केश [ट] कीर्ति, कश्चित ।
 केशय [न] राजा केश की पुत्री
 केशरीकासी यह राजा
 दसरथ को मघ की ।
 केशम स दैत्यविशेष ।
 केशव [म] कपट, कल, माया ।
 केशव [म] राजा, देव विशेष ।
 केशव्य (स) काय फल ।
 केशववादिनी (स) दूती,
 ठगिनी ।
 केश (स) सुगन्ध, सुडिया,
 नागरी चक्षर ।
 केश [फ] बन्धगान्, वस्त्र ।
 केशवचन्द्र [म] कुंठ के सिंघे
 चन्द्रमा ।
 केशरगन्धम् [स] केशरी का
 पानी ।
 केशर्ती [स] भेंट ।
 केशर्ती फलः [स] बेरी ।
 केश (स) श्वेतकुमुदिन ।
 केशव. (स) भेंट ।

कैरवी- (स) सेही ।

कैरात- (स) धिरेता ।

कैराज- (स) पर्वत, विमेष,
नामपदाङ्ग ।

कैवर- (स) मलाह, पीर ।

कैवर्त- (स) मलाह, भीवर ।

कैवर्धिसुक्ता- (स) देवटी
गोधा ।

कैर- (स) कीर ।

कैवर्ध- (स) मुक्ति, कल्याण,
कीच, कृष्णमार्ग-कृष्ण नरण
से रहित होना ।

कोक- (स) चक्रवापची, श्राव
सेह कमल ।

कोकगद- (स) काल, कमल ।

कोका- (स) चक्रवापची, चक्र
वा की सेही ।

कोका- (स) चक्रवा-चक्रवृत्त ए
दुनो पक्षो, दो पुरुष
वाचक, का, कीवाचक,
कमल, कटिया ।

कोकिल- (स) कोईल पक्षो,
पिल ।

कोकिल- (स) कोईल पक्षो ।

कोकिल- (स) तान-
मलागा ।

कोकी- (स) नृसिंही पुष्प,
चक्र ।

कोकू- मल्लु कमल ।

कोक- (द) कोखा, नरायु,
पेट ।

कोह- (द) गोदी, कोर ।

कोह- (द) घंघन, गोदी ।

कोट- (स) क्षिका, घेरा, गढ़,
दुर्ग ।

कोठर- (प) कोठरा वृक्ष का,
वृक्ष की खोहर ।

कोठर- (द) कोठरा ।

(स) } करोड़ संख्यावा-
कोटि- (स) } चक्र, घुंघुंर, पूष-
पक्ष धनुष का होर ।

कोटी- (स) धनुष की गोमा,
धनुष भाग, करोड़ पक्ष,
धनुष का होर ।

कोठार- (प) कलहारी, टांगी ।

कोर- (स) बधिर, लोह ।

कोतल- (फ) } खाली घोड़ा,
(प) } बहतात ।

कोप- (स) } गोधा, कुष्ठित ।
(प) }

फेगानी, भगवत्पदशातमास ।	फेगानीकमुद् (स) माता पिता
फेग (स) मात, रोम, भाग ।	फेगि' का ।
फेगनामकः (स) सुगन्धवान् ।	फेगरो (स) सिंह, सुगराज,
फेगवर्णी (स) लाल विचिरी ।	फेगरो, समुभागभीष्मा पिता ।
फेगवाय (स) बाली का पुत्र ।	फेग [८] फेगि, कथित ।
फेगमुत्रो (स) बकाइन ।	फेगय [९] राजा फेग की पुत्री
फेगवर्णः (स) } भेगराज ।	फेगमीरवासी फेग राजा
फेगवाजः	दसराय की लघु स्त्री ।-
फेगवर्णी (स) समी सुष ।	फेगम स' देवविशेष ।
फेगवर्णवर्णविशेष, बकुल, फल	फेगव [१०] कपट, झल, माया ।
का रूप ।	फेगव [११] राजा, देग विशेष ।
फेगवि. (स) पृथिवीविशेष ।	फेगवर्ण (स) काय फल ।
फेगरी (स) मात धानर दन्	फेगवर्णविनी (स) दूती,
मान के पिता, सिंह ।	ठगिनी ।
फेगरीनन्द (स) अनुमान,	फेग' (स) मुण्डापर, मुड़िया,
बकाइन ।	नागरी घण्ट ।
फेगर (स) विष्णु, कृष्ण ।	फेग [१२] बस्यमान्, बस्य ।
फेगिनी (स) राजा मगर की	फेगवर्ण [१३] फेग के निधे
फेगिनी स्त्री ।	बस्यमा ।
फेग्री (स) माचिवा र मगावर	फेगवर्णम [१४] विपरीत का
फेगः (स) तानवेसर या ना	वाणी ।
लेसर ।	फेगर्ती [१५] भेट ।
फेगरी (स) सिंह, माता पिता,	फेगवर्ती फलः (स) बेरी ।
बकाइन, समुभाग व पिता ।	फेगव (स) मंगलमुदिन ।
	फेगव, (स) भेट ।

कैरवी (म) मेघी ।

कैराट (म) बिरैता ।

कैनाग (म) पयंत, दिगैय,
नामपराइ ।

कैवर (म) मनाइ, कोरे ।

कैवर्त (म) मनाइ, धीवर ।

कैवर्तिसुन्तः (स) बघटी
गोघा ।

कैर स कोई ।

कैरम्य (स) मुक्ति, कल्याण,
कोघ, कुप्रमासि-कम मरण
से रक्षित होना ।

कौक (म) चक्रवापची, मात
मेरु कमल ।

कौकनदः (म) काल, कगत ।

कौका (प) चक्रवर्ती, चक्र
वा की मेरी ।

कौका (स) चक्रवा-चक्र ई ए
दुनी पची, को पुरुष
वाचक, का, स्त्रीवाचक,
कगत कटिया ।

कौकिल (स) दाईन पची,
पिल ।

कौकिपा (म) कोइय-पय ।

कौलिभाषः (स) तान-
मपाना ।

कोकी (म) मूर्धमुषी पुण,
चकर ।

कोकू स-लघु कमल ।

कोर (द) कोन्ना, करायु,
पेट ।

कोर (द) गोदी, कोर ।

कोरि (द) बेंबल, गोदी ।

कोट (म) किला, घेरा, गढ़,
दुर्ग ।

कोठर (प) कोठरा पृथ का,
वृक्ष की खोहर ।

कोठर (द) कोठरा ।

(म) करीह संख्यावा-
कोटि (म) चक्र, घुंघुंर, पूर्य
पथ धनुष का छोर ।

कोटी (स) धनुष की गोमा,
दगुभाग, करीह पथ,
धनुष का छोर ।

कोठार (प) कुल्हारी, टांगी ।

कोरप (म) रधिर, लोह ।

कोतक (फ) खाली घोड़ा,
(प) बढ़तात ।

कोघ (स) गोघा, कुलित ।
(प) गोघा, कुलित ।

कीया (क) कडा, कडापर ।

कीथी (स) झोम, मंकीन ।

कीदंड (स) धनुष, चाप,
कामाग ।

कीदक (फ) लड़का, बालक ।

कीदक (प) } की दो पक्ष,
कीदक (स) } विशेष । [मुम्माद

कीप (स) झोम, राम तामम,
[चाम्य पत्ती ।

कीपर (स) पात विशेष,
[चारी विशेष ।

कीपरधार (ट) पानदान,
काडपि. (स) की भी, की
निधय ।

कीपो. (स) कीधी, तामसी,
रामो, कीर ।

कीविद (स) पण्डित, गुणी,
बुद्धिमान-चतुर ।

कीमय (स) कामक, लसक ।

कीमल (स) नरम, पत्ती,
चकुमारे, मूद नमी,
नाजक । [वही ।

कीमलबल्लभा (स) बफारी

कीमला (न) सिंदुरिभा ।

कीम. कीमय. (प) } कीना, मो
कीये (द) } गा, पाप

का कीम, पाप का संपूर्ण
क्षित देना ।

कीर (प) } किमारा, चम ।
(फ) }

कीरि (स) कीद करके, की-
ना, चुरचाना ।

कीरही (स) चवचडा रसा-
यरी ।

कीरदुप (स) कीदी चम ।

कीरी (प) } करीब, कीम र.
[द } संख्यावाचक,

कीरहा लाति विशेष ।

कीर [स } मकर, चाल, म-
[प] } की, पडाहिया,

कीरय विशेष बैरफक, मूर

कीरकम् [भ] कडोने ।

कीरपत्ती [स] मजपीपर ।

कीरवालुतम् [स] मय्यक ।

कीरागिमको [स] म् कीम ।

कीरा (स) } मूकरी, मोदी,
(प) } मूक, मोदी,
२ पीपर ।

कीराइल (स) कूर, रोहा,

कलमन. गुलशारे, चिप्ता.

रट, दहा मद्ध ।

कोशी. (प) गली, छेडा ।

कोविद- (द) पंडित, बुद्धिमान,
चतुर । (ख) नानद ।

कोश- (म) चवतम्ब, पाशित

कोशकारः (म) स्याद पीर

की बेतारी । (न) स ।

कोशवतम् (स) शंखादि का

कोशफलः (म) कंकोश ।

कोशव्यः (म) शंख, घोषा,

कोड़ी, सितुहा पादि ।

कोशामः (म) कोटा पाम ।

कोशल- कोशमा, कोशलपुरी (म)

देश विशेष, प्रयोध्या पुरी.

एक देश का नाम ।

कोशसेग (स) प्रयोध्या से राजा ।

कोष- (स) } भरादार, धनि-
(प) } धान, घर,

गासा. कमल का मध्य,
खजाना ।

कोड- (प) } कोष, क्रीड,
(फ) } पर्वत ।

कोडवर (द) कौतुक घर

ध्याइ का । [कोशमा ।

कोशव- (प) कल्पना, फठमा,

कोही- (फ) } पचाइया,
(प) } कोधी, कोपी.

को- (म) पृथिवी में, भूमिमध्ये ।

कोटः (स) } कोरेपा
कोटनः }

कोदप- (स) राघम, निशाचर ।

कोतुह- (स) कीशा, मायावरो,

कुतूहल, खेल, पाययं,

प्रसंभा तपाज्जुष ।

कोतुहन- (स) परिहास, त

मागा, प्रमावास, प्रचम्भा

नई बात जानने की इच्छा ।

कोत्तो (स) रेमुका ।

कोप्यः (स) कुंर्पा का पानी ।

कोप्यनसन् (स) कुंर्पा का पानी ।

कोमुदो- (स) चन्द्रिका,
चान्दनी ।

कोमोदिका- (स) गदा दायुध ।

कोरव, (स) कुरु की मन्तान ।

कोल- (म) } वानमार्गी.
[फ] } विष्वासघाती,

धवन, करार पायंडी ।

श्रीश्रीनः [स] वृत्तिवर्षा ।

श्रीश्रीनः [स] दृग्निर्देश, प्रतीक,
चमत्कार ।

श्रीश्रीनः [स] छीटा चाम ।

श्रीश्रीनः [स] गुग्गुलु, इन्द्र,
सम्पत्ति, विज्ञानमित्र, सुनि ।

श्रीश्रीनः [स] मन्त्रविज्ञेय, समु-
द्ररत्न, विष्णु भूषण ।

श्रीश्रीनः, श्रीश्रीनः [स] चेत-
कीपुत्र ।

श्रीश्रीनः [स] चूरी

श्रीश्रीनः [स] कछी, कछना ।

श्रीश्रीनः [स] काल कमल ।

श्रीश्रीनः [स] कण्ठ के तुल्य ।

श्रीश्रीनः [स] कमल यादि की
कड़, मीठ समूह ।

श्रीश्रीनः [स] बादरी के
समान ।

श्रीश्रीनः [स] यज्ञ, याज्ञ, पूजा ।

श्रीश्रीनः [स] यगर ।

श्रीश्रीनः [स] यगर ।

श्रीश्रीनः [स] लतायें,
लताकार के करमै वाला ।
श्रीश्रीनः [स] लताकार ।

श्रीश्रीनः [स] कृपा के सार ।

श्रीश्रीनः [स] कृपा के पात्र ।

श्रीश्रीनः, श्रीश्रीनः (स) राजप्रे-
षस्त्रप ।

श्रीश्रीनः (स) एकत्र, रीति, परि-
पाटी, भांति, सरतीह,

सीढ़ी । [भांतिह]
श्रीश्रीनः (स) एकत्र, भांति

श्रीश्रीनः (स) सुपारी हस्त ।
श्रीश्रीनः (स) सुपारी

३, तूट ४ ।

श्रीश्रीनः [स] दुबला, । [दुबला]

श्रीश्रीनः (स) प्रकाश, शीमा,

श्रीश्रीनः (स) काम, व्यवहार,
गण्य ।

श्रीश्रीनः (स) कलि, खिल, की-
तुल, खिल, पति स्त्री का

व्यामिश्रण । [मिश्रण]

श्रीश्रीनः (स) तामस, राग ।

श्रीश्रीनः (स) करीब ।

श्रीश्रीनः (स) करीब हस्त ।

श्रीश्रीनः (स) धूर, निर्दोष, कठोर
कापी कमल, परतीह,

खोटा । [खरोट फरोख्त ।
 कथविक्रय (म) लेना, धेचना,
 कूरकर्मा (स) चर्क पुष्पो ।
 कूरगन्धः (स) कन्ध ४ ।
 कोह- (स) विपिन, वन, संख्या
 वाचक, हृदय, छाती ।
 कोहकः (स) नागरनोथा १
 गोधा २ ।

कोहजः (म) } गोती ।
 कोहमेतुकः }

कोही- (स) दाराद्योक्तम् ।
 कोध- (स) रागस, राग, कोप,
 गुल्म ४ ।

कोश- (म) कोश, भुजिका चार
 सहस्र दायनाम्ने ।

कोटवित् (स) पिठान ।
 कोटपिता- (स) दिलैपादम् ।

कोटा { (स) नृकास, मिथार,
 { गीदह, रोनेवाला ।

कोख- (स) बीयाद्योप, वक्र, १
 कुररी पत्तो २ ।

कोटरम् (स) नाम ६ एव
 छाटी का लिख तें होकर
 हंस पावे जाते हैं ।

कान्त- (स) यथा हृषा ।
 कान्त चस्ताः (वि-वे श्याः)
 गते हैं दाय ।

कलिट- (म) दुःखित, दोन, वि-
 च, कठोर, दुःखी, गलीन
 कलिटकान्तेः, (वि, रन्दीः)
 गलीन है इ वि विसकी ।

कलीतकः (स) जेठोमध ।
 कलीतका (म) गोम । [पमघे
 क्लीव- (स) गपुंसक, निर्बल, च
 क्लिद- (स) गीलापन, भोजा
 पीद । [विलाप ।

क्लेश (स) दुःख, कष्ट पीड़ा
 क्लेशिन, (स) दुःख देनेवाला ।
 क्ल- (स) कदा, कुतः ।

क्लू (स) कीनी ।
 क्लित्- (स) कवहिं, कहीं ।

क्लू- (स) रागकटही विषेय ।
 क्लाय (स) लाटाय लीगांदा
 क्लिता- (स) कटी ।

क्लपित- (स) घनताहृषा, भग
 कारताहृषा ।

कंदर- (म) गिर ।

कंधरा- (स) गला ।

श्रीश्रीग [म] श्रीश्रीग ।-

श्रीश्रीग [स] देवविशेष, मन्त्रीग,
चमता ।

श्रीश्रीगः [म] छोटा चाम ।

श्रीश्रीगः [म] गुग्गुलु इन्द्र,
सम्, बिखामिच, सुनि ।

श्रीश्रीग [म] मणिविशेष, समु-
द्ररत्न, विष्णु भूषण ।

श्रीश्रीगदः, श्रीश्रीग [स] देव-
कीपुत्र ।

श्रीश्रीग [द] श्री

श्रीश्रीग [स] कडा, ककना ।

श्रीश्रीग [म] काम कमल ।

श्रीश्रीग [स] कण्ठ के तुल्य ।

श्रीश्रीग [स] कमल यदि की
जड़, सेव सम ।

श्रीश्रीगदाम [म] बादरी के
समान ।

श्रीश्रीग [स] यज्ञ यात्र, पूजा ।

श्रीश्रीगः [म] पगर ।

श्रीश्रीग [स] पगर ।

श्रीश्रीग ललल [म] ललायं,
सपकार के करने वाला ।

श्रीश्रीग [स] तरवार ।

श्रीश्रीगदाम [म] कृपा के घा ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के घा ।

श्रीश्रीगदः, श्रीश्रीगदः (म) राक्षस,
पक्ष ।

श्रीश्रीगः (म) एकल, रीति, परि-
पाटी, भाति, तरती,
सीटी । [भातिदे।

श्रीश्रीग (म) एकल, भाति

श्रीश्रीगः (म) सुपारी हथ १.
पगठानीकी २, सुपारी
३, तल ४ ।

श्रीश्रीग [द] दुबला, । [दुबला ।

श्रीश्रीग (म) प्रकाश, शीमा,

श्रीश्रीग (म) काम, व्यवहार,
श्रवण ।

श्रीश्रीग (म) कलि, खेल, की
तुल, खेल, पति श्री, का
शक्ति । [मिमम ।

श्रीश्रीगदाम (वि, ताः) खेन

श्रीश्रीग (म) तामस, राग ।

श्रीश्रीगः (म) करील ।

श्रीश्रीगदामः (म) करील हल ।

श्रीश्रीग (स) कूर, निर्दोष, कठीर
कापी, कमल, परदी,

दिशा, भाग १ शकर,
छोपा निकाशा; राव २ ।

खण्डिता (स) यह नायका
जिम का प्रीतम-दूगरी
को के पास रहकर भीर
घर पावे ।

खण्डान्वयः (स) कछाण पद्य
मगावे का जो कसटि के
पद्य लगे, ता तीठिताहि
के पद्य मगावे । [मदनो]

खदिरकः (स) पानी में की न
खद्योत (स) भगजुगनी, जु
गनू, कीड़ा, पटवोलना
को रात में चमकता है,
पटविजना, मूय ।

खनि (द) खोदकरने ।

खपरिषा (द) संगवसरी ।

खभार } (स) शून्यभाव भ्र-
खभारु } मित, भ्रंश, शीव
खेद, नडा विपत्ति, कान्त,
होम ।

खभार (स) शून्यभाव, भ्रमिन्त,
लोभ, शीव, होम ।

खर (स) } गदहा, गधा, पशु,
(क) } एक राक्षस, दूषण
(प) } का गाई, लवा

तीक्ष्ण, घर्म, घाम, धूप,
खरखराइट, रावण कर
पभिभाग, कठोर ।

खरवृजा (द) साक्षमी ।

खरचन्द्रः (स) भुईंसद १
शिरोहा २ । [की ।

खरत्तक् (स) लज्जानी खित

खरवर्षो (स) गोभी ।

खरपुष्पा (स) बर्बरी ।

खरनज्जरी (स) चिरचिरी ।

खरगाकः (स) बभनेठी ।

खरस्कन्धः (स) चिरवंजौ ।

खरस्वर्गा (स) यन्दास ।

खरवृन्द (स) गधों का समूह ।

खरधारा [स] तेजधार ।

खरारि [स] रामचंद्र ।

खरतर { (स) खरखराइट अ-
[प] विक ।

खरभर [द] होम, चमकना ।

खरगान [द] ज्ञान, तेज,
धोष ।

खरा [स] यगमोदा ।

खरो { (स) गदहो, गधो, मही
[प] लिखै की ।

खरो [द] लण ।

कंध- (स) कंध, कंधा, मोटो
कार । [दगमगाना ।
कंधति (स) समुद्र कंधायमान

ख

ख (स) इन्द्रिय, आकाश,
बीयर, सूना, बिंदो, गून्य ।
खं (स) आकाश, गगण,
गून्य ।

खसम्भव (स) पयस, वायु ।
खग- (स) रवि, शशी, पवन,
अश्वत्थ, विहङ्ग, पक्षी, वि-
डिघा, आकाशगामी, तीर,
सूयादिघट, पक्षी मय,
देव, हरि, वाण, घट,
अश्वर, आकाश ।

खगः (स) पक्षी सब क्षीर उपर
खग शब्द के तुल्य अर्थ
कानो ।

खगकट (स) भीषपक्षी ।
खगकट- } (स) गरुडपक्षी,
खगकट- }
खगपति } विहङ्गपति ।
खगशठ- (स) कौषा ।
खगडा- (स) गेंडा, गेंडा, खड्गो ।

खगेश (स) गरुड, खगपति ।
खगोष्ठ (स) आकाशमंडल ।
खदिरः (स) खयर, बला ।

खनना-पक्षी- (स) } जड़ना
पक्षित (स) } मणिपा

जड़ित वा पक्षी किं
दुपा, जवाक, जहादुप
खस्यन } (स) पक्षीविशेष, र
खंडरिष- } रिद्ध खंडरि

ममीषापक्षी ।
खञ्जरोटः- (स) खड्गनिषपक्षी
पट- (स) सुखकरना, सि
होना ।

खट्टा- (स) खाट, पलंग ।
खट्टाई- खट्टाई खट्टाई- (स)
सुखकरणी, खिरहोई
टिकई, खिर रचना ।

खटिका- (स) } निषिने
खटी- } खेसा ।

खटीगवरः- (स) विषाया
खटी निषिने की विषनी

खट्ट } (स) तलवार, हति
खग } मार, डाल ।

खेडो- (स) गेंडा, बग चन्तु

खण्ड- (स) टुकड़ा, टुक, कित

दुखिया, दुखर, दुर्बल,
यका दुषा, दुःपित, या-
न्त, दुःखिया ।

खिचविद्युत्कलपः (वि० भवा-
म्) यकी हे विजलीरूपी
को लिख को ।

खिच (घ) पागल, चर्मील,
धरन । [द्विवि ।

खिला (घ) पाकाल, शून्य,
खील-खील (द) रीम, कोप ।
खीलन-खीलन (द) रीमात,
कोपकरण ।

खीम-खीम (द) कोष, कोप,
सुगम, निटिम, दितित,
गाम ।

खीमा (घ) गट हो जाता ।

खीमा (द) घेनी, चर्मीदि,
कदानी, गट हो जाता ।

खुवाह खुवार (फ) खराब,
हरबाद, गट । [कोष ।

खुनस-खुनुम (प) गंसा, कोप,
खुनली (ग-भौ, खुनुटी ।

खेनर (स) दह, पखी, विद्या ।

खेर, कोटि बहन्त को

गाधे-ताको भी-खेवर
संघा हे, शास्त्र प्रमाण ।

खुरकः (स) खुरारीगाधातु ।

खेटकः (स) पहेर, पञ्जविशेष ।

खेटकी (स) बधिक, गिकारी,
बहेसिया ।

खेत-खेच [प] जोतीभूमि,
पस बोने का खान, रण-
भूमि, समरभूमि ।

खेह-खेहे [स] { टीला, टीली
खेर [द] { नगर की,

पुरा, गांव पाठ घर की
बस्ती ।

खेद [घ] दुःख, कष्ट, मोक्ष,
पहिताद, पीडा । [विन्द ।

खेदकरण [स] पसेना, घात,

खेरज [स] धूरि, गरदा ।

खेल-खेला [प] कीड़ा, बिहार ।

खेडवार [प] खेलाही, खेल-
निहार ।

खेर [फ] भला, कुमल ।

खेतात [फ] भीष, भिषा ।

खोर-खोरी [टो] { दूधद, हो-
[स] { प, गली,

दरगा, पयग, खोरी,

खर्जूरः [स] कृपाद्वय, खजू-
र, कुहारा ।

खर्जूरी [स] क्रीडा ।

खर्जूरीतदः [स] क्रीडारे वा
वृक्ष । [क्रीडाही ।

खर्जूरीतरुतीयः [स] खजूर

खपरः खपरः [स] अग्निखपर,
खोपरी, शिरेस्त्रीपट्टी, पीठ ।

खर्जूकः [स] खर्जूका ।

खद्वली [स] चमरसती ।

खर्प्यः [स] } खपरिषा ।
खर्प्यरी [स] }

खर्ष्यं खर्ष्यं [स] खसु, छोटा,
तुच्छ, संख्यावाचक भी
चर्षुद ।

खलः खलः [स] धूम्र, पधम,
मोन, तिसकी, सीटो,
नियय, नियय कर से,
निचर, खरतक, वामन,
दुष्ट, चम्प ।

खलपः [स] भाट देनपाला ।

खल [स] जातिविशेष, भीष
[द] जाति मेवाज में
[क] मसिह, दण्डविशेष,

असिपा, कोलभिल ।
खलो (द) गिरा, बहरा ।

खलेस (द) गिरा, खसगा ।

खात (द) तालाव । [मी ।

खाखसः (स) पोस्ता की तुक-

खाखसतिक्तः (स) पोस्ता का
दाना १ पोस्ता की तुक-

मी २ । [बुद्धदा ।

खांड़ा (स) तलवार, विग्रेष,

खानिक (द) जो खानि में
हुया ।

खानि } (द) घर ।
खनि }

खांगी (द) खमती, घटती ।

खान (स) खजुलीरोग, कण्डू,
चुन ।

खार (द) राख ।

खानोदक (स) नारियरवृक्ष ।

खामी (फ) अज्ञानता, अप
कता, कथादे ।

खाश (पद) गड़हा, नीसे वम
हा, धोकनी, खाडी ।

खिखत (स) अद्वित, वा पछो
किया हुआ ।

खिख खीन (स) तुच्छ गुरु
खीण (प) अधिक दुःख

दुधिया, दूधर, दुधैल,
यक्षा दुपा, दुःषित, या-
स्त, दुःषिया ।

खिचिद्युत्तरः (वि० भवा-
न्) यक्षी हे दिनसोदपी
क्षी लिस की ।

खिच (म) पागल, धर्मल,
धरम । [द्वि०]

खिला (म) पाकाम, शून्य,
खील-खील (द) रील, लीप ।
खीलन-खीलन (द) रीलात,
लीपकरण ।

खीन-खीन (द) लीध, लीप,
खुगम, मिटिल, वितिल,
नाम ।

खीसा (म) गट होजाना ।

खीसा (द) दैली, चर्मादि,
कधानो, गट हो जागर ।

खुमार-खुमार (फ) खराब,
धरषाद, गट । [का०]

खुनस-खुनुम (प) गांसा, लीप,

खुतन्दी (स) गौं, झुकुटी ।

खेनर (स) पद, पक्षी, विद्या ।

धर०, खीटि बधन्व लो

गाधे ताको भी खेवर
संघा है, माना प्रमाण ।

खुरकः (स) खुरारंगाधातु ।

खेटक (स) पहेर, पञ्चविशेष ।

खेटकी (स) बधिक, यिकारी,
बहेसिया ।

खेत खेच [प] लोतीभूमि,
भय खीने का स्वाग, रण-
भूमि, समरभूमि ।

खेह-खेहे [स] टोला, टोकी
खेरे [द] नगर की,
पुरा, गांव बाठ घर की
बस्ती ।

खेद [स] दुःख, कष्ट, शोक,
पक्षिताव, पीडा । [बुन्द]

खेदकरण [स] पमेगा, घाग,

खेरन [स] धूरि, गरदा ।

खेल-खेला [प] लीड़ा, बिहार ।

खेसवार [प] खेलाही, खेल
निहार ।

खैर [फ] भला, कुशल ।

खैरात [फ] भीय, भिछा ।

खीर खीरी [ट] दूध, दो-
[स] प, गली,

टटना, पयग, खीरी,

खर्जूरः [स] रुपाद्रव्य, खजूर, र, कुडारा ।

खर्जूरी [स] झोंडारा ।

खर्जूरीतदः [स] झोंडारि का वृक्ष । [भी ताडो ।

खर्जूरीतकृतोयः [स] खजूर खर्पर खप्पर [सो] खनिखप्पर,

खोपरी, गिरखीपहो, पीठ ।

खर्जूकः [स] खर्जूना ।

खर्जूली [स] खमरसती ।

खर्जूरः [सो] खपरिषा ।

खर्जूरी [सो] खपरिषा ।

खर्जूः खर्जू [स] लघु, झोटा, तुच्छ, संख्यावाचक भी प्रयुक्त ।

खलः खलु [स] धूर्त, पधम, मोक्ष, गिणकी, मीटो, नियय, नियय कर के, नियय, खलस, वासन, दुष्ट, पल्प ।

खलपः [स] भाङ देनेवाला ।

खल [सो] कातिविगीय, भीष

[दो] काति मेवाळ में

[फो] गिह, टपविगीय,

खमिषा, कोलमिष ।

[दो] गिरी, बकरा ।

खमेष्ठ (द) गिरा, खसगा ।

खातः (द) तालाव । [भी]

खाखसः (स) पोस्ता की तुक

खाखसतिसः (स) पोस्ता का

दाना र पोस्ता की तुक

मी २ । [बुधदा ।

खाड़ा (स) तखवार, विगैव,

खानिह. (द) जो खानि में

हुया ।

खानि } (द) घर ।

खानि } (द) घर ।

खानि (द) कमती, घटती ।

खाणः (स) खजुलीरोग, कणू,

पुल ।

खार (द) राख ।

खानोदक (स) नारियरवृक्ष ।

खामी (फ) अज्ञानता, अप-

कता, कचारे ।

खासः (पद) गड़हा, नीचे बम

हा, धोकनी, खाड़ी ।

खिचरा (स) खडित, या पसी

किया हुआ ।

खिच खीन (स) तुच्छ, शून्य,

मोष (ग) खडित, हुआ ।

दुखिया, दूबर, दुर्धन,
यका दुपा, दुःखित, आ-
स्त, दुःखिया ।

खिचविद्युत्कलत्रः (वि० भवा-
न्) यस्मी हे विजसोरूपी
स्त्री लिख स्त्री ।

खिच (म) पागल, चर्मील,
धरन । [दिवि ।

खिला (स) पाकाय, ग्न्य,
खीन-खीन (द) रीन, कोप ।
खीनय-खीनय (द) रीसात,
कोपकरण ।

खीन-खीन (द) कोध, कोप,
खुनम, मिटित, वितित,
नाम ।

खीना (म) गट होजाना ।
खीना (द) घेनी, चर्मीदि,
करानी, गट हो जाना ।

खुपाय-खुपाय (फ) खराय,
यरयाद, गट । [कोध ।

खुनम-खुनम (प) गमसा, कोप,
खुनली (स) गों, खुकुटी ।

खुनर (स) दर, पसी, विद्या ।
खर, कोटि दहन को

माधे ताको भी खेचर
संज्ञा हे शास्त्र प्रमाण ।

खुरकः (स) खुरारागाधातु ।

खेटकः (स) पहेर, पन्नविशेष ।

खेटकी (स) बधिक, यिकारी,
बहेलिया ।

खेत-खेत [प] जोतीभूमि,
पय बोने का स्याग, रण-
भूमि, समरभूमि ।

खेह-खेहे [स] } टोला, टोली
खेर [द] } नगर की,
पुरा, गांव गाठ घर की
बस्ती ।

खेद [ग] दुःख, कष्ट, मोक,
पक्षिताय, पीडा । [युन्द ।

खेदकरण [ग] पसेना, घाम,

खिरज [स] धूरि, गरदा ।

खिल-खिला [प] क्रीडा, विहार ।

खिलपार [प] खेलाही, खिल-
निहार ।

खोर [फ] भला, कुशल ।

खोरात [फ] भीय, भिला ।

खोर खोरी [ट] } दूध, दी-
[स] } प, गली,

टरना, पयग, खोरी,

चन्दन की खोरी । [श्रीम ।

खोरी- [प] खोरी, खोरी, पग

खोरी- [स] खोरी, खोरी

खोरी- [प] गली गुफा ।

खोरी [स] शिवकलमि, शिव

शिवकलमि विन्द ।

खोरी [स] शिवकलमि, शिव

शिवकलमि, प्रसिद्ध ।

खोरी [स] प्रसिद्ध ।

ग

गईवखोर [प] जो वस्तु हेरा-

या वा भ्रष्ट जाते मिले,

या सुभारा जाये ताहीपु

गईवखोर ।

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन, पवरख ४ रंग का ।

गगनात्मकः [स] पवरख ४

रंग का ।

गगनः [विशेष] आकाश

जगन्मोक्ष-प्रदाय देवता ।

[स] गृहीविशेष, नाम

गृही, सन्तानकटपिपयो, प

विशेष, आगको भेजा ।

गङ्गाधर- [स] शिव, शिव

धर ।

गङ्गासागर- (ग) गङ्गा और

गङ्गा का संगम ।

गङ्गा- (ग) चक्रता हुआ ।

गङ्गातोनाम्- (ग) चक्रता

गङ्गा का ।

गङ्गा- (ग) हाथी, करी, रो

गङ्गा- (ग) हाथ का नाव ।

गङ्गा- [स] हाथीकासी ।

गङ्गा- [स] हाथीकासी ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

गङ्गा- [स] गङ्गापीपर ।

यक शुभ्रवरन, लखोदर
 हेरेंव । यह दम नाम
 यिनोद छत, हरि बिलाम
 आलंब ॥ २१ ॥ पुनः नामांश
 में लिखा है—दो० लंबो-
 दर हेरेंव पुनि, हैमासुर
 एवदंत । मूयदवाहन
 गजवदन, गनपति शिव
 गुग संत ॥ २७ ॥ फोटि-
 दिनायक लो लिखे, मांहे
 के कामद कोट । तो पै
 तेरे पीय है, गुनदिन
 आवे टोट ॥ २८ ॥

गजारि [स] सिंह, बैसरी ।
 गजासी [द] हाथियो का
 समूह ।

गजामनः [म] पोपकवृक्ष ।
 गजान [स] नाग, नागक ।
 गंजा [द] नागकर दिया २
 भांग ।

गडाखाः [स] साक्षर, नीन ।
 गद [स] देवता, समूह, धोक,
 काति, भुण्ड, गिरीह,
 नरादेव के सेदकों का

समूह, जिनके नायक
 गणेश लीहें ।

गदक [म] देवप्रः प्योतिपी
 दिप, नखुमो, रिमाव कर-
 नेवाला । [हिमाव ।

गदत [स] संख्या, गिनती,
 गदता [स] गिनती ।

गदित [स] गिनादृषा, गदित
 दिया, हिमाव का दूध ।

गदपति [स] } नेमिग, लखो-
 गदरास गद- } दर, शिव, इ-
 रास } न्द्रइत्यादि ।

गदरूपः [स] सुपेद पकवन ।
 गदरासकः [स] भंडीकर ।

गण्डदूर्वा [म] गांहरदूब ।
 गण्डकूलः [स] बैतारी ।

गण्डारिः [स] मंजीठ ।
 गण्डाभिः [म] गांहरदूब १

गरहंसीमाग २ ।
 गण्डखेटापनयनदशाक्षान्त-

दक्षोत्पलानाम् । वः सु-
 खानाम् कपोलों का पसी-
 ना पोहने की पोहा के
 कुदहा गंध हैं । जानों के
 कमल जिन के ।

गणिका [स] लूडोपूज, युद्धो-
पुष्प, श्रेष्ठा, कसवी, कं
चनी, पत्तुरिया ।

गण्डः [स] त्रैलोक्य पर्वभाग,
गोडा चतुःपद । गास,
कनपटी, कपोल ।

गणिकारिचा [स] गनिपार ।

गत [स] लीन, प्राप्त, विष,
गमन, व्यतीत-गुणराहुपा-
नाम, भिन्न, गया, प्राप्त,
निकृष्ट, विना, अप्रिय ।

गतवि [स] सूर्य का राश्व
स्तर गमन पश्चात् संक्रा-
न्तितिथि । [रहित ।

गतमदगाया [स] माया से

गति [स] गमन, नाश, मुक्ति,
उपाय, नाम, शरण, रक्षा,
पाल, ज्ञान, स्वरूप, दया,
साधार, मार्ग चक्षुष ।

गत्वा [स] जाकर, चलकर ।

गद्य (द) } कौटो, दाम, मोत,
(प) } जेतुक, दान ।

{ (म) रोग, कारण,
{ भाषण १ कूट २ ।

गदगद [स] बोलिलगाई, व-
कथचाई, वर्णित, पानः
से फूलजाना, पानंदयुक्त ।

गदहा (न) } रोगनाशक, वैद्य
(प) } गधा, खुर ।

गदा (म) } आयुधविशेष,
(फ) } साधु ।

गन (द) गण, मित्र के प्रदत्त
चादि. विघ्न, सनूर,
पिंगल के नियम ।

गनक गनिक, गणिक (मं० पं०)
ज्योतिषी, विचारक ।

गनराज } (द) गणेश ।
गनराज } [खर के ।

गनि (द) गन करके, विचार

गनी (क) } तालीवर, धनी.
(प) } विवाहजन,

विचार, गनतीवाधा ।

गने (द) गिनती के ।

गनेश (द) देव, शणेश देवता,
चारम्भ, रम ।

गन्ध (स) घोंगा ।

गन्धक (स) पवन, वायु ।

गन्धक (प) गन्धक रंग का ।

गन्धकदि (म) एकांगी ।

मन्थकोशिका (स) सुगंध को
दिष्टा ।

मन्थनाकुली (स) नाई ।

मन्थवलाही (स) पंढाही सुगंध
वाला । [का ।

मन्थवापाद (स) मन्थक ४ रंग
मन्थपुष्पकः (स) पयोध ।

मन्थपिरदुका (स) पिटंगु ।

मन्थफली (स) पंढाफूल ।

मन्थमाज्जारः (स) दमबिन्दार,

जिसके नाम से सुगंध क

सूरी सा होता है । [ती ।

मन्थमाधली (स) मन्थमास

मन्थमूलिका (स) पंढाही सु-

गंधवाला ।

मन्थरसः (स) बीज ।

मन्थवती (स) नाम से एक
गद्दी का । [बाला ।

मन्थवधः (स) पंढाही सुगंध

मन्थमादनः (स) पार्थिव विमेष ।

मन्थधः (स) घोंघा ।

मन्थवैदस्तकः (स) सुपेद रेंह ।

मन्थहारः (स) सुपेद चन्दन ।

मन्थगादन (स) पार्थिवविमेष ।

मन्थज्य (स) सुगंधान, माने
माने देवता । [चण्ड ।

मन्थमार (स) मन्दन, या-

मन्थारः (स) देवती ।

मन्थपिन्दा (स) गुलाब ।

मन्थशरिका (स) सुगंधमाना
पंढाही । [बा ।

मन्थिका (स) मन्थक ४ रंग

मन्थीत्यटः (स) द्यनाफूल ।

मन्थिन् (स) सुगंधमान ।

मन्थ्य (स) जाने के योग्य ।

मन्थ (स) काम, धू ।

मन्थ (स) पयोरीवचन । [मन्थ ।

मन्थमवाच (स) दानरविमेष-
मन्थने (स) नये ।

मन्थसा (स) टिवाकर, पूर्य ।

मन्थसि (स) किरण, चंश, रश्मि ।

मन्थवारः मन्थवारे (स) मन्थवा-
च, बालक से नये वाल,

लक्षबास ।

मन्थ [स] गया हुआ ।

मन्थनः मन्थ (स) जाना, रोम-

मन्थ, चत्तन, याच-चत्तन ।

मन्थ [स] बिताइयोत् ।

गर्वोत्तः गर्वितः (म) अतिमा-
 नी, पहलारो, नागयुक्त ।
 गर्भः (म) अमल, लोख का बच्चा
 गर्भाधानः अमपरिहयम्, (वि०
 : अमवन्तम्) गर्भधारण करने
 : से, सन्दर्भ है दुर्गत निस्तका ।
 गर्दः (द) धूरि ।
 गर्भकः (म) पिताजीकन ।
 गर्भमृतः (म) कुपेद फूल की
 रोगी ।
 गर्भनुतः (म) क्लीङारो ।
 गर्भोपागनः [म] बूडा ।
 गन्तः (प) गन्त, गन्तव्य, रोग,
 फाँसी ।
 गन्तवाः [फ] धूमवाक ।
 गन्तवानः [प] बन्ध, बांधा ।
 गन्तुकनीः [स] धकरो ।
 गन्तानिः [द] पीडा, बला ।
 गन्तानिः [म] अर्थपर नडात ।
 गन्तितः [म] नष्ट, घटित,
 [फ] गन्टा, महियसे
 गन्तगया, नाम, गिराहुवा ।
 गन्तानिः [स] निष्ठा, नप ।
 गन्तः [प] गन्त, कामा ।
 गन्तः (द) गन्त से ।

गन्तव्यः (म) इनाकप ।
 गन्तव्यः [म] : अनाई, चण्डा-
 गन्तव्यः [प] : ना ।
 गन्तव्यः [म] : गो ब्रह्म, पशु,
 गन्तव्यः : नीलगाय १ काका
 पांडवों हरित ।
 गन्तव्यः (म) अगीचा, गोखा,
 गान बाजर ।
 गन्तव्यः (स) गीत, अगीचा ।
 गन्तव्यः (म) इनाकप ।
 गन्तव्यः [प] गन्तव्य ।
 गन्तव्यः [म] गरहुवा । [खण्डी ।
 गन्तव्यः [म] गरहुवा १ गुर-
 गन्तव्यः [म] गाय की दुध, दही,
 घीव, गोबर, सब का नाम
 है इन से गन्तव्य दुग्ध पादि ।
 गन्तव्यः (द) पण्डो ।
 गन्तव्यः गन्तव्यः [प] गोरीर,
 अगमान, नकाराका अर्थ,
 बजे । [अर्थ के नकस ।
 गन्तव्यः (प) बाजि, मानकाराके
 गन्तव्यः (स) बन्, दुर्गम गन्तव्य
 दुग्ध, पकड़ना । धारण,
 आड़े, अर्थ, विकट ।
 गन्तव्यः [म] गोमदरना, भासते

करना ।

गंजा (स) नाश किया ।

गजोर (स) गहिरा ।

गजना (स) कठिन, भूषण,
(प) धारण, पकड़ना ।

गहवर (स) सघन । [गासफूलन]

गहर (स) रोगविशेष आते

गहि (स) पकड़ के ।

गहियानि (स) हाथ पकड़ के ।

गहक गहक [द] देरी, विलम्ब
देर, पसमन्दस ।

गहर [स] गुफा, गुन, खोह,
सघन, मोच के साथ, गोच ।

गहवर गवति [द] पर्वत,

खोह, मोहित, छोड़ित,

कल्पित, सघन, साथ के

: साथ, प्रेमभरा, प्रेमयुत ।

गह [स] नाश करने ।

गो [द] गीवा, गान्धिया ।

गोमोठ [प] गीमाजा, गो

मासा, मोलान ।

[प] पाणिन आति

का का बर्षा का पाणी ।

गादेव [स] सीना घात ।

गादेरुकी [स] गोरखणी ।

गागर [स] कचग, घेला ।

गान गानन [द] फेन, दूध

का फेन, बिल्ली, नाम

कता, नाम करने वाला ।

गान [प] दूध का फेन ।

गानना [द] वर्णित होना ।

गानर [स] गजरा ।

गाढ़ गाढ़ [प] {खुदक, गहि

[द] {रा, गहका,

सासविशेष

गाहर गाहर [द] मेढ़ा, मेढ़ी,

मेढ़ी का जन, लघु, घास

विशेष, खस का मेढ़ा ।

गाढ़ गाढ़ा [स] दृढ़, घटने, क-

ठिन, कड़ा, बहुत, बस मे ।

गाण्डर गाण्डर [द] घस में

खसका मेढ़ा, घासविशेष

कास, लघुविशेष ।

गाण्डीव [स] धनुष विशेष,

गाण्डी वध को लकड़ी

का बना हुआ धनुष का धनुष ।

धारण करने वाला पद्यार्थ
पद्यार्थ ।

गाण्डीधर (म) पद्यार्थ पाठ-

व लाहे हाथ गांढीव था ।

गात-गाथा } कथा, प्रतीक,
गाता- (स) } पोली बांधनेकी

वैठन, रंग, रेश, लिख ।

गाथा-गाथा, (म) कथा, कथा

नौ, शोक, हृदय, समुद्र ।

गाथे- (म) मंथे ।

गाद- (प) गदरी, सीठी, मस ।

गादुर (प) समगुदरी, निमि

गामी, समगिदुरा ।

गाधि- (म) कपाट, पल्लव,

राजाविजय, एक राजा

का नाम, समुद्र ।

गाधि तनय, (स) } विष्णुमि-

गाधि रुपन- (प) } प, कोमिक
मुनि ।

गान्धारी- (म) लवाणा १ दु-
राधमा २

गाना- (प) कथन, कहना ।

गामी- (म) समनेवाला, नगन

करणधार । [मुली, नवैरा

गायक-गायन- (म) कदक,

गायकी- (म) छंद, मंत्र, छंद ।

गारह गारही- (म) रिमना

मक, विष करनेवाला,

विषहर्ता, वैद्य ।

गासवः (स) सोध ।

गालोच्य- (स) कमलमगधा ।

गार्हस्थायमकर्मविवरण- (स)

धन उत्पन्न करे कोई यज्ञ

ते ताने १८ भाग में एवं

भाग तुरन्त पूरा करिदेदे,

१० भाग बाकी में गृहस्थी

करे, प्रतिदिन वेदन, कुटुम्ब

वेदन, घर पितर स्थापित-

पर्यं पाहु करना, देवकृती

यज्ञ करना, स्तुति क्षति

तीर्थ, व्रत, दान, करना घर

नित्य पंचवक्ती वेद्यकर-

ना, रिपु, मित्र, देहो, ग-

रिम, सुख १ ए पांडेदेवता

की पूजा करना विन्तु श्री

गुरदेवजु की देवता की

हूट वताये वाहे पाठाने

ताकी पूजा करि श्रीविष्णु

१ सुनि गांठना १ इति-

गार्हस्थायन । [विन्तुनी ।

गार- (प) दरोज, गामाज देम,

માનક (મ) } માનકાના મા-
(દા) } નકરેલ, નકરેલ

વિગેય માનો, મંગલ, પક્ષ
જુઓ ન માન, માનવખાઈ,
વચનાદ કરશે, વિચારિત
કે મિથ્ય । [૪]

માનવખાઈ (દ) વચનાદ કર
માનમાન, (દ) દો ભતાદવા.

માનક દુષ્ટા ।

માદા, (વ) જાદા, જાદાની, મા
વિર [મ] વચન, જીનો, નકાદ
વિરિરિ [ક] મિનામોત,
મિદ ।

વિરિ- [મ] માન્યતા, જાવિતાઈ,
વચન, માનો ।

વિરિજાન [મ] જિજ્ઞા, જીન ।

વિરિ. [મ] વચન માન્ય પુણ્ય
વિજા, વકાદ । ક્રાન્તા

વિરિરિર્ષ [મ] દાનોવિરુ

વિરિજા [મ] વાચ્યતા, મિથ
વચન । [વચન]

વિરિરિ- [મ] વિરિમ, મુમેર,

વિરિજાન [મ] મનુષ્યક

કુરુ પ. જાતી જા ।

મિરિજાનમન (મ) મિથ, મદા
દેન । [મિથવેદો, દુર્ગા]

મિરિનમ્નો (મ) પાવ્યતા,

મિરિનાદ- મિ- { મિથ, મદા
વિરિરિ મિરીજા { દેન, વિમા-
મિરીમ (મ) { વચ, વર્ષ,

મુમેર, મુમેર વચન ।

મિરિનિત (મ) રૂપાંશી

મિરમ સેષા (મ) જોડેપા ।

મિરિમાન (મ) જાનમા

મિરિમિદ (મ) મુદ । [માનવ]

મિરિનિ- [મ] મુમેરવચન, વિ-

મિરિનિ- [દ] વચાદ, જો

મિરિનિ- [મ] જોડ, [વચન]

મિરિજાનમ [મ] વકાદ પો

મિરિજા- (દ) મલા ।

મિરિજા (મ) મરિદ, ચેત-

ચંદ, મિરિનાદ, મદાદે

વિમાનિન ।

મિર (મ) વચન, જોન । [માવે

મિનક (વ) નીમજાન, જીન-

મીચક (મ) માયા, જાન, જે

નોચાંચ (મ) દેવતા, વમદા-

મીચ (વ) વચી, જટાદા-

મુચ્ચક (મ) મુચ્ચક ।

गोत्र (०) जातिगोत्र, वंश
कुल, नाम, जैन, बन्धु.
चमि ।

गोत्रवृत्त (स) धामोत्रवृत्त ।

गोत्रहरि (स) पर्वत, भूभुत ।

गोत्र (०) घरती, गेदिगी ।

गोदावरी (स) नदीविशेष ।

गोभूमी (स) भूमिमासमय ।

गोभूत. } गेह १ गोभूत २
गोभूतः } जात का ।

गोदावरी (स) नदीविशेष ।

गोधा. (स) पानीमें का गोध १
गोध २ ।

गोनामः (स) केवटी गोधा ।

गोत्र [स] गोवर्गनेवासा ।

गोवर्गव्या (स) } समस्त दूध-
गोवर्गव्या (स) } घर ।

गोवर्गव्या (स) ग्राम समस्त ।

गोवर्गव्या (स) बीज ।

गोवर्गव्या (वि० वि०) (वि० वि०) ।

गोवर्गव्या (वि० वि०) का सा है
वि० वि० ।

गोवर्गव्या (स) गो दे दूध, गेह,
गाय का दूध ।

गोपा (स) समस्त दुधकर ।

गोप्य (स) गुप्तयोग्य, गुप्तवत् ।

क्षिपाने के गोप्य, गोप;
नीय ।

गोपी (स) ग्राह समस्त ।

गोपीश्वरी (स) फूल खेकसा ।

गोपुरः (स) केवटी गोधा ।

गोवर्गव्या (स) पर्वत विशेष ।

गोभी (स) गोभी ।

गोदय (स) } गोविष्टा, गोवर्ग
गोमय (स) }

गोमयव्या (स) गोवर्गव्या ।

गोमयव्या (स) समस्त घर,
काटा याता । [सनी ।

गोमरी (स) समस्त, समस्त ।

गोमाय गोमायु (स) कामय
सी, गोवर्गव्या, विद्या ।

गोमिष्टः (स) गोमिष्टमती ।

गोम्य (स) } घरती, घरती,
(स) } गेह, गाया ।

गोम्य (स) } रत्नविशेष, रत्न ।

गोमिष्टवर्गव्या (स) गुरमी ।

गोमिष्टव्या (स) गोमिष्टव्या ।

गोलः (म) गंयनान्तः ।

गोलकः (म) निवडिम्मा, बिध-
या ने छारजपुत्र, पांख का
स्थान, बच्चु, इन्द्रिय का
स्थान ।

गोलिदः (स) गोप दृष्ट ।

गोलिदः (स) गोप दृष्ट ।

गोलोमी (स) बब १ सुपेद
दृष्ट ।

गोलिदं (म) वेदलभ्य ।

गोलिदः (म) वैकुण्ठते विमेष
वर्तमानः ।

गोलिदः (म) सुमीपति, इन्द्री
पति, प्रानी, तपस्वी, गुरु
राजापादि जे दृष्टावक
मार्ग ।

गोलिनी (स) गोलिका ।

गोलिनी (स) हरिचकार ।

गोलि (द) घर ।

गोलि (स) पदधान, स्थान ।

गोलिनी (म) मुनि विमेष, बच्चु
विमेष ।

गोलिनी (म) पहिल्या ।

गोलिनी (स) सहस्रभग हो

गोलिनी ।

गोलि [प] गोलन, चानन,
छाना । [छलन ।

गोलि (स) गोलि, सुपेद, स्वेत,

गोलि (स) धावा दृष्ट ।

गोलिनी (स) सावापची ।

गोलिनी (स) वनदृष्टा ।

गोलिनी (स) भारी, दृष्टावन,

सादर, बड़ाई, भारीवन ।

गोलिनी (स) हरदी, चटक,

बिहा, गोलिनी, बजला,

गोलि, दुल्ल ।

गोलिनी (म) पार्वती, दन्वा

रामिनीविमेष, गोलिनी,

सुसमीपताम और गोलि,

निवा ।

गोलिनी (म) मिष, गोलिनी ।

गोलिनी [स] नाम दाना ।

गोलिनी [द] नाम किया । एक

सादर वस्तु ।

गोलिनी (स) धंधा दृष्टा, गोलिनी

दृष्टा । [क, पोदी ।

गोलिनी (स) गिरह, गोलिनी, दुल्ल-

गोलिनी [स] गोलि, गिरह ।

अन्तिक (म) पीपरासूत्र ।

अन्तिका (म) गेठवन ।

अन्तिरूपे (म) गेठवन ।

अन्तिगत्कलः (म) बड़दस ।

अन्तिमानः (म) बड़दस ।

अन्तिकः (म) बरील हल ।

अन्तिनी (म) बेली १ कटाई २

गुनी (म) गतिधारी, पृथ्वी
गुनी बनाने वाला, गिरद
गोत ।

अन्त (म) भण्ड, बाजार ।

अन्त (म) (म) अन्तिम
अन्त (म) (म) अन्तिम
अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

अन्त (म) (म) अन्तिम

घ

घट (न) घटा, देह, मन हृदय-
देहा । [स्य स्यमि ।

घटक (न) कुम्भाकरमि, भग-

घटक (द) करव ।

घटयोनि-घटसम्भव (स) पन-

रूपस्यमि, कुम्भस्य सुनि ।

घटा (स) समूह, नैव ।

घट्या (म) कठपांडुर ।

घट्यारण्य (स) वनमनई ।

घट्टिः (स) घट्टियाम्, लन-
जंतु ।

घट्टिका (म) घट्टी ।

घटि (द) घटिया, कमती ।

घटित (स) लुलित, भासित,
रचित ।

घटिहिं (द) करंगी, दीगा ।

घन (म) बादल, सोह कूटपात
नैव, सोहिका घन, इयोहा
निहाई, हृद, विस्तार, स-
घन, घना, पद्म, गरित
जासु न किसी संख्या की
तीन बार गुणा करने की

घन पडते हैं, लस ।

घनगाद (म) नैवगाय, नैव-
नाद । एक कहीका गान ।

घनराम (न) बाबाम्, मूय ।

घनम् (स) फेनु का दूध ।

घनरम (म) लस, पागी,

घनरस (स) गौर ।

घनसारः (म) दूर ।

घने (प) घनेरे, बहुतेरे ।

घमोई-घमोई (द) गहभांछ,

वा पेह विमेष दांस समान

वांभांवांस बीटा की,

भरभई, घास ।

घान (द) नासिया ।

घरनी (द) की, गट्टिनो ।

घर्म (न) धान, धूप । [हुपा ।

घर्मद्वय (म) धान में पाया

घरि (प) गुच्छा, घोषा ।

घाड (द) घोट, ठोकर, घाड ।

घाट-घाटी (द) गट, मार्ग,
दांट ।

घाट नमोहर- ४ (स) प्रथम

नौकाई तुलसीदास की

पपनी दीगता, ११३ धर्म-

১৯৪৭ খ্রিঃ ১৫ আগস্ট

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

2100 1st Ave, N.E. #201

உள்ளே போய் பார்த்தால், அங்கு ஒரு

referred to in the report.

474

১৯৭১ খ্রিঃ ১৫ আগস্ট

City of New York

१. जैन, (१० संवत् १०००)

Date: [] 19[]

५५ (५६) ५५५५, ५५५५ ।

ଶୂନ୍ୟ, [୧] କିମ୍ବା ସଂଖ୍ୟା ।

Name: [] { Dept, fu-
 nction: []

7 (a) 11224, 20000

2710. 2710. [1] 2710. 2710.

सं. ५४८७, ग. ४५, भा. ३।

• 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840,

ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਯੁਗ (੪) ਸਫ਼ਾ ੬੬, ੬੭

5

E. MATHIAS, C. S. DAVIS (U.S.A.)

गङ्गा नदी (गङ्गा)

५

॥ १४॥ १००, ११०॥

पृ. ४३ । अक्षर १५५ ।

ସଂସ୍କୃତ [୧] ଶାବରୀ ଶାବରୀ

10. The following are the names of the persons who have been appointed to the various committees of the Board of Directors:

ref. 1000000000

पु. वि. प्र. पु. वि. प्र. पु. वि. प्र.

1927, 1928, 1929, 1930, 1931, 1932, 1933, 1934, 1935, 1936, 1937, 1938, 1939, 1940, 1941, 1942, 1943, 1944, 1945, 1946, 1947, 1948, 1949, 1950, 1951, 1952, 1953, 1954, 1955, 1956, 1957, 1958, 1959, 1960, 1961, 1962, 1963, 1964, 1965, 1966, 1967, 1968, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 26

सद्विषय (०१) (२०१५)

॥ १०० ॥

राजा, दहादनी, वर.

५११

ср. [4] и [5] и др.

16. சென்னை நகரம்

51 5500 5500

ਪਟਿਟਾ ਗੀਤਾ ਜੀਤਾ

471

प्रा. ५५ (५) अ. ५५ (५) ।

ਪੰਨਾ ੫੫ (੮੫) ਧਾਰ ਰੰਗੀ ਹੋਣਾ.

સેનાના જાતિના અંગ, અધર્મ

राम्भी, पःहा, रघु श्री

पुनः ।

सम्यक्सारः- [४] गणनी दण्ड ।

चतुर्विंशती- [सं] शिव, चण्डिका पति ।
 चतुःपथी- (सं) मिरिचारी ।
 चतुर- चतुर- (स) ज्ञानी,
 नारदमुख्य चतुर, धूर्त,
 बुद्धिमान, होम्यार, चार ।
 चतुर्गुण- (स) चतुर्गुण । [वाच्य ।
 चतुर्दश- (स) चौथा चारि संख्या
 चतुर्दश- (स) श्याम, रक्त, पीत,
 हरित, चौररंग की सेना,
 सेना की पार चद्र, धर्मात्
 हाथी, घोड़ा, रथ, चौर
 पैदा, सतरंज ।
 चतुरङ्ग- (सं) चमकताम ।
 चतुरङ्गी सेना- (स) हाथी, घोड़ा
 पैदा, चण्डिका ।
 चतुरागन- (स) बुद्धि, चक्र,
 समस्त ।
 चतुर्दश- (स) मोठ, पीपल,
 निष, विपराज ।
 चतुर्दश- [सं] चौदह १४
 चतुर्दश- (स) चारपक्षी ।
 चतुर्वर्ग- (सं) चर्च, धर्म, काम,
 मोक्ष ।
 चतुर्दशलोखविदर- १४ [स]

भूमीक, भग्नलोक, मरु-
 लोको, जगन्लोक, तपलोक,
 सुरलोक, सत्यलोक ॥ ७ ॥
 इति भाषाश्लोक ॥ अत-
 न्त, पितृन्त, सूतन्त, मरु-
 तन्त, तक्षकान्त, रमातन्त,
 पातान्त, ॥ ७ ॥ इति पाता-
 ललोक ॥ १४ ॥
 चतुर्वर्जः- [सं] मंगरेला, जघा-
 दन्त, चनसुर, मेघी ।
 चतुर्विंशतिवर्गविषय- कना-
 सहित- २४ [सं] सेनक २ मन-
 न्दन २ संगीतन २ मन-
 लुमारे २ पौरुष १६ परा-
 च १ गेरिद २ नरनारा-
 यण, कौपी बट्टीनारोचण
 १२ कपिलगुनि २ इति
 सत्यगुण, दत्तात्रे १ यज्ञ
 २ नामिध १ पुण्य १२
 गीत १५ चमठ ५ धान्य-
 नार ८ मोहनीरूप ३
 वृसिंह ८ बोनन ११
 परमेश्वर ६ व्यास १ राम
 चन्द्र १२ इति तीतायाम् ॥

श्रीकृष्ण १३ बी० ॥२४॥ इति
द्वापरे ॥२४॥

चन्द्रमोक्षि चन्द्रगेखर (स)
शिव, महादेव ।

चन्द्रा (स) चन्द्राकरण, मन,
बुद्धि, विज्ञान, चहचहार ।
चन्द्रना (स) सुपेद चन्द्रन ।
चन्द्र चन्द्र (स) चान्द्र, चन्द्रमा,
अविमुनिमुत्तमद्वारा, हीरा
गणित ।

चन्द्रमूर (स) चन्द्रमूर ।
चन्द्रदाम (स) तलवार, हथि
दार, नागराजपुत्र, चन्द्र
किरण ।

चन्द्रकान्त (स) मणिविशेष ।
चन्द्रकान्ति (स) चांदी ।
चन्द्रबूड (स) महादेव, [चन्द्र
मा है सिर पर जिसके]
चन्द्रशक्ति (स) सुपेद, चन्द्रन ।
चन्द्रनामा (स) कपूर ।

चन्द्रदाम (स) गुरिच, सुपेद
फल को रंगनी ।
चन्द्राज (स) कपूर ।
चन्द्रावर्त्म (स) शिव, शङ्कर ।
चन्द्रिका (स) चान्दनी, चांद
ने कोमट्टी १ चन्द्रमूर २ ।
चन्द्री (स) सुपेद फूल का
अवयव ।

चन्द्रपाद (स) चन्द्रकिरण ।
चन्द्रपुष्पा (स) सुपेद फूल को
रंगनी । [रंगनी ।

अपरिचय) अचमि, शीघ्र मु-
क्ति मर) रत ।

चन्द्रमा (स) सुपेद फूल को
चन्द्रवासा (स) इलायची फल,
एला, बड़ी इलायची ।
चन्द्रही, चंद्रमसी (स) चान्दनी,
चन्द्रिका ।

अपक्ष) (स) अपक्ष उता
अपक्ष) उता तरफ, पारा ।

चन्द्रमामुनि (स) निशाकर नाम
अचोमुनि के पुत्र का नाम ।

अपक्षता (स) अपक्षता ।
अपक्षपक्षः (स) अपक्ष का वृत्त
अपक्षा (स) विज्वही, सधुवी-
पक्षि, वीपर ।
चपेट-चपेटा (स) घण्टा, त-
माचा, धका ।

अम. (स) तीक्ष्ण, तेज, उग्र ।

अवह. (द) दई, भसै, निषागा ।

अगह. (फ) छिटक, किरण,
ज्योति । [पादुर ।

अमगादुर. (प) अनगुदहो,

अमत्कार. (स) अद्भुत, आश्चर्य ।

अमर. (स) अंशुभेद, सुरगो-
पूँह, मयूरपत्र, पंखा ।

अमरी. (प) अवनार, १ मीर
ही गड, एक प्रकार का

हरिन १ जिस की पूँह
का अमर बनता है । उ-

रिद्ध का मयदा ।

अमू. (स) अना, दल, अनामाप.

अनाविज्ञेय, जिस में ७२८
छाद्यो, ७२८ रघ २१८७

छोड़े. १६४५ पैदा हो ।

अम्यकः. (स) अम्या फूल ।

अम्वर. अम्वर. (स) अवर, सुर
हृत् । [अज्ञात ।

अर. (स) दूत, व्यादा, भक्षण,
अरज. अरजा. (प) तुण्डा. की
(स) स पक्षी ।

अरद. (स) अगु, पाद, पद, पाद,

पाप, सोरका चौथा भाग ।

अरदन्तास. (स) पांशुका शिख,
अरद जिम्मा । [अज्ञ ।

अरदीदक. (न) पांशु का भोजन
अदिनि (म) अन्द किरिपि.

अदिनी ।

अरदपिष्ट. अरदपीठ. [स]
अहास, अगुरधक ।

अरदायुध } [स] सुरगापक्षी,
अरदायुधः } अरुपचूड ।

अरित (स) अरिच, दास ।

अरफर. (प) आन्ताक, देह
होकर ।

अरफराहिं (द) होकर है,
अरफराना, तरफराहिं,

विकृत । [अ्य और अह ।

अराचर. [स] अरु अरु, अरु-
अर. अरु. [स] अरु, अरु

अरु अरु, अरु अरु, अरु अरु,
अरु अरु. [पाचरद ।

अरित. [स] अरु, अरु,
अरु. [स] अरु, अरु, अरु

अरु. [स] अरु, अरु, अरु,
अरु. [स] अरु, अरु, अरु

चर्म चरम [स] टाल, चमडा
 खास, चान्त, ट० नदी
 संख्या विशेष, लुगठाना ।

चर्ममैलदः (म) भरही मीन ।
 चर्ममैलदा (स) रीङ्गिनी ।

चर्ममै कारालुशः (म) थाराहि
 कन्द ।

चर्मकार (म) चमार मोधी ।

चर्वण (स) चानना, चावने
 की वस्तु, चवेना ।

चर्ममै दादुर (म) चमगादुर,
 चमगादही, चादुर ।

चर्ममैरन्तो (म) चमसुर ।

चर्ममैरः (म) सुपटे किंगरिफ

चर्ममै (म) भोजपत्र ।

चल [म] चलायमान ।

चलचिगलयः, (वि० चगीलः
 वा किंगरः) चलायमान है
 कोपल जिग की ।

चलत्वम् [स] फड़कना । [मल]

चलदशः (म) पोपल हच, च

चलोचपिचः (म) गुरिच ।

चलामि (वि० चयः) चला
 यमान खर ।

चयर (म) मूरकल, चमरदि-
 शेष गुरमोकी पक्ष । [वा]

चवइ [द] चववइ चवगावइ

चविका. } (म) चव ।
 चय } (म) चव ।

चवयुग [प] चवयुग, वेग,
 हापर कलियुग चारी
 युग अर्थात् ।

चय चय [प] नेच, नयन ।

चट्टन (प) चपेटन, तमाशा ।

चट्ट चट्टन [स] नेत, नेदन ।

चट्टनः [म] क्रमुदक ।

चट्टनवा [म] चप्टे, ताग,
 नेचहाथ्योता ।

चाक [स] चानन्द ।

चाव [द] चवइ, चय ।

चावी [द] दवाई । [जाता]

चाका [प] पडिया, चकी, चक,

चाकी [प] चिन्नी, चकी
 चकरी, पडिया ।

चाकना [द] छापना, चिन्नी ।

चाख [प] पचीविशेष शीत-
 द कंठ, टैकनस पची ।

चाहो [प] किछीपलादि को

गोट टेना, सविगडित,
गुणवान् राजि गोठरेना

चाङ्गेरी. [म] क्षीनिवां ।

चाटु. [म] नज, करो, दाय
नुरखरी, प्यारिचन ।

चाटुहार. [म] रचनचतुर ।

[द] क्षीप, समिन्नाप,
चाटु [द] कान, चार, शीर्ष.

विजुषी । [नुर] ।

चापदन्तूष. [स] निवार-

चातक. चाटक. (म) पपीहा
पपी ।

चातुर. (म) बुद्धिमान् ।

चाप. (म) धनुस्, धनुः. जनान्
सनाइ ।

चातुदीप्तः (म) बड़ी रसायिनी
तक, नामेसर, सेनापात
एई ४ ।

चापत. (द) दादत ।

चापत. (म) पत पपीहाद,
चापना, दादना ।

चापदीप्तः (म) सगल के पण्डितो
के भीतर या बंदर का
लः होता है ।

चापी. (म) दवाई, चम्पाफूल,
नामिसर ।

चामर. (स) चमो विमोद, लुग-
लासा चरर, चौर ।

चामीकरः (म) मोना. द्रव्य,
चामी कर) सुवर्ण, मोना धातु ।

चामुण्डा. (म) योगिनी भेद ।

चाम्पेयः (म) नमीसर १ चम्पा
फूल ।

चाम्य. (स) सामान्य धनुष ।

चार. (स) दूत, दुग्ध, लवार,
विरंजनी, संख्यादावक,

४३ चार दुग्ध, द्विपि. पर
दोम देवत, रत्ने, सी. प्रका-

म करे सो चार । चो० ।

देवत, मुष नर, मान, गिः
चारी, १. प्यमनीधन मुष

मति दिशिचारी ३ क्षीमी
लक्ष, लक्ष चार गुनानी ।

मुष दुहि दुष चरत, प
मानो १ चर्मात् गुनानी

हुन चरुह । देवत मुष
मिषरी, मान प्यमनी

चर्मात् मुषाही चादि

धन शुभ गति पर श्री
 गामी श्रीभी यश जुगल
 गुन समूह सो ए मानो
 पाशाग दुहि के दूध
 चाहत है कि बुद्धि से
 संभव भाव से नष्ट हो।
 श्रीभी बनाय मुख चाहति
 सो कैसे होयगो। चार
 गुमानी पाठ भिरजापुर
 निवासी पं० राम गुलाम
 द्विवेदी को चार दूत सो
 गुमान करै।

चारदांता (स) मंगरैछा १
 चक्रवाहन २ चतुर् ३
 भेदी ४।

चारिषव्या (प) लाघत, स्वयं
 सपुति, तुरीया।

चारिभाति भोजन (स) भक्ष्य,
 भोज्य, सेद्य, बीद्य।

चाही (द) चाह, देखना।

चारिधानि (प) करायुग,
 चण्डन, चद्रिज, चपन ४।

चारिपद (प) चर्म के चारपाँ
 सत्य भीष, दया, दान ४।

चारी (म) } भक्षण, संख्या
 (प) } चक्र ४। चार,
 चक्रमेवासा, च

गुली, चार, सुन्दर।

चार (स) सुन्दर, सुराता
 मनोहर दिव्य, सोभा
 मान,। [सावर।

चारुचररा (स) भेदी १ पु
 चारुतम चारुतर (स) चति
 सुन्दर, चतिसुधाना।

चारुफला (स) दाघ, दुधारा।

चारुतः (स) रामसरका।

चासति (प) होचावति, हो
 कागी, चालना, होकाग,
 दिसावति।

चाव (प) चाह, चलाह।

चाप (स) } चाहापची, नीव
 (द) } कंठ, पची विग्र
 खेतवर्ष शगुणकारी पदि
 देग स्यात।

चादि (द) देख चार के, चक्र की
 चोरमे चाहना देखना।

चिकुर, (स) वास, वेश।

चिचिण्ड [स] निचिण्ड।

चिचर [प] वेश वास, चंपुर।

चिह्नरहिं [प] विचार करते हैं

चिह्नः [स] चमत्तो ।

चिह्ना [स] इमसी ।

चिह्नी [स] चमत्ती ।

चितव. चितयत. चितवन. [प]

तकित, दृष्टि, देखना, दे-

खता है, चितवाना ।

चित्त [म] चन्तःकरण हृत्ति,

मन दिल, चेतन, ज्ञान ।

चित्तरा [द] चित्रकार, शिल्पी ।

चित् चित्त [स] मनसंज्ञा ,

ज्ञान, चैतन्य, बुद्धि, हृदय ।

चित्तचेता. चित्तचेता [स] साव

धान, स्थिर ।

चिह्न. चिह्नः [स] चनेकरक,

मूर्ति, छवि, रूप, तसवीर,

नकशा, सुपेद रेड ।

चिह्नकः (स) सुवकुन्दफल १

चीता २ ।

चिह्नकूट (प) नाम है एक

पहाड़ का ।

चित्तगी [स] चित्तकावरगठ ।

चित्तगुहा [स] वागिरंग ।

चित्तपर्वः [स] चित्तकावर

पंडुका ।

चिह्नपर्वी [स] पिठवन ।

चित्रवर्तिकः [स] चमकपत्ती,

बटेर की नाति ।

चित्रा [स] बड़ीतामाजड़ी १

इनारुप २ ।

चित्रकेतु [स] राजाविजय

जाहेपुषविपत्ते सुपा या

याको कथा है एक राजा

का नाम ।

चिदाकाश [स] चैतन्य आका-

श, परमात्मा ।

चिदानंद चैतन्य आनंद रूप ।

चिन्तक [स] भक्तजन, ध्या-

निक, स्मरणिक । [फिक्क]

चिन्ता [स] सोच, विचार

चिह्न [स] पताका, निगान ।

चिन्तामणि [स] परममणि,

विष्णु, कल्पितामणि, विजय ।

चिपिटः [स] चिहड़ा ।

चिपिटिकः [स] चिहड़ा ।

चिबुक [स] ठुड्डी, ठोठो,

कपोल, डाढ़ी ।

चिर. चिराना. चिरान् [स]

महुतकाता, महुतकासीन,

पुराण, महुत कासतका ।

चिरमिटः [स] गुग्गुली ।

चिरविस्तृतः [स] चैत्रा ।

चिरिच्छदा [स] पत्ताको

साग ।

चिरुदः [स] भीमदपची ।

चिरुदकी)

चिरण्भीविमुनि . [स] माक-

१०. छेय सुनि लाको प्रयाग

भी यो, विष्णु के गाया

११. विष्णु पति विकसता महे,

१२. काकी कथा १२. काक्य, ८

१३. अध्याय १३. भागवत मे

१४. विदित, १५. गारव डेयकटिपि ।

भीता [स] व्याघ्रविशेष, तेंदुवा

१६. काक, बुद्धि, चिन्ता १७. १

चीनीकी [स] चिन्तिताकपूर,

चीनीकी १८. १९

चीर [स] देवी, पाकीदेनती,

२०. केपका, चीनीकी २१. २

चीरा [स] पीनीविशेष विवित ।

चुके [स] चैत्र तितीहीकर

चुका [स] चैत्रकी २२. २३

चुक्रिका [स] चैत्रकीकी २४.

इमकी चैत्रकी २५. [मिता]

चुनीती [स] माककुपेत, चैत्र

चुनि [स] चैत्रकी २६. २७

चुनोति [स] चैत्रकी २८. २९

चैना - की ३०. चैत्रकी ३१

३२. चैत्रकी, चैत्रकी ३३. ३४

चुम्बकः [स] चुम्बकीयतः ३५.

चुम्ब [स] चुम्बकीयतः ३६. ३७

गरि ३८. ३९. ४०. ४१

चमता [स] चमता, चमता ४२.

चुवत ४३. ४४. ४५. ४६

चुडा [स] गस्तक, गस्त, गीत

४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२

५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८

चुडाकर [स] मुण्ड, मुण्ड

चुडामणि, चुडामणि (न ५९

मस्तक, भूषण, चैत्रकी ६०

मणि ६१. ६२. ६३. ६४. ६५

चुत (स) रसास, चैत्रकी ६६

चुरण् चुरण् (स) चुम्बकीय

६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२

७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८

चूर्वादीनाम् : (सं) सुपेद सिंग-
रिफो ।

चेतकी (नं) चेतकेवृत्त, परे ।

चेतन (म) चेतना, चेतन, चेतन,

जीव, मनस्य, चेतनादि,

ज्ञान, मन्त्र, ज्ञानेन्द्र ।

चेतन्य (नं) चेतन्य, चेतन्य ।

चेत् (स) यद्, यच्च, यदि, की ।

चेतम् (स) चित्तम् ।

चेता (द) चित्ता ।

चेतिका (स) चेतिका । [चेत ।

चेत् (म) चेतने होने का भाग

चेत् (स) चेतन, चेतन, चेतन,

चित्त, चित्त ।

चेत् (नं) चेतन, चेतन ।

चेत् (स) चेतन, चेतन, चेतन ।

चोप (नं) चोप, चोप, चोप,

चित्तादि, चोप, चोप, चोप,

चित्तादि, चोप, चोप, चोप, चोप,

चित्तादि, चोप, चोप, चोप, चोप,

चित्तादि, चोप, चोप, चोप, चोप,

चित्तादि, चोप, चोप, चोप, चोप,

चित्तादि, चोप, चोप, चोप, चोप,

चित्तादि, चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

चोप (प) चोप, चोप, चोप, चोप,

भूत्त, गिगा दृषा ।

क

कदे (१) रोग विगेष ।

कदे (२) क । [का ।

कद्विषा (३) बिना मार दरी

कदे (४) क । (५) चवेसा, कर्ण-

भूषण ।

कदे (६) कदे । [नभिर ।

कदम (७) प । प । भा, प्रकाश,

कदि (८) क । (९) कानि, विना-

रच, कान, कोड़ा, गाव ।

कच (१०) क । क । क ।

कच (११) क । क । क ।

कच (१२) क । क । क ।

कच (१३) क । क । क ।

कच (१४) क । क । क ।

कच (१५) क । क । क ।

कच (१६) क । क । क ।

कच (१७) क । क । क ।

कच (१८) क । क । क ।

कच (१९) क । क । क ।

कच (२०) क । क । क ।

कच (२१) क । क । क ।

कच (२२) क । क । क ।

कच (२३) क । क । क ।

कच (२४) क । क । क ।

कच (२५) क । क । क ।

कच (२६) क । क । क ।

कच (२७) क । क । क ।

कच (२८) क । क । क ।

कच (२९) क । क । क ।

कच (३०) क । क । क ।

कच (३१) क । क । क ।

कच (३२) क । क । क ।

कच (३३) क । क । क ।

कच (३४) क । क । क ।

कच (३५) क । क । क ।

कच (३६) क । क । क ।

कच (३७) क । क । क ।

कच (३८) क । क । क ।

कच (३९) क । क । क ।

कच (४०) क । क । क ।

कच (४१) क । क । क ।

कच (४२) क । क । क ।

कच (४३) क । क । क ।

कच (४४) क । क । क ।

कच (४५) क । क । क ।

कच (४६) क । क । क ।

कच (४७) क । क । क ।

खडा, नूतनारा, कपिला ।

हरिभक्तिः (द) खडाभक्तिः ।

हरि (द) खरि, खरि, खरि, खरि ।

खर, खर, खरि, खरि ।

पति के साथ सताइस सौ

खोड़ा मयार, ७०० ।

खर (स) खर, खरि ।

खरिका (स) खरि, खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि, खरि ।

खरि, खरि, खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि, खरि ।

खरि, खरि, खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि, खरि ।

खरयत् (स) खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

खरि (प) खरि, खरि ।

खरि (स) खरि, खरि ।

खरि (द) खरि, खरि ।

विबर रम संघ ११३

द्वि (म) नष्ट, फटाटाटा कटा

दया, जग्यादिना ।

क्षीमा (द) क्षीण, दुःख ।

क्षीजना (प) घटना, क्षमना ।

क्षिपु (स) क्षणिक ।

कुद्र कुद्र (म) नीच, स्वल्प,

तुच्छ मिथ्यावादी, छात्र

कुद्रा (म) रंगनी, गदना वि

शेष, खोखी बहि याको

पत्नी । माममाता से लिखा

है । खादी सड़ा काम

पुत्र, सकास मेखला

होय । गुहा प्रवास सुगो-

क्षाना, चान फला पुनि

सोय ११३ यह कुटा बलि

पाव तह, रक्त एहि न

चाहि । गहिं नग सीली

बालसी, निपट रधीकी

चाहि १२३

क्षिति क्षिति [म] पृष्ठी ।

क्षीन (द) दुर्धन, रहित ।

क्षुधित क्षुधित (स) भूखा ।

क्षीने (द) कटे ।

कोजहिं (प) घटाहि, घटे,

क्षीजना, घटना, क्षमहिं ।

कुहे (प) क्षीजना, रवीन्द्र

विशिन ।

कुमा (द) कुवे ।

कुस (म) सुत, भूमि, वेद ।

कुप कुहे (प) खाना, गुहा

कुप (प) नीच घटकावा

कुप (प) घटा, रीका कुप

कुद (द) टुकड़ा, तबका

कुम (म) कल्याण, सुख वेद

कुहा मंगल कुम सुग

पुनि, मसिव गिर बरा

न । कितन टकति उई

कुमन हे पः न कति

मन न ११३

कुद (म) वधन किंकरा

कुकनहार ।

कुद (म) खाटना, तोड़ना

कुल (म) वकर ।

कुटना (म) वधन, 'कुद'

य कुद, क्षीजना ।

कुमकरी [स] पत्नी विग्रीव

कुल [स] बाबा ।

हैला [द] चकहेत, बाडा ।

होर, होरप [द] किमारा,
चगर, पोर ।

होम [स] घर ।

होगिप, होचिप [प] रात्रा ।

होमा, होम (द) चढराइट ।

होडा [द] माया, मोति ।

होदि [द] होदि कै, होटि कै ।

ज

जग [म] संसार, जंगम ।

जगजीवन [म] मेघ, बादल ।

जगती, जगतीतली [स] धर-

ती, पृथ्वी, मेदिनी, लोग ।

जगत [म] पंचतत्त्वाकार, पृथ्वी

संसार, दुनिया, पापनी

देह, देहकीही माता,

विता, जी, पुत्रादि ।

जघन्य [स] अवम, निन्दित,

नष्ट, नाश ।

जगत्पौर [स] पवन, वायु ।

जगदम्बा [स] जगत्माता,

जगत की माता ।

जगदीश [म] त्रिदेवा, ब्रह्मा,

विष्णु, महेश, शाला, ईश्वर ।

जगप्रियाम [म] विदुः, जग-

योगिनी ।

जगजोगी [द, म] जोगी,

जगयोगि [द] विरहिनी ।

जगम [स] मेसधारी, विमेष,

चरनहार ।

जघन (प) जघना ।

जगप्रसा [म] कोटाहुकर ।

जहास [स] हरिण, सबजा-

तिक, नीलगाय, पादि ।

जफार [प] जलार, चीर, फार ।

जंघा (द) जंघा, दोहा, इंद्र

नील खंभा गया, रंभा के

पाकार । पछीवत जंघा

जहू, जहूजानु मुरारि ।

जटाई (द) गिरविमेष ।

जटाबूट (द) जटा का सनूद ।

जटा (स) मुई पवरा १ हल

का सङ् २ ।

जटामासी (स) जटामासी ।

जटायुः (स) शुमान, संपाति

मीघ का माई ।

जटित (स) जटित, सटा ।

दोहा । कालिंदी रविना
अमी, छाया मय मल चाप ।

यह लमना मग धमुद फनि,

आवत तुम पताप ॥ १ ॥

लमन (स) सुदक लाति, कास-
यमन ।

लमनिका (स) बाई, बजको

माया, लनात । [मिना ।

लमल, (स) लीवा, युगल,

लमलार्जुन, (स) लभय कुहिर ।

पुन लो लन्दज को द्वार

, गोकुल में श्री गारद लूके

भापते हय लीवा हो के

पंगुवत भयो पयात् हापर

मी, श्री लण्णावतार होय

, श्रीयमोदा माता के लवर

, श्री बाबे काशवा हर्षा को

श्री लण्ण लू भका दे थाप

, अनुपद कियों को बा पुनः

, दिव्य रूप दोमी हो के

, पंगुवत हति छादि लगी

को गयो । इति श्री-भाग

वत १- अन्त्य प्रमाण ।

लमातः (प) } बाधु दक, बाधु
(क) } कटक, भुण्ड ।

लमातः (स) } लमाद लमा
लमा- (द) } है, पुत्रीपति ।

लम्यति } (द) स्त्री पुरुष संयुक्त,
लम्यत } महापात्र ।

लम्युक्त (स) } गीदड बतबर,

अम्युक्त } मिथार, लुदावा

अम्युक्त (स) } लामुन लामन,

फरिन्दा फल ।

लम्यकुलप्रतिदलरयम, (वि

तीयम्) लामन लो कुली

में लका है प्रवाद मिथवा ।

लम्यमाति (स) लामनिमिषर

रावण बाटिका वासवा ।

लम्युक्त (स) } लामुनदक,

(फ) } लमरकोट ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

लम्युक्त (स) } लमरो लमू ।

अंशयुत सब नाम यह
 इकतीस । इगदि नाम
 धकार धारे होत है वारी-
 ग । शंख कांज भृगाक
 सुक्त, होय धरहु जकार ।
 अर धरे मीगादि कहिये
 मेघ धरे दकार ॥२॥ दोहा ।
 जीवन जीवन जीवन मूल
 सभोवग जाग । राम
 गीतका छंद ये, शीविश
 कला प्रमाण ॥ १ ॥ नाम
 गाथा में । दोहा । अंशु
 अमल कीलास जल, पे-
 पुष्कर बन पारि । अमृत
 अरगजीवन घन रस संवर
 पापारि ॥ १ ॥ मेघ पुष्प
 विष-सर्पमुष्प, कां कबंध
 रस तोय । सदसपाथ
 संभर सलिल, अपव पीठ
 पुनि सीय ॥ २ ॥ पानी
 नेन पवारि को, अंतम
 जायो कीन । प्रगट भई
 विय की, सधी, निवट
 सुधक्षित दीन ॥ २ ॥

जलपति (प) भंवर, जल
 कीट, जलभौरा जो जल
 के प्रवाह गो कबहुं सी-
 धा कबहुं सछटा चहत ।

जलकामुखा (म) पकैपुष्पी ।
 जलकारिका (स) पानी में को
 जगोनी । [पंदुखा ।

जलकुक्कड़ (स) पनदूबा पची,
 जलकुक्कुट (स) जलका सुरगा,
 जलमुर्गा, मुर्गावी ।

जलधर (म) जलजीव मीगादि
 मकरो पादि जल के रहने
 वाले जल, मत्स्यादि ।

जलधरईस (प) } बरख देव-
 जलधरंग (स) } ता, जलध-
 पति ।

जलजल (म) } दो० । "जलज
 जलजल (स) } कीन, मोती ज-

जल, जलजल संख अरचंद ।

जलजल कमल जिमि कि-
 रत पुनि, हज पायत

गदनंद ॥१॥ मीन, मो-
 ती, शंख, चन्द्र, कमलादि
 जलछात, जलवेत । दोनी

महृषा महृषा, दन महृ-
षा ३ मकार तै ४ ।
अथ अनुका (म) अठ्ठाशुन ।
अथ पिपिली (म) अलपीपश ।
अलमला (म) सिंघाडा ।
अलवेतसः (म) अलवेत ।
अलशति, अलशान (स) अम-
रादि अल सौ णा अमै ।
अलजावृष (म) अल अमल ।
अलद- अलधर (म) अल, वा-
दत । [अमक अम म]
अलदाभ (म) दादत लीली है
अलदि } (म) अमुद्र, मा-
अलनिदि } गर ।
अलन्यर (म) दैत्यविशेष ।
अलपति (म) वरुण देवता ।
अलविद्वह (स) अलपणी ।
अलमल (म) अल पादि ।
अलमि (स) अलपाद ।
अलमास (म) गदी, नरिता ।
अलमुह, } दादत ।
अलममुह }
अलदान (न) } अलद, नाद,
अलजान (द) } नीला

अलजाता (द) अमल ।
अलयोनि [स] अमलादि ।
अलराची, अलराशी, अलराशि-
[स] अमुद्र, नागर, गदी ।
अलरुह [म] अमलादि ।
अलशीकर [स] अलमुद्र, अल-
का किनका ।
अलशोभी [स] अलशोभी, अल-
का शीतना ।
अलधि [स] अमुद्र, गदी ।
अलालुह [स] अमलका कन्द ।
अलानल स, यम शीत
धूम ।
अलानि [स] अलशोभी कीट ।
अलसय, अलमय [म, द] अल-
वर तात्ताव, दह, नागर,
अल का स्थान अमुद्र गदी ।
अल [म] अल, अल अल-
अल वाद, अमिमाग,
अल है ।
अलधर [न] दैत्यविशेष ।
अलक [स] अलपादी, अल-
अलपादी, अलपादी
अलपादी ।

कल्पितः कल्पितः [स] पञ्चकरत,
सुधाकण्ठत, वक्ता मिथ्या,
अभिसानकरत, गीघ पति
आतुर कवन, वक्ता है ।

कल्पना [स] मंगला, बड़ापना
कथनो, झूठ । [कवादी ।

कल्पवाणी [स] पञ्चवादी, व-
कल्पसि- [स] कथन करत हो
रुम्ह, तू वक्ता है कल्पना,
अर्थ वाद, वक्ताद करत
हो, रुम्ह ।

कल्पहिं [स] कल्पहिं, कथने है
कल्पना, वक्ताहिं कथा ।

कल्पेहि [स] कथयत, भगवत,
कथयत, ।

कथा [स] कथ विमेष ।

कथनिका [द] कथात, मेल ।

कथास [स] कथविमेष का प्र-
थम कथ वर्णः पाए ते
मन्तमान् होत; है, कथ
मिमिर कथुं मे, पशु होत
है हिंसा ।

कथ [द] कथा, यमक, कीर्ति
कथोमति यमोमति [स] य-

गोदा, कसोदा ।

कहि [द] जेहि, निच की,
त्यागो, कोहो ।

कक्षपति यक्षपति [स] कुवैर ।
कक्षोपवीत यक्षोपवीत [स]
कनेक ।

कामी [द] काहिर, पगट ।
कारि [द] वेटी, पैदाकारि ।

काद्वलः [स] जंगल ।

काद्वलवरा [स] } जंगलीजंतु ।
काद्वला

काजी [स] सुवेद जीरा ।

काग [स] यज्ञ ।

कातिकर्मक [स] गानविमेष
देवगण, अथ एक कल्याण
का नाम, काति सुप्रीति का
है, को तछा रग्या होत इन्द्र
कोय ते गयी ।

कातकर्म [स] कातिक कर्म
समय के मोर्दी आदिदि
संस्कार विमेष, कातिक के
कर्म समय की नान्दी
आदि पादि ।

कातना यातना [स] कष्ट,

दुःख, गरुडकुण्ड, पीडा,
 पीरा, तीम वेदगा ।
 जातवेदः (न) अमल, अग्नि ।
 जातरूपः (न) } सुवर्ण, सोना ।
 जातरूपः }
 जातविभ्रमाः, (वि. स्त्रियः)
 दृषा है अचभा जिन को
 पर्याप्त, चरित ।
 जातवर्तुर्विवाः ४:—(स) प्राध-
 य, चवो. वैश्य, शूद्र ॥४॥
 ताहे कर्म पार्थिव ॥ श्लोक ॥
 समोदमस्तपः श्रोत्रं दान्ति
 गार्ज्ज-निदव । प्रागविप्रान
 नास्तिष्यं द्रष्टव्यं स्वभा-
 वतम् ॥१॥ श्रीकृष्णो धृति
 दर्शयुहे चाप्यपचायनम् ॥
 दानमीश्वर मावय चात्रं
 समस्तभावतम् ॥२॥ कृपि
 गोरक्षदायिष्यं वैश्वकर्मा
 स्वभावतम् । परिबुद्ध्याजि-
 कं चक्रेष्टस्यापि स्वभाय-
 तम् ॥३॥ १०
 दावकः (८) नंदम, दावक ।
 दावता (न) मांगता है ।

जाति. (न) सामान्य एक वि-
 रादरी । [मांगता ।
 जाषा. (द) मांगता, जावता,
 जातिनक्षिका. (स) चमेक्षीपुष्प,
 जातिकीम. (स) जायकस्त ।
 जातीपत्रः (स) जावत्री ।
 जातीफलः (स) जायकस्त ।
 जातीफलत्वक. (स) जावधी ।
 जातु. (न) कदाचित्. कथहिं ।
 जातुधान. (न) राघव ।
 जानपनी. (प) स्वल्प ज्ञान ।
 जानामि, (न) जांगता है मैं ।
 जानिवी. (स) ज्ञातव्यं; जानव,
 जानियेगा । [याग ।
 जान. (द) ज्ञान, जीव, सवारी
 जानु. (न) } जाष, चोपी,
 (फ) } लेंधा, पुठना ।
 जानी. (द) ज्ञानी, स्त्री ।
 जापक. (स) जप करैया, जप
 करनेवाला ।
 जावालि. (स) कृपि विनिय ।
 जाग. याम. (स, द) पहर ।
 जागाह. (न) } लेंधाई, दाना-
 जागाह. } है ।
 जानिक. दानिक. (न) जानिक,

रघुना, सुय्यमंजरा, पडव,
पादक, पडवना, थोको-
दार।

लामक. (द) पादक।

लामाता (द) दामाद।

लामिनि. यामिनी. (म) रात्री,

रात।

लाम्बूदः (स) सोना। [अर्थ

लाय. (स) पुत्र, लडका, लया,

लान्दनी [स] लम्बु दक रत्नार्थ

का नाग उस को लडकी,

गंगा, भागीरथी, लम्बु त

गया, कहते हैं कि लम्ब

लम्बु राजा थी तप करते

थे तब गंगा की भारा से

व्याकुल हुए तो गंगा की

गहाराणी की पीगये फिर

देवता थी के कहने से पीछे

पेट से निकाल दी, रही

सिये भागीरथी को लम्बु

तनया धर्यात लम्बु राजा-

र्थ की बेटी कहते हैं।

और कहते हैं कि गंगा की

को राधा भागीरथ तपस्या

करके लग्न में पृथ्वी पर

लाया इसी सिये। इनका

नाम भागीरथी पड़ गया।

नाम भाका में लिखा है।

दादा। विष्णुपदो निर्जर

मदी, संधाकिनि हरि

रूप। सुरमरि सुरधुनि

लान्दनी, साजन दिया

पनूप ॥ १ ॥ गंगा निमि

त्रैलोक्य में, पापहारि

सुभचारि। निमि तुप

विद्यकीरति सकिर,

कर पुनोत नर नारि ॥ २ ॥

और गंगीदक छंद। जैति

थी लान्दनी गंग साहेबरी

देवि विमिश्ररी लोक

सहारनी। विष्णुपदो-

दनी भीम सु यैलला सर्व

पौषोषैतापह नाम

नी ॥ नाम बैकुण्ठ पारीद

भागीरथी विष्णु देवधनी

भोकका पावनी। यह

दरमान को छंद गंगीदक

गोदक वादय नाम संधा-

किमी ॥ १ ॥

पाया- [छ] स्त्री, अदस्ता, पुत्तो.

एतप, जना, मिप्या ।

लार- (प) ठास, सब पुरर

दार, सपपति, धंगड़ा,

कगवा, सुधन । [सन्तु ॥

लारा- [द] कसाया, जारना

लारि- [द] लतवे । [दुष्टागारी]

लारमुहा- [स] अभिचारिणी,

लाल- [द] भरीया, भंभरी,

गन, गृहभ, मन्द, भगव,

फन्द, मागस विद्यालगत,

बिद्धिपो भूपय, माया, स

सूद, फन्दा, जाली । पने-

कार्यमें लिखा है । दोंडा ।

लाल भरीया लालगन,

लाल दंग-पी सन्द । लाल

फांस विद्या लगत, निरखि

न तजिजिन कंद ॥ १ ॥

लालितो- (स) भीमो ।

लालक- (स) कली ।

लावक- दावक- [प] महावर

लाकी चलता नाम जियन

वासी गध-रंगावति है ।

लावाली (स) एक षट्पि का
गाग । [लगत है ।

लावग- [स] लीरप लाने दधि

जिपाले- [द] वाली ।

लिजिनी [स] लीगनी ।

लिङ्गो- [स] गभीठा ।

लिघावा [स] पूरना, मय,
लागने की दृष्टा ।

लिघाव- [स] पूरनिहार, मय-
बर्ता, लागने की दृष्टा
वाला । [कै ।

लित्वा- [स] लीत कै, लयकरि

लिनस- [फ] जाति ।

लिनिस- [फ] अद मरु, बीडा ।

लिगि- [प] लैमें, लीन तरह ।

लिगु- [स] इन्द्र, पन्नि ।

लिहा- [स] लीमा लीग,
रसना । [कपटी ।

लिह- [स] लगर, पादप, मूले,

लिहगुभोगो- [स] कर्प, व्याघ,
नाग ।

लीर- [स] मोचीन पुराना
वृष्टा । [ला राज ।

लीग- [फ] लोड़े के पीठ पर

जीमां [प] जीता रचना ,
वचना ।

जीव [स] प्राण, आत्मा, हृद-
स्पति, चन्द्र, जगज्जीवन,
सजीवनी, राजा, एक नाम
राजा दशरथ, रुद्र, जीते
रही, जीवात्मा, अनेकाद्यं
नी लिखा है । दो० । जीव
हृदस्पति की कहत, जीव
कहावे चंद्र । जीव आत्मा
नित नित जिये, जगज्जी-
वम भद्रमंद ॥ १० ॥ [पालना
शियाये । [द] पासे, जिजाना,
जीवन । [स] जल, आधार,
आभोवता, रोजी, जीमां,
जल, पानी ।

जीवनिमूर्ति जीवन्ति [स]
सजीवनि मूर्ति जाते अ-
मर बनारहे । [रचना ।
जीमं [स] अग्नि, जनक, भिक्षा,
जीमूतः [स] मित्र, बादल, १
जीमूत ; बन्दास २ ।
रक्तः [स] सुपेद कीरा ।

[द] पुराणा, बुढ़ा,

होकरा ।

जीर्णपथः [स] कष्टमय पथ ।

जीवन्तः [स] जीवन्त रस व
जगद्विस्तारुचन्द ।

जीवन्तः (स) जीता हुआ ।

जीवनः [स] पानी ।

जीवनी [स] जीवन्ती ।

जीवनीयमथः [स] चंद्रमण्ड,
जिठीमध, जीवन्ती, बममं
बमचरिद ।

जीवन्तोयः [स] जीवन्ती । [र]

जीवन्ती [स] जीवन्ती, गुरि
जीव । स । जीवन्ती ।

जीवितः (स) जीव, आयु ।

जीविता [स] हृत्ति, निर्वाह,
व्यापन, आधार, जीवन्ती
माय, व्यापार, रोजगार ।

जीव [स] जिज्ञा, जीम, रचना

जीर्णपथः [स] पण्डितो कोष

शुग [द] युग, दो सत्ययुगादि

शुगल [द] युगल, दो, दो० ।

जगत शुगल शुग देव दे,

जगय नियुक्त विवि जीउ ।

शुगलकिर्गोर सदा बचा,

नंद दास के ही ३ : १ :
गुणविधि- [न] गीत, वृत्त, दो-

विधि का ज्वर ।

गुभाष- गुभाष- गुभाष- [प]

लङ्गना, लंगी, लङ्गना,

लङ्गना, लङ्गना ।

गुगनी- (प) लङ्गनी, गुगनी-
नी, लीट विधि ।

गुटन- [न] लङ्गना, लङ्गना है गुट-
ना, लङ्गना, लङ्गना होना ।

गुनार- [ट] पायकागन, लङ्ग
न, लङ्गना । [मते ।

गुन- [द] गीत लङ्ग, लङ्ग

गुन- [द] गुनगी, लङ्गना

गुणविधि- (द) गुणविधि, पांशो

पांशो न लङ्गना का गान

होना । लङ्गना लङ्गना

लङ्ग, लङ्गना लङ्गना

लङ्ग गुणविधि लङ्गना, लङ्ग

लङ्ग लङ्गना लङ्गना

लङ्ग लङ्गना लङ्गना

लङ्ग लङ्गना लङ्गना

लङ्ग लङ्गना लङ्गना

लङ्ग लङ्गना लङ्गना

लङ्ग लङ्गना लङ्गना

गुनार- गुनार- [द. स] गुन-

र. लङ्गना लङ्गना

गुन- गुन- (द. स) लङ्गना

गुन- [द. स] लङ्गना लङ्गना

गुन- [द. स] लङ्गना, लङ्गना,

लङ्गना । [लङ्गना लङ्गना ।

लङ्ग. (स) लङ्गना लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना [द. स] लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना [द. स] लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना [द. स] लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना [द. स] लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना [द. स] लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना (स) लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना, लङ्गना ।

लङ्गना लङ्गना (द. स) लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना (द. स) लङ्गना । लङ्गना

लङ्गना (स) लङ्गना लङ्गना

लङ्गना, लङ्गना लङ्गना

लङ्गना लङ्गना लङ्गना

लङ्गना लङ्गना लङ्गना

लङ्गना (स) लङ्गना, लङ्गना

लङ्गना (स) लङ्गना लङ्गना

लङ्गना लङ्गना लङ्गना

लङ्गना लङ्गना लङ्गना

लङ्गना लङ्गना लङ्गना

लङ्गना लङ्गना लङ्गना

जिह्वा (द) भोजनक्रिया, जीव
नार खाना ।

जीक (द) देखना, जीवना ।

जीहा (द) योग अष्टांग योग्य,
गिराफ, समस्त, दोनों,
जीही ।

जिहम (स) जलनेवाले ।

जोगयत (द) परिष्कृत, खबर
दाखल करना, जतन करना ।

जोजन (द) योगन, चारकोश ।

जीती (द) ज्योति, प्रकाश, २
सूर्य ।

जीमी (द) योनि, कारण,
जाति ।

जीवा (द) देखा, जीवना, दे-

खोषिता (द) योमित, स्त्री ।

जीहार (द) प्रथम क्रिया, जी
हारना, प्रथम करना ।

जीहो (द) देख कर के, जीन
कर के ।

जंतु (स) पुत्र जीव ।

जंत्रित (द) यंत्रित, तात्का दे
दिया ।

जंघी (द) वग क्रिया तात्का दे

जंघू (स) जासुन ।

जंघुक (स) सिधार, गृहांत ।

ज्याय (द) ज्ञाने, ज्ञाना, पा-
समा ।

जीर जीई (प, द) { जीर, त-
जीए जीइ- { काम, देखी
जीरती ।

जीवना (द) राखदेखना, खी-
लना ।

जीवा (द) देखा, खोजा ।

जीहार जुहार (द) नमस्कार,
कुण्ड ।

जात (स) विदित, ज्ञाना

जातव्य (स) जानने के योग्य ।

जाता (स) जागो, बुद्धिमान,
बोधक ।

जाताजात (वि० कः) जाना
दे सादृजमाने ।

जाति (स), जाति के योग, प-
रिष्कृत ।

जान (स) जान दे जी हया,
बुद्धि, समुक्त जान, दा-

निग, जाति, गण, रा-
जाहार, जानना, दा जाना

विष्कार कृष् भुजिहुने को

पुनः ज्ञानना, या तीनि
प्रकार, वर्षायाम ज्ञान,
मासा जन्म ज्ञान, अनुभव
स्वरूपावार ज्ञान २। मध्य-
मासिकोपपाय, बुद्धि, यत्ना ।

ज्ञानरंज. (स) ज्ञान रचित ।

ज्ञानी. (ग) चतुर, बुद्धिमान् ।

दोहा । कीर्तं कुशल बी-
विदम पुनि, छन प्रवीन
तिस्ताति । पर विदन्ध

नागर कीज, जानै रस की
यात ॥ १ ॥ [पादि ।

ज्ञानेन्द्रिय. (भ) मन, बुद्धि, चक्षु
प्रापक. (रु) प्रचारक, जनाने
द्वारा, पाप्मादेनेवासा ज्ञा-
ननेवासा :

ज्ञाननं. (स) जनायना, प्रका-
शना, ज्ञानना इच्छित्वार
देना ।

ज्ञानानि. (स) ज्ञानिना तु ।

ज्ञेय. (स) ज्ञानवेद्ये योग्य ज्योन
विषे ।

ज्या. (रु) नाता, पुत्री, धनुष
का बिम्बा, पतिव्रता, कमान

का रीटा ।

ज्येष्ठ. (म) दडा, ज्येष्ठ, प्रधान,
उत्तम, एक गङ्गीने का
नाम ।

ज्येष्ठबंधु. (म) दडाभाई । दो० ।

ज्येष्ठ पर्वज ज्येष्ठ युत, गये
स्याम नृपदार । मत गयेष्ट
निपाति पुनि, कीन्हे दंत
उत्तार ॥ १ ॥

ज्येष्ठा. (स) दडी, ज्येष्ठा, उत्तमा,
१८वां नक्षत्र, गंगा ।

ज्योति. (म) किरण, नक्षत्रगण,
नेत्र, अग्नि, ब्रह्म, प्रकाश,
ज्योति । दोहा । ज्योति
नक्षत्र गन ज्योति दुष्ट,
ज्योति नेत्र अरु पाग ।
ज्योति ब्रह्म को धिर रहै,
रहव जगता जिहि लाग ॥ १ ॥

ज्योतिर्लेख. यक्षि, (वि० बर्द्धम)
तारों की पंक्ति का चक्र
हे जिस में ।

ज्योतिष्शास्त्राचार्यमुनिरचितानि,
(वि० स्यान्तानि) तारोंकी
छायावृत्ति फूल जड़े २

जिन में ।

क्यातिगन्धाः (स) मेथी ।

क्यातिगन्धाः (स) } मानकौली ।
क्यातिगन्धाः (स) } [क्यातिगन्धाः

क्यातिगन्धाः (स) नक्षत्रगन्धाः विचार

क्यातिगन्धाः (स) तारा, चमक,

चाग ।

क्यातिगन्धाः (स) चन्द्रगन्धि, च

न्द्रिका, चन्द्रनी ।

क्यातिगन्धाः (स) चाहा, तप, चण,

मीडा, मोर, मंताप, होग

भय, बुन्दार ।

क्यातिगन्धाः (स) चमि, गन्धा-

म, तपन, लज्ज ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

क्यातिगन्धाः (स) कल्याणा, भनेषार्थः ।

ठाढ़े भये, हरपि कछन

रघुराय ॥ १ ॥

भ

भं (स) भृशगति, ईद, गन्ध,

धनि ।

भं (द) घुमरी, तिरमिराणा,

पांछ के पागे, जंधेरा ।

भंभार-भंभार (द) बिनावसे

के घुम, बिन पत्ते के पेड़ ।

भंभार (स) भन्ने ऐसा मन्द

हो करणा पद्योत् भंभना

हट, भनभनाने का मन्द ।

भंभूगादि के मन्द ।

भंभूगा (द) बड़बड़ाना, चढ़न-

हाना, हेटे करणा, बकना,

पक्षताना, विक्षपना, गिर-

रना ।

भंभगा-भंभगा (द) चंगा, करणा,

परितने का मन्द, खपर

पड़ाने का मन्द ।

भंभट (द) घबराहट भंगडा,

रगडा । चक्रभट ।

भंभट्टी (द) कठिन, भंगडा ।

जनजाती । [इषा ।
 भोक्तृगः (२) विहविहा । क-
 भोक्तृगानां (२) संस्कृत में भोक्तृ-
 कार, भोक्तृग ऐना शब्द,
 क परना, ठनठगागा,
 टुगटुगाना, वजगा, पीर
 पट्टपट्टागा । [भोक्तृकार ।
 भोक्तृगः (२) विहविहाट्ट ।
 भोक्तृ (२) वलवात, वृज्जा,
 सुराई, भोक्तृ ।
 भोक्तृगः (२) जाणी, भोक्तृग ।
 भोक्तृगः (२) भोक्तृ, पांथी, भोक्तृ,
 भोक्तृ भोक्तृ पांथी ।
 भोक्तृगः (२) प्रबंधपदग,
 पांथी ।
 भोक्तृगः (२) पंधर, भोक्तृग ।
 भोक्तृगः (२) निमान, धना, प-
 ताजा, परररा, दितु ।
 भोक्तृगः (२) वही पांथी ।
 भोक्तृगः (२) नूरा ।
 भोक्तृगः (२) पत्ती के घनेरा,
 ददुर्गरी, पत्ती के घना
 हण, दाणी के घनादिर ।
 भोक्तृगः (२) धूप के हण रर

होना, भोक्तृ के पांथीना,
 सुपागा । सुरभोक्तृ, धूप
 के पिररक ।

भोक्तृगः (२) । हवा काम
 करना, निरर्थक काम क-
 रना, वह कहनायत दूसरे
 की सधुता पर्याप्त हलवाई
 कताने के लिये बोला
 जाता है ।

भोक्तृगः (२) हीनादानी,
 भोक्तृग भोक्तृ, खैराखैरी,
 सुटपाट, भोक्तृगः ।
 सुटपाट, हीनादानी ।

भोक्तृगः (२), वजगा, वलवक
 करना, विनाप करना,
 दार दार करना ।

भोक्तृगः (२) दोहनी, घुंटा, ट-
 री, दूध टुर्ने की क-
 टिया, दुर्ने का पाव ।

भोक्तृगः (२) भोक्तृग, ल-
 नामग, लमगग ।

भोक्तृगः (२) वलना, लोहे
 पांथी में भोक्तृ, वलना,
 विलना, वलना, भोक्तृग

देना, भोका देना ।
 मकीरः (६) टोटा, विपत्ति,
 बौद्ध, हलीर, विपद ।
 मकीराः (८) भयान, योभार,
 वायु समेत मकी ।
 मकीपत्तः (९) कुलानर ।
 मकीपः (१०) मकीर, घाँधी, घ-
 यार, चौवाँ, चौवाधी, तू-
 फान ।
 मकीः (११) बिना प्रयोग, नष्ट
 वादी, सदा वक्तव्य करने
 वाला, बकी, घनापी, स-
 दरी, गरंगी, पागलपन
 की बालबाण, चयन ।
 मकीनाः (१२) मकीना, बहुवचन-
 ना, बजना ।
 मकीनाः (१३) मकीना, मियना,
 सड़ाई करना, मकीना क-
 रना, बाद विवाद करना,
 मकीना करना ।
 मकीनाः (१४) मकीना, मरुटा,
 मकीना, विवाद ।
 मकीनाः (१५) मकीना से
 मकीना, मकीना, मकीना, मकीना

हाक, सड़ाई, मकीना, मकीना
 दिन, मकीना करने वाला,
 मकीना ।
 मकीनातिन (१६) मकीनातिन,
 मकीनातिन, मकीनातिनी ।
 मकीनातिना (१७) मकीनातिना,
 मकीनातिना ।
 मकीनाति (१८) मकीना, मकीना, मकीना ।
 मकीनाति (१९) मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२०) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२१) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२२) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२३) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२४) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२५) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२६) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२७) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२८) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (२९) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।
 मकीनातिना (३०) मकीनातिना,
 मकीनातिना, मकीनातिना ।

भटके से नारी दुपा, ख-
पीटा, भीरा, लो दटके से
नारायण, काङ्गागदा ।

भटवागा (२) भटका लगाना ।
भटपट (-द) भटने, तुरंत,
चतावन, ग्रीष्म ।

भटास (२) भटास, दौलार,
भटि (२) भटाह, दूटा, रुपहा ।
भट्ट (२) भट्टी, तासा विजिप.
ताले ली कल, एक तरफ
दा ताहा, पाँचन ।

भट्टग (२) पगग, दली का
फूत, टरकग, लैने फूत
पलकर गिरते हैं, दली की
टेग का फूत ।

भट्टना (२) गिरना, टपकना,
खूना, लैने पिङ्ग में फूट
खववा पत्ते, पगग होना,
निकलना, दलना, नीरत,
पगगना, दहागना (लैने,
नीरत) [लपर ।

भट्टप (२) दहुपाट, हंगसे,
भट्टपना (२) चट्टना, भट्टपा
भट्टपी करग, भट्टवा

भट्टपी करग, नारायारी
करग, पला करग, दम-
का करग ।

भट्टपा भट्टपी (२) चट्टाई,
दप्टादुपटी ।

भट्टपाना (२) चट्टाना ।

भट्ट परना (२) चट्ट का चव
भट्टगा ।

भट्टवेर (२) लंगसी वेर, वेर
का पिङ्ग, वेर की भट्टी,
वेर वेर, भट्ट भट्टी ।

भट्टवेरी (२) लंगसी वेर ।

भट्टवाना (२) भट्टाना ।

भट्टाका, भट्टाका (२) चट्टा-
चली, फुली, दहदहो ।

भट्टाभट्ट (२) चटपट, धारा
भट्टाभट्ट ।

भट्टाना (२) भट्टा दिखाना,
भट्टाभट्ट करग ।

भट्टी (२) गगातार दटि पीर
चपरी गति, लगतार नीर

चपरी गति, लगतार नीर

भट्टीता (२) कलाहि का दंत

भट्ट (२) भट्टा, भट्ट, लीध

हसना ।

हसि. [ट] काट करके, हसना
काटना । [बग] ।

हसना. (द) विद्यावता, कटा-
हसि. (द) ठठा कर के, हस-
ना, ठगना, छाड़ा.
भाग । [भेद] ।

हसना. (द) नाग रोग गुड़ा
छाड़ा (द) भाग या लगाना ।
हाटे. (प) लसे, लरे, पडे ।
हावर. (प) गहवा, बिष्टमबी,
गोसा तलाव ।

हावर. (द) गहवा ।
हासन. (द) हासन घसादि,
दिहोना, दमोना ।

हासी. (द) बिहार के, पोछादे
के, बिहः करके । [वाता]

हिडमी. (न) एक प्रकार का

हिडिः [म] समुद्रपिन ।

हिडिमः [म] हिडिमी ।

हिनिदिनि. [प] धोनी मिमि,
पाता, एक प्रकार का नाव ।

हीना [म] पाछंडे, न्युपे, पासक,
न्युपे ।

हीठा [द] देखा, हट ।

हीठी. [द] हटि, देधी ।

डिबद. [द] डिबदा । [कर]

डुमर. डुमर. [स] डुमर, गू-

डो. [प] निवास स्थान, तन्यु-
घर, भेगा । [हिंटीना]

डोन. [द] डोना, तनाव,

डोडिका. } [न] करेवमा ।
डोडी. }

डोनी. [प] डोनी पासकी,
गई, गयी, डोना ।

ठ

ठननगी. [द] नोट या गई,

लुटुन गई, ठननगा लुटु-

दुनना । [टाका]

ठका. [म] बड़ाठाक, ठका,

ठावर. [द] मैना, गदेना, सी-
वड । [नार], समीप ।

ठिग. [द, निगट, नगीच, बि-

ठिडिम. (द) टटीदरी पची ।

टिक. टिग. [द] पची निमिष मा-
रन, पची । [विहा, बिटा]

टोटा. [द] वासक, लहना,

टोना. [द] टोना, एक भागा ।

टरी. [द] चीनी, उठोना,
धोना ।

गा

गम [छ] मिरासतो रपा
[छ] रपा ।

गं लाहा गं गं लाहा [म]
मन्त्र गदाविद्या ।

त

तच्छिद्य [र] मिरासने रक्तेका
विशेष व्यवस्था, मिरासने
की वस्तु विशेष । दो० । उप
वरदान उपभाग पुनि, कां-
दुख मोह लीय । गदु त
शिया भी कठिनि मे, पैदी
तिय रमभीय ॥ १ ॥

तच्छ [म] मडा ।

तच्छविद्या [म] तच्छिपीरी ।

तच्छविष्टः [म] लटा हया दूध
को वाली निचका ।

तत्तरः [म] तत्तर ।

तत्तराव [म] दोनी तत्तर ।

तत्त [म] लाभा, विचम, छत्र
विशेष लेखना ।

तत्तपनी [द] समूह ।

तत्त (म) त्यागी, जागी, सादप
ज्ञान, (तद्, तद्, तद्, तद्, तद्
मन्त्र) ।

तट [छ] किनारा, तीर, बहा-
रा, गिराट, लयादिष्व बा
कनारा । दो० । कृत पति
न जगकठ तट, भवधी रोभा
तीर । सोमा मंगा तद्धि
वसे, सव निगाद उदरीद
॥१॥ करि मज्जग देवधनी,
कथन सिमा । वसुधाव ।
गाय माय मिनती करत,
लोहि सरोवर दाय ॥२॥

तटनी [म] लही, करिना ।

तट्ठागः [म] सरोवर तात्पर्य,
तट्ठाग { बडा तात्पर्य । दो० ।
वधामर मरवर कर

मि, तद्धिता मार तात्पर्य ।

पट्टावर मुक्त अक्षत, मयी
गाम भद्रगाम ॥ १ ॥

तद्धित-तद्धित [म] विज्ञाको,

विज्ञाको, विज्ञाकी, मन्त्रदा ।

तद्धित [द] विज्ञाको ।

तद्धितपति [म] मीध, मादप ।

नमः [५] याचक, कृष्णाय,
वाचक ।

तनु- (अ) नील, नीरसायन.
 ईश्वरसायन, ईश, तनु,
 यद ।

ਸਮੁ. [੮] ਚੀਟਾ ।

तत्त्वान् (स) शीघ्र, तुरन्त, एषी
समय, पौरुष ।

सङ्ख्या [२] तिगकी सवा, तु
नारी सवा ।

तत्प० [स] तद्वत्, तदासह. सं-
 रम्भ, सम्प्रभूत गग विश
 समारोह इव । [पादि।

तत्त्व- [स] सार वस्तु प्रकृति
तत्त्व- [च] विचार, पदतत्त्व,
पाठ्याय, वायु, तेज, जल,
पृथ्वी ॥५॥ सारवस्तु, पाठ्याय

तत्त्वज्ञानं [स] मध्यज्ञानं यथा
यं ज्ञानम् ।

तत्त्वमहतिः ॥२५॥ [म] गिर,
 षंठ, छदय, छदर, वटि,
 १५३ इति पद्याम् । धावग
 कृदग, वसन, सकृदग, प
 मारण ३ ५ ३ इतिषाय

भुज, पिपास, आलस्य,
आलस्य, मित्रा इत्या इति
तेन । इतः पिपासः सोऽह,
लार, दधिर इत्या इति
कल । अलि, मणि, लवण,
सोम, नाही इत्या इतिहनी ।

तत्तु (म) तत्तु। दिये, तत्तु, त-
जित, दत्त, तत्तु ।

तत्पञ्च [न] मीमा, तन्नाम,
तन्निम, यथा ।

तथा तदेव [७] तैमहिं, तोग
प्रचार, तैमे, तुष्य, पृथ्वत्
उसी तरङ्ग, ऐमे ही उसी
भाति, तैमे ही ।

તથાપિ [સ] તોત્ર પ્રકાર ઓ,
તોત્ર પ્રકાર નિસય, તોત્રી ।

तद. [४] कल, स. ४. ।

तद्. (स) सप्तपञ्चाता. [तद्,
यद्, च, सातेनेवासा]

तदङ्गि-तदङ्गि [स] तीन वरप ।
तदङ्ग- (स) उस से पीछे ।

तदपि- [८] तौभो ।

तदा [न] तीन, तस्मिन् समये
 - तिरु समय, समयम् ।

तदागीम् [स] तब ।

तदापि [स] तदनियम, तद्गी

तद् [स] तब, तोन, तिस का भा.

पीछे, वच ।

तम [स] { गरीर, डेह, चौर,
[पि] { ही० । तम गरीर
(विस्तार तम, तम

गुच्छन तम तात । तम

विरचो कोज जगत, पुने

पु हरिहर भाग ॥ १ ॥

तमय [स] पुन, वासक, संतात

चोकाह, डेटा ।

तमकाज [स] चोरा भी ।

तमय तमयी [स] पुनो, वा-

बिबा, डेटा, कल्या ।

तमतीवक [स] गरीरानन ।

तमात तमोत [स] विस्तार

करी, विस्तार करना ।

तम- (स) विस्तार, गरीर, गुच्छ

विरकाशन, तम योका,

यण, दुवसा ।

तमजालावमयाः [स] तम

वाला । तम की जाली के

वाताह, विम का बदल

जाचियो में कटकती हुई ।

तमत्वक (स) दासचोनी ।

तमन (स) पुन, वासक ।

तमना (स) दुवसापन ।

तमना (स) पुनो, डेटा ।

तमनयी (स) काया, गरीर ।

तमनय तमोत (स) रोम,

यय, तम में भी जाले ।

तमोत (स) विस्तार करी, डे-

कापी विस्तार, कर, डे-

गाधि विस्तार करना ।

तमा (स) गुच्छ, तमा, वाया,

यय गति, तमा, संतात,

तार, गुन ।

तमोत (स) गरीर ।

तमोत (स) तमोत ।

तमोत (स) तमोत तमोत ।

तमा (स) तमा । ही० । तम

तमा की तंद गुच्छ, तम

चोचकी तंद । तम कहत

संतात कद, हरिहर का

तम तंद ॥ १ ॥

तमोत (स) वासक ।

तन्दुलाः (र) वागिरंग ।

तन्दुलीयः (न) चवराईसाग ।

तन्दुलीबीजः (म) चवराईगाँव

काशीया ।

तन्दुलीरसः (क) चवराईसाग ।

तन्तु (न) बजीमन्त, टोटका,

शरणादिम वाचा ।

तन्त्रिका (स) गुरिच, ।

तन्त्रीः (न) घाघाघर, बजन्त्री,

वाद्यकार, गायन, वीणा ।

तन्त्रीतरुः (स) धवडू ।

तन्नाय (स) शङ्कर चमिद ।

तन्नायः (म) तिनकी माया ।

तन्वी (न) प्रतनी ।

तपः (स) ताप, सङ्गर, तपस्या ।

तपनः (न) सुख, सङ्कर, गरनी,

ताप ।

तपनीयः (न) सीनई, दुज

तपनीयः (स) सरी ।

तपस्विनी- (स) सटासरी ।

तप्यो (स) तपस्वी, सोनी, चर्चक ।

तपोधनः (स) तपस्वी, घाघाघ,

सुमि, दवना ।

तपोधना (स) सुंदरी ।

तपस्वदाः (स) केला ।

तप्तः (स) तप्ता, तपत, गरम,

धन्य, प्रवृत्ति, खेदातुर

तपाया हुआ, तपा हुआ

तपस्विन् (स) तप करनेवाला

तपस्वी ।

तपः (स) तपस्व, तत्काल,

(प) तीनसमय, तत्क्षण,

तवदित- (र) तुम्हारा दित ।

तवाननः (स) तुम्हारा मुँह ।

तवा- (प) विलम, भरने की

ठीकरी रोटी, पकाने की

छाँड़े की पात ।

तम् (स) हस की ।

तमः (स) दी । "तम तानय

पुत्रि राहु तम, तमण ति-

मिर तम कोष । तम श-

प्राग की हरहु धरि, हर

धरि दीप प्रवीधः ।" पञ्च

कार, बधिक, गुप्ततामस,

कोष, राहु, ब्रह्मान, पद्मा-

न, चन्देरा, तमोदुप, त-

तम ।

तमकि (प) भूपकि, कोष है

कै, कूदि कै, सरोप काकर
के, तमक करके, तमकना ।

तमसरा [स] चम्पारी रासि ।

तमस, (स) चधेरा ।

तमस- [स] संवकार ।

तमसा [स] नाम नदी ।

तमसिनी- [स] रासि चम्पेरी
निमि ।

तमादि- [स] धूर्त्य, चर्क ।

तमाज- [स] सचमिज पयिमनेम

ख्यात, ग्यामबण, चन्दनकी
टीका, सचविमिय । दो० ।

आज अंध तापीय पुनि,

कंकुच मांजू तमाज । मेठे

रङ्गे कङ्गे आच रङ्ग, तू धस

मोहन माज ।

तमाचयच [स] मीजयात ।

तमकः [स] केरका ।

तमिज [स] चम्पकार ।

तमिज- [स] चम्पारी रासि,

तमसरा ।

तमी- [स] रासि, निमि, रात ।

तमीवर- [स] निमिवर, वादुर

चादि, राचच ।

तर- [स] } अधिक, बहुत, तमे,
[प] } गोसे, भीगा, भीगा,
[फ] } तरे, तन, चत्यत ।

तमीदङ्ग- [स] रोम, रोवा जीम-
रीरमी दुप्रा । [लि, तङ्ग ।

तरस- [प] विचार, चमुमागी

तर्कि- [स] विचारि के ।

तरस- [द] त्रास । [तङ्कना ।

तरसत- [द] तङ्कपता, तरसना,

तरसन [द] छराना, तरसा,

कूदा, तरसना, कूदना,

मिम्भकारना । [संगसी ।

तरसनी [स] संगुठे के दासनी

तरसना (प) कूदना, विचारना

तरकारी- [स] गतिचार ।

तरके- [द] तरये, फाटे, भीरे,

पङ्कटे ।

तरसज [द] कूदेज, फाटेज,

कूदा, तरसना, कूदना ।

तरस- [स] ठेस लघ का, स-

वरि, लमस, लहर । दो० ।

संग तरंग कसोल पुनि,

भीभी तरमि पुमाक । स-

दरो चाच पमादि मत,

कमुना पचरति वाय । (१)

मोर हूनरे खान पर लिखा
 १ । दो० । हरि विहार
 यमुना करत, दोषी लख-
 रि तरंग । हस्तमहा क-
 लीम पुनि, चवली हरनी
 भंग ॥ १ ॥

तरङ्गिणी- (स) नदी, नरिता ।
 तरङ्गी- (स) समुद्र, जल, दल-
 रङ्गी, वहाववाही ।
 तरंग- (सु) लल, साधित,
 बहाव ।

तरंगनारद- (स) नदी, साधित,
 तरंग नारद } समीप तरंगनारद
 तरंग नारद } श उवाच, पाद
 तरंगे पीर को नारद ।

तरङ्गि- तरङ्गि- (न, द) तरङ्गि,
 विहार, विरल, नाव ।
 तरङ्गी- (स) नाव, नदी, निर-
 निमित्त दरद में लिखत या
 तरङ्गी का नाव लिखा १ ।
 कानधार दूर लिखत श्रीराम
 दान । १ निषाद वैदिक
 दाशो पाम । माशो मोदि-
 त तरङ्गी नदी प्रसन्न ।

बहुप मोत तरि गीया
 धेगदि बाहु ॥ १ ॥ गंग
 पार छै रघुवर मन यमु-
 राग । नारदाय पुनि भेटे
 काय प्रेमाग ॥ कीन्द गगन
 पुनि पागे रघुजुलबंद ।
 कल हादय पुनि सतं पर-
 या छंद ॥ १ ॥ [पद ।

तरङ्गु- (स) कुत्ता, चरका, बल-
 तरङ्ग- (स) चञ्चल, कुदक,
 दिकता, तीव्र, पीडा,
 तरङ्गी, नागा का चनेर,
 नागासभ्य का दाना मो-
 भिन, पीडा, पीडा, पल्लिर
 प्रतिप्रदय ।

तरङ्ग- तरङ्ग- (न) बहाव, तरङ्ग ।
 तरवार- (स) पद यन्त्रविनय,
 तलवार । दो० । विविध
 कुवेर दयानि ती मंडलदा
 तरवार । १ ॥ शिखी
 तीतो बनी, पदं दस्त कत
 दान ॥ १ ॥ दारदा ॥
 बल्लरिह ली बंदल
 यमिहार दान । १ ॥

वास करवाळतु सुव्रत ।

वाङ्मत् ।

वास ३ अंकन य 'नदिमिक

तर्जुन तर्जुन- (प) } कादन, का

कटि म वास हाटन मया

तरजल (द) } दल, ताडन

मया करवा माग ३ १ ३

कोप, तडपन, मर्ज, तड-

तरी- तरीच (प) मोखा, नाव

पता, तरजला, तरपना ।

तरी- (म) तन, वेड, कण, तर

तर्जुन (प) } तोडन, तडून,

तरजल (द) } कोप, मर्ज,

वर, दण्डन ।

भिक्षाकारण, तरजा, कटि,

तदकर (म) नाव, मोखा ।

तरजला, कादन ।

तदकर (म) { गुवा, योगन, न

तर्जुन (प) } भिक्षाकारण,

तर्जुन (द) } धमकाना, मर्ज

(प) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (म) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तर्जुनी (प) } ना ।

तर्जुनी (द) } ना ।

तत्प. (ग) मय्या, मीन, मंथ ।
 तत्प. (ग) मय्या । [चोर ।
 तत्प. (ग) चोरजन, चाकू
 तत्प. (घ) चोरी, लोभिनी,
 उक्षेती ।

तत्प. (ग) तिन्नी, तिमन्निवे
 तत्प. (ग) तद्वा विने, तिमन्नी ।
 तत्प. (घ) तद्वा, कस ठाय ।
 तत्प. (ग) मय्या, मय्या ।
 ताः (ग) येष्टिया । [मतम्भ ।
 तात्प. (ग) यमिवाय, यामय,
 तातः (ग) यमोरता, तातो का
 यन्त्र । [यन्त्र भुने की ।
 तातो तातोका (घ) भुनेट,
 तातो (घ) योदामिद, यामिद ।
 ताता (घ) योरा, ताता ।

ताटका (ग) { तरही, वा मिरि
 ताटका (घ) { या, वा मय्या
 ताटका (घ) { कल्पभूषण, भूषण

मेद यवय स्त्रीगण, देडो,
 दुःख ।

ताटका (ग) ताटनेदार, मासक
 ताटका (घ) निनिचरीविमेष,
 सुहेतुसुता ।

ताटका नासा (घ) यन्त्ररने

एक मासा ३ दिनमें रास
 चंद्र ने ताटका का यमी-
 टा मा ।

ताटका (घ) कल्प भूषण, भूषण ।
 ताटका ताटका (घ) पीटता,
 डेगावता, भिदकी, पीटता,
 मारता । [मय्यादि ।

तातः (ग) मय्या, मास, पूजा,
 तातः (ग) प्यारा, सपना, प्रिय,
 मित्र, पिता, भाई, हित,
 पुत्र, स्वयं, गरम, गुण, तप्त
 ताटका (ग) तुल्य, समान, दे-
 साधी, तैसा ही तिस के
 समान । [पण्डित ।

ताटिका (ग) ताटिकापत्र,
 तापः (ग) कहरि, नरम, तप,
 प्यार, दुःख, लीन, संताप ।
 तापतय मोचनः (ग) तीमताप
 के पुद्गामे वाली ।

तापे (घ) तपे, तापना, तपना ।
 तापनः (ग) तपनी, योगी ।
 तापसदृशः (ग) ईगुग हज ।
 तापनेष्टः (ग) पिरवंगी ।

तापनेष्टः (घ) सतपौर म. २. १

तुषा. (स) चर्या, हिनृणा ।

तुच्छ. (स) खोत, शून्य, हीन,
अल्प, नीच ।

तुच्छा. (स) क्षीय १ अथवा
इलायची । [रजा ।

तुण्ड. (स) क्षीयवर्ती का, च-
तुण्डकेरी- } (म) कुंदरु ।
तुण्डा. }

तुल्यः. (म) तूतिया ।

तुल. (स) तारामण, पीडा ।

तुलः (स) तूलकृष ।

तुलरी. (स) तोरठी माटी ।
रुद्र चक्र २ सरसी का
भेद, तोरी ।

तुल्यम्. } (म) तुल्यही तुल्यही
तुल्य. } शिथे ।

तुमुक्त. (स) तुल, बीजा, भीड़,
हुलह, गोर, चित्तकिन्नाइट ।

तुम्ब. (म) तितालीका ।

तुम्बी. (स) मीठा लोण ।

तुम्बु. (स) तुम्बु ।

तुम्बीर. (स) तुम्बा, तुम्बरी,
} कटुनक्षपात ।

१. (ग) भिन्नातरकारी ।

तुम्बु } (म) घोडा, चर्या, चित्त,
तुम्बु } दीडा । बाजी बाजन

तुम्बु इत्य, भेदय चर्या सं-
धर्व २ तरुत तुम्बुम नहं
कषे इत्यमाला वें सर्व १११

तुम्बु } (स) घोडा, गगन,
तुम्बु. } मल, दी. । गगन

तुम्बु तुम्बु मग, बहुवि
तुम्बु तुम्बु । हरिज तुम्बु
तुम्बु सी, रंभ्यो न हरि
हरि रंभ १ १ १

तुम्बुम्. (म) घोडा, बाजी, चर्या

तुम्बु. (म) मीन, वेगि, नक्षदी ।

तुम्बु. (प) तुम्बु, वेगि, ताहु-
न, मोरक, तोमक, रणार्थ,
वेग मे, तोहकरकै ।

तुम्बुवती (प) वेगवती ।

तुम्बु. (म) पाला ।

तुम्बु. तुम्बु. (म) इन्द्र.
सगं पति ।

तुम्बु (ग) चारिहंखा वाचक,
भीया चर्या लोण को,
चारवा ।

तुल्यः (स) मिश्रारम ।

तुला (स) घुंघुड़, लल्लभेद,
तराजू, बराबरी, समान-
ता, ताजुडो ।

तुल्य (स) समान, बराबर ।

तुल्य (न) भूमा, प्रवाहिक,
चोकर, कड़ी, धान, यव
की भूमी, गीतया प्रवनन ।

तुमार तुमार तुलिन (स. प)
पाषा, गीत, धीम, हिम,
नवनन, सरदी, जाड़ ।

दो । मिटिका दिन

मालेय पुनि, घावझाय

निहार । तुलिन तुमार

कसेत दे, सत नाम बरधार ।

तुमारादि (स) दिनांश
पर्वत, दिनांश पहाड़ ।

तुमदिन (स) होठ करनी
को, बराबरी करनी को ।

तुलमी (स) दोनो तुलमी ।

तुलमी (स) मीन, धूप, गुम ।

तुलमी (स) तूलक ।

तुलमी तुलमी (स. दोतरक,
तुलमी तुलमी) निम्न, भाषा ।

तुलमी (स) तूलक ।

तूल (स) रुई, निर्वीज, बाजा-
मेद ।

तुलई (प) गिलाफ, सीरक,
रजाई. गदना, पद्यात् रुई
तूल संयुक्त ।

तुली (स) धूरा. तुल्य ।

तुली (स) शीघ्र, झटपट ।

तुली (स) जलदो ।

तुली (स) प्रसन्नता, संतोष ।

तुली (स) मौन, चुपचाप ।

तुली (स) चारि संख्यावाचक ।

तुल (स) रुई, निर्वीज,
तुल्य, बराबर, तुलक ।

तुलमी (स) मीनर हथ ।

तुली (स) मोल ।

तुलमी (स) तुलमी । [पाटि ।

तुलमी (स) तिर्यक, पक्ष पक्षी

तुल (स) घास, पाँपल, माघा
हा पट, बिधि, सज्जा,

तिनहा, रोहित पट ।

तुलमी (स) मौनी ।

तुलमी (स) दांस ।

तुलमी (स) तिली दास ।

तुलमी (स) तीसरा ।

तुलमी (स) दांस ।

लृत्- (स) प्यास, लोभ ।
 लृत्पराज- (स) ताड़ का छल,
 ताड़छल, गारिअल ।
 लृत्पति- लृत्ति (स) संगुट, भ-
 घाई, पाकांछा, निटति
 लृत्पित- (म) प्यासा, जलपाइक ।
 ते (स) तौन, सब से, वे, तेरा,
 तुमको ।
 तें- (प) से, तू, तुम्ह ।
 तेज- (द) तेज, देश भाषा नि
 बडा घोड़ा तेज है ।
 तेज- (फ) खड्ग, तलवार ।
 तेजः (स) } प्रताप, गर्म, प्राण,
 तेज (फ) } पाका, चोख,
 धामिन छल, पांच, तेजस ।
 तेजन- (स) रामसर्का ।
 तेजनी- (स) चुरनहार ।
 तेजवती- (म) } तेजवत् ।
 तेजवी- (म) }
 तेजस- (स) तेज, प्रकाश, अग्नि
 प्राप, अन्न पछा ।
 तेति (द), ते, अति, वे बहुत ।
 तेज- (म) तेज ।

तेजकार (म) तेजो ।
 तेजपार्णिक (स) सुपेदचन्दन ।
 तेजपार्णिका (म) गठिवन ।
 तोप- (फ) बन्दूकविगास,
 बन्दूकगोसादार ।
 [गीरनी ।
 तेजस्विनी- (म) तेजबल । देवी
 तेजोद्धा (स) तेजवत् ।
 तोप (म) टांपा, तोपना,
 टापना ।
 तेन (स) तिमने, तिमनिये ।
 तोप्य (प) } टाप्यो, भाप्यो ।
 ताप्यो
 तोमर- (स) बाण, बरछा,
 पशुग, छन्दमेद, शफ,
 विजय, सोहबंदा । [सक्षिप ।
 तोय (स) जल, पानी, नीर,
 तोयनिधि- (द) समुद्र ।
 तोयद- (म) भेष, बादल ।
 तोयमधूक्षिका- (स) जेठोमध ।
 तोयोत्सर्गस्तनितमुषरः, (पि-
 लम्) नेह धोर गरन से ।
 तोयन- (म) तोय जल न जल
 जो जल से उत्पन्न हो ।

कमल । दो० पंडरीक
पुष्कर भस्म, अंश यत्न यं
भोज । पंचम सारत ताम
रस, कुवली कंठ मरोज ॥
सतपत्नी श्री सप्तम दम,
पद्म कुमेशयनाम । पंके-
रुह परचिंद गुण, सवि
मलीन तोड़ि वाम ॥ २ ॥

तोरण (स) पुष्प, बन्धनवार
यमस्थानमोभित, हार की
विप्रकारी, बन्धनवार ।

तारावती (स) वेगवाली,
वेगवती, तारावती ।

तोय (स) संतोष, तृप्ति, रस ।

तोषये (स) प्रसन्नता निमित्त,
प्रसन्नता के दिये ।

तोष (स) शव का भेद, जई ।

तोषार (स) शीत राः प्रदनम ।

तोषक (स) दीप करण ।

त्वक्त (स) त्याग हुआ ।

त्वक्तव्य (स) त्यागने के योग्य ।

त्वक्ता (स) त्यागकरि कै,
हाड़ि कै, त्याग हुआ,
होड़ कर ।

त्याग (स) बर्जन, छोड़ना ।

त्याग्य (स) त्याग योग्य ।

त्यज (स) त्याग, विनाग,
बर्जन, छोड़ ।

यथा (स) सत्ता, सीढ़ा गर्भ ।

तप (स) पुरारणा ।

तप (स) सीरा ।

तपरेण (स) तीव्ररेण ।

तथा (स) सूर्य, दिवाकर ।

तय (स) तीन ।

यथे (स) विवेक, ऋक् यजुः,
साम ।

यथीगङ्गा (स) मन्दाकिनी,
भागीरथी, भागवती ।

यथोदय (स) तीर ।

तमरेण (स) सुलस्यन के
भीतर रंध्र के द्वारा सुने
को प्रभा के जो रज बहता
दृष्टि आता है वह तप
रस कहता है ।

वाय (स) रक्षा, पावन, रक्षक,
पावन ।

वसत् (स) डरा हुआ ।

चमिता [म] हृदय, भयमान्,
हृदा, भय युक्त ।

दाता- [म] तारणकर्ता, रक्षक
रक्षाकरनेवाला ।

धातु- [म] रक्षा करो, रक्षा
करे ।

दायली- [म] दायमाण ।

दायमाण- [म] दायमान ।

धातु- [म] } भय, डर, धात,
} मद्दा, कष्ट ।

दायक [म] भयदाता, कष्ट
दाता, भयंकर, हतावनी ।

दाहि- (म) रक्षा करो ।

निगम्यक- (म) निगमितकारी,
निगमग, मित्र ।

त्रिग- त्रिगत- (म) तीमवां,
संख्याविशेष, ३०३ [मिश्र]

त्रिगु- (म) सौंठ, पोषक,

त्रिगुण (म) रोगनीहरिचिकार ।

त्रिगुणक [म] हरिचिकार ।

त्रिगुण्ड [म] हर्ष, हतावनी,

ज्ञान, ।

त्रिगुण- (म) तीन काष्ठ भूत,

भविष्य, वर्तमान, प्रात,
मध्याह्न, रायम् ।

त्रिकोणफल (स) सिंघाड़ा ।

त्रिकाशत्रु (म) भूत, भविष्यत,
वर्तमान, तीनों काष्ठ का
जामने वास्ता ।

त्रिगुणाख्याय विवरण- (म) इ-
न्द्रिय, प्राग, गङ्गासागर ।

त्रिगुण्य (म) इलायची, दात-
चीनी, तेजपात ।

त्रिगुण्य (म) सत्व, रज, तम,
तीनवेर, तीन दिर ।

त्रिगुण- (म) } तीनगुण, ती
त्रिगुणत्- (म) } निगुण, सम्य,

मर्त्य, पाताल, देवगण,
मरगण, असुरगण, ए
तीनों जीव ज्ञादिके बाकी
सोनिगुण रघात् रघा
गोनिमर्त्यवर्ति ।

त्रिदंष्ट्र- (म) कायिक, वाचिक,
मानसिक, तीनदंष्ट्र ।

त्रिगुण- (म) माम निगुणो
रायण को दासो, चदयी
रायणम् लू की वरण
चनुरागिनी ।

विष्णुतक (स) इत्यादि, दानधीनी, तेजपात ।

विष्णुतक [स] त्रिभिः, तीन पांछ-
वासा ।

विष्णुतक [स] त्रिभिः (वि-
मैलात्) महादेव के
गान्धिवे ने छोदी है मि-
थर भिनही ।

विष्णुतक विष्णुतक (स) है-
की ली दङ्गपात, पापाद
रक्त इत्यादि, देही,
की ल्हरादिक रोग, वा
बाग, मोक्ष, लोभादि
इत्यादि, भवतिष्ठ, लो रा-
दङ्ग, लो रदङ्ग, सर्व,
टिही, नृप इत्यादिक
लो रग वरि विष्णु, लो
भवतिष्ठ जानिये ।

विष्णुतकी (स) महादेव तद
भावे मतावर ।

विष्णुतक [स] देवता ।

विष्णुतक [स] देवता की ली
विदेव (स) दङ्गा, विष्ट,
रहेम ।

विदेव [स] स्वस्त,
नृत्त, कारप ।

विधा [स] तीन प्रकार,
तीन विधि, तीन तरह ।

विनयक [द] तीन गवन्-
धारी, गिद, गङ्गर ।

विपत्ता [स] रत्नाट,
रत्नाट, दों । गङ्गाक
पल्लव रत्नाट पर, वेदी
रमो जराय । नती भात
ते [भाग्य मति, राहेर,
मगटी पाय ३१३]

विपत्तक [स] पत्ताक ।

विपत्ती [स] करिषन ।

विष्णुद्विभूति [स] हंसपादी ।

विष्णुद्विभूति [स] कंधि-
नी, सन्दीपिनी, पदमा-
दिनी, लीव की परमात्मा
की मंधि गिरावे ली
कंधिनी । लीव के
पद्म परपद्म की लक्ष्य
प्रदान करे की सन्दीपिनी,
लीव के पद्म पर-
मात्मा परमात्मा की प-

सुहाद करै सो असुहादि
भीविभूति ।

त्रिपुट (स) खेसापी ।

त्रिपुटाः (म) इनायती ।

त्रिपुटो (म) कर्त्ता, ज्ञेय, क्रिया,
३ ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय,
ध्याता, ध्यान, ध्येय,
भोक्ता, भोग, भोक्ष,
इन्द्रो, विषय, देवता,
विधारा ।

त्रिपुण्ड (स) नाम तिलच
तीनरेखा का, तीन
रेखा का तिलच ।

त्रिपुर (स) दैत्यविशेष, तीन
पुर संज्ञा, मग, नाम है
एक दैत्य का, जो राजस
सामस, सात्विक, ए तीन
पुर का काम ।

त्रिपुरारि (स) शिव, महादेव,
कामनागर्भ दो० । सिंधु
कूल क्षण्ड पूत महि,
सावन कियो पुरारि । करि
पूजन विनती करन,
सधन समेत पुरारि ॥१॥

सुद हरिगीत । शोचंठ
सपमध्यन पिनाची मोच
लोहित ईश्वरं । सर्वज्ञ
सर्वव्यापु चंचल मनुष्य
संगीधरं ॥ यद्यपि वि-
रुपाक्षं कपदी धूरि वटि
विशेषरं । शिव चन्द्र मे-
खर चंद्र मूली खंड पाण्ड
महेश्वर ॥१॥ कामारि रंज
कामानु रीता महादेव स-
माधरं । श्रिति कंठ प्रवर्त-
विष कपासी कामदेव दि-
गंबरं ॥ भव भीलकंड
गिरीश चंचल विग्रहा
विश्वंभरं ॥ शिव० ॥२॥
भूतेश्वर चो ईशान श्रिविशिष्ट
सुद त्रिभोवनं । यद्यपि
शंभु पुरारि भगं गजारि
सप विरोचनं ॥ गिरिधर
गजानन सतुल्यं चंद्र
सुरति गंबरं । शिव० ॥३॥
हर व्योम जेग विगाह
दृग द्वात वास चो सुलुंग-
यं । यद्यपि कच इति

गीत छंद हरनाम तिरमट
 रुम भट्ट । छत हरिदि-
 नास निवाम रामानुज
 पुरी पति सुंदर । शिव० ४
 दो० । ज्ञान नाम पर
 मन्द रिपु, समा नाम पर
 नाथ । नाम याग की होत
 है, तासु तनय पट नाथ ।
 १३ पुनः दो० । गंगाधर
 हर मूरधर, कसिधर
 जंकर राग । सर्वेश्वर भव
 जंभु जिय, भीम ज्ञान रिपु
 नाम १२३ विजय तिरंग
 धिर परिर, देम उनापति
 होय । छटिन पिनाकी
 पसुपति, नीलकंठ दिव
 मोर १३ । बानदेव मो
 देव जेहि, राखत दिव मे
 थोहि । ताको तू कपटी
 कहति, कदा कदा रहति
 तोरि १४१

विरली. (म) पैटी, पैट, बदर,
 तीन वंक्ति । [माया ।
 धियसुपनादि. (म) ज्ञान, जीव,
 विद्विज्ञान. (म) श्रीविष्णु राजा
 वकिदार दानप्रदप ज्ञाने
 सति दिगाभकृप होए को
 तीनि कीक तीनि डेग
 बिष बा रूप को बिबि-
 क्तन कहने हैं पर्यात्
 बिराट रूप ।

द्विविध. (च) तीनिप्रकार,
 सात्विकादि तीन विधि,
 मन, ज्ञान, बदन ।

विषयकर्म. [स] सद्धित,
 प्राक्तन्य, क्षियमान, इच्छा,
 दैहिक, अनिच्छा, दैजिक,
 परिच्छा, भवतिक, एक
 पञ्च ।

द्विविधसमीर. [स] गीतक,
 मन्द, सुगन्ध ।

त्रिविधपदा. [स] तीनि
 प्रकार वातना, धन, पुन,
 नारी ।

विषयी. (स) विमुहानी,

विष्णु (स) { सर्वेश्वर, हरि,
 त्रिकली } कहैरा ।

विरली (स) त्रिकाल, त्रिकुट ।

विभंगन, तीनिनदी, गङ्गा,
यमुना, सरस्वती ।

विभण्टो. (स) निचोत ।

विभुवन. (स) तीनसोप ।

विभ्रम. (स) वर्णात्मक ध्वन्या
त्मक, गद्गात्मक ।

विभक्ति. (स) चेत, अचेत,
वगिठाचेत ।

विधा. विध, (स) श्रो, गारी,
तिरिया ।

विधामा. (स) राजि, रात,
निगा, यमुना, गीत, वल्दी ।

विरावि. (स) मङ्गरावि
अर्थात् दगवरा, विवरावि
अर्थात् आर्वात् जन्मा-
दमी मादोमास ।

विरोध (स) गंध ।

विरोध. विरोध (स) अर्थात्
मार्ग, पाताळ, विभ्रम ।

विरोध. (स) सेवा, वीगा,
आला ।

विरोध (स) सीमा, वदी,
ताला ।

विरोध (स) विवाचन ।

विभुत् (स) } विधारा ।
विभुत्

विभुत्. (स) नाम-राजा चन्द्र-

सेन का पुत्र काको पूर्व
नाम विबन्ध दीप दा
तीनिगंका हीने ते वाको
नाम विभुत् भयो एक यो
वगिठ जू का ग्राप, एव
गोवत्या, एक यो वगिठजू
अर्थात् विग्रागिण जू का
आपुस का विद्वत् भाव
वास, ताको राजगद
हीने आलुतक आलाय
मार्गमें चौधे मुख भुक्त
हे, इति श्रीभागवतप्रमाण ।

विशिरा. (स) नाम आदुमव
ले यंधु का निगिनर काति,
तीनमस्तुको । [विभ्रम ।

विगून. (स) गिर का अर्थ

विपु. (स) तीनी में ।

विवादा. (स) आदुमव ।

विवादा (स) अद्वैत ।

वसन्त्या. (स) प्रभात, मध्य,
सांभ ।

वसन् (स) इरै, सौठ, गृह,
तीनों सम भाग ।

विसृगन्धि. (स) इलायची, दार-
चीनी, तेजपात ।

विसृष्टप्राप्तध्व, (स) इच्छित,
सुइच्छित, अनिच्छित ।

विचार. (स) यवाचार, सोहागा,
सज्जीवार ।

वुटि. (स) वषट्हा इलायची ।

वुटी. (स) टूट, दानि. ग्यूनता ।
वून्. वीप्. (स) तरकम, तीर
का खोस ।

वाक्जग. (स) पुष्पाञ्जन, सुपेद,
स्याह, सुरमा ।

वियूप. (स) सौठ, पीपर, मिर्च ।

वैलोचन. (स) सूर्य, शिव ।

वाम्बक, (स) विनयन, शिव ।

त्वक् त्वचा. त्वत्. (स) वस्त्र.

वमरा. विनुका. कास,

कास, हृष का बकला,

वमडा, वांस, राज पी स्मर्य
की इन्दी ।

त्वष्टार (स) वांस ।

त्वष्टारा. (स) वंशकोषण ।

त्वक्सादी. (स) दारचीनी ।

त्वक्कुगन्ध (स) नारंगी ।

त्वक्चीरी (स) वंशकोषण ।

त्वचिसार (स) वांस ।

त्वत्तः (स) तुभ से ।

त्वक्प्राप्तनुरूपम् (वि. मार्गम्)
तेरे वस्त्रनेत्रेपुच्छ है जो ।

त्वद्. (स) हेतुपदवाचक ।

त्वद्भि [स] तुम्हारा चरण ।

त्वङ्महीर ध्वनिपु, (वि. पुष्करपु)

तेरीसी गंभीर है ध्वनि

जिग की ।

त्वक्विस्मयोच्छसितवसुधागन्ध

सम्पर्कपुष्पः (वि. वायुः)

तेरे वस्त्रने से पृथ्वी की

भाप गन्ध से मिलकर जो

सुगन्धित है ।

त्वदीय. (स) एतुम्हारी, एह

तुम्हारा, तेरा ।

त्वम्. (स) जीव, तुम्ह, तु, तुम ।

त्वरयति. (स) दृष्टदी बसाता है ।

चन्द्रमा, रवि, कपोत, चज-
गर, सिंधु, पतङ्ग, कही
पक्षी. मधुकृत कही मधु-
मच्छी, गज मधुवा कही
मधु, व्याधा, हरिण, मोन,
सर्प, पिंगला, कही वेष्टा
कुरर, चर्मक, कुमारी, गर
जत, चणै, नाभि कही कोट,
मिश्रकृत कही भृङ्गो ।

दधि. [स] दही, गीरस ।

दधिक्रिया. [स] दधिपोरी,
मिरनी ।

दधिकृत [स] कौत ।

दधिमण्ड [स] मडा ।

दधित [स] केतकस ।

दधिसुख [स] बानर विमेष ।

दध [स] } दही ।

दध्यः

दध्यो, [स] ध्यान क्रिया ।

दधीव [स] एक ऋषि का
नाम राजा रघुवंशी तप
गुरु का वे चरित्र का साक्षे
तीन मन्त्र बन्धी था एक
दधि धनुष पिनाक धनुष

पञ्च धनुष पाधा गौडीव,
सत्ताधुर के मारण हेतु
जाकी वार्ता विषय के
सत्ताधुरके पंक्ति में द्यात ।

दधुन [स] राक्षस, भेद निमि-
त्तर भेद, पधुर, हागव,
दैत्य । [कंटक ।

दधुजारी. [स] विष्णु । दैत्य,

दन्त [स] दांत, दमन, दह,
दमन ।

दन्तधावन [स] दातोत ।

दन्तधावन [स] पधर ।

दन्तवोज [स] धनारकत ।

दन्तगठ [स] जंगीरी सेमू,
रमली, फली, कौतकस ।

दन्तिन [स] हाथी ।

दन्ती [स] हाथी, गज,

दन्तेन, तामा जड़ी, बड़ी

तामा जड़ी, दो० । बड़ी

दंति दिग्द दिव, पक्षी

बारन व्याल । हम कुम्भी

कुंजर कही, स्तंभरम मुंहास

१११ सिन्धुरने कपिनाग

अथ, गज सुवर्ण मातंग ।

दूत नयंद भूमत खरे.
 रंगित नागा रंग ॥ २ ॥
 दपट. [प] दीह, धावा, सपंट।
 दवकी. [प] घाटी, घात, दाव।
 दधन [द] कुमोस, कुद्व. नूद।
 दधा. [द] दांव, घात, दवकी।
 दम. (स) } दाहर इन्द्रियों
 [फ] की निग्रहण.
 माप, ज्ञान्ति, घड़ी, इन्द्रिय
 निग्रह, इन्द्रियों का रोचना,
 इन्द्रियों का सीतना।
 दमक. [प] चमक, झलक,
 दाह, दमकना।
 दमन. [स] दाह, नाश, नाशन.
 दहन, शासन, पुष्प विधि,
 क्षर्ण।
 दमन [स] } दधना।
 दमनक (स) }
 दमनीय. [स] तोड़नहार,
 नाशक, नाशनयोग्य, तोड़ने
 वाला, दमन के योग्य,
 तोड़ने के योग्य।
 दमन [द] नाश करने वाला।
 ददात् [स] देता है।
 दम्पति. [स] स्त्रीपुरुषद्वन्द्व।

लायापति, मदापात्र, दि,
 स्त्री पुरुष का जोड़ा।
 दमा. [स] पड़हार, घमण्ड,
 पाखण्ड, कपट, हठ, फरेब।
 दम्भी. [म] परझारी, घमण्डी,
 पाखण्डी।
 दया. [स] कृपा, करुणा, दान,
 निहरवाना। दीहा। पनु
 लोभ करुणा कृपा, दृष्ट पनु
 कंपितुल्य। माया दाया
 पनुपहं कीद राग सुद-
 युक्त ॥ १ ॥
 दयक. [द] दिया।
 दयालु. [स] दयावान, रहीम।
 दयावर. [म] दयालु, कृपावन्त।
 दयित. [स] दक्षिण, सज्जन,
 भावता, प्यारा।
 दयिता, [स] प्यारी, स्त्री दक्षिण।
 दर. [स] } भय, हीरामयि,
 [प] भाव, मोल, फीक,
 [फ] शंख, ईषत्, भीतर,
 हार, डर, छिद्र। पनेदार्य में
 सिपा है। दी. दरलु कहत
 कवि सङ्ग की, दर ईषत

[illegible]
$$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{2} m v^2 \right) = \frac{1}{2} m v \frac{dv}{dt}$$
$$f \in L^1(\mathbb{R}^n) \quad \forall \quad g \in \mathcal{D}' \in \mathcal{D}$$

॥ १ ॥

सूचक सू. : कृ. सं. म., सं. मा. स.

[illegible]

541 4 17

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

2014年12月11日

[illegible]

४३ ८५५ १ २ १ १

441 4 2 0 1 2 4 0 0 0 0

मामवर्, श्री गुरु म परि।

बाल्य मृत्यु रोगों के रोग प्रभाव

५६' ३' ५२' ५३'

दाम १ २ ३

दृष्टिः ॥ निर्वैत सूक्तलिपः ।

सुविधि (८) प्रत्यक्ष विभागा ।

अङ्कितः (५) दः मर विमेष ।

॥ (ग) वेद, मीमांसा, दार्शनिक ।

(क) बर्तकाल, एमएल

सायबद्राघा, कान, यम
मान, गहर ।

४ पेक्ष ५ । म ह्य, म यदेवने

५। ३। ४। ५, पाठानुसृत्य, पाठानुसृत्य,

सप्तमः अङ्कः

पाठस्य पुनः मूलाख्यम्

१०५

ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਧਰਮ ਦਾ ਭਾਂਡਾ

4 5 6 7 8 9 10

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ and $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$

$$A = \begin{pmatrix} 1 & 2 & 3 \\ 2 & 3 & 4 \\ 3 & 4 & 5 \end{pmatrix} \quad B = \begin{pmatrix} 1 & 2 & 3 \\ 2 & 3 & 4 \\ 3 & 4 & 5 \end{pmatrix}$$

41 1 7 4 1 4 5 1

2014 11 11 14:44:44

५५५ ॥ १ ॥ ५५५

4 1 2 3 4 5

1. 2. 3. 4. 5.

1998

बिना

॥ ५ ॥

मा: ५८, ५९, ६०

1 (4) 42, 2

1 (9/2015), 1

दर्भ (न) कुमलर, हाग, हाग,
कुहा, एक प्रकार का घास,
मल्ल ।

दर्भु- [द] सोम, कुम ।

दर्भैर- [न] कावापची ।

दर्भगा [न] चमिन्, चसुन्दर ।

दर्भगा- [न] चमिया, चसुन्दरी ।

दर्भि [न] बली, लोह, चमपी ।

दर्भ- [न] फर, दर्भिन,
दर्भ- [न] दोधार ।

दर्भ- [न] निरीयल, नेत
हृदमात्रे । [न] दोधार ।

दर्भोद्य- [न] दर्भोद्य-

दर्भि- [न] देवगहार,
दर्भी- [न] देव, देवनेश्वर ।

दर्भि- [न] पण्य सोम ।

दर्भ- [न] दिव्यता गु ।

दर्भ- [न] दूरक, वत, नदुर-
चल, गान, नदुर, नमान

दर्भीर, लोहा, पना, मेला,
गान, चनेर- [न] निपा

दे । सोम । दर्भ दकिटे

मुदरी दूरक, दूरकदर्भो

गान । दर्भ दर्भो दे दूर

चिर, धरे गान चमि-
राम १ १ १

दर्भ- [प] फटना, कमित
कोई, कूद उठना, दर्भि,
नगीर लोहा । [नामग ।

दर्भ- [न] गान, वातक, नदुर,

दर्भित [न] दिव्यता दृषा ।

दर्भिताचोनामि (न) दि- नि-

दिव्याद्याः) दिव्यता दे

मंदर दृषी नामि जिस ने ।

दर्भ [न] नामिने, नामकरने ।

दर्भनने [न] पीनहारि, चाप-
छात्र, दूरक गान । [दृष्टा ।

दर्भित [प] दृष्टे, चारे, नट,

दर्भित- [न] दान ।

दर्भी [न] दूर, पेश, नदुर ।

दर्भ [न] पाप, दर्भ, दोषादा,
[न] दूरपाणि, दूर लो

पाप ।

दर्भारी [द] छात्र ।

दर्भ- [प] दिव्य, दृष्टि ।

दर्भ- (न) दो ।

दर्भविदित [न] दर्भ विदित ।

दर्भ- [न] पाप, चमिन् ।

दीननाथ (न) दुःखितो का
स्वामी ।

दीप (न) दीपक, चराग ।

दीपनम् (स) जना का मोन ।

दीपनी (न) मीची ।

दीपान्तरावध (स) बोध चीनी ।

दीपिका. (न) चमकीला ।

दीप्त (स) प्रज्वलित, प्रकाशित ।

दीर्घ (न) बड़ा, लम्बा ।

दीर्घवामा. (वि० वि०वामा)

बड़े से पहर मिले ।

दीर्घोष्णाम्. (वि० अ०म्)

लम्बी से आग मिले की ।

दीर्घकाल [न] बड़ाकाय,

दी० । बहुत मानपर जाहि

बहु, आदर प्राप्त विद्याका ।

दीर्घ काल रमि भरति को

बेहि कारण बलि बाज॥१॥

दीप्ता (न) प्रज्वलित, प्रकाशित

करन, मंचोपदेश ।

दीपाना दिगिद (स) दिग्मा

के देवता ।

दीर्घ (न) देखा, दीर्घता ।

दु (न) दुःख, कष्ट, पीडा ।

दुःखात् (न) पचाक, कुसमय,

दुर्भिक्ष ।

दुःख (स) मोय, कष्ट, पीडा,

तत्कालीन । दी० ।, बहुत

बिदुन पचदत तुदा, गहन

मनन पुनि पाहि । दुःख

जनि दे पद जात दे, बात

बेठा चमकाहि ॥ १ ॥

दुःखदुःख (स) दुःख, भारी पीडा ।

दुःखकर (स) दुःखनाथ, मोह,

दायक ।

दुःखविधा (स) आत्मा करि के,

कर्म करि के, पुन करि

के ॥ १ ॥

दुःखरिया [न] दुःख, विमिश्र

दी० बहुत चीन बहुत पुनि,

जब कुकुम पुनि पाहि ।

दुःखरि के जो पद, प्रति,

नित फूले तीहि पाहि ।

दुःख (न) बड़ा, कष्ट, पीडा,

कष्ट । (नम् ।

दुःखहीन (न) नडा, नडा,

दुःखदाय (स) दुःखमिटा ।

दुःखपुत्र [न] दुःख का समुदा

दुःमीसः (स) दुष्ट स्वभाव, बदे
मित्राज । [लाट ।

दुःसहः [स] पसंघ जो सदा न

दुःखः [स] पीर, दुःख, पयस,

मीद वा दुःखनाम दी ।

पंच सङ्गदुःखी उर,

सुग, सीर, मग रानि ।

दुःखः पस्यतः पयः कीर

सुत, दुःखः कुरावत

पान । १ । लग पावन

पावन सुखत, पद पंगुह

सुख देत । इदं कंज अनु

देर तजि, मेटि मेटि रस

जेत । २ । [मीरमी ।

दुःखकपिषा [स] हेनाबरा,

दुःखिषा [स] दुःखिया लक्ष्मी ।

दुःखः (प) माधव, भूसुर ।

दुःखः (स) } प्रकाश, दुःख,

[प] समक ।

दुःखी [प] संसार, जगत् ।

दुःखियो ।

दुःखि (बी) नगारा, धीसा

[द] देव विदेप, पच

दुःपधर्मिणी (स) वनभंडा ।

दुःखी [स] लल सिरिष ।

दुःखि [स] नाम वागर सेना-

पति ।

दुःखः (स) दुःखा भेदा ।

दुःखः [स] कु. कठिन, कुरा,

मून, बीर ।

दुःखः [स-द] क्षिपत, सुखत ।

दुःखि (स) दुःखर कर्म ।

दुःखी [द] क्षिपता, सुखता,

भागना ।

दुःखः [स] } दुष्ट, दुःख पत्त,

} पयाना, पत्तही

म, अंतरहित, पत्तविना,

बद्धत, ठीठ ।

दुःखः [प] पसग क्षिपार ।

दुःखार [स] दुष्टार, पचा-

रिष ।

दुःखारो [स] पत्तार, दुःमीस ।

दुःखार [स] पापी, दुष्ट, पधर्मी

दुराजन । [पापी ।

दुराजन [स] दुःखार दुष्ट,

दुःखार [स] मलु, सी जी मर्हि

दुःख, मत्तापी, सखी, तीरी,

विष्णुकाव्य-वाम
पञ्चांग-मैत्रा

उपस्थित परत। पं. ते. इ. इ. इ.

दुर्गद- (स) रसगग, कठिन.

॥ दुःख, दुःख, दुःख ।
दुःख, दुःख, दुःख ।

दुर्जन । दुष्ट, दुष्टगुण, खोट
पाशमी ।

दुष्प्रियः (स) पाप, दोष ।
दुष्प्रियः (स) पाप, दोष ।

मोक्षदत्तः पुत्रः क
मोक्षदत्तः पुत्रः क

॥ हरिः पश्यति सागरः ॥
॥ धानं हनन्ति ॥ ११॥ ॥

॥ १ ॥

सहानी पद, अथवा
साकी कीति ३२३

दुर्गा (स) कथाद्वय ।
दुर्गा (स) दुर्गा . २५०

पुस्तक (७) संस्कृतिकविद्या ।

दुष्प्रति (१) (म) दुष्प्रति, गंभीर
दुष्प्रति (२) (म) दुष्प्रति, गंभीर

दुष्पुत्रः । दुष्पुत्रः ।
दुष्पुत्रः (म) निषेधः, वस्तरविशेषः ।

दुष्कर्म. (स) दुष्टवर्णनात् ।
दुष्कागा. (स) सपि विमिश्र
दुष्कागा. (स) सपि विमिश्र

॥ एक, कृपि का. नाम ।

दुर्भिक्षः (म) पञ्चाशत्, पञ्चमय
कहत ।

दुर्ग. (स) बीरसे के गध
विमल, निभय रहना ।

दुर्ग (स) निगिषर बी
विगेष । [सवि भूग

दुःखीय (म) दुःख समाप्त

मित्राजि । [बहा दैट]
 दुर्धन (ख) धनराज

ਦੁੱਸਾਂ (੪) ਨੀ ਕਠਿਨ ਸੇ ਮ
ਨੀ, ਕਠਿਨਾਈ ਦੇ ਜਿ

बाला ।
दुर्लभ दार्शनिक । वि. वि.

दृष्टि (४) कठिन, दृष्टि

दुःख दायक ।

दुष्पत्र (स) दोष, कष्ट ।

दुष्ट (स) पापिष्ट पञ्चम-कुक्षर्त्त
अक्षयीयवतारनाम दो० ।

द्वेष्ट अलियुग अंत म.

हरि अक्षयी यवतार ।

क्षंत्युक्त समे शुचं शोधनी

यंत्युक्तं संहरि ॥ १ ॥

अक्षयी अंत । मंथर नगर

विष्णु नृप भृशर तावे

दुष्ट शोध यवतार ।

आयुष्य युक्त यतुवि निगा-

दुष्ट माहम अय्य वावि

अमि पार । दुर्जन अय

अक्षयु यो अक्षय, दुष्ट वेम

अक्षय अक्षय । एकतीस

अक्षय अक्षय योक्षय प

विद्याम विचार ॥ १ ॥

दुष्टरितः (स) वेद विद्वत् अक्षय,

वाय, पापी ।

दुष्टरितः (स) अक्षय, नीच

दुष्टरितः (स) विद्या, वेदविद्वत्

अक्षय, पापवर्त्त ।

दुष्तासः (स) अक्षय, अक्षयमय ।

दुष्कृतः (स) पाप, पापित्व ।

दुष्टनृप (स) अक्षय, नीच ।

दुष्टतर्कः (स) अक्षय, नीच ।

दुष्टः दुष्टः (स) अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

अक्षय, अक्षय, अक्षय, नीच ।

१०० पुद्गी, सङ्कोचः । अथ
 पुद्गीनाः । १। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

द्विपुत्रि- [स]- कासाता,
लगाई।

ਦੁਨੀਆਂ (1) ਪਾਸਕੁਟ, ਕਲਕਤਾ
 ਦਸ (2) ਕਲਕਤਾ, ਪੁਰਖਾਰਾ।
 (3) ਸਭਨੀਆਂ ਕਾਸਿਦ ਕੰ
 ਧਰਮ, ਜਾਨੇ-ਦਾਸ, ਕਲੀਠ

दुर्गा- [अ] दुर्गा, विगुर ।

दूधमुखः [पा] बाबू, बेगम, ...
... ..

दूषण- [स] दीव, निम्न, रा-
 यस विमेष, कसूर, एक
 रायस का नाम ।

दूर, (द) ० निबट मही ।

पूरण (व) वैदुष्येय ।

दूरस्थः (वि० सहस्रं) दूर
है प्यारा जिस का ।

दूरीभूत, (स) दूर गया हुआ.
दूरी } दूर घात L.

दक्षिण- (स) प्राप्ति दीप्तः जिह्वं
: श्री दीप्तः बग्या हो ।

ਦੀ (ਬ) ਪਛਾਣੀ ਮੁਕਾਬਲੇ ਵਿਖੇ ।

इसी : (ग) : इससे इस

100

१३३३ (३) १३३३ १३३३ १३३३

५४. ५५. (५) ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

५५. (५) 'देव' 'देवता' 'देव'।

राजा ।

୧. ଚନ୍ଦ୍ର (ତ) ଶିଳା, ଶିଳା, ଶିଳା,
ଶିଳା, ଶିଳା, ଶିଳା

सिद्धि मन्त्रः ।

दृक्कृतः [म] आरियने । ११६०

दृग् (म) देखने 'दि' शीघ्र,

- मन्दर, सुष्ठु, दृग्भीष । ११६१

दृग् (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११६२

दृग् (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११६३

। ११६४, देखने 'दि' शीघ्र, - ११६५

दृग्कृतः (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११६६

दृग्मत्ति (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११६७

मत्ति निज की । ११६८

दृग्मा (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११६९

मिमांसा (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११७०

दृष्टि, दृष्टिपातः (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११७१

यन, योच, योच, योच, योच, - ११७२

। निमांसा, निमांसा, - ११७३

दृष्टीपातः (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११७४

। निमांसा, निमांसा, - ११७५

दृष्टी (म) देखने 'दि' शीघ्र, - ११७६

देखने 'दि' शीघ्र, - ११७७

देखने 'दि' शीघ्र, - ११७८

राजा का जवाब, - ११७९

। ११८०, देखने 'दि' शीघ्र, - ११८१

। ११८२, देखने 'दि' शीघ्र, - ११८३

देखने 'दि' शीघ्र, - ११८४

अमर निजरे 'विजरे', - ११८५

। ११८६, देखने 'दि' शीघ्र, - ११८७

। ११८८, देखने 'दि' शीघ्र, - ११८९

। ११९०, देखने 'दि' शीघ्र, - ११९१

। ११९२, देखने 'दि' शीघ्र, - ११९३

। ११९४, देखने 'दि' शीघ्र, - ११९५

। ११९६, देखने 'दि' शीघ्र, - ११९७

। ११९८, देखने 'दि' शीघ्र, - ११९९

। १२००, देखने 'दि' शीघ्र, - १२०१

। १२०२, देखने 'दि' शीघ्र, - १२०३

। १२०४, देखने 'दि' शीघ्र, - १२०५

। १२०६, देखने 'दि' शीघ्र, - १२०७

। १२०८, देखने 'दि' शीघ्र, - १२०९

। १२१०, देखने 'दि' शीघ्र, - १२११

। १२१२, देखने 'दि' शीघ्र, - १२१३

। १२१४, देखने 'दि' शीघ्र, - १२१५

। १२१६, देखने 'दि' शीघ्र, - १२१७

। १२१८, देखने 'दि' शीघ्र, - १२१९

। १२२०, देखने 'दि' शीघ्र, - १२२१

। १२२२, देखने 'दि' शीघ्र, - १२२३

। १२२४, देखने 'दि' शीघ्र, - १२२५

। १२२६, देखने 'दि' शीघ्र, - १२२७

। १२२८, देखने 'दि' शीघ्र, - १२२९

। १२३०, देखने 'दि' शीघ्र, - १२३१

। १२३२, देखने 'दि' शीघ्र, - १२३३

देवद्वि [७] गारुड, देवद्वि,
असित, व्यास, देवद्वि
चत्वारोऽप्यतः ।

देवद्वि [८] पूज्य देवद्वि ।

देवद्वि [९] रौरिसदृशः ।

देवता [१०] धृतरा, देव ।

देवता [११] इन्द्रासः ।

देवतान्दि [१२] गदासिन्धु,
इसके द्वाभ्यां सतावर
देव देते हैं ।

देवद्वि [१३] देवद्वि ।

देवद्वि [१४] वन्द्यः ।

देवद्वि [१५] दोनो तुमसी ।

देवद्वि [१६] धृता १ गुण्ठा २ ।

देवनिर्मिता [१७] गुरिषः ।

देवी [१८] धूम्रवर्णा १ पूज्य
रत्ना २ लज्जा ३ ।

देवद्वि [१९] सवंग, सवङ्ग
सता, वत्स ।

देवद्वि [२०] देवद्वि ।

देवद्वि [२१] देवद्वि, नृद्वि ।

दो० । हरिद्विग नन्दार

पुनि, पारमात सतान ।

हस्तद्वि पुन देवद्वि, पञ्चन

नाम वषाणः १ ।

देवतापञ्चकर्मद्वि [२२] यवप
का दिमा, स्वषा का पवन,
नयन का रवि, निष्ठाका ह-
रद, नासिका का धर्मिणी
कुमार १५५ इन्द्रो नाम ।

दो० । गोहरपक खंकरन
गुन, इन्द्रो ह्यो पस पाय ।
त्यो राधा गोधव मिले,
परम प्रेम दरखाय १ ।

देशान्दि (२) पञ्च, नृख,
पदमक ।

देश (३) मुक्त । [मुक्त ।

देशान्तर (४) अन्य देश गौर

देशिक [५] सपदेश कर्तागुरु ।

देवतापञ्चकर्मद्वि (६) निष्ठा १
निष्ठा २ गदिम ३ सूर्ज ४

दुर्गा ५ दाहि सगो द्वाप
यनी हस्त भदो है पञ्चवटी

स्यात है ।

देवतापञ्चकर्मद्वि (७)

मुख का धर्मिणी राय का

इन्द्र पग का यक्षविष्णु

लिंग का दक्ष प्रजा पति,

गुह्य का समराज ॥ ५ ॥

देवदूत (म) देवताकादियापुत्रा ।

देवदूत (म) नाम के एक तल

का । [यी ।

देवदूत (म) गंगा गङ्गा, सुव

देवदूत (म) देव के आगे

जिस पदाङ्ग के नाम में

अर्थात् देवगिरिम् ।

देवदूत (म) कर्मवृत्त ।

देवदूत (म) नाम के देव

अमित, अमित ॥ देवदूत

अमित ॥ देवदूत ॥ ५ ॥

देवदूत (म) नाम गङ्गा, सुव

देवता का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) नाम गङ्गा, सुव

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

देवदूत (म) देवदूत, (म) गङ्गा,

देवदूत, गङ्गा का आना ।

दाघदागोऽभीरि रुद्रानि
 रुद्राणि चामुंठ कान्तानी
 ना रणा पी रुद्रानी ॥१॥
 मंदटा नारसिंही वराही
 निषः खंडि दक्षी मदा
 गुल पागी ॥ योग माया
 चवर्ण रक्षा चार्चनी श्रीमहा
 देव्युपी भी वराही ॥ वेम
 पुर्गा ए सधीणि ज्वाला-
 गुप्ती दिग्धवामी मदा-
 नन्द दानी ॥ मान पंचाम
 ममाना वरु भुजगा सात
 वराग पी दूर्ध्व दानी ॥२॥

देव. (म) रुद्रक हली का
 मंद, भीक, निष, क्षाज ।

देव. वाता (दिग्वा दे देवता ।
 दिग्धव)

देव. (म) वाता, मरीच, विष्णु,
 वायु । [वायव ।

देवि. (म) दीर्घदे, मनिष
 निषिण (म) भीह भव, वहु-
 दावक भीह मन्त्र ।

देवि. (म) दीर्घ वाता, मरीच
 देवि. (म) दीर्घ भी माय की

हेत (म) भीह, मं, तू ।

देव. (म) ईमान, भाव ।

देव. (म) चवर्णात् पचा-
 नध, दक्षदावन् ।

दीर्घ. (म) क्षेपता ।

देव. (म) राजस चक्षुर । टी-
 माय चक्षुर देव्युनि, चक्षुर
 विष्णु चक्षुर चक्षुर । माया
 दानी रैत दिग्, दीर्घतक्षुर
 चक्षुर ॥ १ ॥

देव. (म) पचांगी ।

देव. (म) दक्ष, दारिद्र्य दीर्घ,
 दीर्घदीर्घ, दीर्घता, मरी-
 जता । [कदाता ।

देवि. (म) मान पादि मं

देवि. (म) क्षुर वादि ।

देव. (म) भीह, । दिग्धव,
 भुजगा ।

दीर्घ. (म) चक्षुर, दीर्घ ।

दीर्घ. (म) दक्ष, दक्षिण चक्षुर
 वायु, वायु दीर्घादि । दुरादे
 दीर्घ । चक्षुर दक्ष दीर्घ च-
 क्षुर, चक्षुर दीर्घ दीर्घ ।
 दक्षिण दीर्घ दीर्घ चक्षुर,

की न गापिये तीय ॥ १ ॥
 दोषकः [स] निन्दक, अपराधी ।
 दोषद [स] खेद, लाजसा
 गभिणी की, गर्भवती स्त्री
 छे मन की चाह ।

द्योतिन् [स] चमकनेवाला ।
 द्युतिः (स) प्रकाश, शोभन,
 शोभा, प्रभा, कांति ।

द्युतः (स) लूना, पाशा खेल,
 धूर्त, प्राणरहित, पाश पात
 से दाग लगाकर खेलना ।

द्रवतः (स) पघलत, घमटा
 छोड़त ।

द्रवन्तीः [स] बहातामाजड़ी ।

द्रविङ्गो [स] चवघडा इलायची ।

द्रविणः [स] द्रव्य, कीड़ी ।

द्रवो द्रवना [प] पघली, छपा
 करो वा कर टेघराना ।

द्रव्यः [स] कीड़ी, घन, वस्तु
 सार, दौलत । समय वा
 पंडित वा द्रव्य नामः ॥

द्रव्यजीलावती— प्रभु
 तिष्ठक इतु गुह्य करि वि-
 चार चौकर वे देखा सगे

नन्द ॥ परमिष्ठ नामै सा
 सज्ज काश बैठे सिंहासन
 रामचन्द्र । कृत धीर कृति
 शन विदुष्य दूर पाचार्य रि
 लक्षण बुद्धिमान ॥ विद्वान्
 मनीषो लुब्ध वर्षे अभिरूप
 सुधी भी संख्यमान ॥ १ ॥
 दोषज्ञ विवक्षित दूःदर्शि
 कधि कोविद् पंडित मोक्ष
 दर्शि ॥ सुध वारसी प्रज्ञ
 पवीश नाम मन पावकीन
 अभिप्रेत दर्शि ॥ नृप हृद
 सपाय न विशा पद्य वस्तुद्वय
 दत्तिन धन वस्तु राशि । व-
 तिग्य कन लोलावती वन्द
 रघुनाथ कीर्ति कृत हरि
 विनाम ॥ २ ॥ [डारो ।

द्रव्याधीन (स) कुदिर दूर भं-

द्रव्यो [स] धनीक, कीड़ीवाला ।

द्रव्यसि (स) देखेगा तू ।

द्राविडः [स] लाला मोन, १

कदूर । २ ॥

द्राविडिमन् [स] देवदाद वृत्त ।

टाचा [स] दास, कुदारा,

दंगूर, गोमानी जुनझा ।

दुतः (स) तुम्हा, विघना ह्या

दुदः (स) मोम, जलदी, वेग ।

द्रवीः (स) कृपा करो वा कर,

द्रवता, टेवरता । (रज्जु)

दुमः (स) दध, पेह, रुख तब, द,

दुरिणः (स) मज्जा, विरति ।

द्रीरः (स) परिभाष विधिप,

दोप } गूना ।
दोरपुष्पोः (स) }

द्रोपकाटः (स) वडा कोश,

दांतकाः, टोः । द्रोप

काः कावस करट, पाज

घोष बलभाग । छांच

पटोपिक पिता, एष दृग

रति प्रभु त्याग ॥ १॥

सौता लक्ष्मण सहित वन,

विपरत करुणः कन्द ।

पक्षि पगस्तादि, क्षपिः

मयो द्यं पानद् ॥ २॥

द्रोहीः (स) निम्न, हेरी ।

द्रोहः (स) दैर, हेम, त्याग,

विरोध, पण्डित, चिंतन ।

द्रीहीः (स) ऐधी, विरोधी, वैरी ।

दुन्दः (स) मुख दुःख सपाय

दुग्ग, जोडा जो पुरुष का

जोडा, जस बर ह्यागे न

भया बर गदि होयगी,

राग होयादि ।

दुदः (स) दुग्ग, जोडा ।

हादमः (स) बारह १२ संख्या

विधिप ।

हादगमः (स) बारह महीना

हंदहमी । एषरायनक

नारग मडा ॥ मार्गशीर्ष

दध लात न कडा ॥ मुखि

बर चरित धीर हरि

हरे ॥ दृग प्रवाह जल सा-

गर भरे ॥ १॥ पोष महस्त्र

तैय पुनि गयो ॥ हरि को

ना पानिगन भयो ॥ दुख-

दा भई सुषट् सर्वरी ॥

पान-पवाधिगनत पन

घरी ॥ २॥ नाच तपा पागन

एष कियो ॥ पाय वसंत

संदेशा दियो ॥ चंदकादि

देवत पीरई ॥ कांत विदाम

कांति हरि कर्तुं ॥ ३३ ॥ तपस
 काङ्क्षुं निज काङ्क्षुं न करी
 संस चेति पट राभी करी ॥
 तासी खेकते खेरंग मरी ॥
 योग भग्न हमरे कर भरी ॥
 चैन येविल मधुवन फली ॥
 फले फले मङ्गलवि भली ॥
 हरि विन तागद काङ्क्षुं
 मरी ॥ त्रिविधि समीरकास
 जिम फली ॥ ५ ॥ माधव
 राधविगायदु मली ॥ नि
 यम जेता तप गारम चली ॥
 लपेव पाय कृपा करि घली ॥
 गोपिन बात मये चरं वली ॥
 ६ ॥ जेठ मुक्त तप गारम
 वली ॥ विरहिमं वधु पनमज
 दरी ॥ कव देधे मूर्ति मन
 वली ॥ चपर जेणु यमना
 लक मली ॥ ७ ॥ मुनि पाप
 दृ विबल मधुवन ॥ गजैन
 मरी घनावन वली ॥ हरि
 हरि दमक दामिने करे ॥
 हरि विभु पाप भीर मर्हि
 धरे ॥ च वधु च वधु पाप

कन भा ॥ सोभित विविम
 धरणि रुद्र प्रभा ॥ तड़ित
 विनास मङ्गल मभ घटा ॥
 १ ॥ ८ ॥ नम समाद्वपद
 भा ॥ ९ ॥ १० ॥ प्रीट पदद
 भा ॥ ११ ॥ १२ ॥ नम
 मलय त्यागी मजधरा ॥
 वसेनात कुवका के घरा ॥
 पाग पुन दव पागिन म
 गो ॥ तनवासा दुख भीवन
 जमी ॥ बीर राग हरिदे
 भुज मरी ॥ मगिरत हगरे
 पगारे चले ॥ १३ ॥ नम
 कारतिकिच्छकांति मरी ॥
 पादुम वदुल विरद दुख
 मरी ॥ खाति विन्दु मरी
 पाविल मिना ॥ १४ ॥
 छंद पंचदम कला ॥ १५ ॥
 संरठा ॥ जयव विन्दुवन
 प्याम, विरहावन कारत
 मरी ॥ पुनत निज मज
 वली ॥ मोहम तिथि के
 देव मरी ॥ १६ ॥

हापर [स] तीसरा दुग, संदेह
संगत, सतमुग, से तीसरा
दुग ।

हार, स, देहरी, कपाटस्थान,
तयाट, दायाड, गरी-
नड ।

हारदार [न] भुंमड ।

हारदा [स] तीर्थ स्नानविधि

हारपाल (स) देवदीवान्, पौ

रिया ॥ दो० ॥ हास्य हास्य

त दर्शना, प्रतिहार प्रति-

हार । हारपाल नेवत म-

दा रामचंद्र दृष्ट हार ॥ १ ॥

हि. [न] दोभंखावायक ।

द्विध- [स] पद्मी, दन्त, पाण्डव,

ब्राह्मण, चन्द्रिय, देश,

संहज । दो० ॥ द्विधपंढी

को कथत रति, द्विध

कहिद्रे पृथि दत्त । तीन

यवन द्विध ते परी जव

जाने भगवै ॥ १ ॥

द्विधमिदा [स] सोमनता ।

द्विधराज [स] भद्रमा,

द्विधराज [स] गरी, येठ ब्राह्मण

दो० । इंदु कलानिधि

मुधानिधि सेवानिक ससि

संग । इंदुज पमी-

कर कपाकर, विधु इमि

कहियत सोम ॥ १ ॥ विधि

मधंसमभ्रांस पुनि, पौद-

धीम गिसिनाय । रज-

नीकर निमिकर ससी,

कुमुदबंधु रज नाय ॥

दुधराणी समधर सदधि-

तनय सनांक सुनांक ।

नष्टतेस कलंब धर, तुष

मुख छपमा रांक ॥ २ ॥

द्विहुरि चंद्रिका चंद्रे राजि,

रदि कौं शारो दोय ।

मं पवसोदत नाम तोदि,

कहु दसिद्वारन सोय ॥ ४ ॥

द्विधा- [स] नागवणी, ब्राह्मणी,

रेनुका ।

द्विधाति [स] द्विधातितीन,

विप्र, चधी, वैश्य, तीनों

दरी, संहज, पची ।

द्वितीय (स) दुका, दूसरा ।

द्विधा [स] दोनकार, दोभांति ।

गान दो० चनि धमं गय
 कइत कवि, पवन धनं गय
 दादि। अर्जुन यदुरि धनं
 दो, कण्ठ सारथी गादि॥
 धनदः (स) कुबेर, मुर भंडारी,
 धन दाता। दो०। पुन्य लन-
 शर धनद यद, पति चक्ष-
 सावलि होय। दुष्टापति
 तं वरसखा, राज राज
 पुनि सोय। १०। गरदादग
 कियर अभिप, दार्याधीम
 कुबेर हरि पद पंकज पर-
 तिहै, पावत नादि न
 देर। २॥ पुनः कुंडलिया।
 धनदा सो गुरदादनेदिनि
 विरु रिसेम। गुह्यहेम
 भीनस्तेव, पुनि एक विंग
 यसेम। एक विंग यसेम
 अनुप धनी-किन्नर पति
 राज राज जरसखा पुन्य
 लन पति चक्षपापति॥ धी
 कुबेर वैद्यवप नाम मोडम
 मुभ वरदा। दोहा रोना
 निदि छंद कुंडलिया धन

दा। १॥ [पाखंडी।
 धनधक, (द) दुदुनी वासा,
 धनधारी (स) लछी, सिन्धु
 मुता, कमला।
 धनपति, धनवाग्, धनिक,
 धनी (स) कुबेर, धनराज
 लाको धन होवै, धनधा-
 री, धन का जानी पचाय
 कुबेर लागी, दीकत मंद।
 धनहर (स) गण्डोत्तर।
 धनुः छण्ड (स) धनुष का एक
 भाग।
 धनुषट [स] विरटंकी फल।
 धनुष [स] धानिग हथ।
 धनु, धनुष, [स] सारङ्ग विष्णु
 का, मोडीय अर्जुन का,
 पिनाच शिव का, ए तीत
 धनुष राजा दधीवि के
 पंजरा का बना था। २॥
 कमान, चाप दो० बागा-
 कम कोदण्ड पुनि, चाप
 धनुष धनु धनं। दार्मुक
 धनुष हर दिये, रामचन्द्र
 मग मती १। ३

रामो को छाड़ि अगत
 अलग डिगो भी जाय बैठ
 बल्लो रानी भव ब्रह्मापरा
 भी बिना राजा के रहें
 जायो कोई काम बिसे कुला
 बड़ीरानी कामासुर दीय
 भीम राजा भी मीमिं मेभी
 राजा जे अगनी भय की
 धाता कहलाय भेला
 धरात् राजा पुन कीने क
 काष्टा भी बिना पुन
 अष्टताप्यता के कहलाय
 भेभी तद राजा जे पाप
 देवता के नाम का पाप
 मन्त्र मन्त्र धर्म, वायु, इन्द्र
 अग्नि, कुमार, भी अर
 दीवी को पाप पापी दे-
 वता के नाम निष्ठ भक्ति
 दिवो भी दावे जाय बिने
 देवताओं का पाप के पुन
 दगा होइली। बाहो प्रका
 कुली जे पूरे तोनि भय
 देव धर्म दृष्टि वायु तोम
 री इन्द्रदेवता की विधिपु

धर्म जेपने बिंदी मा तीनी
 देवता पाय मंत्राधीन होय
 अगने जगद्विष्ट करि तोनि
 पुन दियो धर्म पुन मां
 यद्विष्टि तासुन भीम इन्द्रो
 अर्जुन ए तोनि पुन महा-
 बली गतापी तेजसो प्रगट
 जायमान मायो कोई काम
 भीम राजा पण्डु भी तोनि
 पुन महाप्रतापी बलीपाव
 मालसुनि पाधवहर
 दिन बकिो रहें मनो
 बिदा ते ब्रह्मापरा कुली
 के पाप पावन मायो कुली
 रामो अति दुष्टि होय
 वा को पुनन करि गंग
 नार व भामनी भी तदर
 मई परम्परा राजा सुवर्णनी
 यि कथिना जामि मादरो
 कथुरानी भी वावे ल्याति
 ते मुख का रथ होके जाता
 या वा को अठि के बल
 पर भिन्नवाने मन्त्र होय के
 राजा के निवहार कावतक

धारमिक (घ) तुरंत का दूहा

१. दूध ठंडा किया ।

धारमिका, [म] धनराश को

सम्मान । [मृध गम] ।

धारमिका (ध) तुरंत का दूहा

धान (म) दोड़, छप बिसेस ।

धारम (म) डोराहालन, दूत

भागन किया, दरबार ।

धारमिगुहा (म) गठियन ।

धेय (म) विधाता, मन्त्र ।

धावनी (म) दौड़नी ।

धावा (घ) दोड़, बहाई, वि

सुवासा, पानी ।

धारयो (म) दवाई के ।

धिम, धिम, (म) धिक्कार, फिर

निन्द, कोसक मन्द, तिर-

सकार मृगमृगमृग, आग

त, मन्त्रमन्त्र ।

धिका-वि मन्त्रा, मृगो, धो.

वृद्धमन्त्र, धेय धारमका

धियवा (म) धुपकालि, मिथ

विश्व ।

धे-धेय, (म) धुप, आन,

(घ) धेय, धुप.

धीर (म) धीर्य, संतोष, म-

धीर, बुद्धिमत्, धैर्य

धारमकाया ।

धीरता, [म] धर्मोत्तम ।

धीरम् (म) धैर्य ।

धीर (घ) जाति मनुष्य

धीरवी (म) सती, मित्रवी ।

धियवा (म) बुद्धि, ज्ञान, मीरा ।

धुन (घ) धो, ध्याय, धन

[म] मन्द ।

धुवा, धुपा (म) धुप, धुप,

माक, मरुप, मुद्रा मरुप

जेसे धो । धुपा देवि धा-

दुपत केरा । म. धुपतवा

रागन मेरा । धुपात धुपात

यह मन्त्र धुपात धुपात

के धुपात धुपात धुपात

धुपात के धुपात धुपात

धुपात धुपात धुपात

धुपात धुपात धुपात

धुपात धुपात धुपात

धुपात धुपात धुपात

धुपात धुपात धुपात

धुपात धुपात धुपात

पदं सो नदि निकले ता-
 हो अनुमान होरे उपरते
 साय के पदं करेना यदा
 जाया नमं होत मयागा ।
 संगत होहि तुम्हरे अनु-
 रागा । कापि कर के,
 धुनना, कापना, धुन कर
 के, काप करके । दो० । नाद
 निरुद्ध धुनि रव सबद,
 स्वन सुषोष हत राव ।
 यह वंशो न कहत पिय, हे
 मानेसरि पाव ॥ १ ॥

धुनी- (म) नदी, सरिता ।
 धुनी- (प) कन्यारेष ।
 धुनी- (म) हिलाता हुआ ।
 धुनी- [न] धुनी बाल कोड़ा ।
 धुनकृत- [म] निघ्न, हादस ।
 धुनकेत- [न] निघ्नकर दिग्गज
 केनापति, पत्नि, पंक्त
 कतारा ।

धुन- [न] बोझा, सुख ।
 धुति-केत- (न) दूती, दूती ।
 धुनना- [म] बोझा, धरपहार,
 धर हट ।

धुनी- [म] गाड़ी का चक्का का
 दण्ड लाके वस्तु चक्का धु-
 मत है ।

धुनीन- [द] बोझा धरैवा,
 धुनीप- [म] बोझा धरपहार, बो-
 झा धरपहार, ।

धुसरि- [न] रज, गह, रेश ।
 धुत- (न) हिलाया हुआ ।
 धुति- [न] कनि, कपट, करि
 ठग करके, धुतिता करके
 धुतना, दहना ।

धुतिना- [प] ठगना, दहना,
 धुती ध्यागन् [वि धाम] दि-
 नाया है दगीया निरुद्धा ।

धुने- (न) सुगन्धित हुआ ।
 धुने- [म] धुनी, रीटा, बन्दिह
 धुनी, भाव ।

धुनकेत- धुनकेत [न] पत्नि,
 पाग, पंक्तकतारा ।

धुनसी- [न] धुनीक नदी का ।
 धुनित- [म] रज निघ्न ।

धुन- (म) दो० धुव निरुद्ध धुव
 कीमदुनि, धुन धुव पद धुन
 ताना । धुन तारी तिदि पटक,

गुन, गुन गोविन्द, गोपाल ।

धूरी-धूरि (म) धूम । - दी० ।

धूर धूमरी खिड़ रज,

पाँसु, संघरा मंद । जा पद

पंकज रत्न की, बाँझा

सकल समंद ॥१॥

धूर्त [म] नटखट, गठ, ठग

सचचा, फरीबी, जुहारी ।

धूम, [स] धूवाँ, धूकर, रौला ।

धूर [म] धूलि, रज, रेणु ।

धूम केतु- [स] पत्ति, धूलनतारा

धूमि- [स] } रज, खाक ।

धूलि

धूट (म) धविनीत-गगलम निर्मल

गिर्य, ठोठ ।

धूसर, [स] रज विगैय ।

धूँक, } [म] धूकार, धतिनीष

धूम }

धृत [म] धारण किया, धारित

बपड़ा दुपा ।

धृति [म] धोरज, गालि,

धैर्य-धारणा- धृतिवता,

धृति, धीरता ।

धेनु [स] गो दधारो, दुग्धवतो,

गेया, धेनु गाय घोड़े दिनों को

विधानी-गज-पादि ।

धेनुदुग्ध [म] गुरुभो रघोडे

दिनों को-विधानी गज

पादि का दुध ।

धेनु धूमि, [म] गाधूमी बेला ।

धेनुमेती- धेनुमति [स] गो

गती नदी, ।

धैर्य [स] प्रतिष्ठा, पावन,

धैर्यमान, धृति धीरता,

धीरज, कठोरता ।

धीरी- (व) मुख्यवैत, पधीरी

मुख्यवरद ।

धीत, (म) स्वेत, रज्जव ।

धीताप-क्रम (वि० मयाम्)

स्वेत है कोई जिस से ।

धीला (म) शुक्त, रज्जव, ।

ध्याता (म) ध्यानी, ध्यानव ।

धी (द) कि, याचि, ।

ध्यास्यति (स) ध्यान करेगे,

मन में लावेंगे ।

धूर्त । दो० ध्यानी जिन्हा

कुटिल कत, बड़ो

कइरा लकीजु । कपटी

कायर कुवर की, धृतिव

कइति लकीजु ॥१॥

ध्रुव, ध्रुव (म), निराल, तले,
 'हर, गङ्गा, ऐक्य भक्त का
 नाम। उत्तर देस, मान
 तारा जाको कथा है, भक्त
 विशेष भरमद हृद्य।

राजा उत्तानपाद बड़े पुत्र
 राजा स्यामभु भक्त के धे
 बाकी छिन्नी बही सुनुती
 लखे पुत्र ध्रुव लू. पीर
 छोटी स्त्री सुरची जाके
 पुत्र उत्तमनाम, एक दिनों
 रागी सुरची लघु स्त्री के
 पुत्र उत्तमे ने राजा उत्तान-
 पाद पिता के लंघा
 पर बैठा था ध्रुव लू भी
 पाय देखि कै बा भी
 दोसरी लंघा पर राज के
 पिता अपनी भी जानि
 लाय बैठो, ता काल मी
 रागी सुरची लघु स्त्री
 देखि के राजा को कहि
 काहे कि बाहे पूज्य हित
 राजा अधिक देखी धे ध्रुव
 लू को लंघा पर ही पिता।

के उत्तरवाय गीषी दिगी
 ध्रुव लू ने दाही खानि ते
 पानि बर्ष की बयस्या मी
 माता पिता के पद्यागत
 रात्रि की छठि करि वन
 की तपस्या हेतु सिपारे-
 मार्ग मी भक्त श्री नारद लू
 ते भेट भयो नारद लू ने
 पुर्वी बहंत फिरे को समु-
 भाये पयात् नहि फिरे
 सत्ता मन्त्र उपदेश दियो-
 बा मन्त्र, उपदेश ते समुना-
 घाटे मी जाके ही भास
 भगवान् के नाम पर क-
 ठिन घोर तपस्या चरमो
 कियो कि बैकुण्ठ दि लो-
 काको क बिभुवन कम्पाग
 ही गयो ता उपरान्त श्री
 विष्णु चतुर्भुज पाय के
 दर्शन दे कै वर दियो कि
 २६००० वर्षीय हजार वर्ष
 पृथ्वी को चटल राज करि
 पयात् धाम हमारी पावनि
 पीर एक पंचजन्य शंख

दियो आके कृषि संता मता
 यी चारो वेद घट्यायादि
 चोदरा १४ विद्या के प
 पित्त होय मूल ते बाणास
 भयो तद धृत जू मे चपमो
 ५ आसनी ते परिपूर्ण होय
 ६ मसर चाके २६००० मङ्ग-
 रायें राजा करि देवत दा-
 जाके भूवतारा भयो सब
 देवता सूर्यादिने येस भया
 कि चाचाग मो सूर्यादि
 तारागण ज्योमान रहत
 है, यन वह भूव तारा
 विमान पदम पाय नजे
 मान्महि दात है मही
 के मही सिर चपल रहत
 है १ इति भूव चरित्र श्री
 भागवत स्कन्ध ८० अध्या-
 य प्रमाण ।

ध्रुवमन्त्री (स) मङ्गा मन्त्री,
 ध्रुवमन्त्री ।

मङ्गा (स) योधा विमर्श, ध्रुव मन्त्री
 ध्रुव (स) मन्त्री ध्रुव मन्त्री
 विमर्श पुनि, विमर्श ध्रुव

केत। कौमक्षिग रघुनाथ, दे,
 सोमित मिशर निवेत ।।
 ध्रुव (स) चय, कीप, नाग,
 दाति ।

ध्रुव (स) चय। की 'संवा
 बास फहरात, मताका ।
 ध्रुवमन्त्री (स) मेला, दल; चटक
 ध्रुव (स) भगदेत, ध्रुवमन्त्री ।
 ध्रुव (स) मन्द, सार, चोच
 चाचाग ।

ध्रुव (स) चित्तत, विचार,
 पञ्च तत्त्व मल जगाना ।
 ध्रुव (स) प्रतिशब्द करत
 दया ।

ध्रुव (स) मन्द, चाचाग ।
 ध्रुव (स) मन्द, यमान ।
 ध्रुव (स) चय, चय, चय,
 चय ।

न

मङ्गा (स) नाचने है ।
 मङ्गा (स) मन्त्री, नाच नीन ।
 मङ्गा (स) मङ्गा, मङ्गा, मङ्गा ।
 मङ्गा (स) मङ्गा, मङ्गा, मङ्गा

४ या आधीनी के लगी-
न एत नाक रजकना,
नाक विमला ।

नक्षत्राः सु० विह्विता, सुग-
ताहा, विह्विताहा, मोंधी,
विमला दूरा आभास ही,
विमलेवाहा ।

नक्षत्रीरघूटना नक्षत्रीरवध-
ना सु० नाक से कोह
रहना, नाक से हथिर
रहना, नक्षत्रीर नाक
को मस पदमा रग [ना
सिका, नाक पीर मिरा,
नम से यह मस रहता है]

नक्षत्रीरकना सु० नाक नखा
ना, दिव्य करना, वैराग
करना । नक्षत्री (नाक)
रहनी पदमा लोहे की
रनी हरे एव कोक ली
छंट के नाक में लाली
जाती है पीर सस में ली
ही लालकर छंट को
बसाते है ।

नक्षत्रीरगना सु० पदमा हीना,

नक्षत्रीरनी, नक्षत्रीर
रंगना, नक्षत्रीर रजना,
दूरा रजना, लोचनरजना,
नक्षत्रीर रीना ।

नक्षत्रीर (नक्षत्रीर, विमली, विह्विता ।

नक्षत्रीर नक्षत्रीर (स) लगी आदि
पदमा रजना बाजू के पदमा
धातु पदमा लगी रहता है ।

नक्षत्रीर (स) लगी ।

नक्षत्रीर विह्विता [दूरा] पदमा ।

नक्षत्रीर (स) लगीर, लक्ष्मीर,
रजना, लोचन, लक्ष्मीर, प-
दमा, नाक एव पदमा
का लक्ष्मीर ।

नक्षत्रीर (स) लक्ष्मीर र रजना या
मस, लोचन लक्ष्मीर ।

नक्षत्रीर रजनी (स) लक्ष्मीर रजना
नक्षत्रीर (स) लक्ष्मीर ।

नक्षत्रीर [स] लक्ष्मीर, पदमा ।

नक्षत्रीर [स] लक्ष्मीर, लोचन रजना
नक्षत्रीर का २० है लक्ष्मी
नक्षत्रीर । लक्ष्मी पुनर्भव
नक्षत्रीर लक्ष्मी, रजनी रजनी निधि
लक्ष्मी । लक्ष्मी लक्ष्मी

निखर है नहि मय मा
 लाल क म ११ १२ - मय
 क १० ११ १२ १३ मय
 दुर्धनवा १४ १५ १६ १७
 १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५
 २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

मा, पद्मती का पगल,
 दी० । मय कहियन द्रुम
 मय दलन, मय कहियन
 पुनि शश ॥ मय शिदि
 मिहल काण्ड ॥ मय सु
 मयवर नम ॥ १ ॥ २ ॥

नवमिष्य मे, मय मे मय
 मय मा मिर म १ २
 मय मय मा मय मिर
 मय

मयमय ॥ मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय

मन्त्र, मन्त्राः मन्त्राणि मन्त्राणि ।
 मन्त्र [स] मन्त्रित पुरुष मन्त्रित,
 मन्त्रपुत्र मन्त्रादिभ्यः ।
 मन्त्रि. (म) वासना ३ ।
 मन्त्र मन्त्रा मन्त्राः विवरण- (म)
 सिंधु. १ २२ ३ गोप ३
 महाभारत- ४ वेदमन्त्र- ५
 अष्टाध्याय- ६ विभाग
 ० कोशाद्य- ८ इति
 विग्रह महाभारत- गाथा
 विहित यो भागवत १
 सत्य- १८ अध्याय प्रमाण ।
 मन्त्र- (म) अक्षय्य यो वाचक
 मुखात्ता ३ विवरण- ४
 अष्टाध्याय- १ ३ ताम्र
 पत्र- ३३ पत्र टोटा- १३
 लतमोक्षा- ४ वेदायमो- ५
 कावेरी- ६ वेदा- ७ पय-
 सिनी- ८ ३ मन्त्र- ९
 मन्त्र- १० ३ मन्त्र- १० ३
 मन्त्र- ११ ३ मन्त्र- ११ ३
 मन्त्र- १२ ३ मन्त्र- १२ ३
 मन्त्र- १३ ३ मन्त्र- १३ ३
 मन्त्र- १४ ३ मन्त्र- १४ ३

वेदा- १५ ३ मन्त्र- १५ ३
 मन्त्र- १६ ३ मन्त्र- १६ ३
 मन्त्र- १७ ३ मन्त्र- १७ ३
 मन्त्र- १८ ३ मन्त्र- १८ ३
 मन्त्र- १९ ३ मन्त्र- १९ ३
 मन्त्र- २० ३ मन्त्र- २० ३
 मन्त्र- २१ ३ मन्त्र- २१ ३
 मन्त्र- २२ ३ मन्त्र- २२ ३
 मन्त्र- २३ ३ मन्त्र- २३ ३
 मन्त्र- २४ ३ मन्त्र- २४ ३
 मन्त्र- २५ ३ मन्त्र- २५ ३
 मन्त्र- २६ ३ मन्त्र- २६ ३
 मन्त्र- २७ ३ मन्त्र- २७ ३
 मन्त्र- २८ ३ मन्त्र- २८ ३
 मन्त्र- २९ ३ मन्त्र- २९ ३
 मन्त्र- ३० ३ मन्त्र- ३० ३
 मन्त्र- ३१ ३ मन्त्र- ३१ ३
 मन्त्र- ३२ ३ मन्त्र- ३२ ३
 मन्त्र- ३३ ३ मन्त्र- ३३ ३
 मन्त्र- ३४ ३ मन्त्र- ३४ ३
 मन्त्र- ३५ ३ मन्त्र- ३५ ३
 मन्त्र- ३६ ३ मन्त्र- ३६ ३
 मन्त्र- ३७ ३ मन्त्र- ३७ ३
 मन्त्र- ३८ ३ मन्त्र- ३८ ३
 मन्त्र- ३९ ३ मन्त्र- ३९ ३
 मन्त्र- ४० ३ मन्त्र- ४० ३
 मन्त्र- ४१ ३ मन्त्र- ४१ ३
 मन्त्र- ४२ ३ मन्त्र- ४२ ३
 मन्त्र- ४३ ३ मन्त्र- ४३ ३
 मन्त्र- ४४ ३ मन्त्र- ४४ ३
 मन्त्र- ४५ ३ मन्त्र- ४५ ३
 मन्त्र- ४६ ३ मन्त्र- ४६ ३
 मन्त्र- ४७ ३ मन्त्र- ४७ ३
 मन्त्र- ४८ ३ मन्त्र- ४८ ३
 मन्त्र- ४९ ३ मन्त्र- ४९ ३
 मन्त्र- ५० ३ मन्त्र- ५० ३

धरि, नाम, पोय, वारीय ।
 गज विमलित यद-हृद ई,
 कला-जानिदे वीग ॥ १ ॥
 सरिता, गय, संघत प्रभू,
 दुःखरिता निरराय ।
 मुदा-याय परमन परो,
 ताहि सिधो सरसाय ॥ २ ॥

महीग (म) समुद्र । [का हव ।
 महीकूपहुम (स) मही तोर
 महीकान्ता (म) काकुलवा
 मही ।
 महीमल्ल (स) लहुपा ।
 मनिपौर मनिपौर (म) नामि
 दाम, नारिक ।

मधु (म) मियद, ठीक, निरुस ।
 मन्दक (स) दून दूध ।
 मन्दन (म) दुहकारक, पृथ
 सुखदायक । दो० । मन्दन
 मन्दन सी बहत, नन्दन
 की धनदाता । मन्दन ल-
 रिदे वृषकदं, जेदि हरीदे
 विष्णु नाम ॥ १ ॥

मन्दी, मन्दिनी (स) दुखी,
 बाजरी ।

मन्दिनी (म) देविका, लखनपुर
 मन्दिन (प) लखनपुर, मिय
 दाहन । [येन ।
 मन्दी (स) मियदुत, समुद्र
 मन्दीपाम (म) पुरे विमिय-
 भद्रमा निकटयो भरतल
 के तपस्याम ।

मन्दीमुख (स) लखनपुर
 विमिय, लखनपुर
 मन्दीमुखी (म) पाणी का पथी
 जिस के मुँह पर मोस का
 मोला बड़ा हो ।
 मन्दी हथ (स) दून । बेतिपा
 पीपर २ ।

मन्दीमर (स) महादेव की का
 धैल, मियदुत, विमिय ।
 मन्दी (म) माती, दुखिता पुन ।
 मन्दीरी (स) बाजा मीठ सडगाई,
 एक प्रकार का बाजा ।
 मन्दीन (स) मन्दी, एवीए ।
 मन्दी (म) पोकाग, मन्दी
 भादवद, यावदमास,
 मन्दी, मन्दी, दो० । मन्दी

भुक्, ननाय भुक्त्वा-
 दुपा, नीचे कितान्
 गन्ध- (स) नमरताई, यधीनताई,
 भुक्ता, भुक्ता दुपा ।
 गन्ध- (म) नगरमयी, भुक्ति-
 मयी, कुम्भिकाई, मयी ।
 नन्दा- (म) दानी, क्षी नक्षीनी ।
 नन्दनदंत, जेगवंत (स) नन्दनदंत
 नन्दन (स) नक्षीन, नापा, नीति
 धर्म । [दिकान्त वे]
 नन्देरिरे, सु० पिरं चे, दूमेरी
 नन्दशीम- (म) नीति के नीमित
 नन्द गीमरं (स) राक्ष नीति का
 प्राता ।
 नन्दन- (म) नैष, चतु, पाँच ।
 नन्दनपनीप- (म) नैष विगन
 चर्चात् हृदय ।
 नन्दनपट- (स) नैष, पट ।
 नन्दनपेन- (म) नैष के राक्ष ।
 नन्दनीय- (म) प्यार, मीट,
 पक्षीक ।
 नन्दनसहित- (स) पाँचों का
 कस पद्यात् पाम् ।
 नन्दनसहितोन्नीहरादका-
 गाम्, (दि० मिहान्)

पांसुपीके निक्षुप्तमे खका
 ई पाता प्रिसुका ।
 नन्द- (म) नन्दन, पुं० पुष्य,
 नाम प्रजुन, पाँच, नक्ष
 पादमी ३ दो० । नन्दन पु-
 रय मानुष नर, जग ननुष
 नन्दन मान ॥ गोध मर्त्य
 नानय नक्षित, नास तदा-
 दम, नाग, ॥ १॥
 नन्दन- २५० (स) पाप, भोग
 का स्थान, गोध, पादिका
 पापियों के दुःख, भोगन,
 के स्थान, दोहड़ । नक्ष
 २५ विवरण, तानियः
 १. नक्षतानिय, २.
 २. शीरप, ३. नक्ष, शीरप,
 ४. कुम्भीपाक, ५. दान
 सुव, ६. पक्षीपत्र, ७. कुन-
 गुर, ८. नक्षकप, ९.
 तानि भोगन, १०. हंसेगलि,
 ११. नपतमनि, १२-३३
 १. दक्षबंटक, १२. मासमयी,
 १३. शैतानी, १४. सुवी-
 दन, १५. मादरीधन, १६.

१०. वैश्वानर, १८ कोको भोजन,
१८० मासिक ३० दिन-
पाल, ३१ लालक देम, ३३१
११. वैश्वानर भोजन ३३ गुण
भोजन, ३४ दण्डपुत्र, ३५
१२. बटनिरीधन, ३६ मय्या-
निर्जन, ३७ समुच्चिमुच्य,
१३. केद दूति श्री भागवत ५
स्तोत्र, १४ चण्डाय ।

नरकर्मो. (म) नरसिंह ।
नरवति. [स] राजा ।
नरवाहन (स) कृष्ण, पुत्र
भण्डारी ।

नरहरि म नमिद नमो
द. नमो नम, गुह का नाम
छात्र विमोच श्री नृपको
दासजी के गुहदेव श्रीनर
हरिदास ।

नरवतिपद [स] राजमांस,
बहुधा ।

नरहरि दास (म) श्री नृपको
दास जी के गुहदेव नरहरि
देव विराजो ।

नरवाहन (स) राजा ।

नरवति (स) राजा, भूषण ।
नरीटी दधीना सु. मया धी-
१४. नरीटी दधीना, नरीटी
दधीना ।

नरीट (म) नृपति, भूरा राजा ।
नरारण्य [स] नरहीने
वासि रूप ।

नरौक नरौको } नर नरिने
नरौक [म] } नरवतिदा,
नरौको } माधुनिकाल ।

न. नरिने ।

नरवतिदा. (म) नरारण्योत् ।

नरवति (म) पुत्र, पुत्र-
नरवति । नरवति कठारागि,

मागक, कठारागि ।

नर स. नर वाधना, नर-
कट, नरकट, नर, वाम
नरौ कोना, नरीटी, नरीटी
नरौ, नरौको एक राजा
का नाम, नर वंदर का
नाम, एक राजा का
नाम । "दी. १. नरवति
नरवति की व पुत्र, नर
नरौको कोन । नरौको
की नरवति, नरवति

कोनी कोन ॥२॥ मनुष्य ।

कुवेर पुत्र नाम, मानव

विशेष शीतभ्राता, लीको

एव विशेष ।

नमद (म) सामञ्ज ।

नमद्वर (न) कुवेर के दो बेटे

को नारदमुनि के श्याप से

पेड़ ही गये थे ।

नमनी (प) नाम एव

(स) कुशी कोर,

बन्ध दास को मनु कमल ।

नमिदा (म) मनुका ।

नमिन (स) कंठ, कुमीदिन,

पदम, कमल, पानी, सारसा ।

नमिनी (स) कमल भ्राता, न

कमल की स्त्री, कोई,

कमल का पक्षी, कुमुदि

नी, कमलिनी, कमलों का

समूह, कमलों से भरा

तथाव ।

नली (स) मनुका ।

नव (स) नया, जो संस्था

वाचक, ट, नेतन ।

नवन् [स] नी

नवपुत्र विवरण (स) कुमा

वर्त ॥१॥ इलावर्त ॥२॥

मन्नापत्ति ॥३॥ मन्नापत्ति ॥४॥

मनु ॥५॥ मन्नापत्ति ॥६॥ इन्द्र

स्वत ॥७॥ विद्वत् ॥८॥ को बेट

॥९॥ तत्तुमुकावर्त ॥

इलावर्त मन्नापत्ति मन्ना

पत्ति मन्नापत्ति इन्द्रस्वत

विद्वत् को बेटा इति मन्ना

मन्नापत्ति मन्नापत्ति इति मन्ना

स्वत मन्नापत्ति मन्नापत्ति ॥१॥

दीवर्त मन्नापत्ति इति ॥१॥

॥२॥ इन्द्रस्वत ॥३॥ इन्द्रस्वत

॥४॥ मन्नापत्ति ॥५॥ मन्नापत्ति

॥६॥ मन्नापत्ति ॥७॥ मन्नापत्ति

॥८॥ मन्नापत्ति ॥९॥ मन्नापत्ति

॥१०॥ मन्नापत्ति ॥११॥ मन्नापत्ति

॥१२॥ मन्नापत्ति ॥१३॥ मन्नापत्ति

॥१४॥ मन्नापत्ति ॥१५॥ मन्नापत्ति

॥१६॥ मन्नापत्ति ॥१७॥ मन्नापत्ति

॥१८॥ मन्नापत्ति ॥१९॥ मन्नापत्ति

॥२०॥ मन्नापत्ति ॥२१॥ मन्नापत्ति

॥२२॥ मन्नापत्ति ॥२३॥ मन्नापत्ति

॥२४॥ मन्नापत्ति ॥२५॥ मन्नापत्ति

॥२६॥ मन्नापत्ति ॥२७॥ मन्नापत्ति

॥२८॥ मन्नापत्ति ॥२९॥ मन्नापत्ति

॥३०॥ मन्नापत्ति ॥३१॥ मन्नापत्ति

हीतस्य पयः, मारु, रं च द्यार,
 २ मज्ज, ३ मज्जवर, ४ देग,
 ५ धार, ६ गेय, ७ व्यास,
 ८ कोदाग, ९ इति गवगुण
 धनम् प्रमुखात् स्यात् ॥
 मज्जकण (म) वयो का कृत,
 १ मज्जका पाली ॥ १०००
 गवधा (ध) गव प्रसार का ।
 गवधा मलि विवरण ॥ ८४—(म)
 यथंभं, १ कवलय, २
 ३ दायुः, ४ सखा, ५ मधेखा,
 ६ मसिबेदमं, ७ आरुषं, ८
 ९ मयसं, १० कोत्तमं, ११
 विगुपादधिवन ॥ ८४८॥
 १२ शोच ॥ १३ श्री विष्णोः अथ
 १४ वारुषिद ॥ मज्जेयामको
 कोत्तमं मज्जाद मज्जेतद
 द्विभक्तने कच्छी कृतः पुनः ॥
 १५ मज्जुद सिद्धदेने, कवि
 १६ यतिः दीप्ये ॥ मज्जेयं, न
 १७ यथं मज्जे विवेदने कच्छी
 १८ यथं मज्जे मज्जेयं ॥ ८४९॥
 मज्जेय (क) कवनेय, ज्ञान, भय
 वे जी मज्जे मज्जेयमपीन,

१ श्री चंद्र ता मेद, यथधि
 २ श्री मज्जगाथ, पुनः मज्ज
 मज्ज संदेशा ॥ आपणः ज्ञान
 उपजेत गवनेयुः ॥ ८५०॥
 गवनिधिः ॥ ८५१॥ (स) तद, श्री
 निधि, मज्जागा यथीत,
 चंपदा, कुबेर, का, ५५,
 कुबेरका मज्जागा ॥ ८५०॥
 मज्जागा, यथ पय, पुनि,
 कच्छप मज्जर मज्जेद। मज्जे
 यथ श्री मोम ऐ, यथ
 कच्छपते मज्जे ॥ ८५१॥ यथ
 निधि श्री मज्जेत मी, विरते
 का, ५५ दोष । श्री यथि मज्जेत
 राज श्री, यथ 'मिर्जाती'
 मीय ॥ ८५२॥ पुनः 'दीप्ये'
 मज्जा यद्वय कच्छप यद्वय,
 मज्जर मोम श्री मज्जे । यथ
 यथ युत माग ये, यथ
 निधि मज्जित मुकंद ॥ ८५३॥
 १४ मज्जेय ॥ ८५४॥ मज्जा यद्वय
 यथ पय कच्छि, यथ मज्जे
 मुकंद । यथ मज्जे यथ
 १५ मज्जेय पुनि, श्री मज्जेय

१ - देवि कीजिये मितास ॥
 कांत से यभाय येन भीष
 २ - लाम कोन एक बात ।
 सोम सोम चंदमोष मर्ष
 कोन ईश काह जाग
 ३ - पाति ॥ तनु भूवह्म कोन
 ४ - देव देव कोन कोन तास
 ५ - कोन कोन कोन कोन कोन
 ६ - सुहृद गंड गोव वंश वंश
 ७ - कयाग ॥ ३ ॥ कयनया
 ८ - दम—द्वंद्व ॥ लया
 ९ - मित्यु मेरी सुनो काह दे
 १० - जान ॥ कयारी करे दृष्ट
 ११ - जगता दको पान ॥ ३ ॥
 १२ - होवदा टार बसा बंदो
 १३ - न्यानि ॥ दगान कहे च रि
 १४ - प्रगो लघु जानि ॥ १
 १५ - रोदनाम छंद कोका ॥ ३
 १६ - खावो रमणीय वेराटदप-
 १७ - कदंदाकनानं ॥ ३ ॥ गगनाद
 १८ - को दाम चर्ये मरुत रोद
 १९ - मूही विग्राह ॥ कयो
 २० - कन्युज नय देवग माग मी
 २१ - भीरुहोहा ॥ प्रचंडा करे

२२ - दम जोर मगानं घरदं
 २३ - लीला ॥ १ ॥ विमंज
 २४ - दम—दीहा ॥ ३ ॥ हिरद
 २५ - कुवनिगा पीडहति, वंग
 २६ - धरि हरि चंघ ॥ हरि
 २७ - विन्दु सीमित वदन काय
 २८ - निपातो कंस ॥ ३ ॥ चहुन
 २९ - दम—द्वंद्व ॥ भूषण
 ३० - श्याम सुपाणि कयाका ।
 ३१ - भयम कलंकर भंडन माता ।
 ३२ - मंगल हेतु चसंगल कपी ।
 ३३ - मनु सुहृद तिभागन
 ३४ - कपी ॥ १ ॥ गगतरु—
 ३५ - दद प्रचंड ॥ ३ ॥ पमर
 ३६ - दुखम देव भोगी दया
 ३७ - कान कं च विगो नाहि
 ३८ - तागे यथागा ॥ कहु कोटि
 ३९ - दगवान समुभाय वद
 ४० - मति वेधेन पापान निम
 ४१ - तितु दाना ॥ विद्या मनु
 ४२ - कायन च ॥ ३ ॥ विग कोन
 ४३ - लने को दया नाम चर्ष
 ४४ - दगाना ॥ ३ ॥ मनु माया
 ४५ - भयो दण्ड वादावध

मसजद (५) देह का रंग, लस ।

मसजद (६) लस काटने का
यन्त्र, मसजदी ॥

मसजद का मसजदी (७) लस
रोग गुहा या भी गुल निम
रोग है लस गुल निमरि
मसजदी रोग है कदाचित्त वा
गुल मध्य में टूटि जाय तो
मसजदी रोग, लस में गुल
का रोग को निकलता है ।

मसजदी (८) निमेष, मसजदी ।

मसजदी (९) लस का टूटका ।

लस का टूटका, मसजदी, लस
पक्षपात रोग का मसजदी
रोगी लस, ।

मसजदी [१०] लस ।

मसजदी (११) लस देह निर्माण
का भी लस है, एक समय

को लस है कि मसजदी

लस देह निर्माण के गुल में
लस है लस भी लस है

लस देह में लस निर्माण

लस देह का लस देह

लस देह का लस देह

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

लस देह निर्माण लस देह निर्माण

धावा । इन्द्र ने पति से कहें म
 परि सब भगवत ते निरोम होय
 मानमरोवर विषे जाके मइत
 ते मइत हत्या पादि की काइ
 की समर्थ दा विषे प्रथम की
 मरी है मत वषे जाइये । पर
 दा पुन हत्या मानमरोवर के
 गट परवा के मानमरोवर कत
 ते निमरे की पयलोवन करत
 रही बिजोन कात निमरे
 तजात पावो गो । ता उपरान्त
 यो मइता न इन्द्र की पति स-
 कहता देख रखा करि पा
 मइत हत्या की चारि स्याग पर
 भगवत दिया मरी भूमि मी
 चसर । वषी मी वंदा । १
 बसो गो । दिन । १ देह मी
 मारियो है तीनि दिन रमससा
 कास । पर माना पादिये बि
 पाही सो वषे इन्द्र के मान
 मरोवर मइये कासमो इन्द्रा-
 सन मूय देखि मइये नामि
 एक देखे इन्द्र के मोहो पर जा
 को वदिते सब जानि मनी पादि

को चपने बगी करि ऐसो
 कुपाटी मधमो मयो कि चपने
 वलिकरि भीति धर्म होम
 यते पूजादि सबो को दोहाय
 कुनीति चलायी, की कोइ को
 सुनीति धर्म जानि भी सुने पर
 देखे बाको देख करे, या
 चरिषे मधमो पाको सन श्री
 मारद लूवा विमिमीट हित
 बाइ पाप मयो माने नाहि कु
 को मधमो करि ससन सवित
 पासन दियी मो मदि बैसा कछी
 बिजब सुह इन्द्र पूरा होगी तर
 मे बैठोगी । वा नी कही किमे
 इन्द्र मोही पर बैठे । इन्द्र सब
 हमारी मी भूत है इन्द्र होने
 को पर कहा कसर है मारद
 जुने कहि बिजब तक इन्द्रापी
 है मय्यापहव मी करी तब
 तब इन्द्र पूरा कहा हो नवा
 ने या की मानि इन्द्रापी ते भोग
 करण बिजब लोग बगी हवा ।
 पर मारद लूवा की बज कछि
 इन्द्रापी सी मरना सब भाती

नाम कफूरी ।

नामपितः [म] नाई, हज्जाम ।

नाम-(प) संध्या, यम, विख्याति

नामन्, (स) नाम ।

नामपरायण, [म] नाम, का

लपनी होना ।

नामकरणा, सु० नामो-होना,

नामवर होना, यमी-होना,

विख्यात होना, मसिद्ध

होना, नामादेना ।

नाम रखना, सु० नाम धरना,

नामलेकरना, छाया, सु०

दुमरी, मनुष्या के नाम, से

नामो, नाम होना ।

नामसे गोली, सु० नामराजना,

नामसे सा, कृष्णा, परीक्षार के

नाम सेना, लपनीकरना,

नामासाफिना ।

नाम-होना, सु० यम-होना,

यम फेरना ।

नाम-होना, सु० चपना यम-

होना, बदनाम-होना ।

नाम देना, सु० नाम रखना ।

नाम धरना, सु० नाम रखना,

नाम होना, नाम लेना, नाम

नाम ठहराना, किसी

नाम से प्रकारना, खराद

करके कहना, बुरा नाम

रखना ।

नामनिर्वाहना, सु० नामो

होना, नाम करना, दीपी

का नाम लिखे करना ।

नामनिर्वाहना, (स) समझ

नाम बाँधना, नाम

समझ ।

नामो (स) नामवाला, जाका

नामो होना, सु० नामवर

होना, मसिद्ध-होना,

विख्यात-होना, उज्जीगर

होना ।

नामकी (स) सुविद्यो, जित,

खामी, सरदार, चमूना ।

नामिका (स) कूटनी, दुनी,

चरनी, स्त्री ।

नायो-नयो (प) सुहायो,

जिमायो ।

नार (स) लक्ष, जीरे

नारकी, नारकीय, (स) नारकी

नामो, नाम लेना, नाम

नाम होना, नाम लेना, नाम

नाम लेना, नाम लेना, नाम

का, चेत, लयो ।

गि. (स) निघय, पात.

निघेभबोधक शब्द ।

गि. घेदी. (स) सीढ़ी, निघेनो

दो. । पारोइन पारोइ

पुति, निःघेदी मोपान ।

मनिमय सीढ़ी सखि एदी

सखी न कोझ जान ॥ १ ॥

निकल जाना. सु. भागजाना.

चला जाना । [जाना

निकल पड़ना. सु. बाहर या

निकल भागना, सु. भागजाना.

निकल जाना, निरसन, सु.

निकलना, बाहर हो

जाना ।

निकाशदानना. सु. काटना.

काटवाना, धागिन कर

देना ।

निकाल देना. सु. हुडा देना

बाहर करना, पसम कर

देना, दूर करना ।

निकाल जाना. सु. ले जाना

वधावाना ।

निकास देना. सु. सेलेना,

कडाइ लेना, काट लेना,

काट लेना ।

निःघाम. (स) पदम, पाप.

यानु, सखी सांस ।

निःसङ्ग. (स) नङ्गहीन, पकेला,

पभगा ।

गि. सन्देह. (स) निरुन्धय, पयं-

का, पनधारित ।

गिरुट. (स) समीप, सविधि,

पास, नभहीन, गिरुट

या अपराध नात, ॥ हंद्

विपिन तितका ॥ गिरुट

पयकुन पासध पचासहू ।

तटं पभ्यर्ण सामीप पभ्या-

सहू ॥ सतिधीनंतरं तीर

पय दूरहू । पास मभु

पाय सुपीव सुप भूरहू ॥ १ ॥

दोष अपराध यो पाग

यो मतुं लो । नाय हरि

ये मयै राग भगवंत लो ॥

राग पाघा इतमान रुपि

दल-बला । विपिन तित-

का सुग वंद् विंसत

बला ॥ २ ॥

निगरता [स] सन्ध ।
 निगुट् निगुट् [स+द] गहरा,
 गुह्य मंभीर, दिवाहुपा ।
 नमगट, दुर्गम, गुह्य, अठिग
 अतिगुह्य, बहुग दिवा ।
 निघट [स] रोह, दण्ड, वेद,
 रन्ध्र, अनुपादाभाव, दंडन,
 तिरस्कार, रोष ।
 निघटत [प] अतिरमती,
 रोता ।
 निघुह [स] ईश्वर, दृष्ट दिग्दि ।
 निघोह [स] बहा, दण्डा,
 दोहा । येन निघोह दुह्य
 पट, संसृष्ट बास सिधार ।
 विपत्तन बास तु बसने मे,
 हिरदिन होत अधीर ॥
 निघित हीमा, सु+बाग
 दूराकरना, दिगहागा,
 ये विविध रोना, पुरात
 पाता, पदपामपाता ।
 निघ [स] पण्णा, रा, हन्-
 बह, अतन्त्र ।
 निघमति [स] पण्णा १२-
 एता, पद-मति ।

निगधर्म [स] दुह्यधर्म, ।
 निगताम्ब (स) सतन्त्र,
 सवन्नी ।
 निगसंधि (स) आपनहिद,
 पोसर, बबहर, पपना-
 हिद ।
 निगमुष (स) पालमुष ।
 निगदापी (स) पपना बरन ।
 निगानन्द (स) सफमानन्द,
 सागन्द ।
 निठ (स) हीरानदि ।
 निठुर (प) बठौर, बहा,
 निहंदा ।
 नित, नितर्ग, (म+प) वास्ते नित्,
 सवर्दा, रुदा, निमिष ।
 नितमौमी (स) नित्मनसकार ।
 नितम्ब (स) चूतह, कंदर,
 दोहा । दिने तूह नीप
 प्रिय बहल मधुमंथ बरह ।
 येन बहीरिता नी विद्या,
 कीर्ति नादि विहंदा ॥
 पुनः नृत्त नीप नीपंथ
 कोद, नदिसाधे मुदा ।
 ए बर्ह १२ बर्ह

नदि, कूटे, छे, दृष्ट

निदरो. (म) निभंयी, निर्वंकी,

पाप रक्षिता ।

निदाग (म) कारण, ग्रेय,

पीछे, निदबीध, यत्ना,

पापदूर, अदिकारण-का

यमात्र, रोगनिर्णय, पापि

रक्षार ।

निदिगंधिका (म) रेंगनी ।

निदेग निदेगा. (म० द) पुःप्रा,

अपदेग, अदेग, यथा

नाम—द० वगदेम निर्द

मयुनि, पाप्मा ससरि लोच

य य छे पाव आमुक्ति,

नष्ट मोति का क्षमापण

पुन, अज्ञा मासक देगा,

पा. (म) मिष्ट निदेगा

निदेग यदवाट विदु

र, म अन वन यम रति

निदगकारः (म) पाप्माकारो

निदा. निदा० म ; निदा.

निद, छ वाट, निद,

निद ।

निध [द] पुत्राभा ।

निधन [म] मरण, यत्

नित्य (म) सदा, कदा,

समाप्त, अनन्त, अग्रेय,

अमल का साव, दृष्ट या

विनाग रक्षित, नित्यकर्म,

छेमे कंध्या आदि ।

नितकूटे, निगपठ क. गु०

सदा, निरतर, क १ १ १ १,

इमेगद इरदम, इम ग

नितनित, गु० सदा नित

कट, निरतर ।

निदाव ना नयन अ व नः

नवाति नव । ना पो

नव, दृष्ट ।

निदास्ये छे फेर मे पडना,

गु० धम के दृष्टा क...

को मे अगा रचना, दृष्ट

मे पडना ।

निदर (म) दृष्ट, निभेय ।

निदरना. (म) अनादर करना ।

निदरि. (म) निदादर करि

निदादर करे ।

निधेय, मृत्यु, नाश, मोक्ष ।

निधनाती- [म] कर्मण, मरण,
महदायक मरण ।

निधान- (म) घर, स, न, ठाँव,
साधार, पात्र, वासन प-
यन, कायेवमान, धन,
पुण्या ।

निधि- [म] कर्मण, कर्मण,
साधार, दीप, धानि,
कर्मण, कर्मण, कर्मण
दि । ट । दण्ड धन,
पुण्या, संस्कारिणी,
धन ।

निधात- [म] मरण, मरण, या
घट, कर्मण मोक्ष ।

निधु- [म] निधात करने
द्वारा, निधात करनेवाला ।

निधा [म] दीप, कर्मण,
निध, धनदाय, दुषण,
दुष्ण, धनी ।

निधि- (म) कर्मण ।

निधना- (म) कर्मण, मरण की ।
निधित- (म) निधित, धनित,

त्याग । [तुष्यणीय ।

निधु- [म] निधात करने, दीप,
निध- [म] कर्मण ।

निधु- (म) निधित, कर्मण, कर्मण ।

निधुति- [म] निधित ।

निधुत- [म] निधित कर्मण ।

निधुत- (म) नाम, त्याग, कर्मण,
पतन, निधित, नाम-
विद्या ।

निधुत- (म) नाम विद्या, दाटा ।

निधुति (म) नाम विद्या ।

निधु- (म) पतित, मदीय,
पटु, पटु, पटु, पटु-
द्वारा ।

निधु- (म) निधुति (पटु,)
पतित, पटु-
द्वारा ।

निधु- (म) पटु-
द्वारा ।

निधु- (म) तीनी धार ।

निधु- (म) कर्मण, मदीय,
धन, पति मदीय, पत्य-
कार, धन, धन, मदीय ।

निधु- (म) पटु, पटु,
पटु-
द्वारा ।

परमा, चि'स परमा, नियु,
कता, ल'डाना, लोहा लरखे ।

निष्ठति निर्निष्ठति [म] माप,
विद्याम, खेल, संसार मे
लूटना । [पाप रहित ।

निष्ठ पाप, निष्पापा (ब० द)

निवेदन [स] दिनती पार्थिव ।

निवेदनपत्र (स) प्रार्थनापत्र ।

निवेदित म चरित, म ग

सगो वसु, चास रत्नमा ।

निवेद-निवेदी, [प] निवेद,

निवेदर, निवेद, निवेदि

निवेदी [द] पुकार, लपान

की ।

निवेध [म] रीक्षमा ।

निवीध [म] युष्म, लप वक्त,

जानो ।

निम [म] मूल्य, समान, मो-

मिता, मूल्य, कदम ।

निमृग, (म) एवाका, चरिका

निमृगन [म] मृग, मोच ।

निमृग्य [म] मृग, चानादन

निमि [म] मृग चानादन

माग, रागा विगीय, रागा

लनका पिता भेदा, कावे

देह मदन मे लनका भयी,

अन मेव पक्ष वा सुखे

सुखीनत् ।

निमिष, निमेष [स] पक्ष

पक्षक, मूल्यना, काव

विगीय पक्ष, पक्षक देवता

मानका, कावविगीय,

पक्षकमाजना ।

निमिषा (म) देव, चिन्द, का

निमेष [म] लप काव विगी

पक्ष, लपका ६० अक्ष संख्या

मानका, जितामी देव

पक्षक लपती के पक्षक ।

निमेष (द) निमेष ।

निमेष (म) लप, लप, मरिता

मदरा, निमेष ।

निमृगा (म) लप, मरिता

निमृग (म) मानका ।

निमृग निमृग (ब० द) काव

निमृग ।

निम [म] पाति, निमिषीय

मूल्य, चानादन ।

निदत्तः [स] निधीत, प्रतिष्ठा-
श्रीङ्गीकार, स्थापित्, ठैरा-
या दुषा, निदत्त, नित्य,
जितेन्द्रिय ।

निदत्तवसतिम्. (वि. स्कन्दम्)
ठैराया है वसना निगमने ।

निदत्तां. (स) अन्तराश्री ।

निदन् [स] अङ्गीकार, यदन रो-
ति, रोष, 'निदय, प्रतिष्ठा
श्रीङ्गीकार, साधार, तरवस ।

निदगन्. (स) अटकाव, ऐक,
रोक, दधाना, मरणादने
रखना । [पास ।

निदर. (द) अनीप, निकट

निदराई. (द) निरुधारी, अनी-
पता, निकटता, निकट
पहुँचे, निदराना, निकट
पाना ।

निदत्तः [स] दिसस, दो सास

निदुक्तः [स] मेरित, मेरित, -स-
धिक्षत, लोहा दुषा ।

निधीनः } [स, ट] पाप्मा, मेरपा,
निधीगा } पाप्मा करना ।

निदीर. [द] बीन्हाइट ।

निर. निः. [म] बहिस, रहित ।

निरधि. [ट] तकि कै, देपिकै,

निरीधस [विगाहरा ।

निरङ्कुग. [स] सतन्त्र, सवमी,

निरञ्जन. [स] पविद्या रहित,

शुद्ध, रागरहित, निरुपा-

धिकपनाया, [निरुपंजन]

अञ्जन रहित, -दुःख शुद्ध

रहित ।

निरतः [स] सीन, तत्पर,

असीन, -अतत्पर, समा,

अति प्रीति युक्त ।

निरति [स] अपटी गई ।

निरतिकः [म] छिपटी हुई ।

निरदः [स] बादल, मेघ, घटा ।

निरन्तः [स] अन्तरहित,

अपरम्पार, सर्वदा लगा-

तार, नित ।

निरन्तरः [स] निरन्तर, समा-

तार, नित छठ अन्तरहित

सर्वदा ।

निरवधि. (क) अवधि रहित ।

निरवहा. निरवहई. (प) बीता.

गयो, हो गयो, निवहै,

निरवाहता, निरवाह, यन्त्रणा ।
निरवाह न निवाह किया ।

निरवाह () परिपूर्ण ।

निरमय (२) जलाना, निरजना
निरमम गे समता रहित ।

निरम्य (३) निरमल, विमलता,
जल रहित ।

निरमल (३) माया रहित ।

निरास () उल्लस के लक्षण
के लक्षण ।

निरासि (०) देवता के मन्द ।

निरासि (३) देवता के, देवता के
के निरीक्षण ।

निरासः निरास (३) समकोण,
प्रिया, प्रीति, आनन्द, वस ।

निरास, सुखा, आनन्द निरास
जल करके ।

निरास (३) निरमल, रहित ।

निरास (३) निरमल, सुखी ।

निरास (३) निरमल निरमलता

निरास (३) निरमल निरमल

निरास (३) निरमल, वस, वस
रहित, वस, वस, वस

रहित -

निरासि (३) मास विना
भोजन, मास भोजन के
रहित होता ।

निराकार () आकार रहित
रहित, ।

निराधार (३) आधार रहित,
निरास (३) रीत को धार
को शोधना ।

निराग (३) विना राजा, विना
गर्दा, विना गार्भिक ।

निराह (३) दृष्टि के शोध रहित ।
निराह (३) जलन, निरी-
निराह (३) जल, आलोचना
विचार, यमान ।

निराह (३) विना प्रथम
जपानि रहित, निरानि

निराह (३) निरमल यम आनन्द ।

निराह (३) निरमल रहित ।

निराह (३) निरमल रहित ।

निराह (३) निरमल रहित ।

निराह (३) निरमल रहित ।

निराह (३) निरमल निरमल

निराह (३) निरमल निरमल

निराह (३) निरमल निरमल

निराह (३) निरमल निरमल

निरूपण (म, द) बस्तार से संज्ञा, निर्माता, उत्पन्न ।	निर्देश (म) पाँचा, विभाग, निरूपण, बस्तार, शासन- उपदेश ।
निरुद्ध (म) अक्षरिणी ।	निर्घरि (म) निश्चय, निर्णय ।
निर्गुणः (म) नीला सुन का निगुणर ।	निर्वह (व) कूटिमय, निर्वाह पावे ।
निर्घन (स) दादकारित ।	निर्वीत, निर्वोनपद, निर्वाणु- (स, द) सुहृ, परमाद, नीचपद ।
निर्जर (म) सामान्य देवता, सन्नि, पचय, पसर, पल्लव ।	निर्वृत्ति (म) त्याग । [पालख]
निर्जरगदी (म) देवता की नदी-प्रवाह गङ्गा ।	निर्वृद्ध (स) वैरीण्य, त्याग,
निर्जोम, निर्जोद (म) नियम ।	निर्मर (स) शरीर सुषुप्तीन, पूर्ण, पूर्ण, प्रतिगय, परिपूर्ण ।
निर्मर (म) करना, पंखी, पक्षी की भीमा, पर्वत का करना ।	निर्मरमेन (म) निर्मरस्तर भर पूरे है प्रेम जाने को निर्मरमेन ।
निर्गम (म) चरित्या रचित, राग रचित, भाषा रचित, निरुपाधिक, परमात्मा ।	निर्मद (म) भवरहित, बेगोका ।
निर्द्वन्द्व (म) न्याय, राजकीय, निरुद्ध, विचार, गङ्गीकाग ।	निर्मोघा (स) मनुष्य ।
निर्द्वय (स) दूर, जिस को हटा न हो ।	निर्मोय (स) रचित, निर्मल, सत्यनि ।
निर्दिष्ट (म) दिखाता हुआ ।	निर्मोद (व) रचित, दनाएव, निर्मापकिया, दयाया, रचा, मोदी (स) निर्माण, पचय ।
निर्दिष्ट (म) निरुद्धार, दक्ष रहित ।	

निवेरी. (य) बुद्धाई, गुणा की ।

निग्, [म] रात्र ।

निग्द. (स) निग्द, सन्देश ।

निग्द. (स) रात्रि, रत्ननी, रात्र
रत्नदी ।

निग्द. (स) रत्नगा, रत्न ।

निग्द. (स) रत्नदी ।

निग्द. (स) रात्रि रात्रमन ।

निग्द. (स) भण्डार रात्रस,
शौर, सन्देशादि, नृणां,
सर्प, सन्ध ।

निग्द. (स) भण्डा, घण्टा,
चिन्, नागा ।

निग्द. (स) रत्नदी ।

निग्द. (स) रात्रि, रात्र, रत्ननी,

रत्नरात्रि, निग्द, प्रिया की

की रत्न रत्नरात्रि नाम ।

दी० निग्द निग्द निग्द निग्द

साइनिम, रत्न रत्न रत्न

रात्र । रत्न रत्न रत्न

सोय रत्न, रत्न रत्न रत्न

भात । १४

निग्द. (स) रात्रस, शौर,
सन्देशादि ।

निग्द. (स) रात्रस, मित्रि का

निग्द. (स) संभाषात,

संभा । रात्र

निग्द. (स) रत्नरात्रि, रात्र

निग्द. (स) रत्नगा, रत्न ।

निग्द. (स) निग्द, ठोका,

स्तर, रत्नरात्रि, संभाषात

भात, निग्द, रत्न ।

निग्द. (स) रात्रस ।

निग्द. (स) निग्द, रत्न

रत्न ।

निग्द, निग्द. (स) रात्रस

सात, रात्र रात्र ।

निग्द, [स] रात्ररात्र ।

निग्द. (स) रात्र रात्र ।

निग्द. (स) रात्र, रत्न

रत्न ।

निग्द. (स) रात्ररात्र, रत्न, रत्न

रात्र । रत्न रत्न रत्न

रत्न, रत्नरात्रि रत्न ।

रत्नरात्रि रत्न रत्न रत्न

रत्नरात्रि रत्न रत्न रत्न

निग्द. (स) रत्न रत्न ।

गगन निमान् । असुति
 करिहरि सवधने, सीमित
 दिविध विमान् । पर्याप्त
 रक्षा निमान निम्नग मय्य
 का परमेश्वरै रक्षा मय्य
 काते कहे नगारा पादि ।
 निष्कारणा (द) निष्कासना ।
 निमित्त निमित्त (स) नि स्तत
 शोषा, तीषा निरुक्तने
 तीषे, पति-शोष-गुणीन ।
 निवेनी-निवेनि (द) सीढी,
 सीढीन ।
 निमोत (द) निमोता, संलग्न
 निमोत, देवता
 निमोती (स) निमोत ।
 निमोत-निमोय, (स) चंद्रमा,
 निमोत ही रीम ।
 निहार (स) रहार, मुक्ति
 पाप । [निहोत ।
 निम्न (स) साहसाहीन,
 निम्न (स) निम्नोद, निम्न-
 जता ।
 निश्चित निश्चय, साहर
 होमा, रक्षाता ।

निम्न (स) नाद, मय्य ।
 निम्नार (स) विनासार का
 द्रव्य ।
 निम्न (स) विना मंग का ।
 निम्नार (स) उपपत्ति ।
 निहार [द] देवा; निहारणा,
 नितीचर, देवता ।
 निहार निहार, [स] निषे
 हो स्तवे, कुहिला, कुहिला,
 पन्थकार, नाम पाटी ।
 निम्नमिषद-तिमित्तम
 धातु कहर निम्नार का
 तरे देखे-कुपरि, मो गत
 तीव्र पधार २१ ।
 निवेराप्यम् (वि, निरिम्)
 नीच-दे, नाम जिम् का ।
 नीचेस् (स) नीचेही पार, नीचा,
 पोहा, होरा, नीच, तुच्छा
 निहीर, निहीरा, (द) दिगती,
 उपहार ।
 निररणा (द) कुहिला, संघ-
 कार, कुहिला ।
 निरिष्य [स] रपकर, मेरकर ।
 निरित्त (स) रक्षाकृपा ।

निष्ठाद. (स) शब्द ।

निष्ठादिन्. (स) शब्दायमान ।

निषेध (स) फेंक, घायी, धरो
हर ।

निर्भर (स) भरना । [शब्द ।

नीः (स) नियय, निषेधबोधक

नीक (प) सुन्दर, सुगरा,
घण्टा ।

नीच (स) गड़हा, नीच, कमीना

नीच (स) खीता पत्ती की,
खीट्टर, घांसक्ता, बैठक,
पासन । हुपा ।

नीत (स) लाया हुपा बिताया

नीति (स) उचित, व्यवहार,
चक्रण, न्याय ।

नीति धर्म (स) राजनीति के
अनुसार धर्म ।

नीत्या. [प] बिताकर ।

नीतिमंत्र (स) राजनीति के
अनुसार धर्म ।

नीद नीद (स.प) नीन्द,
निद्रा, नींद ।

नींद उवाटहोना, मु० नींदी
नहीं आना, नींद की

टूटना, नींदी

मिलनासोने की 'चाह न
होना, खींचाई टूटना ।

नींद भर सोना, मु० गहरी

नींद आना, चैन से सोना ।

नीचा ऊंचा [म०] नीचा
कमीन, कोटा बढ़ा ।

नीप [स] कदम्ब फल । कदम्ब
का भेद कुबजक २ ।

नीम [प] सुदृढ़, पर्व, पाषाण
[म]

नीमी (स) धातुपत्रादि, इदि-
यारी का धार ।

नीर [स] लक्ष, तीव्र, दुःखपान ।

नीरज [स] कमल, सद्बिम्बा ।

नीरघर (स) बाटन, मेष ।

नील (स) गूना रंग, नीला-
वर्ण, नीला, नाम निधि,
सुन्दर विमिश्र, काका, नील

रंग का द्रव्य ।

नीलकण्ठ (स) कालाकर्मक ।

नीलकण्ठ (स) नीलकण्ठपत्ती
नीलकण्ठ पत्ती, नीर, गहरी

देव, कपाल, दीर्घ ।

नीलकण्ठ कणकण्ठ सुरु, वातक
 चक्षुः भूकोर । भाति भाति
 नीलकण्ठ विहगः । अयम
 सुखदः वित्तः । नील
 पथित् नीलकण्ठ नयूर या
 कथिता; कसकण्ठ कोकिला,
 चक्षुः चक्षुः स्यात्, नयूर
 पथी, शिव कालिंजर गिर-
 बासी, [सिद्धा ।
 नीलकण्ठ मिषा (स) मीर-
 नीलदूर्वा (स) इरादूर्वा ।
 निलपुष्पा (स) सिन्दुपार ।
 नीलपुष्प (स) गठिवग ।
 नीलपुष्पा (स) नील १ सिन्दु-
 पार २ ।
 नीलपुष्पी (स) तीसी ।
 नीलवा (स) पुरी, स्यात् ।
 नीललोहित, (स) अगम अरुण
 बर्ष, रुद्रमंजरा ।
 नीलोष्णक (स) कामा पांड
 का हरिन ।
 नीलादि (स) कुर्वक ।
 नीलिवा नीलिनी नीली, (स)
 नील ।

नीलोहवा कृतः [स] सफ़ैका ।
 नीलाम्बर (स) बसभद्र, कृष्ण
 भ्राता, नील रङ्गका कपडा ।
 नीलोत्पलः [स] नीलकमल ।
 नीलोपसः [स] नीलसपि,
 नीवा [स] रुनाइट, मन्दाई ।
 नीवारः [स] तीनी धान ।
 नीवी, } नाड़ा, छारा ।
 नीवीवन्ध, }
 नीवीवन्धोच्छसितमिधिसन्
 [बि, वासः] नाड़ा खुल
 जाने से टीला हो गया
 है जो ।
 नीसीत [स] खरा
 नीहार (स) पासा, मिशिर,
 शीष । [मित ।
 नुत (स) स्तुति किए हुए, प्रसं-
 नुति (स) स्तुति, स्तव, स्तोत;
 बहाई ।
 नुदति, [स] बहाता है ।
 नुद्धा (प) गख से खसीट ।
 नूतन [स] नवीन, गया, युवा ।
 नूद (स) तूत का हथ ।
 नूनम्, (स) निचय ।

१. अहंनि रूप रावर-सौर ।
 २. विपुल विहंग वग अपरेव
 ३. नमि, मोनं ह कुलिसे कि
 ४. नोठारं वपति, नोठारं
 ५. सो रावर कहि नंदिर मे
 ६. सौरि सनिहो नोठो धां ज
 ७. मे मे म पति नोठो धेन नोठो
 ८. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 ९. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १०. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 ११. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १२. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १३. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १४. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १५. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १६. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १७. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १८. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 १९. नोठो धेन नोठो राति नोठो
 २०. नोठो धेन नोठो राति नोठो

१. पदुषाना-या ज्ञाना-पांशु
 २. मयत, सोवत, नोठो, नाथ-
 ३. क, पदुषाने वाचा, पदुष,
 ४. दोशो नोठमयग सो नोठ
 ५. पदु, नोठमय नोठ कइत ।
 ६. नोठ-सोनि नोठि, नोठमय,
 ७. नोठमयि भनवता नोठि
 ८. नोठो, सोवत, नोठमय, पदु
 ९. नोठो, नोठमय, नोठमय, पदु
 १०. कइ रिस राते, नोठ, नोठ,
 ११. नोठमय, नोठमय, नोठमय, पदु
 १२. नोठ, नोठ, नोठमय, नोठमय,
 १३. नोठमय, नोठमय, नोठमय, पदु
 १४. नोठो, नोठमय, नोठमय, पदु
 १५. नोठो, नोठमय, नोठमय, पदु
 १६. नोठो, नोठमय, नोठमय, पदु
 १७. नोठो, नोठमय, नोठमय, पदु
 १८. नोठो, नोठमय, नोठमय, पदु
 १९. नोठो, नोठमय, नोठमय, पदु
 २०. नोठो, नोठमय, नोठमय, पदु

हस्त को दिलाय मीपदेत ।
स्याम स्वेत रत्न युक्त कानिष्ठे
प्रयाग ईश्वरं मुकुट । गंध
चट चोर मुग्ध नाग रात्र

ने कालो विविध छंद ॥२॥

नेचोपमपत्र (छ) बहाम ।

नेवाभी (स) बहंतो नेवार ।

नेवण, (म) वेगवान धर्मकार,
रत्नभुमि ।

नेव (द छ) नेव, नारव, ता

वेष्ट, नहिषम, नेग, मंच ।

नेम (व) कंतोष चादि निगम,

मीच, होम, तप, दान,

विद्या अध्ययन, इन्द्रिय

निग्रह, वरा चन्द्रायच,

चादि ।

नेमि [छ] पहिली पुरी । [ल्याम

नेमिय (म) नीमपारदेग, तीर्थ

नेमी, (व) तिनिस ।

नेव (द) ने जाने मोर ।

नेव (य) निद्रास्थ ।

नेवा (क) बहाम पदक,

रत्नभुमि ।

नेवारण (स) कोड़ावने, रो
हिष ।

नेयन्ति [स] नेजायंगी, बगवे

नेकतकोष (स) दक्षिणपथ
कोष ।

नेह (स) खेद, प्रीति । [बार

नेहाय (छ) ऊठ चहाइमं हो

नेपाक, (त) गिरीमणि, मेवा

की प्रवीण, एत-देव व
नाग ।

नेपासी (स) नेगविम ।

नेव (स) नाएव, नहिषव ।

नेमिवार (स) नीमवारदेव
तपस्याम विमिय ।

नेम [व] गत ना ।

नेमदे (म) पर्वत का भवनी

नेमिचा (म) एकापी, निहा
चारी ।

नेटा (म) निद्रामान, निमि ।

नेव (य) नातु विला ' व',
मरहो, थोका निम व

नी (म) निमेषार्ध, धान, हो
रत्नभुमि ।

नीचपंक्त, मु० देवती के वारे

करना, इमारों से बातें
करना ।

शोकभोक्त, मु० खेंबाखेंबी ।

गोइ-गोइनी (प) होरी, जिनो

दुग्ध दुग्ध की, गाय से

पाँव बांधनेकी रखी दुरने
के समय ।

मो (स) हम दोनों का (नाथ)

मोका (स) गाव, वेहा, तरपी

दो० । उड़ुप पोत मोका

पक्षव, तरनि बड़ित छस-

खान । नाम नाव चढ़ि भी

एदधि, केते तरे पजानि ॥१॥

मोकारुठे (२) ॥ वा रे ॥ दना ।

मोनि (स) नमस्कार करतु

हैं, मैं नुति करता हूँ

प्रणाम करता हूँ, नमस्कार

करा हूँ ।

मोसांदरदगागा मु० एक तरफ

की छोर सगागा, बिटाना

न्यपोध (स) प्रवनास, बट

हृष्ट, बरंगद ।

न्यपोधा (स) बड़ी तंका ३ही

न्यस्त (स) रक्ता हुआ । [मृखे

न्यच (स) वस्त्र, पताका,

न्याय (स) धर्म विचार, तर्क-
मात्र । [चारी ।

न्यायक (स) विचारक, न्याय-

न्यास (स) स्थिति, बासा,

ठिकान, चिन्ह, खोज ।

न्यून (स) हीन, छोड़ा, किंचित्,

पक्ष, लग, कम, गहर्ष ।

न्यूनता (स) पकुलान, छोटाई,

समुताई ।

प

पक (स) पका, पोखत, परि-

पत-दिनामाभिमुख, सिद्ध

पकाइया, पकाइया दूध ।

पकापकाया मु० तयार, पका

हुया ।

पकात्र (स) पकाया हुआ अन्न,

पक्षवान, पकाया पक्ष ।

पकाउग (द) बाजा भेद, सुदृढ़ ।

पसारना (द) धोना, खंसाइना ।

पगु [न] चरख मोड़, पैर,

पाँव, सगना ।

पगपटतार बाजन, मु० गावने

मैं पानी से गत बनाता ।

ता, सहायता तरकदारी
अन्याय ।

पचिन (स) पत्नी, वाण, बिहंगम,
पट्ट, पट्टेवाले जानवर ।

पट [स प] वस्त, पत्ता, धप
सप्तठा, मुखचौंथा, पटमा
पटौक, पट्टा ।

पटरञ्ज [स] पतग ।

पटतर [प स] उपमा, गमन
सप्तम, आधक, बरीबर ।

पटसे [स] समूह, टंपना, घन
पंक्ति । [धारी, गण्डली ।

पटसी [स] पंगति, पटति,

पटव (स) गगारा, छोश ।

पटवता [स] टोलरूपन ।

पटिबो पट्टी [स] पयठानीलीध

पटोर (स) चन्दन, मन्थमार,

पटो गंधमार बिखंड हरि

पटो गंधमार बिखंड हरि

पटो गंधमार बिखंड हरि

पटो गंधमार बिखंड हरि

पटो गंधमार बिखंड हरि

पटो गंधमार बिखंड हरि

पटो गंधमार बिखंड हरि

सुवेपतिकर्क हरी या
दिमचदनं । पटीर चंभा

चो गधेमार बिमेवनं
मलेज पुनिमेवितं सभा

परमाधनं । टी० । प
नामानि सकाटके, इकद

सदन बंद । जगन मन
धुनपुनि कला, तेरह व

पट्ट ॥१॥

पट्ट [स] पाणी, मूर्ध्ति ।

पथ [स] रास्ता ।

पथ्य [स] हिम ।

पथकन [स] चरणकमल ।

पटु [स] प्रवीण, पण्डित,
निपुण, समर्थ, चतुर मुद्द

तीक्ष्ण, वज्र, चागीण,
कपाट, केयार, दाहा ।

पटु तीक्ष्ण पटु वज्र बलि,
पटु चारोग्य कइत । पटु

प्रवीण सीई जगत, भजे
लो रुक्मनिबंत ॥१॥

पटुक [स] परवल ।

पटुवरणौ - (वि० प्रादिभिः)

कुश स है इन्दी भिन को

पटुपत्नी [स] चौका ।

पटुपासकी [स] मबीपपासकी,

सुन्दर लहाउ पालकी ।

पटुनखाना, सु. पीपदाइ

खोना, नीचे गिरना ।

पटोर [प] रंगमी-बन, रंगम

ताम ।

पटोना [स] परवस ।

पटिका [स] रक्त, रूपा ।

पटु रहना, पड़े रहना सु.

देहस रहना, सी रहना,

सिट रहना ।

पठ, पठना [स] पठना ।

पटामुष्ट, पटारिषा सु. पटो

रूपा, पण्डित, पहीन,

निपुण ।

पट [स, प] व्यवहार, कृति,

प्रतिष्ठा, होइ, दीकगण्डा

२० चौड़ी, अंगीकार,

बहम, पक्ष्या, कल्या

विशेष लक्षणे, सट, कट

दिक्क, दात परिमाण मू

पक्ष [स] दीकगण्डा ।

पटि [स] लक्षणा, कृति ।

पण्डित [स] संत, पण्डित, विवेकी ।

निपुण, प्रवीण, चतुर, वि-

द्वान, सरदार, सरंगना,

मोक्षप्र, यथोपेक्षाते, वि-

द्वान । [पटोत् वेग्या ।

पत्न्यस्त्री (स) मोक्ष की स्त्री

पत्न्यस्त्री [स] बाजार, दुकान ।

पत [स] पत्नी, पग, सुख्याति,

स्वामी, बहाई, भावसी ।

पतङ्ग पतङ्गा (स-द) मूख पत्नी

पति, रक्तादिषण, पतिंग,

मुडो, मेन्द, काया, पुद्ग-

लीव, तम्बूरा बाजा दीन

तरनि पतंग पतंग पग,

पायक बहुवि पतंग । सब

लग रंग पतंग की, हरी

एक नव रंग ।।।

पतन [स] पथीमन, गिरना ।

पतवि [स] पत्नी, पग ।

पतमि [स] गिरत है, सब

पत है हट्ट दखन ।

पताका (स) ध्वज भेद की

सुन्दर पतराग, पतन

होगा विन. मंडी ।

... काको कमे मग वानी ते ।

पतिनिधिः (२-) पत्नी स्त्री ।

पतिप्रतः [म] सतीपमा, सुगी

... सुगी ।

पतिप्रता [म] कुलपत्नीपती ।

सती, पति के बहुकूल,

... पति की देवा करनेवाली ।

... धर्म से रहनेवाली स्त्री ।

पतिप्रतः [म] सुहृद्, चन्द्र, सीव,

प्रतिमा, गेद, आचरण ।

पतिप्रति [म] सुनिविष्टिप,

... योगशास्त्र तथा नराभाष्य

... का कर्ता वृत्ति । [६ श्लोक

पतिप्रतः [म] दिगावल, पुरुष

पातप्रतः [म] सुगुणित ।

पतिप्रतः (५) पुनवधू, पुतोह,

पुतवहू ।

पतिप्रतः [म] पद्म, राजनारी,

... मङ्गल, राज्ञा । [प्रिया ।

पत्नी [म] स्त्री, कान्ता, प्यारी,

पद्म । [म] प्रतम ।

पतिप्रतः [म] गगन, गहर गांव

पद्म [म] पत्नी, पत्ता, कागज,

... सवाले, साहन, गग, रघु ।

चित्त, पद्म, विष्टी, दी० ।

पद्म-पात, पद्म परप, दत्त

... दत्त दत्त पत्ताप ।- काय

... कुटि रघुपति वसे, पंचगटी

... सुखरामि ३ १ १ पद्म पद्मे

... स्त्री पद्मरघु, साहन, पद्म सु-

... निता । पद्म पद्म विष्टि गहिं

... दियो उडि मडि-मिलते

... मित ॥ २ ॥ पद्म-परत दत्त

... परदि हित, देखत लव

... तद् पात । तुम प्रागम

... भ्रम, पौकि प्रिय, उडि

... उडि, सतर्की नात ॥ १ ॥

पद्म पद्मज, पद्मज [म] पत्ता,

... तीगपात ।

पद्मज [म] तालो मयज ।

पद्मजाल [म] तरणी दर्ताग ।

पद्मज [म] पद्मी, परिन्द ।

पद्मज [म] पद्मे स्त्री तरकारी ।

पद्मज [म] सुकपलांकी ।

पद्मी [म] वृष, पद्मी, कतल,

... वाण, दीहा । पद्मी

... तद् पद्मी कमल, पद्मी

... महरि विष्टम । पद्मी

मरुतर विज लिमि, दूग

मे बहू श्रीरंग ॥ १ ॥

पञ्चोक्त (स) मोनपत्ता ।

पञ्च र्वत्त(स, ८)मार्ग, बाट, दग, ॥

पञ्चा, नक्ष, राप्ता, राह ।

पञ्चगतिपुत्र [८] पञ्च मे

ज्ञान मे नमुर ।

पञ्चादिपञ्च [८] मेरा,

भौरा गान्धारा देखाया

गान्धिका का इति पञ्च पानि

पञ्च ।

पेति [८] बटोही ।

पविच (स) राहमीर, राहो,

बटोही, यावो, मुनाकिर

पञ्च, मुनबाही ।

पविन् (स) मार्ग ।

पञ्चोक्त [८] अगल, पञ्चन

पञ्चोक्त (स) अगली दों । श्री

पञ्चमापञ्चमा अगल, अगल,

अगल होव । श्रीपुत्रमा मा

इतिरा, विष्णुपञ्चमा मोन ।

॥ १ ॥ अगली नेन बटोही

अदि, रही अगल अगल

अगल : अगल अगली पुत्रमा

अद, पापदि मगटी पाप ।

२। पुनः अदि श्रीही । अमल

पञ्चा पञ्चाअगल, मोन मा

अदि मोन । मा रमा अदि-

रा मोमती, अगली नमुर

योव ॥ १ ॥

पञ्चाअगलीपर रक्षणा, मु०

महद करमा, संतोष करमा

मुव हो रक्षणा, अमल नही

अगल ।

पञ्चा पञ्चोक्तमा, मु० विष्णुमा,

नर्म होमा, मोमल विन

होमा नर्मदिल हीन

कठिन काम महद होन

पञ्चापान्तीहा अगल, मु०

मोमल विन होमा, नर्म

दिल होमा ।

पञ्चा का केन मारमा, मु०

किमी को बात को वि

अमलि अगल देमा, नर्म

बात अदमा ।

पञ्चा मे विर कोदमा, मु०

मुने को मित्रा देमा ।

अगल होमा, मु० भागी होमा

पदम होना, पदस होना,
पुप पड़ा रहना, निर्देह
होना, कठोर विषय होना।

पद्य [स] रोगी का पदार्थ,
हितकारी । [इरे]

पद्या. [स] इरहेहह, चेतकी.
पद्य. [स] चरण, ध्यान, महिमा,

सुक्ति, प्रकृष, अधिकार,
पाँव, विन्द, झोकका चरण,
हो. चरण चलन गतिसंद

पुनि, अग्नि पादपद पाय ।

पद संदन करि सहचरी,
ठाटी सनमुख पाय ।।

पदक. (स) हीरागणि, कण्ठा
भूषण गदती । झोक ।

पदकः कण्ठ भूषणे गदने
चे निगद्यते रत्नगरः ।

पदनर. (स) प्यादा, पैदन ।

पदवार. (व) पशु, गौ पादि ।

पदवारो. (व) प्यादा, पैदन ।

पदस. (स) चहुनी चरण की,
पाँव की चंगुरी । [लूता ।

पदवाच. (स) पनही, पड़ाव,

पदपीठ, पदपीठा. (संद)

हो की, पड़ाव, पाँव रखने

की घोड़ी ।

पदविहार. (स) मार्ग, वाट, डगर ।
पदवी. (प) मार्ग, अधिकार ।

पदाति. स दास, प्यादा, पैदन,
मेना । [पद में भो ।

पदाटपि. (स) पदनं नियम कै.
पदाटि. (स) वस्तु, सब वस्तुमत्त,

गम्याय ।

पदिक. (स) मोहनमाया भेट,
लासे मुक्ता, हीरा, पद्मरा-

म, पिरीजा ए. तीनि
मपि लहित होय, वा ज्ञाते

सौख्य टिग, जाहे मपि
लहित होय, वा कण्ठा

भूषण गान, वा लड़ाऊ
चौकी, मोहा, पैदन, पदि-

क, कामसुचरण, हीरा ।
पदिकहार. (स) पनही, वा

पड़ाऊ हीरा का हार चौ-
सर श्री वल्ल वरि वनमा-

ला । पदिकार भूषण गानि
लासा । पर्यात् उनसे चर-

में श्रीवत्सविन्द पर्यात्
सखी वन्यकरप है और

प्रकाशमान वनमासा है
और पदिक पर्यात् हीरो

का हार है और मपि

कीव, सधुर यति लामो ।

का विचकट मध्य में है ।

पयोडा (३) पयोडेड ।

पयद (म) बादर, घन, व्यत ।

पमा स रिता बा ।

पय पमादी (म) निर्मली ।

पय्या स पुर गय, बाँल

पयम स, पाती, पय, दुग्ध,

व्यान, सर (२३) स माधुर

शाल ।

मय

पुस्तनी स (३) कीरककोर,

पय पे स द ० । पय

इस क अमान म अमन-

पयोडा बस य ० ० ० ० ० ०

भर जीवकी २ त्रिबुद

पयोडा, दया । पयोडा

म पक लहो, मदाविशो

ल ० मदी ० ० ० ० ० ०

ग ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयुवर कट ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

पयोडा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

हैं धर रखने वाला, धर
रखना देवना है । धरान
का नाम । दोहा । धरान
पद्योधि कुव. कवि, य
रुन धर कवि येन । कवन
संपुट देवज्ञान, पून पुनः
नेन ॥ १ ॥

पद्योधि, पद्योधिधि } धीरसा-
पद्यनिधि (स) धरे, ध-
रुधि, समुद्र ।

पर- (स) धीर, धरे, उपरान्त,
यतु, गुर, पराया, तत्पर,
मिरोनदि । [निन्दा ।

परंपपदाद- (स) पराये की
पराई- (द) पहना ।

पर- (म) येठ, खन ।

पर- परम् [स] पीछे ।

पर- (स) गाठी, पत्थ ।

परचना- (म) परकना, हिंसका ।

परदिष्ट- (म) दन्दी दिष्ट, पराये
की मन्त्र की बात, पराये
का दीप ।

परजरा- (स) पतिजरा ।

परगन्त- (स) पराधीन ।

परदग ।

परतन्त्री- (म) पराधीनी, पर-
दगी ।

पर- (स) निदय, परकीक गे,
प्रत्यय, धीर जगद ।

परदक्षिणा- (स) दहिनावतं
पराधूनना ।

परदार- (स) पराई स्त्री ।

परदुम्न- (स) कल्पपुत्र ।

परदेय- (स) विदेय, पत्युदेय ।

परन्तु- (म) चिन्तु, पर, धा, धीर

परधाना- (द) प्रधान, मुख्य,
दीवान ।

परगा- (द) पृष्ट, पंथा ।

पर- (स) पृष्टमादि, गीटी,
सत्तव, पनध्याय, पत्थ,
गठ ।

प्रज्ञति- (स) सुभाव । [क्लिप्ता ।

परभृत्- (स) कीरिस पची, को-

परम- (स) दहे, सत्तम, प्रति,
सकृष्ट, जंवा, येठ, प्रधान

वृद्धता ।

परमरम्य- (म) पति सुंदर ।

परममति- (स) गोच, सकृष्टता ।

परमदुष्टा- (स) क्लम, प्रवीर ।

परमा (न) परमगोमा,
अधिका, बहुत गोमा ।

परमाका'न्ता (म) अधिका,
गोमा ।

परमाकुल'रस) अति बिचल,

परमागति (पो) काशी का पुण्य

परमानु (मा) अत्यन्त कुल्लुवर,

निमित्त, २० रेण, संख्या

बायल, पूली, जल तेज,

बायु अ अति सूया भाग

निल का फिर भाग त

हा सवे, जरेड ।

परमान (द) यथाये, प्रत्यक्ष,

आदिप्रमाण ।

परमाये (म) तत्त्व वस्तु, वस्तुद्व

विषय, उत्तमाये, येठाये

परीवहार, मय, गुणार्थ

जलमकमै (तथा, ईश्वर) ।

परमाअन (म) परमात्मा, पर-

मागमय, (म) बड़ा भाग ।

परमोवर, (म) गोमा के अरने

आदि ।

परमिन (म) अगति, अर्थ, दा,

कोमा, हट ।

परमेश (म) परमेश, परमेश्वर,

परमेश्वर (म) जलमकमै, पर-

मा ।

परशु. (स) परम, इष्टियार,

कुल्लुवादी, टीगी, पापु

निमित्त ।

परम्यद. (म) मोक्ष, १०

परसुभर (द) परसुभर ।

परगुराम. (म) जगदम्नि का

अ ३५, मुनि विगुण का

यदुदम्न मुनि पिताम

अज्ञगामदम्न मुनि पिता

अज्ञ ३५ का माता ३५

परकोश. (म) काशीदि

परम. (म) कृपावटे, समीप

तुला, पारम, पारम,

परम्यद. (म) अर्थात्, पावन

परमि (म) निरग, अग

(म) हट के

परा (म) पुष्प'काम, पीरे, १

आजकोनी ।

पराई (म) भागना, मीर,

हुमरे, भागना, दम का

पाराणा, पलायन,

पराक्रम (म) जल, १०५,

समर्थ, ताकत ।

परान (म) (म) वस्तु, १०

पराना (म) अमल का १०५

को धूमि ।

[त ।

विचारः ।

पराङ्मुखः (म) विमुख, लज्जि-

पराजय (स) पक्षीत, दारि,

पराभर, अजय, दार ।

परधीन, (स) पराए दम ।

पराधीन हस्तिः, (वि० अन्ध-

अदवा अदम्) पराए दम

के आजीविता जिस की

परचपवादा- (म) पराद की

निन्दा ।

पराजित- (म) दारा दृष्टा ।

परागा- (प) मागता, पलायन ।

परापर- (स) फालसा ।

पर दर- (म) मन्त्रादि, मनुष्या-

दि, पर अपर ।

पराभार (म) आभोगात्र, केव-

लभाय का आभार, आभोगी

के भारपण अदानीकी वि-

दम् विद्वत् राजा जैसे कु-

लीलर मुनि की लज्जाके ।

पराभर, को पलाय, निरादर,

पराजय, दारि, अन्धदर,

निन्दा, विचार ।

पराजय के अन्ध, दूर, मुक्ति-

परायण- (म) पक्षी, पक्षीत ।

परायण, (स) तदर, अनुमान,

भोग, मन्त्र, मन्त्रमय की

जामा, अन्धल आभार ।

पराभर (म) आभोगी के पिता ।

परादे (स) पर दे हिन्दे, अन्ध

निमित्त । [तर, कर्षित ।

परायण- (म) पक्षीपक्षी, अनु-

परायण- (म) भोग, कर्षित ।

पराभा (म) निरमा, पराजित,

दारादृष्टा ।

परि- (म) इति-पक्षी, परि-

भार, पराभार, अन्धदर,

अति, आभोगी, आभोगात्र ।

परिभर परिभार, (स) पक्षी,

भार, भार, अन्ध, अन्ध

परिभार, आभोग, अनु-

द्विभार, मन्त्रकारी, कर्ष-

दृष्ट । [कर्षणः ।

परिपक्षित, (स) दारादृष्टा के,

परपक्षी अन्धदर अन्ध के ।

परिपक्षित- (स) विचार ।

परिपक्षित- (स) विचार ।

परिघः (स) व्याडा, द्वारदुरका
 द्वारदाठ, मैडा, साठी,
 छंद—दर दहेन कहै न कि
 धरहु धाय बिकठ मटरन-
 नोवरा । सर भाप तीसर
 सुक्ति मूल लुपान परिघ
 परम धरा । प्रभु कीन्द
 धनुष टंकीर प्रथम कठोर
 घोर भयायवा । भग वधि
 व्याकुल लातुधान न
 ज्ञान तेहि अवसर रडा ।
 अथात् कैसे सुन्दर राज
 लुगार हैं कि कीध मे करे
 धर धरहु, ऐसी पाशा कर
 त । तीसर, बरदा, शक्ति,
 सांग, गुरु काको पहिस
 सो फल मरली पादि
 की मोल ना पदलदार
 होत, परिघ काठी । दार
 बेनाठी, मस्तमैडा । गदा-
 कार । दोहा । परिघ
 मस्त परगत परिघ, पर मर
 मस्त बिगिध । परिघ दाग
 अम धल गरी, परिघ मर

समि मेघ । १ ।

परिघ, परिचितः (स) परिक,
 दिनिक, सात, पड़ियान ।

परिचय, (स) जान पड़यान
 पड़ियान, प्रीति ।

परिचित परीक्षित, (स) पत्र
 का योगा, परिमन्यु क
 पत्र, परिमन्यु का वेटा

परिचर्या } (सद) देवा, उ'
 प र परजा, } मना, गुण्य
 परिचर्या } पूजा । [वदेर

परिचार । सो मेवा चसन, ६
 परिचारकः (स) टहल, भाक
 टास चेला देवक, गोकरा

परिचारिकः (स) द मी, मे
 का मान कारिका को ।

परिचितमृकताभिभवाणाम्,
 (१० कोतुदलानाम्
 जानो है मृकटिदी व
 मरोह जिहोने ।

परिच्छिन्न (स) पावणे, दादि
 घेरे, दाया ।

परिच्छिन्न (स) दाविच्छिन्न
 परिमित, सीमायुक्त, दे
 अंम, परिच्छिन्न, दिधाय

प्रव्यापक, घरागया ।

देने वाला ।

परिचयः (स) परिवार, कुटुम्ब,
प्रजा ।

परितोषः (स) सन्तोष, प्रसन्नता ।

परिहर (स) पटुका ।

परिपतः (स) झुका हुआ, पक्षा.

परिधाता (स) रचक, पातक ।

पूरा, दूसरा रूप पाया
हुआ ।

परित्राणः (स) रक्षा, वचाना ।

परिदग्धः (स) जला हुआ ।

परिदतिः (न) पक्षापन ।

परिदेवनः (स) विनाप, कल्पना

परिदमयितः (स) भुक्ने वाला,
दशानेवाला ।

परिधनः परिदधि, परिधि, (स)
पहिर, पीढ़े वस्त्र, घेर,

मण्डल ।

परिदयः (स) विवाहयज्ञ ।

परिधानः परिधेय, (स) पहिरे
का वस्त्र, पहिरना, पहि-
रना, पहिरावा । [पहना ।

परिदामः (स) अवस्यन्तर
प्राप्ति, फल, मिश्रभाव,
समाप्ति, अन्त, आखिर,
पाने, अवस्था, अंतफल,
विचार, प्रसरकाय, अं-
तान ।

परिपाकः (स) समाप्ति, अन्त,

परिपाका (स) अंत का फल ।

परिपाटी. (स) सक्त, समुक्त

रौति परम्परा की, वस्त्र ।

परिदाहः (स) दीर्घ, कथा ।

परिताः (स) चतुर्दिक्षु, चारों
पोर, आच्छादित ।

परिपूर्णः (स) सम्पूर्ण, भरा,
समाप्त ।

परितापः (स) दुःख, पीड़ा,
गोच, क्षेप, संताप, तपन,
गरनी, विमोक्षता ।

परिपेक्षः (स) केंवटीमोटा ।

परिवेद्यः (स) पीड़ा, दुःख ।

परिव्याधः [स] कर्षिकार न-
द्वेत ।

परितापी. (स) कोरी, मोची,
लैगी, लैग दाता, दुख

परिभवा (स) तिरस्कार ।

परिमल । म । म । म ।

परिचय म अत्र गीतः ।

परिभाषा (म ' ग ल म, प
नाप, सङ्घाति, परिमल,
पुष्पाङ्ग ।

परिमित. (म रीति मे, अन्तः)
मर्यादा मर्यादा । (फल)

धर्मिणो न सन्ति शत्रव्यः, धर्म-
 शत्रवो न सन्ति धर्मिणः ।
 धर्मिणः

परिमाण [४] } अन्यः, मि
परिव्राजक } लुक्, यति ।

परिचय । म. मा. ग. य. द. प.
परिचय । म. मा. ग. य. द. प.
मे. द. न. त.

परिमल (घ) तटान, वनवि
परिमल (न), परिमल, वन
शेष, वन ।

परिहर (म) त्याग, यत्न
परिहरत् (म) इच्छता कृपा,
हर करण कृपा ।

परिहारि (प) को 'ड' का व्यंजि
को परिवहण
परिहारि (ध) को 'ड' का व्यंजि

अथवा अपमान ।

परिहास्य स] निन्दा व्यंग्यवत्,

તટા હમી, અંગ વચન લે
 માનુ નિ. મદા, મનાક
 પદ પા. મનાકલિન, કીર્તીતા

परी म क ५] : र' वा जेनेवावा।
परी म । म । रेखा ई देना, पा

अ. १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

परावृत्त प्रकाश । ५५ क'रमा ।

[illegible]

ਪੰ ੧੭੭ ਥਾਂ ੧੭੭੭ ਤਕ ਪੰ ੧੭੭੭ ਤਕ
ਪੰ ੧੭੭ ਥਾਂ ੧੭੭੭ ਤਕ ਪੰ ੧੭੭੭ ਤਕ
ਪੰ ੧੭੭ ਥਾਂ ੧੭੭੭ ਤਕ ਪੰ ੧੭੭੭ ਤਕ

दृष्टी काली मल डी काना

पक्ष (५) घनशतमान, बट
पक्ष (५) पक्ष, ल. व. व. पक्ष,

पञ्चाक्षा, पञ्च पञ्चो का,

पञ्चाश, पञ्चा, पञ्च ।

पदे निर्वृत्तः (स) पञ्चा का घर ।

पदेकारं (न) तंदोनी, तदा

पतन इत्यादि, का, वारी ।

पदेनृग (न) वाग, वृत्तीपादि ।

पदेनालाः (स) पदकुटी, पत्नी

का भवन ।

पदेष्टकः (न) मोरिपारी ।

पदेष्ट (न) धनदापर ।

पदेष्टकः

पदेष्टा (न) पापर ।

पदेष्टिका,

पदेष्टी (स) रोटी १ पपरी ।

पदेष्टः (स) तिहवर, वृत्तव

वनध्यात, पौर, गांठ, योग

उत्त कास के योग ।

पदेष्टनः (स) भ्रमर, घूमना ।

पदेष्टः (स) पदेष्ट, खाट ।

पदेष्टः (न) पदार्थवृत्त ।

पदेष्टपादिष्टा (स) सुवर्णमीमा

पदेष्टी (स) दास, वृद्धी ।

पदेष्टा (स) सीमा, पत्नी, तत्

रूप, परमा सिरा, पदधि

रुमाति, वहां तत् ।

पक्षः (सप) मांस, मांस, वृत्ता-

न वही का साठवां अंग,

१० निनेय, पक्ष, बोहा ३

तरह का बोहा ३ पक्ष

मांस की वृत्त वृत्ति,

पक्ष वृत्तान पक्ष सीमा ३

पक्ष पक्ष हरि वृत्तपरे

गोपित वृत्त सप्त बोहा ३

पक्षटना (प) किरना, वृत्तटना,

वृत्तटना ।

पक्षनः (स) मांस, तित ।

पक्षपुः (स) पेषात्र ।

पक्षायनः (स) भगीर, भागने,

भागना, भय से त्याग छोड़

भागना ।

पक्षपुः (प) पक्षपुः

पक्षपुः (स) काही, गुण, प,

हरिपुः ।

पक्षपुः पक्षपुः (स) पक्षपुः

कास का वृत्त ।

बोहा ३ दास बोहा ३

वृत्तपुः, वृत्तपुः पक्ष

पक्षपुः ३ वृत्त देखि तुम

राक्षिष्टा, काही मो-

पञ्चटोलीना नु पीडा ले लेना,
 लोटा लेना, बैर लेना,
 बंदना लेना, बैर सारना ।
 पवन. [स] वायु, पवार, बतार,
 टोस दावा, कद, जल, दवा ।
 टी० १ कसत सदागति
 पगिन पुनि, नाहत पद
 रग प्राग । पवन प्रभंजन
 सिखि पगिन, नभस्मान
 परमान ॥१॥ तुपतन परि-
 मन परमि लव, गीतत
 धीर समीर । तावहं बहु
 सममान कर, परिरंभ
 वत रौर ॥२॥ पुनः छेद
 गीतदा । पद पगिन
 नाहत वायु पृषदम् मनी
 रन नभस्मान । पवनरुग
 लवन समीर परिमल
 सदागति पदमान । हरि
 वात पामुगमा तरि झा-
 धनंजय जगप्राग । पुनि
 पवन पदगनस्य जनपुग
 मंध झाव बधान । टी० ।
 नाम पंचविंशत सकल,

सहित प्रभंजन होय । पट
 विंशत कलंगीतका, कहत
 कवि सब कोय ॥१॥ टी० ।
 कद तट्टा कद पयन धन,
 कद सविने पुनि धान ॥
 कद द्वित मंजर उपजे,
 भले न सुंदरस्वान ॥१॥

पवनकुमार [अ] हनुमान,
 भीम ।

पवनपुत, पवनतनय ।

पवनान् [स] पवन, वायु ।

पवार (२) नारण, लोहने ।

पवारे } [३] डारि, छाहे मारि,
 पवारे } छेद, पवारना, फेंकना
 पवि. } [४] कुलिंग, दध,
 पवि. } सीरा ।

पदिटाही [स] सीरामदि ।

पवित्र. [स] शुद्ध, निर्मल,

पापहीन, पाव, साफ ।

पवित्रता (स) शुद्धता, शुद्धार ।

पवित्रा (५) यज्ञोपवीत, कुंग ।

पवित्री (५) पदूठी निमेष ।

पट. (५) कल, चौपाया, रतु-

पद ।

पञ्चवर्ति [स] महादेव ।

पशुमारः (प) मृग्य बाधि को
मारना ।

पशुमेहनकारिका (म) चनसरा ।

पथात्- (म) प्रीष्टि, पक्षादकी पार ।

पथागाप (म) संताप, गोक,

पक्षताया, पक्षमीम ।

पशः (स) देख तू ।

पश्यति, (स) देखत है एक ।

पश्यन्ति (स) देखत हैं सब ।

पश्यामि (स) देखत हों, हम

एक, में देखता हूं ।

पयानज [द] नृदंग ।

पपाये. (द) प्रसासन, घोये,

पपारना, भोगा ।

पपारा- (द) पक्ष, पक्षरदिन ।

पयिन. [स] प्रतिपीडित, जि

धर मूर्ख चमत् होता है

पीछे मगरिष । [मुनार-

पशुनोहर- [स] गठकटा,

पपाय. [स] पत्यर, गिका ।

पसाज. पसाज. [प] छपा,

दया, प्रसन्नता, अनुपद,

पसाद ।

पमेव [प] पमेना, खेद ।

पक्ष. [प] समीप, गोर, सवेर ।

पक्षकटना. पीकटना, मु.

भीर बीगा, तडका बीगा,

रोगनी- फौजना, - दिव-

निकलना ।

पहरा देना. मु. जागता रह-

ना, चौकस रहना, बीबी

देना, रक्षणा को करना ।

पक्षनाई. [प] मित्रमानो

पक्षनाई } मेहमानी ।

पहरे में हाजना. मु. इव-हा

में रखना, पहरे को

सौंपना । [में रखना

पहरे में पड़ना मु. दशाक्ष

पहरावे. [प] भूणादि नारा

वा वस्त ।

पक्षिका. [म] पयठानी कोष ।

पक्षेकी [द] संस्कृत में पक्षे

अथवा का पक्षेकी का, पर

सदुत हेन वा हेड पना

करना । अथात् दृष्टि,

बुद्धिबुद्धिबुद्धि गृहस्थ, ये

प, बुद्धिबुद्धि, मुहरी, क-

कबुद्धिपक्ष । गीरी (१८)

से सुदरी, मल्लिप, मल्ल-
 पुष्पवत् में संतर है । य-
 या पहेनी—दटे बटे पर
 चन्द्र नहिं, ज्वाभवरच हरि
 नाहिं । वरप नंदारै रंग
 नहिं, विहरै मुनि जन नाहिं
 ॥१॥ (२२२) को पावै तो
 करि-पवेत । बैठत ही पां-
 धर-करि दैत । ॥ छठे छेत्त
 रुद्र को दहु पोरा । लाय
 दुखी करि झुझुधीरा ॥२॥
 [पांछ] एक तामाना देखा
 मात । नाच छटट दे घोड़ा
 पात ॥३॥ (बना) पादि कटे
 मैला हो लाय । नख बटे
 दह सबै सोहाय । अंत कटे
 घोड़ा छै लाय । पछित
 ताकर नाम बताय ॥४॥
 [कमल] एक चुहेरु घर
 घर रई, नाहि कखि घर
 लाग । हड्डो को रुस धूमि
 कै, मुँह से धमिलै पाग
 ॥५॥ [विपानलाई] फिर
 छेर दित्तै नहिं पीरा ।

साग धरम सब हारी तोर
 पावै विनु सब दिगा भु-
 लाय । मुई गोष पछित
 पछिताय ॥ ६ ॥ [चुन्वक
 की मूर्ति] आगे पीछे चलै
 नहिं, दुइ नूहां भदि होया
 लाय, पंगार चकीर नहिं,
 बिरला वृत्तै कोय ॥ ७ ॥
 [रिछगाही] पीर जेय [शिष्य
 मिलना] मिताव, संयोग,
 एक पसंछार जिस में एक
 मध्य के बहुत अर्थ होते हैं,
 जेमे कीकर-पाकर तार,
 सागन, फलसा पागला ।
 सेव कदम कचनार, पी-
 पल रत्ती तून तन ॥८॥
 इस में बहुत से पेहों की
 नाम पद्यात् कीकर पा-
 कर तार, सागन फलसा
 पामिला सेव कदम कच-
 नार पीपल रत्ती तून तन
 देखाई देत है पर, इसका
 पद्य यह है कि परमेश्वर ने
 मुझ पर कृपा की कि जिस

तुम्, पागम पानन्द वन,
करतेपरस्परदात २ हृद

धत्ता ॥ अहं हिम पथी

गङ्गा पतनी पद्मकुंति

नम संगमा ॥ वीपथी तं

गाथानि विहंगा विहिति

विहंग विहंगना । पुनि

यद्यस् पथरथ पतन गगन

पथ गत नाग पौ खे

चरं ॥ यद्य हृद सुधत्ता

दृक्पतिम गता विहरनाम

तेहम करं ॥१॥

पञ्चम् (स) पञ्च ।

पञ्चम् (स) पञ्चदो हा अंश ।

पाङ्क (स) पियादा, मत्ता ।

पा (स) पनु, चरण ।

पाङ्कज (स) सावधान ।

पांवर (स) वृषण, नीषा ।

पांमु (स) धूरि, धूसी ।

पांमुपथीय (स) घनपापर

पांमुषवन (स) रेहमिष्टी ।

पांङ्गि (स) समीप, निवृत्त ।

पाञ्च (स) रजोई, लोई, पञ्चा,

समुद्र, एह समुद्रका नाम ।

पाक (स) कालानोन १ सोवर
गोग २ ।

पाकी (स) परिपक्व ।

पाञ्चरिपु (स) इन्द्र, स्वर्गपति,
पद्मदुष्ट । श्री • काक सं-

गानपाञ्चरिपु रीति । कृत्ती
नधीन सातहुंन मतीती ॥

पद्मात्तौषा हे समान पा-
खेनामा राजसे काः परि

को इन्द्र ताकी रीति हे
दृत्ती मद्योगता श्री-कतहुं

मीति नाही माव राम भ-
कन पर सब मीति करत

तहंल सारथ देखत हैं ।

पाङ्कचार (स) चिंवाचार ।

पाञ्च (स) पंच, पंख, पञ्च-
१५ दिन को ।

पाङ्कड (स) दंग, डिङ्ग ।

पानि (स) छाने, सौने, पागमा ।

पाञ्च (स) संख्यावाचक,
पंच दो चीर तीन, इन्द्र

प्रदुप, पंच । श्री • जोर
दात सब विधिहि मताई ।

मज्ञा पांच कत कबहु

सहाई ॥ मजा पाच भर्थात
 पंचायत मा पा कावाक
 रडा हे तिम म तुन मी
 सहाय करींगे ॥ पा ॥
 तुम्हे पाच मार भलमानी
 पावेसु प दिव देन सु
 कानी ॥ भर्थात तुम पावे
 हमार दित मानि के पा
 र्थात् विरोध म मानि के
 पुन धी ॥ जो पाच म म
 लागे नीका । बारह हरपि
 दिय रामहि टीका ॥
 भर्थात् पांचदि पची की ।
 जो तुम पंचन की गर
 मग सोहाय मी हदन
 हर्षित करि रघुनाथ की
 टीका करइ । पांच मान
 मिल कोजे काग । बर
 भले नहीं पावे लाग ॥

पाञ्चाली (स) पोपल ।

पाट (म) (प) शम, पटुना,
 मम, चौहारे ।

पाटमहिषी (म) पाटराणी,
 विवाहीराणी ।

पाटस (स) वृक्षविशेष, गुलाब,

देवतक केवल फुलत पर
 कलगतहि पापरि । दो०
 पाळी पटना कलनुहा,
 वाग्या म्यामा नाम । पर
 रण मनुषीयसे, पाटस
 करत प्रनाम । [वृक्ष]

पाटला (म) लता लसी पांडर
 पाटला- (म) माठो धान ।
 पाटलादिना से कठपांडर ।
 पाटलि म गुलाबीरह ।
 लाय ।

पाटकी (म) कठपांडर तुम
 कठपांडर ।

पाटनिपुत्र (म) पटुनातमर
 पाटोर म मकर कण्ठ मू
 पाटे पे मभी दाद भरे ॥

रदेता, भरदिवा, पाटला
 गठीत द पटिता, पाठिना म
 कनी । [पटना]

पाठ (म) पटन, पध्याय मया
 पाठक (स) पटानेहार । पध्या
 पक पटानेवान ।

पाठन (म) नायक नाग पट
 माला, पटानता ।

पाठा पाठिका (स) पाठी ।

पाठिघातिनी (स) रुपेदरताण ।

पहाड़ धीराते, सु० लंभीराते,

बड़ो राते, दुख की राते ।

पाँचठाना या, बसाना, सु०

भटभट बसना, सलुदी

सलुदी बसना ।

पाँचउतारना, सु० पाँच का

सीढ़ टलना, पाँच गाँठ से

छँदना ।

पाँचकाँचना या घरघराना, सु०

किसी काम के करने से

हरना ।

पाँचकिसी का उखाड़ना, सु०

किसी को किसी काम पर

लगने नहीं देना ।

पाँचकिसी का गले में डालना,

सु० किसी मनुष्य को उसी

की बातों में प्रसन्न तर्क से

दोषी पचवा, अपराधी

ठहराना ।

पाँचबस जाना, सु० दगमगा-

ना, बसिर होना ।

पाँचबसाना, सु० दड़, होदे ठह-

रना, मजबूतीसे ठहरना ।

पाँच जमीन पर न ठहरना, सु०

बहुत प्रसन्न होना; बहुत खुश

होना, बहुत घमंड करना ।

पाँचसात, सु० घबराहट, व्या-

कुलता, भ्रंभट; जंजाल,

सीधा पथ से बाहर ।

पाँचहालना, सु० किसी बड़े

काम के करने के लिये

तैयार होना; प्रीति प्रस

को शुद्ध करना ।

पाँचडिगना, सु० फिसलना,

फिसलना, रपटना, किसी

काम से हिरात या हार

जाना ।

पाँचतलेमलना, सु० किसी को

दुख देना, पिछाना, स-

ताना, पोड़ा देना, खराब

करना ।

पाँचताँड़ना, सु० किसी के मि-

लने से रुक रहना, किसी

मनुष्य से मित्रने के लिये कई

बार जाना, घबरा जाना ।

पाँचधीधीपीना, सु० बहुत

मानना, किसी का बहुत
विश्राम करना, बहुत
रुकासट करना

पावनिकालना ३० रगड़ना

सुखीटा १०११ ट में बहुत
जानना, किसी बड़े काम
के करने में फिरना किसी
अपराध के करने में सु,
खिन्न होना ।

पावपकटना, १०१२ रगड़ना

अथवा अधागी में बिलना
करना, किसी का जानने
में रोकना, अधीन होना
शरण लेना ।

पावपहना, १०१३ घिसियाना,

विहगिहाना, गरीबी में
बिलती करना, रगड़ना
करना ।

पावपरपावरकटना, १०१४ टमरे

गमूच का आस चलना
रगड़ना, अथवा लेनेना,
टमरे की आस चलना,
ऐसफेल उठना, गाराग में
बैठना, एक पैर की टुमरे

पैर पर रख कर बैठना

बड़े तलाशा करना:

१०१५, पार्थीपार्थी, सु,

पटन, पियालेवा, पैरी

पाव ीटना, १०१६ अधीरता से

पाव पटकना, धृष्टा की
शिम करना ।

पावपुलना, १०१७ किसीको बड़ा

जानना, किसी से बचना,
अलग रहना, दूर रहना ।

पावपुलकेसरखना, १०१८ रगड़ना

एक काम का सावधानी
में करना, मरुतु कर
काम करना ।

पावफेल कर सीना, १०१९ सुखी

रहना, पैर में रहना,
दब, व न रहना, रेखद
रहना, गिडर रहना ।

पाव फेलाना, १०२० हठकरना,

अडना ।

पावभरकाना, १०२१ पाव ठि

ठिठना, पाव में रगड़ना

पावरगटना, १०२२ धृष्टा की रस

खेता से भटकना, किरा,
धृष्टाकर जाना, मरने के

दुख में होगा ।
 पाँचसंगना नु० प्रयागकरना,
 ननस्कारकरना ।
 पाँचमेपाँचधांधना नु० दिखी
 है पाँच बराबर बैठा रह-
 ना, पदवा किसी की खूब
 रखवाही करेना ।
 पाँचवेपाँचमिहाना नु० पास
 होता । [जाना ।
 पाँचसोना नु० पाँच सुन हो
 देवेपाँचपाना नु० धीरे से पाना ।
 पाठीनः (स) सहस्रदन्त का
 मीन, होपारीनछत्ती, रीह
 पढ़िना, होपारीनीन ।
 पाठी. [स] चीता ।
 पाठगाँव [स] पठनस्थान,
 स्कूल, मदरसा, पटसाला ।
 पाट (स) तान्बूष, बस्तु की
 माड़ी । [दूकान ।
 पादि (स) हस्त, पद, हाथ ।
 पादियहप (स) व्याह, विवाह ।
 दोहा । कर पीहन पानो
 मदन, हयविहित वि-
 वाह । सीतिज परिभव

नहिं कहूं दुख देतोयनि-
 नाह ।
 पादिनो [स] सुगीविशेष,
 व्याकरण सूत्रों का बनाने
 वाले । [फौका ।
 पाण्डा (स) पीसा, सीठा,
 पाण्डव (स) युधिष्ठिर, भीम,
 पर्जुन, गङ्गुछ, सहदेव,
 पाण्डु राजा की पुत्र ।
 पर्जुन—दोहा । । पर्जुन
 हेम पर्जुन धवल, सहसा
 पर्जुन तत्व । पर्जुन बहुखो
 पाण्डुमुत, हरि । खेत्ता
 जिह नय । २३ पुनः दो० ।
 नदी-सर्जोपर्जुन कङ्कभ
 रिंदूद्रुतक मोर । तुम कष्ट
 देपि राधिका, जा दिनु
 हृदय पधीर ॥ १॥ पुनः—
 लंदीवेदी । गाँधीवि दैत्या-
 री पर्जुन कीरीटी धनंजय
 कपिधन नर खेत बाघी ।
 कीर्तिव फालगुण गुडाकेश
 विष्णु हयसेन पीदे तवा
 मय्य पारी । भी कामुकी

१. मध्य पौष्टिक विजैरघ वि-
 होजातने पार्थ यो गच्छ
 २. भेदो ॥ यो कर्मेवलो स-
 ३. दितः नाम पादय कला-
 तीसतय येकद्वी छंद वेदी
 ४. ७३१॥ दोहा । अग्निधनं गय
 ५. ॥ कद्वी केदि, पयन धनं गय
 ६. ॥ पादि । अर्जुन बहु रि धनं-
 ७. ॥ कय, कृष्ण सारथी जादि ॥
 पाण्डरी (न) पादुका ।
 पाण्डित्य (स) पण्डिताई, विद्या,
 सिद्धि पण्डितहीना ।
 पाण्डु (स) पीला, पंडुक प-
 ८. ॥ श्री, हरका देवही कम ।
 पाण्डुच्छाया (सि. सिन्धु) पी-
 ९. ॥ श्री छविवासी ।
 पाण्डुच्छायापवनप्रयतः, (विद-
 १०. ॥, गार्ग्यः) पोसी है बागी की
 ११. ॥ सोम, गिन की ।
 पाण्डुता (स) पीलापन ।
 पाण्डुपण्डु (स) सात भाग ।
 पाण्डुद्रुम (स) कीरैपा ।
 पाण्डुपुत्री (स) रेनुका ।
 पाण्डुर (स) शक्कल, गुल ।

पाण्डुनीगमपथी (न) बनवदि
 पात. (स) पतन, नाश, निरता
 पातक. (स) पाप, दोष, अप-
 १२. ॥ राध । १२. ॥ १२. ॥
 पातकी (स) पापी, राखव,
 १३. ॥ अथर्मी, दोषी ।
 पातिन्. (स) निरनेवासा ।
 पातञ्जल (न) योगशास्त्र, पा-
 १४. ॥ तंनस मुनिप्रणीत । (री ।
 पातालगदुही (स) पाताल गदु-
 १५. ॥ पाताल. (स) नीचे का सोडा ।
 पातु (स) रक्षा करो ।
 पातुग (स) पीने की ।
 पातो. (स) बिट्टी, पत्नी ।
 पात्र (स) वरतन, वासन, पा-
 १६. ॥ धार, योग्य, भाजन ।
 पाथ, पाथी. (स. द) पथ,
 १७. ॥ पानी, नीर ।
 पाथक (स) बाट, राह ।
 पाथकी (स) बटोही, राही ।
 पाथा. (स. द) जहाज ।
 पाथर (स) पाथाप, पथर ।
 १८. ॥ दोहा । उपल पथमपावन
 १९. ॥ गिला, पाथदपत पाथान ।

प्रसार घना-पञ्चानु दध,
पावर नाम वपान ॥३॥
पुनः—दीक्षा । पायो पञ्च
पत्तर रपद; पुनि पावान
पति भार । पायी पर पा-
वन तरे, साहे नाम प
धार ॥३॥

पाथेय- (क) नामी का मन्त्र,
कुसुमा, तीक्षा, नामी में
धाने की सागरी ।

पाथेयत्- (क) जिसके पास है
गार्ग्य धाने की सागरी ।

पाथोज- (क) कमल, पंचजादि ।

पाथीह- (क) दीप, पाथेय ।

पाथीधि (क) कलमनुद्र ।

पाथ- (क) दीप, भाजन, दर्शन ।

पाद- (क) ररप, पांन, किरप.

श्रीहृत्वा एहृत्वा, श्रीहृत्वा

श्रीदार्भाग, श्रीवाभाग ।

पादधार- (क) पांथी चलनेवाला ।

पादधारी- (क) पदातिव, पा-

दिह, पादा, दीराहा ।

पादनाप- (क) पनरी, खड़ांठ,

लूना, मोटा । दी० १ पद-

वान की पान पुनि, पाद-
पुठचदुभाय । पनहीं मन-
हीं भावती, पागेधरी सु-
चाय ॥३॥ [गाथ में ।

पादव्यास- (क) पैर रखना लेहे
पादव्यासकदितरसनाः, (वि-
वेक्षाः) पांथ रखने में वजती
है तामही जिन की ।

पादप- (क) वृक्ष, पेड़ । कपि-
हार, १ वेत्तिपापीपर २ ।

पादपीठ- (क) पीड़ा, पदा-
चन, खड़ांठ ।

पादप्रहार- (क) दात, पदा-
घात । [एही ।

पादमूल- (क) गुल्फ, पाखी,

पादगाम- (क) मङ्गापर ।

पाटार्पण- (क) पैर देना, प्रवेष्ट ।

पदामन- (क) पादपीठ, पदाधर ।

पादिन- (क) कलत्रमु सोष
धरिपास पादि ।

पादो- (क) पयठानीशोध ।

पादुका- पादुभाय- (क) पनरी,
वा खड़ांठ ।

पादायुध- (क) सुगी, कुहट

पानरं]

पानरं (२) अधम, दुष्ट, नर
पयु, पर्याप्त वेहें तें गरे,
दुहि ते पयु, नीच, खल,
दुर्जन, यत्नीगद ।

पान्महा-पान्महे- (प) दुखीना,
सतरंकी आदि पनुधारप
का वडा ।

पानीकरना, नु० सजाना, च
पाना, सजितकरना, स
इन करना, सुगम करना ।

पानी का कुलकुना, नु० पस्त्र
चंवर, यह मुहावरा प-
स्त्रिता छतलागे के विचे
होता जाता है ।

पानीदेना, नु० पितरों को
सलदेना, गर्वपकरना ।

पानी न मांगना, नु० तब
वार आदि के एक ही
वार से तुरत नरवाना ।

पानीपड़ना, नु० जेह बरसना
पानी बरसना । [सरापना]

पानीपोपीकोसना, नु० दहुत

पानीमेंना, नु० नीचाहोना,

तुष्टरीना, निचाई को
मानलेना, मरमाहाना,
पक्षिगता करना ।

पानीमरना, नु० ससजाना,
सजाना, साजसजमा, किसी
बात का इमारा करना ।

पानी में सागसगाना, नु० लो
भगड़ा-निटगवाही ससकी
फिर छठाना वा प्रतीति
करना, साक्ष्य करना ।

पानी से पतछा करना, नु० स-
जितकरना, सजाना, स-
पाना, तुष्टकरना ।

पान्वर (स) नीच, नूठ, नर-
पयु समीचाणी ।

पान्वरी-पांवरी- (स) पनही
का खड़ाई ।

पाय (फ) बरप, पग ।

पायक- (फ) दीराहा, कासिह ।

पायन- (प) पयु, बरप ।

पायनेगिर- (प) पयुपहरि ।

पायोधि- (स) ससद्र ।

पायस- (स) खीर ।

पारवी- (स) नदी का मिद ।

पानाग, प्रसन्न करनेवाला ।
 पारिषद (स) सहचर, देवपैदा
 दुन ।
 पारिष [स] } परासपीपर ।
 पारिष
 पारी [व, द] डारी, बारी, पासी
 चवसर, फेंकी, पारना,
 फेंकना भेंस का बच्चा ।
 पार्ष [स] पर्वण्यपाण्डव ।
 पार्षद } [स] नूर्तिठाकुर,
 पार्षद } मिश्र, राजा, पु
 ल्ही का, गद्दीका ।
 पार्षती, पार्षती, [स] मिश्र-
 की नारी, दुर्गा का एक
 नाम, तीसी ।
 पार्ष [स] रुमीय, पीनर,
 दगल, पाल, करोट ।
 पार्ष [स] परासपीपर ।
 पार्ष (स) वेदक, दास, टहलु ।
 पार्ष (स) रसक, भाकी
 पार्ष । [दहरान ।
 पार्षदग (स) दहभद्र,
 पार्षद (स) पहाड़ीभाग ।
 पार्ष (स) दोहर, रसक,

मानन, रचा, डिफाजत ।
 पार्ष (स) छार, पता, भाषा,
 पल्लव ।
 पार्ष (स) पवीन ।
 पार्षपहना मु० दूसरे के वस्त्र
 में पाजाना, जैसे, चो०
 पाज करके उस का
 हवासे । परेश कठिन रासन
 के पार्ष (मानसराजपरित)
 पार्षी (स) पार्षनयोग्य,
 पार्षत ।
 पार्षिणी (स) पार्षर ।
 पार्षी (स) दोहा । सुखी रा-
 मटीमय धवरि, कपोती-
 ग्नी परवाच । तुष पधर-
 न सम कहत कहि, रम-
 हिं सुदुस रसाच ।
 पार्षकः (स) भरने के वाली
 के रहने की कगह ।
 पार्ष (स) पार्ष, पार्षार-
 क, पाग, हंड़, पार्ष-
 गाधरी । पार्षका जात
 वेद कोहिताच हवा, क-
 पि पार्ष कददि कगहिं

स्नाहापति विद्यमानः ।
 भीत होय तेनागर पावक
 विरण्य रेत ज्ञाना सोतन
 निपातमभीगम मङ्गलान् ।
 क्षण बर्माभयान धर्मजय
 'छपोट याति क्षति गङ्गा
 गिल्लीपाप्तापास निज
 वानत गोभि नेमज्जगने
 हम्बवाहमे जगो वना
 खान विभावमपगो पुन
 गा जगान ३१५ दोहा -
 सुवस्तमम दत्त भुक्त धन
 क, दहन नाग बाभीन ।
 दग घनाशर मेन विन,
 गुह कथु वणं बर्तीम ३१६

पावके (म) विद्योता, पाव
 रचने का पण ।

पावक (स प) पवित्र, पाण्ड
 कसे पावे मेरी । [मन्द

पावरे (व) पामरे, नीव, भुङ्क,

पावरी (छ) पादुका, पादुका ।

पावली (म) नदी, करिता ।

पावध (द) वनोच्छेद, वप
 काव ।

पाग (स) वस्त्र, डोरी, पाठा,
 कांसी, कन्दा, मोर, तेरव,
 पंखडी, कान, लुहा (लेवे
 वेगवाग बाधो सो कूड़ा)

पागो (स) वधिव, व्याधो ।

पागुवत (स) बडा मोतसी ।

पागुन (स) कायापची ।

पाप (प) पच १५ दिन ।

पापाण (स) पत्थर, पिछा,
 ममग, अमग, मत्सर, बरग

पापयमैद (स) हलाजोडी ।

पाम (म प) जक, नीर,
 निगाह, समीप, पाय

पासवति (म) बहवदेवता
 पाथर ।

पाप्यमि, (म) विधिमातृ ।

पादन (म) पत्थर, पायाव ।

पादकपतीती (द) विद्या
 पासे चौकीदार, विद्या

पादक ।

पादि (म) रक्षा कौ, नीव

पादी (प) पाण, निवट ।

पाइन (प) पतिवि, पञ्चावत,
 पाठ (प) पति, जन ।

पि-(स) पागकशी, पागः इच्छित ।
 पिक (स) कीर्तिपद्मी, परभृत
 कीर्ति, चानि, । "दो-
 पिक सुकंठ पापिक इरी,
 दांतप कश सारंग ॥ वैत
 सुधा सम सुगत नग, जुगप
 किमोर लसंग ॥१॥ परभृत
 कलरव रत्नद्वय, पिक धनि
 लहं रस पुंग । लघु-पिय
 कदित निरख तोहि, टेरत
 वसि वसि - कुंज ॥ १ ॥"
 मानसरानपरिव न सिखा
 ही । दो- । इय आय हो-
 टिक- केरिद्वय, पुरपद्य
 चोदकः मोर । पिक रथांग
 सुख सारिका, सुतरस हंन
 चलो रड ॥ पर्याप्त वसि
 पासे रूप, पुर पद्य खान
 पादि, पिक कीर्ति,
 रंदिग चरवा, सुख रूपा,
 गारिका सैना ।
 पिच्छवन्तः (स) पानहय, ।
 पिकपैगी- (स) कीर्तिपद्मी
 दारी ।

पिकरय, (स) पिकसमूह,
 पिकवसभ- (स) पाग ।
 पिङ्ग (स) सूर्यवर्ण, पीतवर्ण,
 कपिस ।
 पिङ्गल- (स) सूर्यवर्ण, सूर्य का
 मोसाहेव, पीत, भौता,
 पीछा, मास्तविशेष ।
 पिङ्गला- (स) पीतल ।
 पिङ्गला- (स) हिंछोला, भूला ।
 पिण्डर- (स) पनारसुखा ।
 पिस्तक- (स) पीना ।
 पिष्ट- (स) खुरागा ।
 पिशुगन्द- (स) नीमवृक्ष ।
 पिशुमर्ह- (स) नीम ।
 पिच्छादीशक- (स) कमरप
 पिच्छला- (स) शीतल लंगरी ।
 पिच्छा पिच्छायादे- (स)
 पिच्छाभासलशी- } नीचर
 पिच्छिसः (स) बहुभार ।
 पिच्छा- (स) पक्षर, पक्षी
 भदन, मूरा ।
 पिच्छिष्ठ- (स) वंशपत्री ।
 पिच्छ (स) देह, तन, मोक्षवन्त ।
 पिच्छ (स) लोहा ।

पित्तसः (स) पीतल धातुविशेष,
पीतलं, पीतरं

पित्वाः (स) पीकै, पीनकरि,
पीन किया।

पिनाकः (स) पिबन्वय, ति
शून, धन्वा, धेनुयः केना-
न, महादेव का धनुष।

पिनादिकः (न) मन्त्रविशेष।

पुद्गायका

पिपामाः (स) तृषा, प्यास।

पिपीनिकाः (स) छुंटी, पिपरी।

पिप्लः-पिप्लोः (स) पीपर,

पीपेल, पीपल का फल।

पिप्लोमूकः (स) पिप्लामूक।

पिपः (स) खासी, मेसी, प्य-

रा, पीतल, दी, हटता

दंपति इस पुनि, प्रियमतीरि

सहीय, पिय थी तो

की दलगा, पीर न देडो

की घाटा राखे

पियदहरि (स) राजदेवीपुष्य।

पियः (प) पति, खासी, प्यारा।

पियालः (स) पीरोली, पिरं-

वंधी, मन्त्रविशेष।

पिरीतः (स) पीत, पीतमं, पीति

युत।

पिरीजाः (क) नाम, पत्यु रक्त

यप, पीरीजा मणि, जंगली

रंग का नवि।

पिशुनः पिशुः (स) दुष्ट, बैरी,

निन्दक, सुगुन, सुगुन

दिखानेवाला, देकरा।

पिटिकाः (स) हरिदः पादि की

पीसी डूँडे, पीठी।

पिहितः (स) मांस, मीठा।

पिमाचः (स) राघव, नाति वि-

पिमाच (द) राघव, बैतान।

पीठ के पीछे हाथ लगा सु-

बचाना, पकड़ना, रखा

करना।

पीठ से पीछे पहना सु, शरभ

पीठठीकना सु, टाढ़ मु देना,

साहचर देना, हिमालय बांधना।

पीठ देना, सु, भागमाना, कि-

रगा, हटना, ठगना, च-

मस, होकर, फिराना।

पीठपर दाय फेरना सु, पीठ

यपवचना, मायागी देना,

टाडम देना।

देने में रुकना।

पठफ़िना म० पनाकाना

प० १० स्वामी, पति, प्रिय।

मागना डरना।

प० (म) पगरी काबाच-
प० (प) दगे गाम, मुख्य

पठनगना म० प० गव गव

गि, चामन, पोडा, दैव

हान, जन गडि ह।

विशेष पिछाडी।

प० दे पव पाना।

पोडाकना म० अटवना, व

पोडक (म) पोडा, बैठकी

गदना पोड गडि कना

काटकी।

पोडाकना म० क० ग०

पोडन व विवाहयज्ञ।

१० ग० कानना

१० ग० १० दृष्ट देना है।

पोडकाकना म० प० क० कानना,

पोडा (म) क०, क्रिग, दृष्टी

चाग निकलना, अग

दृष्टा व० वा विगुहा वि

कटना।

दाह। पोडा अविगम

प० क० दना म० प० क० कानना

ग० अमन वरमन की

दवाग वारवा म० गना

बाल किनीमप्रद गडि

मगना कडना बिम्बा

ग० १० १० दृष्ट वा दृष्ट

ना गव देना १० गड

न म कडि मडनी १०

काना।

म वना वन ग० गव कड

पोडेकना म० १० कानना

कन वदन दृष्ट म० १०

कायकीना मायकना

वावा विवा वनन गडि

अगडिना।

पदकनग काना क० पोडा

पोडना म० पाना प० कानना

अप म० १० दृष्ट वनन

कायकीना, १० व० पोडा

टिरे टिरे वनन वनन

मायकीना ग० कानना १०

वन वन कन 'दृष्ट' वि

पोहित हृद सिंघनी तीम
फला को ११ । दोहा ।
पोहित इन्द्रि वज्रांग-
ना, मखो बाम इक पाय ।
हृदयनता जनु स्वर्ग ते ,
परदि परी मरभाय ११
हृद मारवती । कीम ट-
मा तब मादप्रिया । सीम
करी छहरात रिदा । काह
भं हवि देववती । तीम
भगानम मारवती ११ ।
पोहित (म) हटी, वल्लभमान ।
पोत (म) पोला, बसकुट, लदे ।
पोतक (म) हथूर, बंहर, किं-
दिरात ।
पोतकदन (म) पोत कदन ।
पोतदाह-पोतदु (ह) दाह-
हलदी ।
पोतन (म) पनहा ।
पोतपुष्प (म) भुरा कीरहा,
भोगी । [दिहदा ।
पोतपुष्पा (म) सिहमा, महे-
पोतपक (म) विरोडा ।
पोतपेद (म) पोहा ।
पोतपदक (म) किहियात ।

पोतरक (म) गोमेदगनि ।
पोतरीहरी (म) मफारा ।
पोतरीज (म) मेघी ।
पोतहच (म) मरक ।
पोतसाजक (म) पापन ।
पोता (म) हरिदा, हल्दी,
दाहहन्दी, दाघ ।
पोत-पोषर (म) पुट, मोटा,
मादा, लूण, तुम्हेषा, गो-
दधि ।
पोनस्कन्ध (म) मैमा ।
पोषर (म.प) मामान्यहृष, हृष
सिंद । पोषधि । दोहा ।
का हया गोधरी, तिम्य
तुम्हा होत । बैदेरी स्वामा
वमा, भुंटी कहिये सोय । १।
यह पोषर हलि भुंगहन,
कहन हहन परवार । यक-
ले हतनी करि कुंदरि, मो-
तम मान अधार ११ दोहा ।
यकदन पोषर मरक यकन,
हंघ हस्त यकन । पोषर
देवन् दाहिने, कोरि दाघ
रितमन ११ । पुन । हे

बलदल अश्वत्थ हे धर्म ग-
जाग्रम बांध : हे विष्णु
कित साधनी, कोजे गो-
हि प्रबोध ॥१॥

वीपरि (म) लघुपीपलि । [यः ।

वीयमान (म) वीया जाता हु-

वीयुष (म) चमृत अश्वत्थ
घृत ।

वीलु (म) अमर । [दारः ।

वीलुपर्णी । म । वृद्ध, पुरन

वीवर (स) जातिविजिष पट,

मोटा । [सतावर

वीवरी (म) सरिवन, पहाडी

वुं (म) पुरुष, नर, पमान ।

वुंलिङ्ग, (म) पुरुषचिह्न, पुरु-

षत्वः । [रचो ।

वुंली, (म) वृद्धा, व्यभिचा-

वुं (म) नर अर्थात् लो नर्त्त ।

वुंली (म) लोपारी ।

वुंली-वुंली } (म) सुप्यारी,

वुंली-वुंली } कर्मली, भाषा

वुंली : दोहा : छोटा कुर्मक

वुंली-वुंली, वुंली-वुंली पा

वुंली-वुंली इति संज्ञा

बलि, रंवेक यदि तं चा-

दि ॥१॥

पुल्लव (स) पक्षी, योष्ट, बड़ा

पुच्छ (म) पूंछ, लींग, दूध

मेडा । [संसूट ।

पुल्ल (म) टेरी, रागि, बीर,

पट (स) पात, निपात, द्रव

कारक, घुसाव, दोना, टी-

कने को वस्त्र हस्त की नई

कापली का ठांकनेवाला

परा । [गाठ, प्रतिष्ठा,

पटो (म) दोनापात, पुडिया,

पण्डक (म) माधवी फूल ।

पण्डरीक (म) लासधान, ई-

फेट कमल ।

पण्डरियक (स) कुमुदवा, :

पण्डरी (म) भिन्दवनपर ।

पण्डरीक (म) नामविमेक

कमल, दोहा : पण्डरीक

सायक कहत, पण्डरीक

पाकात : पण्डरीक इति

कमल कहं, तही बरक

को व स ॥ १॥

पुण्य (म) सुकृतकर्म, कीर्ति,

धर्म, पवित्र, पच्छा काम,
सुन्दर ।

पुत्रजनः (स) राक्षस, सुकृति-
जन, पुत्रिमान । [भट्टारी ।

पुत्रिजनः (स) कुवेर, सुभ-
पुत्रिजनः (स) गौरी, कृष्ण ।

पुत्रिभूमिः (स) पाय्यावर्त, प-
नर्षद ।

पुत्रिभूमिः (स) उत्तमभूमि, क,
नारीचण्ड, भागनाग ।

पुत्रिभूमिः (स) दाता, पुत्र-
भूमि, पवित्र । [मा ।

पुत्रिभूमिः (स) पुत्रि, प्रति-
पुत्रि (स) पुत्र, एक नरक का

नाम है दधाना, जो पुत्र-
जान नरकासे अपने बाप

को दधाना सन्तान, दधाना-
वेदा, पवित्रकारी, पातन-

नाम है । दोहा । दधाना क-
द्विजे कश्चिरे रंग, पातन

कद्विजे काम । पातन पुत्र-
सन्तान है, भजे जो सुन्दर

स्वः नरकासे । [रक्ष ।
पुत्रि (स) पवित्र, गौरी-
दधाना

पुत्रजनः (स) सन्तान ।

पुत्रजीवा (स) पितृवर्जिता ।

पुत्रदा (स) सन्तानां [हिंया ।

पुत्रिदा (स) कन्या, बेटी, गु-

पुत्री (स) बेटी, सहको, कन्या ।

पुत्रिष्ट (स) सन्तानार्थयज्ञ ।

पुत्रवः [ट] प्ररीर, देह ।

पुत्रवः [स] प्ररीर, देह ।

पुनः (स) पुनः, फिर ।

पुनः पुनः (स) फिर, दोबारा,

बारम्बार, एक नदी का

नाम ।

पुनरः (स) फिर ।

पुनरुक्तिः [स] फिर, पुनः,

नः कथन, द्विक्ति, दुबारा

कथन ।

पुनर्भू (स) पुनः, पुनर्भू ।

पुनर्भू (स) पुनः, पुनर्भू ।

पुनर्भू (स) पुनः, पुनर्भू ।

पुनर्भू (स) पुनः, पुनर्भू ।

पुनर्भू (स) पुनः, पुनर्भू ।

पुनः [स] फिर, पुनः, दोबारा ।

पुनी-पुनीतः [स] पवित्र,

अथ, शुभ ।

पुत्राग [म] के शरीर, पुत्र । टी० ॥

हे केशव मुरवज्जभा, तुम
पुत्र पुत्राग न किते गई
मीलावरो, जाय अथवा
सौभाग ॥१॥ छंद सुवास ॥
विने सुनि स्याम गई म
शिता समुक्त य प्रिया संग
मी नय पादे । विनोद गु
पास मग य न जन् मोरद
मी छवि विदुत छाने ॥
अनि बहुवाद करे शुभगान
द्वियागण लय निजाम क
छाई ॥ सुनि जगन गगन
पनि अंत सुधाम सुछंद
कछो पटिराई ॥१॥

पुत्राट [म] शकवह । [नहीं]
पुमम् [म] नर, अर्थात् स्त्री
पुमान् [म] पुत्र नर ।

पुत्र (म) — वस्ती जाके पाटि
द घर ते चल १॥ घर ,
भरा, पुत्र, देव, नगर,
पुरा, गाँव, गहर पाग,
मरीर, गुम्बज

परपरिचारक (म) परम्पराते
की परिचायी। करनवाने।

पुत्राय, पुत्रायनी म] रा-
जा, राणी, विशेष जाओ
कथा अतुल्यस्तु श्री मा
गवत में । विदित बि रा
जा पुत्राय के व मन्त्रा ,
अनुरागो पुत्रायनी प्रकृ
ति मन्त्रा अरु एक पुत्र
मन्त्रा मन्त्रा पुत्र देव मी
पाय के नाता पधार के
कोहा करि पद्यात निमर
गय, बाही श्री नारद प
मीनों को छवि अपूर्व
महा-त्कट शंभा पमैगा
दशा विमानयक पर्वत प
र । पागी महा पुत्रायनी
मन्त्रा पाके पुत्रायनी की
मन्त्रा, पाके पुत्रायनी मा-
या मन्त्रा देखि के मन्द
के भीतर १० दशो प्रवेता
राजा प्राचीन बर्हिष पुत्रों
की सन्नाद कियो है इति
नारदपुत्राय पायायनी

भागवत ४ स्कन्ध अध्याय
 पादि २६ पर्यन्त २८ प्र-
 भाष, ताही को पुरंजय
 पर पुरंजयनी दमोजीव,
 माया, संज्ञा, पर महा
 पुरुष तम्र संज्ञा को उपमा
 जोमा की योराभाय
 पयोध्याकाण्ड यो-राम,
 सत्त्व, मीया, वनजात
 मग गांभ दियो गयो। श्री
 समय बीच मिय सीमत
 बैसी ॥ महा जीव बिच
 माया लैसी ॥१॥

पुरट. (म) सुवर्ण, खर्च, सोना,
 सुकट, रचित, कंठन।

पुरठ. (म) यवदंष्ट्री, कर्णदंष्ट्री।

पुर. (म) प्रभाष, भाषे।

पुर. (स) देशपालक, पोष।

पुर. (म) इन्द्र, स्वर्गपति।

पुर. (म) मत्त आवादि
 क्रिया।

पुर. (म) सामने, भागे।

पुरकार. (रु) पाद, दात,
 फल।

पुरस्तात् [स] सामने, पुर की
 पोर।

पुरा. (म) पूर्वकाल, बड़ा गांव।

पुरवा. भागे, पछले, तुरंत।

पुराकृत. (म) पहिले, जन्म के
 कर्तव्य, पछले किया गया।

पुराण. पुराण. (स) दृश्यविशेष

बहु कावक, पुराण, श्री

जगद्व्यास वतार, टी. ॥

लेनी मत की वृद्धि दित,

श्रीश्रीश्री प्रबोध ॥ १ ॥

हरिजन कहत सब, जग-

दाय है, बोध ॥ १ ॥ रुंद र-

तिलिपा ॥ जल-हेतु पव-

तार, हरि पाप कीन्ही ॥

जग मन्द, जल-लंतु प्रमुकं

कीन्ही ॥ दयदर्शनगदोग

भव ताप नावे ॥ रतिलेख

कलकंद चलोस भावे ॥ १ ॥

टी. ॥ पतुर्निगमः संसार

दित, प्रगट, किये भगवान।

ध्या रुदेव तासी कियो,

पछादम पोरान ॥ १ ॥

श्री. ॥ दगद्वार है

देवराज, मन, पुर-
 या, मर्द, [नोच, पाकम]
 पुराण. (स) धर्म, पर्व, काम,
 पुराण. (म) तिलपुष्पी,
 पुराणोत्तम. (न) नरोत्तम, ना
 रायण, नरसिंह, देवरा.

पुराण. (म) इन्द्र, स्वर्गपति।
 पुराण. (स) देवराज।
 पुराण. [म] देव भगवान्
 इन्द्र कहते हैं, यज्ञ के
 निमित्त श्री. विपति मोहि
 को मम हि सुनावा। पुरो
 काम कह रामग पावा।
 यथात् पुराणम होम करने
 की खीर को देवताओं
 का भाग है उसे मद्धा
 खाया जाता है।

पुरोधन् पुराण. [म] प्रवीर
 लन, पुराहित।

पुरा पुरीत. [म] मेतु
 मांसी, बाध, तट।

पुरा पुरावति. [म] रोगी-
 बित, पान्दुर, हर्माम्
 रोगी।

पुनक्ति, (म) पान्दुर रोगी
 मठे हैं जिमके, रोगीबित,
 रपित, पान्दुर।
 पुनक्त्य पुनक्ति. [म] मुक्ति.
 विजय, रावणविनाश।

पुनक्ति, (म) नदी में बाहुका टापू,
 उपकंठ नाम। श्री. कल
 पुनक्ति उपकंठतट. निकट
 स पश्चिम तीर तीर
 बलिजाट बनि, ए पाप
 विद पाम। ॥

पुनक्ति. [म] प नदीभेद,
 म. टी. गाठ, चंहाज।
 पुनक्ति (म) कमल, लल, समुद्र,
 पाकाम, गयण, तीर्थ,
 पावहर. कमलदूत, गोवि
 न्द, पुनक्ति—दीर्घ।
 पुनक्ति नल पुनक्ति मंगल
 पुनक्ति मुंड गयण। पुनक्ति
 तीर्थ पावहर. पुनक्ति
 नाम गोविन्द ॥

पुनक्ति. (म) पुनक्ति
 पुनक्ति, सज्जता गय, म

પ્રકૃત્ય (સં વર્ણિત જીવ, ગર,
પ્રકૃત્ય :

१५०६ श्री श्रीमद ।

०३ (म) वागीदिक निषद
मृगे पट्टा दत्ता है, प्रथम
योग, मृगा ।

पद १) गोदना व पुमनाम
 पुपुन १) (स) सरी, पुमनामो
 पुपुन १) पुमनामो

पञ्चमः अक्षरः पञ्चमः पञ्चमः
पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः

पर्वतर [अ] पागा, गीका ।
पर्वतर [अ] पागा, गीका ।
पर्वतर [अ] पागा, गीका ।

पुस्तक-सू. पुस्तक, निर्णय
अ.सू. पुस्तक

पञ्च (५) विधाः सन्त्येताः ।
 द्वाविंशति (२२) विधाः सन्त्येताः ।
 द्वाविंशति (२२) विधाः सन्त्येताः ।
 द्वाविंशति (२२) विधाः सन्त्येताः ।
 द्वाविंशति (२२) विधाः सन्त्येताः ।
 द्वाविंशति (२२) विधाः सन्त्येताः ।

પુલિત્ઝે (૧) બરનો, ખુલિ,
અમીત :

(अ) विद्युत् ५

‘वर्ग’ कौशल, कौशल ।

पुस्तकाः (५) हिन्दुधर्मः ।
पुस्तकाः (६) मगधेयः ।

पुण्यपत्राविंशति. [म] - पञ्चमः
 १ अगस्त्याना १ १ १ १

पृथुनाम. [सं] राजा विजितः ।
पृथुरीमा. [सं] मयजी ।

पृथुज (म) दीर्घ भव्या ।
पृथुशिव्यः (न) मोलदत्ता ।

पुष्पगुह्यी. (म) दुष्पा भेदः ।
पुष्प. (म) हिंस्रपत्नी. [पत्नी]

पुष्पका- (ग) मगरैका । विपुः
पुष्पः (ग) मरली, पुष्पगोपी,

पृष्ठवर्ति- (म) विठ्ठल ।

पृष्ठ (स) पीठोता, विहारी
मोन, वसुदेव ; सती

पृष्ठ - (सं) सुविद्वत् ब्रह्म । १०

विशेषण- (क) केन्द्रीय बोर्ड।

विद्वन्- (व) विद्वते ङीष्

पाने की वस्तु 'दुग्ध' ।

पेगलत (म) भूंगी, खोट ।

पेयक (स) देखन, कीतक,
तमाशा, प्रेषण, देखना ।

पेटकीयाग, मु० ना बाप
का प्यार, मत्तान, पौनाट

पेटकीयाग बुझाना, मु०
कुछ खाना भूखे को कुछ
खिलाना ।

पेटकी बातें मु० मन की बातें,
गुप्तबातें, छिपी बातें ।

पेटगड़गड़ाना, मु० पेट गड़-
बड़ाना, .. पेटझेलना,
पेटरड़बड़ाना ।

पेटगिराना, मु० गर्भगिराना,
अधूरा गिराना, स्त्री के
पेट में बच्चे बच्चे का
गिराना ।

पेटनिरना, मु० गर्भनिरना,
गर्भगिरना, स्त्री के पेट
में बच्चे बच्चे का गिरना
अधूरा लाना ।

पेटपचना, पेटटूटना, मु०
पेट खाना, बहुतभ्रष्टा

फिरना, बहुत दस्त होना,
दस्त की बीमारी होना ।

पेटजलना, मु० बहुत भूख
होना ।

पेटदिखाना, मु० पचनी गरीबी
पीर भूख की हठाना ।

पेटपालना, मु० पचना
निर्बाह करना, गुजरान
करना, खार्गीराना ।

पेटपीठ एक हाग, मु० बहुत
दुबला होना ।

पेटपीडना, मु० स्त्री का सख
में पिडना बाधना ।

पेटपोसू, मु० खाऊ, पेट,
पेटार्थ, पेटपालना

पेटफूलना, मु० बहुत बदन,
बन्दी से मारि नोटना, गर्भ
रहना ।

पेटबड़ाना, मु० बहुत खाना,
दूसरे के दिखी, घर बाध
बढाना

पेटबांधना, मु० भूख से कम
खाना । पिचवा के ।

पेटभर, मु० खाना, भरपेट,

पेटभरना, मु० खाता, खातु
कता, पचाना, ह्वा होना ।

पेटभरना, मु० खातधात
करना, पचधात करना ।

पेटमेंपेठना, मु० दूसरे का
भेदलेना, खुगामदे को
सातेंकरके मिलावन जाना ।

पेटमेंलेना, मु० सहना,
संतोषरहना ।

पेटरहना, मु० पेट में होना,
गमिर्णी होना, गभी रहना ।

पेटनगजाना, मु० भूखी मरना,
बहुत भूखाहोना ।

पेटनगरहना, मु० बहुत भूखा
होना ।

पेटवाकी, पेटमें, मु० गमिर्णी,
गमिषती ।

पेटवेहोना, मु० गमिषी होना,
पेटरहना ।

पेटना करना, मु० खाना लेना ।

पेटकरना, पचाना करना,
टोचना, मु० पेटचलना,
बहुतभाड़ाफिरना, ।

बहुत दस्तहोना, दस्त
की बीमारी होना ।

पेट का दुख देना, मु० भूखी
मरना ।

पेट का पानी न दिलना मु०
यह महादरा अस ब्रह्म

बोला जाता है कि जो
घोडा ऐसी खान चले कि

मगार, हिमेहले तो
चोर न किसी तरह का

दुख पाये ।

पेटरहना, मु० देखी
होना ।

पेट (द) पेट, पेट, प्रतिप,
पच, पच, वृत्त ।

पेटार (म) पेटना । [इति]
पेट । (द) तीव्र, तीव्र, पेट,

पेटार (व) पेट गति, पेट,
प्रवेग, पेटाव, पेटना ।

पेटकरना, मु० पचकरना,
होकरना, प्रतिप ।

पेटकरना, पचनपरिणाम,
होना ।

पेट नहाना, मु० बहुत पच

करना, अंधाधुन्य खर्च
करना, दूसरे का धन
चुरालेना या ठगलेना ।

पैसाखाना. मु० पैसा सहागा,
बहुत खर्च करना, मल-
दूरी करके पेट भरना.
रिश्वत लेना, हकार
जाना, विज्ञासघात कर
के ले लेना ।

पैसा लुबोना. मु० धन गंवाना ।
पैसा हूना- मु० धन बर्बाद
होना, रुपया पैसा खोया
जाना ।

पैसेलुगाना- मु० धन खर्च
करना, धन लगाना ।

पैसेवाना- मु० धनवाना,
दीनतमंद. एक पैसे का ।

पैसों से दरबार बांधना. मु०
रिश्वत देना, हूस देना ।

पोंगरा- (दा) पुत्र, अंग सखा ।

पोच- (पोंगट, पंगुच; पज्जानी.
नीच, दूरा, दुःखित ।

पोटगल- (म) नरकट ।

पोत- (म-प-) निपट, मिश्र.

नाथ, नोका, लहाजे,
वालक, अनूपवस्तु, हरवा,
कांव, वस्तु कर्ना,
पासन, पोते शब्द—दो०

पोत कदावे मिपटं सिमुं,
पोतलुवस्तु अनूप । पोत-
नाथ जिमि लक्षधिमिभिः
स्याम नाम सुखरूप ॥॥

करनशब्द—दोहा । करन
कदावे रवितनय, करन
कहत पुनि कान । करन
नाथ लेहि खेदये, करन
हार भगवान् ॥॥

पोतक- (म) वाचक, मिश्र, रचा
पोतकी (म) पोरसंग ।

पोलिका- (स) रोटी ।

पोता- (स) पौष, पुत्र के बालक ।

पोषत- (म) पृष्ट करता है,

पोषल, पोसना, पोषण ।

पोसी- (स) पोष्यो, पोसा, पो-
सना, पोसना ।

पंकरुद- (स) कमल, कसल ।

पंगु (स) कंगड़ा ।

पंचकवलि- (स) पंचपास ।

पंचदश (स) पट्टदश ।

पंचसुवद. (स) पाचसुवद,

मगाडा पाटि ।

पंजर (स) पिजरा ।

पंथ (स) पन्था । [पाथक ।

पोषक. (स) पोषकहार, रक्षण,

पोषण. (स) पोषण, भरण,

रक्षण, पुष्टकरण, पुष्टता ।

पोखे. [दो पाखे ।

पो [स. ण] मूल पट्टाथ,

लक्षणार्थ पासे में का पटा

योग्य. [स] किशोरपदव्या ।

पोष्य [स] केन्द्रक ।

पोषक [स] लावापत्र ।

पोढ़ा, बेतारी ।

पोतिकम्. [स] गच्छत ।

पोच. [स] पाता बेटा का बेटा ।

पोधा [स] तक्षक, कोड़ा,

नवीनकता, पोधाथी बे दो

चार, मीट वा नाम मुनिये

गुंजा नाम—दो. । काक-

चिंविद्या कृष्णा, गुंजाकरत

प्रनाम । मुचट स्याम छवि

धाम को, सेत नाम पति ।

रागार । इमिली नामदो.

एहा चिंविदा तितंडी, चासि-

का चस्त्रोय । मृगधार

मनी किते, पाच प्रदापक

भीय ॥१॥ कजा नाम-

सोरठा । एही करण

करज, गल्लमास, विर

विस्व तम । कहुं देव

छवि पुन, रति रंभा

मटसीवनी ॥ ३ बतकी

नाम । दो. नाक संभारि

विनदुमा, देतकि पकरत

पाप । लथ पागम पानई

बति, फेंतो पग न समारो

पोर (सट) पुन, भूमि, जगद,

हार । व्याप ।

पोराधिक [स] पुराण कथा

पोरिया [स] देवदोवान, हार

पात ।

पोरी. [स] हार पोर हवदी

पीरप. [स] पुरपत्त, पारसी,

बन ।

पीरंमासी. [स] पूर्णिमा

पीष्कर. [स] पुनकरमूल ।

पौषः [स] नाम विशेष, पूस ।	पुक्तियाः (स) पुक्कुरप, पुक्कुरयग ।
प्रकटः (स) स्पष्ट, माफ, छादित ।	प्रतिष्ठः (स) दुःप, क्षेम, कष्ट ।
प्रकरपः [स] भूमिका, पाशा- प, दिवाग, संवत्, प्रसंग ।	प्रखेदः (स) पमेना, घाम, काम संज्ञा ।
प्रकर्षः (स) ग्रह, उत्तमगा, प्रधान, चत्कर्ष, दृष्टि ।	प्रख्यातः (स) प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, विदित, विख्यात, कीर्ति- मान् । [यम ।
प्रकारः (स) रीति भेद, मादृश, होत, तरङ्ग, तीर ।	प्रख्यातिः (स) कीर्ति, प्रशंसा, प्रगल्भः (स) उत्तम, सामर्थ्य, निहर, मास्त ने विजयी, ठोठ, दृढ़, अन्तर्कामो, लम्बीन, विना पट लो सह जाना जाए । [त्रि ।
प्रकाशः (स) प्रकाशकरैदा, प्रकाशकरनेवाला ।	प्रपञ्चः (स) दुर्धर्ष, पल्लव, तीक्ष्ण, प्रवारः [स] विस्तार, प्रवरित, रीति, लक्षणा, प्रकाश, सोपणा, दिनेप, फेलाव, धान, रत्न, दम्भूर, रिवाज ।
प्रकाशितः (स) उजागर, प्रसिद्ध ।	प्रवारीः (स) कलिकारि कै, सुलकार कै ।
प्रकाशः (स) प्रकाशे योग्य, प्रकाशके योग्य ।	प्रवरः (स) अधिक, बहुत ।
प्रकृतिः (स) वरित, माता, स्वभाव, कर्मत्वा कृपा- दानकारण, स्वभाव धातु, भेदा, संसार ।	प्रविताः (स) वरपदेवता ।
प्रकृष्टः (स) प्रकाश, उत्तम, सुख, उत्कृष्ट, ग्रह, लो- काद, प्रकार न दृष्टे, उत्क- र्षित, प्रधान । [यवकाशः ।	प्रवृद्धः (स) वयोवृद्धकी, प्रवृत्तः (स) गुण, दृष्टा ।
प्रकृतः (स) वरित, पारम्पर्य,	

प्रजा- (म) मन्त्रालय, राज्य का
जीम, भूमि तथा जी
मिम के अधिकार में रहे
रख्यत ।

प्रजापति (म) राजा, मन्त्रा
पिता, ईश्वर । [राई

प्रजारी (प) जकाई, भूमि

प्रजापति (म) मन्त्रालय ।

प्रजापति (म) प्रजा का भी-
मन्त्रालय । मन्त्रालय

प्रजित- [२] प्रजित, राज, जा ।

प्रजित (म) राजा, मन्त्रा, पिता,
द्वय प्रजापति—

१००, जमकाईन हरिकथा
प्रजापति । द्वाद प्रजित भये
नेहि काथा । यद्यपि द्वाद
प्रजित द्वाद प्रजापति ।

प्रजितप्रजापति (म) द्वाद की
पुत्री ।

प्रजापतिनाथ (म) दिव्य
पुत्री के मन्त्रालय ।

प्रजित (म) प्रजित, दिव्य, पिता,
पुत्रित, पुत्रित ।

प्रजित (म) प्रजित, पुत्र, पुत्रित,

प्रजित, पुत्र । [पुत्रित ।

प्रजितित- (म) प्रजितितान,

प्रजित- (म) प्रजित, नियम, प्रति
प्रा, पण, पण्डित, द्वाद ।

प्रजित- (म) पुत्रित, मन्त्र,
प्रजितान, नियम, प्रति
मन्त्र ।

प्रजितपति- (म) दीनपति ।

प्रजित (म) मन्त्रालय, प्रजित,
द्वयपति ।

प्रजित (म) प्रजित, प्रजित
प्रजित मन्त्रालय, प्रजित
प्रजित प्रजित प्रजित प्रजित
प्रजित प्रजित प्रजित प्रजित

प्रजित (म) प्रजित प्रजित प्रजित
प्रजित प्रजित प्रजित प्रजित

प्रजित (म) मन्त्रालय, प्रजित,
प्रजित ।

प्रजित (म) प्रजित, प्रजित, प्रजित
प्रजित, प्रजित, प्रजित ।

प्रजित (म) प्रजित, प्रजित,
प्रजितप्रजित । [प्रजित]

प्रजित (म) मन्त्रालय, प्रजित
प्रजित (म) प्रजित, प्रजित,
प्रजित ।

प्रविधानः (स) मनोयोग, उद्योग ।

प्रविपातः (स) दण्डवत्, प्रणाम ।

प्रयोः (स) नगचक्रा, चटक्र,
निर्धारित ।

प्रतप्तः (स) चाक्रा, चत्तर-
लामी, तुरीय चयस्या का
देवता ।

प्रतागनीः (स) गन्धमहारनी ।

प्रतापः (स) मदिमा, कृपा,
ऐश्वर्य, प्रभाष, तेज,
इन्द्रवाह ।

प्रतापरविः (स) प्रतापभानु,
भानुप्रताप, सत्यहेतु नाम
राजा के पुत्र ।

प्रतापदिनेमाः (स) भानुप्रताप
वीः । नाम सुझार प्रताप
दिनेमा । सत्यहेतु तब
पिता नरेका । प्रताप भानु
तुम्हारा नाम है ।

प्रतापसमूहः (स) तेज का
समूह ।

प्रतापीः (स) प्रतापवान्, तेजस्वी ।

प्रतारकः (स) ठग, बख्श,
धूर्त ।

प्रतारणः (स) ठगारे, बख्शना ।

प्रतारितः (स) ठगाया, बख्शित ।

प्रतिः (स) हेतु, तारफ, सम्मुख,
बदला, एकएक, सब,
समझा, विरुद्ध, पास ।

प्रतिकार (स) } बैर का बदला
प्रतीकार } पर्दात् भिन्न

ने अपने साथ लैसा अप-
कार किया ही उस के
साथ उसी के तुल्य प्रतिकार
करना ।

प्रतिउपकार (स) प्रत्युपकार,
उपकार का बदला ।

प्रतिकूलः [स] विघ्न, बैरत्व,
विरुद्ध, दिमुख, छलटा,
विपरित, खिलाफ, जैसे
सगुन पुरुष के बाग भाग
में समुग होय है ।

प्रतिविंबः प्रतिहार्थीः (स) प्रति
छाया, परिहार्थी ।

प्रतिपदः (स) दानपद, पादान ।

प्रतिघातः (स) मार के बदले
मार । [ध्यान ।

प्रतिचिन्तनः (स) पुनःपुनः

प्रतिगम (म) मपेट अक्षवन् ।

प्रतिष्ठा (म) प्रण, वचन, श्री

कार, गपय गिरय,

अहम् इकार ।

प्रतिपत् प्रतिपद [म] परि-

वातिथि, बुद्धि, बोध,

ज्ञात । [इवेत दिन ।

प्रतिदिनः (म) दिन २ प्रति ।

प्रताप (म) विपत्

प्रतिध्वनि (म) प्रतिनाद गुण

गन्ध को क्लृप्तकार लोटो

बुद्धि आवाज ।

प्रतिनिधि म प्रतिरूप सदृश,

आगिन, कायम, मुखाय ।

प्रतिपक्ष (म) गुरु, वैरी, रिपु ।

प्रतिपक्षी (म) प्रतिवाह,

प्रतिपक्षी } गन्ध ।

प्रतिवाह (म) घटा, गुहावाह

बोध्य, ज्ञातव्य, वाच,

अर्थनयोप्य ।

प्रतिवह प्रतिवाहन, (म)

विवाह, भगवद्, विरीधो ।

प्रतिवाहो- (म) विवही, विवाही

प्रत्यर्थः *

प्रतिविम्ब (म) परिदर्शी, भाष,

प्रतिगा, छाया, चक्षुः ।

प्रतिविम्बी (म) चारसी, दृश्य ।

प्रतिमट (म) बराबर का बीर,

समान बीर । [ज्योतिः ।

प्रतिभा (म) समझ, बुद्धि,

प्रतिभू (म) कामिगद्वार,

समीति ।

प्रतिभा (म) मुक्ति, दृष्टि,

पुनश्च, छाया । [छाया ।

प्रतिभूति (म) प्रतिबंध, परि

प्रतिमाकृति (म) प्रतिवाद, पत्र ।

प्रतिविमा (म) अतीत ।

प्रतिविप्लव मः गुणकृद् कृत्

प्रतिष्ठित (म) प्रतिठागुण,

वज्रतवाका, कामवत् ।

प्रतिषेध (म) निषेध, बटव,

रोक । [मट ।

प्रतिहत (म) निराश, पीड,

पुतिहार [म] दारपावर्ण,

देवद्वीवान ।

प्रतीक [म] अक्षय, पुतिवध,

विशोभ, टुट्टा, मङ्गल,

चट्टा ।

पुतिहारः [स] वृद्धता, संपन्न
उपाय ।

पुतीची (म) पदिनदिमा ।

पुतीचा [स] अपेक्षा ।

पुतीति-प्रतिग[स] विग्रह, पुनः
ज्ञान, स्वाति, इष्ट, सादर ।

पुतीर, [स] तट, विगारा ।

पुतुदा [स] ठोड़ से ठोड़कर
फल आदि से खाने का
पक्षी ।

पुतुवरी [स] स्नातविधिरी ।
वडा तागा लही २ ।

पुतीत-करना, मु० परिचा
करना, भरीसा करना ।

पुतुडा (म) इन्द्रि, अब पुतु
पुतुडा ।

पुतुमीड [स] वेगा, दस का
वृद्धता, वृद्ध ।

पुतुड [स] पुतिदिन, सब
दिन, विज्ञ ।

पुतुच [स] सकुच, साक्षात्,
पाने, दृष्टिगोचर, दृष्ट,
प्रकट, काजिर । [पदेम ।

पुत्यादेम, [स] आधा, दैवी-
पुत्यामा [स] भरीसा, पाचरा ।

पुत्यादा (म) समाधि, दोग-
विधि ।

पुतुलि (स) बाकीतार, जवाब ।

पुतुत (म) बितर्क, पनियत,
मंदेश, अवधारण, विनि-
यम, विवक्ष, पचात्तर,
अवधा, किंन ।

पुतुतार [स] उत्तर का उत्तर,
उत्तरस्वीकार, जवाब का
जवाब ।

पुतुवहार [स] वृद्धता सप-
कार, संपहार का मेल ।

पुतुड (स) उपाधि, विज्ञ
विचार, पुंश, राशि, कट,
दी० । कइत कठिन
समुझत कठिन, सोधन
कठिन विवेक । होइ पुपा-
चर न्याय लो, पुनिपु-
तुड पनेह । पदार्थ ज्ञान
कइने में समझने में सोधन
में कठिन है बीर जैसे
पुन से पकझाती पहर
दग जाता है लो कइत-

विज येमे ही इन तीनों

विज म निकले ती फर

य गी यनन पुन पुन यनन

विज लदे हा का २३

य य न म इ य न

पुनम (म) यो हने वा मुख्य

याच, याच, पुन न, ये न

य न

पुनम (म) य य न

य य न म य य न

दा न

य य पुन पुन म य य

य य न

पुनम म, य य पुन, पुनम

पुनमिच य य पुनम

मन्त्रवाकार

पुनम म य

पुनम (म) विमानमल दन

मुन, यो न, यो न

या न, या न, यो न

या न या न यो न

य य न, (म) मुन, यो न, यो न

य य न, य य न, य य न

मध्यम, (म) नाग, विमान

या न, विमान

य य न, (म) यो न, विमान

या न, यो न, यो न

या न, यो न, यो न

विमान, यो न, विमान

य य न, (म) विमान

या न, यो न

य य न, म यो न

या न या न

पुनमिच, (म) पुनम

य य न (य य न)

पुनमिच, य य न

पुनम, (म) य य न

पुनमिच, म य य न

पुनम, म य य न

या न

य य न, म य य न

य य न, य य न

पुनम, (म) य य न

पुनम, (म) य य न

पुनम, य य न

य य न, य य न

पुनम (म) य य न

पुष्पस्य निरिहस्यमे कदा
गया किं वहांसवे दिन
पानी वरसतां है ।

पुष्प, [स] भारी, चगम,
वसवान्, सामर्थ्य, मंगां, ।

प्रवला, [स] दापहुहारा ।

पुष्प, [स] विद्वन्मता, नूना,
पक्ष, मोती । विजित ।

पुष्प, [स] धारा, नदी की
पुष्प, [स] पतिसार, पेटवली ।

पुष्प, [स] पुष्प, पैठे । [या ।

पुष्प, [स] निषिष्ट, भीतरग-

पुष्प, [स] पण्डित, ज्ञानी,

चतुर । [सचेत ।

पुष्प, [स] ज्ञात, ज्ञागता,

पुष्प, [स] भोजनपारम-

करना । [भोजन ।

पुष्प, [स] पारमर्श्या,

प्रबोधमोक्षान, सूक्तं, उन्नता,

उपदेश प्रकट, बुद्धि, ज्ञानरस ।

प्रबोधक, [स] बोधकर्ता, उप-

देमदाता, ज्ञाननिवासा ।

प्रभजन[स]वीन पवन, बाहु पैरी-

रूप, समीरयुक्त, वहां ।

प्रभजनजाया [द] इदमान,

धो । उठि वहांरिकीन्हें सि

वह माया । भीत न जाइ

प्रभजन जाया । प्रभजन

चर्यात् शत्रुमंजन लो पवन

का नाम है उनके पुत्र ।

प्रभव, [स] उत्पत्ति, जनकारण

उत्पव, पराक्रम । [अभीष्ट ।

प्रभव, [स] मनोरथ, कामना,

पभा, [स] शोभा, प्रकाश,

चमक, टीति ।

प्रभाक (द)-प्रभाव, प्रताप ।

प्रभाकर, [स] कूर्य, दिवाकर,

दीप्तिकारी, प्रकाशक, अग्नि

एन्द्रना कुमुद्र ।

प्रभाकोट [स] सुगनी, खद्योत ।

प्रभात, [स] प्रातःकाल, भोर,

तड़के, फलिय या सुबह ।

प्रभातो, [स] रागिनीविशेष ।

प्रभाव [स] साहाय्य, प्रताप,

ऐश्वर्य, तैल, गांति ।

प्रभावती, [स] पातालगङ्गा ।

प्रभासे, [स] तीक्ष्णान

विशेष ।

प्रभु [स] सत्तामान् प्रहस,

राजा, स्वामी, गुरु, ईश्वर,

इश्वराय, गनु, समर्थ, पति

पारा धातु, कृष्णम् ।

प्रभुसूत्र [म] स्वामी से ।

प्रभुति [म] प्रकार, इत्यादि

तदर्थम्, यादि वनेरह ।

प्रमथ [म] घेना, दण ।

प्रमद [म] प्रकृत्याप्ती,

की, मीहाराह ।

प्रमा [म] प्रमत्त, यथायंज्ञान,

भ्रमरहितज्ञान ।

प्रमाण [म] नियम का कारण,

मयीदा, माप्ता, मय्यवानी,

हेतु, प्रमाता, यथायंज्ञान

प्रमाविष्ट [म] पाश्चात्त्य,

योग्य, प्रमा, ज्ञान मापन

हन्ति ।

प्रमाता [म] प्रमाचक्षता ।

प्रमातामह [म०] प्रमाता ।

प्रमातामही [म०] प्रमाता ।

प्रमाद [म०] लूट, भूल, बाध

अव्यवधानता, कर्मतही

जाना, कर्मतय से निवृत्ति

कीर अचतय से प्रवृत्ति, ।

प्रमादी [म०] कर्मत, प्रवीण

रहेना ।

प्रमद [म०] अष्टावधान ।

प्रमुदित [म०] हर्षित, पान-

न्दित, प्रसन्न ।

प्रमेय [म०] प्रमाचक्षीय,

अवमायोग्य । [योग]

प्रमिष्ट [म०] बीज से का

प्रमोक्त- (म०) जल, नीर, तीव्र

प्रमोचन [म०] सुखकर,

उद्धारण ।

प्रमोद [म०] हर्ष, पान,

सुख, स्वामी ।

प्रमोदक [म०] माठी पान ।

प्रमोदनी [म०] योगिनी का

का मोद । [हँ, देत है]

प्रमोदति [म०] प्रमोदक

प्रमोद [म०] प्रमोदक

परिचय, आवानुबन्ध

नलम भवाय, तद्वती

प्रमाग- (म०) तीव्रता

विशेष । [ममत्ता]

प्रमाण (म०) जाय, दाया

प्रमात- (म०) प्रविष्ट, हर्ष

प्रमातः (म०) प्रमा कीर्ति

दिनन । [हर्ष]

प्रमाति (म०) प्रमाकीर्ति

प्रमाति [म०] प्रमाकीर्ति

अव ।

प्रसव, (स) पुनर्वसन वसं सं-
दोष, गर्भ, कलावना, फूल
बसी, उत्पत्ति ।
प्रसव, (स) रठ, छेदि, चकर ।
प्रसविन्, (स) उत्पद्य करने-
वाला, उत्पन्न करनेवाला ।
प्रसीर (स) संतिरीर ।
प्रसन्ना, (स) देहतर, अच्छा,
निर्झर बुद्धि, साक्षी, नाम
वादप्रपञ्च वा ।
प्रसदा (स) ठीर से ठीर करने
वाले पसी गीध खादि ।
प्रसाद, (स) देवता का चन्दित
हवा, लूठन, प्रसन्नता, च-
तुदह, महराजगी ।
प्रसादगिवा (स) शीनीधान ।
प्रसादी, (स) देवता का निवे-
दितवाद ।
प्रसाधन से विहरवना, उत्तर
रचना, साधन ।
प्रसारिन् (स) बहता हुआ ।
प्रसारणी (स) प्रसारवादिनी ।
प्रसिद्ध (स) प्रसामित, साध,
विख्यात, भूदिन, सत्कार ।

प्रसिद्धि, (स) विख्याति, प्रसारे;
प्रसृत (स) नाहि प्रसादादुपा ।
प्रसीद (स) प्रसन्नहीह, हर्षो
करह, रक्षा करी, प्रसन्नही ।
प्रसु, (स) माता, चन्दा, कमली ।
प्रसुत, (स) उत्पद्य, प्रदारीन,
माता, उत्पद्यहीनेवाली,
चर्चात् सन्तान ।
प्रसूता-प्रसूती, (स) उत्पद्य वा-
रिणी, साधनागधारिणी,
प्रसूतिवा, प्रसरवादिनी,
उत्पत्ति ।
प्रसून (स) पुष्प, फल, मुकुट,
लक्ष्मी, पूर्ण । विवाहा ।
प्रसूय (स) जति करने-
प्रसूया (स) प्रसूया, मुति, क-
रावना । प्रसूय ।
प्रसूय (स) प्रसूय, जति,
प्रसूय (स) प्रसूय, प्री-
ति । प्रसूय ।
प्रसूय (स) प्रसूय, प्रसूय,
प्रसूय (स) प्रसूय, प्रसूय ।
प्रसूय (स) प्रसूय, प्रसूय,
प्रसूय (स) प्रसूय, प्रसूय,
प्रसूय (स) प्रसूय, प्रसूय,
प्रसूय (स) प्रसूय, प्रसूय,
प्रसूय (स) प्रसूय, प्रसूय,

पुष्प- (म) १६ पल का १ पुष्प
वो ४ पैमे भर का १ पल।

पुष्पपुष्प (म) मरुपा।

पुष्पात (म) याजा, बिटा, म
मल, घर म आना।

पुष्पकी- (म) मायिका।

पुष्पित (म) गंगा दूपा, जला
दूपा।

पुष्पित (म) को को गंगा

पुष्पित म पयल न पानी
का भरना। [दूपा।

पुष्पित, (म) पीटा दूपा, जलाया

पुष्पितमरुजा (वि० पुष्पित मरुजा
के मरुजा जिस म।

पुष्पित (म) पतियेन हवे।

पुष्पित (म) पहर, दिन का
धीमा भाग।

पुष्पित (पुष्पित दूपा दूपा,

रायल का पुष्प, रायल

का मेटा, को रायल का

कड़ाकोइ मानस में नय-

दिय दिया है। बड़े पयल

पेसे दूर हाथ बासा। बड़ा

हाथ। कोई २ कहते है

कि भद्रापुर पैठने में चं

ने पुष्पित ही को म

था। मानसमयद्वक

काण्ड में बिछा है। दू

मिलु पुष्पित दूजे करे।

पय पलपति। देवि।

होम रायल कहे, ना।

किहे गुमान। यह हो

इम मोपाइ पर है।

पेठल रायल कर दे।

पुष्पित रक्षा मो होम

मेटा। रायल रात म

बिटि पाई। नयल पतुन

पति तनवाई। रात म

कये गह। रायल दे

ने पुष्पित कि वनरों को

है पयल बने कि द

पुष्पित ब दूत है।

नयल कहा कि दू

को पत्रा को इम

पिता हर बादा है इ

ने कहा में लड़ों का दू

हूँ किमि ने तरी पयल

माव जान काट को।

यही रात को दूत है।

पुहार (म) मारद, चोट, धा-
धाग, इमिहार का बजा-
ना, मार, मारना, मरना
बलाना ।

पुहारवर्ती- (स) रीतिनी ।

पुहारी- (म) मारदहार, धातक ।

प्रहित (म) मीराइया, बसाया
हुआ जैसे हमानसे तीरा ।

प्रहेलिका- (स) पहेली, टटकूट,
चीट, ठंडा ।

प्रहार- (स) गेठ पुच चार
पुचों में दिरल्लहमन से
पीर जाके हिदागुरु स-
प्यामके, हिधाता, मुका-
चाये, कुच गुरु दैत्यों के
पुच दे, पत्तानंद, पाह-
साद ।

प्राकाम्य- (म) नामसिद्धि ।

प्राकृत- (स) माया, देवभाषा,
नीच, समाविक, अयोम्य,
माया का बिकार, साधा-
रण मनुष्य, मनुष्य संज्ञा,
सदातादावमी ।

प्राकृतकदि, सोमरदास पादि,
पण्डित, बुद्धिमान चतुर ।

प्रागल्भ्य, (म) मन्त्र, धमण्ड ।

प्राची- (म) पूर्व दिशा वाचक,
पूर्व दिशा-पूरव, गयरिक ।

प्राज्ञ- (म) ज्ञान से स्वरूप की
प्राप्ति, सुपोति पवस्था का
देवता ।

प्राचीनी (स) पाठी । [लड़ ।

प्राचीनूल, (म) पूर्वदिशा की

प्राचीन (स) पुराना ।

पाट- (स) रप्ता, भरीकास ।

प्राप- (स) बांधुशिष्य, मास,
जीव, पौष प्रहार का देव में
रहनेवाला, बांधु, इन्द्रिय,
पराक्रम ।

प्रापविष्ट (स) खोल, पील ।

प्रापनाव (स) पति, खागी,
मांसिक । [पकायन ।

प्रापमुख- (स) भागजाना,

प्राची (स) प्राप से बना है ।

जीवधारी, जीव, चंतु,

प्रापवाणा, प्राची नाम ।

दोहा १ अनु मारी

१. चेतना, अस्मी प्राणी संतु ॥
 २. सुष्ठि रची विधि ननु विधि,
 कीन्ही कृपा अनंत ॥१२॥
 प्राणायामः (स) ज्वास का
 निरोध, योगाग विमय
 प्राणी के रोकने का उपाय,
 पूरक कुंभक वैजल ।
 प्राणिन्, (स) जीवधारो, शीघ्र,
 प्राणी, चेतन, जीवदार ।
 प्रातः (स) भोर, प्रभात, सुबेरा,
 तड़का ।
 प्रातःकियति (स) : स्नानसंध्या
 आदि, निमित्त नियम ।
 प्रातर, (स) भोर, प्रातः, प्रभात,
 प्रातःकाल, सुबह ।
 प्रातःकृत (स) स्नानसंध्या आदि ।
 प्रातः (स) सीमा ।
 प्राप्, (स) पाया हुआ ।
 प्राप्योय, (स) पानयोग्य,
 पचने योग्य ।
 प्राप्य (स) पहुंचकर, पाकर ।
 प्रादुर्भाव (स) प्रकाश, आविर्
 भाव ।
 प्रातः (स) नीकी सीमागीं ह ।
 प्रातःकाल, प्रातःकाल, प्रातःकाल,
 प्रातःकाल ।

प्रातःकालीन गायत्रि, (विंशत-
 गम) पकड़ा हुआ गरम
 की माछा से ।
 प्राति (स) लब्ध, प्राप्त, मित्र,
 लाभ, मोहरी, बुद्धि दाय,
 पाकर, पहुंचकर ।
 प्राहटः प्राहटः, (स) वर्षा कृतः ।
 प्रामाणिक (स) चतिमान्,
 सिद्धांत ।
 प्रातःसाथी दिन (स) कुथ,
 भोरे नहाने वाला ब्राह्मण,
 कुथ गच्छ, दीहा । कुथ
 सं कथा कुथ कौट पुनि,
 कुथ करि कथन सोर ।
 प्रातः सनाई विपु कुथ,
 कथनकाली विध होई ।
 प्रातिष्ठ तावत्, प्रवधा, (स)
 पथम वर्षा कृत का मेघ,
 वर्षान् काल, वैशाख, प्र
 वृत्त संवत्सरमगा, वर्षा-
 काल, वर्षा कृत, वर्षाकाल,
 लैके मानसामंवरिष ते
 लिखा है । श्री १ प्राहट
 सरद पथोद घनेरे । सरत

ननहुं मासतके पूरे । २०
 घात प्रासूट, पधातु, वर्षा ३
 काले घन बाहर और गरद
 के खेत बाहर के मनाग
 बाहर । अतः है दिन अतः
 १ मिगिर अतः वसन्त अतः
 २ घात अतः ४ वर्षा अतः ५
 गरद अतः ६ ये मह दो
 टो महीने की हैं, पन न
 पीप तो दिन अतः । नाव
 फाल्गुण मिगिर अतः ।
 चैत्र वैशाख वसन्त अतः ।
 अथेह पधातु पीप अतः ।
 यावत् भादो वर्षा अतः ।
 यावत् कालिक गरद
 अतः है । १५ पन गत से
 लिखते हैं । नैप और दृष
 की संक्रांति ये दोनों पीप
 अतः है । और मिथुन वर्ष
 की संक्रांति की प्रासूट अतः
 अथेह २४ अतः है बाहरी
 से पम्पर हादर है मरोहि
 की सिधे छोटा करके भी
 दृष अतः वर्षा अतः १५

मेह है २ मिथुन और कन्या
 की संक्रांति की वर्षा अतः
 अथेह ३ अतः और बुध
 की संक्रांति की गरद अतः
 अथेह ४ घन और मकर
 की संक्रांति की हेमन्त अतः
 अथेह ५ कुंभ और मीन
 की संक्रांति की वसन्त अतः
 अथेह ६ ।

प्रासाद (६) प्रासूट, विष्ठा (७)
 प्रायः (८) बहुधा, कालीकाली
 लुगभग ।

प्रायश्चित्त (९) पापनाशक
 कर्म, पापघनाय शान्त
 विहित मतादि कर्मों का
 करना ।

प्रायतः प्रायश्चित्त प्रायेण (१०)
 शिथिल, विस्तार, बहुत
 करने, बहुधा, प्रायः, बाह्य
 अतः, अधिक, पक्षधर ।

प्रायः (११) हेमन्त, अतः ।

प्रायः (१२) भाग्य, सिद्धि, पार-
 ध, देव, अतः मीन, सिद्धि
 की वृत्ति के कर्म जिनके समा-

शुभ फलभोगने को यह
गरीर बना है, किसमत ।

प्रारम्भ (स) प्रारम्भ, उपक्रम,
प्रथम, शुरु, दशतिदा ।

प्रायेच (स) प्रायेनाकरनेवाला
स्तुति करनेवाला, याचक ।

प्रायना (स) विनती, याचना,
याच्छा, मागना, याचा,
चर्जकरना ।

प्रायित (स) वाञ्छित, याचा,
मांगा ।

प्राचक्ष्य प्रारब्ध (स) सजाट,
भाष्य, चट्ट, निष्ठाइचा,
दैव, चट्ट भेद, पिछले
कर्मों के कर्मजिनके शुभा-
शुभ फलभोगने को यह
गरीर बना है, किसमत ।

प्राप्तेय (स) पाचा, तसार ।

प्राप्तेयादि, (स) प्राप्तेया
पहाड़ चर्चात दिगालय ।

प्राप्त (स) टका, ओढ़नी,
घुंघट ।

प्राप्त (स) पावस, वरसा चटु ।

प्राप्त (स) प्रीति, परित्यक्त ।

प्रासाद (स) पटारी, भरीचा,
राजभवन, महल, भवन ।

प्राप्त (स) दीर्घ, लम्बा ।

प्रिय (स) प्यारी, प्योत्र
यजन, प्यारा, प्रिय ।

प्रियक (स) पासन ।

प्रियकर (स) कटम्बहृष ।

प्रियद्वरी (स) मुपेदकस की
रंगनी ।

प्रियद्व (स) प्रियंगु, १ चारी
रंग की कोनी २ ।

प्रियतम (स) सज्जन, पति, पति,
प्यार, बहुत प्यारा, पति,

प्रिय अत्यंत प्रिय ।

प्रियव्रत (स) राजा उताव
पाट के सधु ताछी के पुत्र

जाकी कथा है ।

प्रियमी प्रिया (प. स) ब्रम्हा,
प्रियारी । [निवाची ।

प्रियवादिन (स) प्यारवे शीर

प्रिया (स) प्रियंगु, प्यारी,
चरनी, फली ।

प्रियाल (स) निरंजनी ।

प्रीति (स) रस, मोह, -तृप्ति,
 प्रेम, प्रीति, मुहूर्त, दोस्ती
 प्रीति वा सखा वा लोक
 नाम-हृद काव्य। कीन्ध भनो
 हरि प्रेम प्रीति दोहद
 सनेह हित : दार पणैपनु
 राग, त्यागि बैरग देग
 नति : श्रीहासज्जा सकुच
 तवा संखीष को सब : खो
 हरि के हेत नाम निग
 सही लोक भव : १५ भाव
 भवत संगार विग्विष्टप
 लग संसृति : देत हमे
 पद योगयोग कीन्हे कुवजा
 पति : और न तप उपदेय
 पाप हरि धरि उहावत :
 सोहीस मता हृद नान
 यह काव्य कहावत : २ :
 होहा : ता और न गुंन
 लखी, चंदरीक पद पाय :
 ताकी बोली गोविका,
 यदुपतिसंखि मुनाय : १
 प्रीता (द) निप ।
 प्रीते (प) प्रीतियुत ।

प्रेत (स) जव, मुरदा, मृत्युक।
 प्रेतनदी (स) - वैतरणीनदी ।
 प्रेतनिवास (स) श्मशान, मसान
 मुहरिघाट, मुर्दघटी ।
 प्रेम (स) प्रीति, सनेह, विधरि
 काह : [मुहूर्त, ।
 प्रेमन् (स) प्रेम, सनेह, प्रीति
 प्रेमाभक्ति (स) जो प्रेम ते
 संघ होके और प्रेम के
 भूषण, और प्रेम में पड़ि-
 रावे, भोजन और ते और
 खिलावे इत्यादिक जैसी
 सेवरी पद विदुरजी को
 प्राप्त ।
 प्रेमी (स) स्नेही, कोही, मयासु ।
 प्रेरक (स) पात्राकरैया, भेजत-
 हार, पात्राकरनेवाला,
 प्रेरणकरनेवाला ।
 प्रेरण (स) भेजना, नियोग,
 पात्रा, प्रवर्शन, पहरण
 करना, पात्रादेना ।
 प्रेरित प्रेरे (स) भेजाहुवा,
 पठायाहुवा, पात्रापाडे,

प्राज्ञाः कियामया, प्रेरण, ।
भेजना, प्राज्ञायाये, पठाया
भेजा, भेजाना ।

रहना, जो विदेश में हो,
विदेश गया हुआ, विदेशी,
नकमाया ।

प्रेष्ट (स) वल्लभ, प्रियत्वविग ।
प्रेष्ट (स) भेजना, पियाटा,
दूत ।

प्रीतिमा प्रीतिपरतिका, प्रीति
भक्तिका (स) प्रीतिपरतिका
भक्तो, प्रीतिनायिका विभ
का प्रति परदेश में हो ।

प्रेष्ट () कहीं जाने के विधि
प्राज्ञा, देना, भेजना ।

प्रीतिमा प्रीतिपरतिका । प्रीति

प्रेमममूह । स प्रीतिमा प्रीति
ममूहमादिनी ॥ प्राज्ञाः कियामया
कियामया ॥ गद्य
ते भई छंदय प्राज्ञा कियाम
की ॥ सखि देखिये किय
परे गये भूषा ॥ सगन
कियाम धूषा धूषा ॥ १ ॥

प्रीतिमा प्रीतिपरतिका । प्रीति
भक्तिका (स) प्रीतिपरतिका
भक्तो, प्रीतिनायिका विभ
का प्रति परदेश में हो ।
प्रीतिमा प्रीतिपरतिका । प्रीति
भक्तिका (स) प्रीतिपरतिका
भक्तो, प्रीतिनायिका विभ
का प्रति परदेश में हो ।

प्रेष्ट (स) इच्छादिता ।

प्रीतिमा प्रीतिपरतिका । प्रीति
भक्तिका (स) प्रीतिपरतिका
भक्तो, प्रीतिनायिका विभ
का प्रति परदेश में हो ।

प्रेष्ट (स) प्रीति दंगेन देव
काया ।

प्रीति (स) कियाम, भवित, प्रीति
कही, कियामया, कही ।

प्रीति (स) प्रीतिमपन, दूटता,
गोटा । । प्रीति ।

प्रीतिमा प्रीतिपरतिका । प्रीति
भक्तिका (स) प्रीतिपरतिका
भक्तो, प्रीतिनायिका विभ
का प्रति परदेश में हो ।

प्रीति (स) कियामया, यज्ञ में

प्रीतिमा प्रीतिपरतिका । प्रीति
भक्तिका (स) प्रीतिपरतिका
भक्तो, प्रीतिनायिका विभ
का प्रति परदेश में हो ।

प्रीति (स) प्रीति वर, दूत

प्रका. (स) लल, मे घेरनेवाले
पत्नी ।

प्रका. (स) पहिर ।

प्रोहमत्तु (स) शर्फीना ।

प्रोहमत्ती (स) शीहवेर ।

प्रका. (स) बागद, बन्दर ।

प्रुत. (स) स्वरविशेष, कूबाव, दृष्ट ।

प्रुति. (स) सहायता, कूदना,
फाँदना ।

प्यास बुझाना, मु० प्यास मिटा-
ना, कुहपीलेना, पानी
पीलाना ।

प्यारावानना, मु० सादर कर-
ना, ममान करना, चेट
हमभना ।

प्यासहमना, मु० प्यास होना ।

प्यासे मरना, मु० बहुत प्यास
होना ।

फ

फण्डो-फण्डिया (स) दामेटी ।

फाँदमदि. (स) } हाँप का
फरिमुता. } भीती ।

फदी. (स) } फरदा ।
फदिता. }

फटिक. (प) बिमौर, स्मटिक,
सज्जन पाचर ।

फटिकमिसा. (प) बह गिल
लो घडाह में टूट के गिरी
दी, पराङ का टूटा हुआ
पत्तर । [मन्त्रक ।

फण. फन, (सद) सूर्यकापंखों का
फणधर. फणिक. फणो. (स) सूर्य,
नाग, प्यास, हाँप ।

फणिक. फनि. (स, द) हाँप, सूर्य ।
फदीमू. फणोय (स) मियनाग,
बासुकी, सूर्यनाग ।

फरगा. (प) पावड़ा, कुम्हाड़ी,
टांगी ।

फरी. (स) टास, फलक ।

फल. (स) हथ का दण्ड, बरस-
सिंह, मेवा, चण, धर्म,
बाग, मोल, हथों का फल,
बर्म का फल, बाग,
नलीला । [बहिरा ।

फलमिद. (स) दबका, डर्रे,
फलप्रक. (स) बिलोया के मू ।
फलमाक. (स) लकड़ी, फल
के बिक्री की ।

फलकः (स) टाक, कलाट की
हड्डी ।

फसलसी (स) पखरोट ।

फाल्गुन (स) मांसविशेष,
फाल्गुन ।

फलगुनी (स) किंचित्, थोड़ा ।

फलदः (स) फलदायक, फल-
दाता । [लट्टेनहार ।

फलदाता फलदायक (स) फ-

फलपिता (स) पुष्प, फूल ।

फलपैरायः (स) जो विषय
त्याग, पाकी पुनि चाहता
हो न होना ।

फलरुहा (स) पाटनी ।

फलाः (स) मीठी, समीपस्थ ।

फलार्थः (स) खिरनी ।

फलितो (स) प्रियङ्गु ।

फलैः (स) फलेना कामुन ।

फली (स) चंपाफूल ।

फलामारता, सु-मुहोभर, चीक
एक बार मंद में लेना,
भखेर देना ।

फफोले घूटने में दिख में दुख
वाला, मन में चिंता होना,
दुखवाना ।

फफोले दिन के कोहने, मु-मन
की चाह पूरी करना ।

फवती कहना, मु- सुटकुड़ा
करना, सुईकरना,
किसीके पहरावे की हंसी
करना ।

फलपागा, मु- भले या बुरे
काम का पलटा मिलना,
बदला मिलना । [विफल ।

फलफलारी, मु- गाना प्रसार

फलफूल, मु- वनस्पति ।

फलनाफलना, मु- भागवान
होना, सुखी होना ।

फसलसः (स) लेग, कद, फल ।

फलितः (स) फल समेत, पत्र
सहित ।

फांसी देना, मु- गला दवाना,
मार हासना, फांसी पर
चढ़ाना या झटकाना ।

फांसीपहना, मु- फांसी दिहा
जाना, माराजाना, सट-
काया जाना ।

फांसी लगाना, मु- गलाघाट-
ना, गलादवाना, मार
हासना ।

फांग खेचना, नु० पक्षीर चहाना
 होसी खेचना, गाली
 बहना ।

फादखाना, नु० भगीरुना,
 सताना, बहुत लीध करना ।

फिटफिट नु० धिक् धिक्, लीधी ।

फिर जाना, नु० पलाना, बहना
 करना, दानी होना, छिठ-
 ना, बहना, टेढ़ा होना ।

फुँद देना, नु० फागटना
 देना ।

फुँद फुँद कर पावहरना, नु०
 बहुत चौकानी से काम
 करना दोर देना ।

फुट फटना, नु० बड़े हाँसना,
 विरोध होना ।

फुट फुट कर रोना, नु० सम-
 से रोना, बहुत
 रोना ।

फुट होना, नु० किसी को सम-
 ति नहीं मिलना, एक
 नती न होना ।

फुटरना, नु० पचन होना,
 मोड़ा न होना ।

फूल जाना, नु० मूँज जाना, प्रसव
 होना, पानन्दित होना,
 मोटा होना ।

फूल भड़ना, नु० सुंदरताई से
 होना, मोठा होना,
 दोपक्ष ने लसे हुए तेज से
 टपकी का गिरना ।

फूल पड़ना, नु० फाग लगाना,
 लड़ना ।

फूल बैठना, नु० खुश होना, प्र-
 सव होना, धर्मित होना,
 प्रसव होकर बैठना, रंज
 हो बैठना ।

फूलता फिरना, नु० पलक प्र-
 सव होना, बहुत हँसना ।

फूलाना समाना, नु० समान होना,
 पलक पानन्दित होना,
 पानन्द से फूल जाना ।

फूल में बिजगारी जाटना नु०
 प्रेम न होना ।

फेट बाधना, मु० किछी काम कि
करनेके लिये तैयार होना,
ठानना, ठहराना, कमर
बाधना ।

फेर पाना, मु० घुमना, चकर
खाना, दुख पाना, तक
लीक चठाना ।

फेर देना, मु० उलटाना देना,
पीछा दे देना, पीछा देना ।

फेर पहना, मु० फरक पहना,
मोम, रङ्गना, चकर पहना,
दुख होना ।

फेर फार, मु० छल, फरेव, घो-
खा, दगा, घोसरा घोसरो,
परस्पर, फेरा फेरी ।

फेर फार कराना, मु० बदल बदल
करना, परिवर्तन कराना,
गल/गलट करना, धोखा देना ।

फेरा फेरु, मु० घाघरा मु० किमी
बीज, कीटना, घोर, पीछे
देना ।

फेर पर हाथ फेरना, मु० फसा-
ना, फेर ठगना ।

हाथ फेरना, मु० घोर करना,
दुखाना, घेरना, घोर करना ।

फकी, (स) छल, सफल, बीसी
बम्पा फुलना । [धिड़ि ।

फलीदय (स) साज, माति,
फले पुष्पा (स) गुमा । [धिड़ि ।

फले बहा, (स) पांहर बहा ।
फल्गू (स) पीठा बुझा । [धिड़ि ।

फापित (स) दावा । [धिड़ि ।
फहराई (द) कूटने दे, फहराते हैं ।

फावी, (द) पुट, मजबूत, शक्ति,
फवी, फवना, सजना । [धिड़ि ।

सोभना, ची० कुमति दिख
कुमेयता फावी, चतुर्बहिः ।

वात सूख जनु माही ।
बर्धातु सोही माही, माही

चन अहिवात की जगारो
है । [धिड़ि ।

फागुन (स) माघभेद, नाम
चर्जित वाहव, माघ विघेव,

फागुन । [धिड़ि ।
फुल (द) सत्य, साध, ठीक ।

फुलवाई (प) फूल का बोग,
फूलवारी । [धिड़ि ।

फूल (द) साध, सत्य, ठीक,
फिन (द) भाग । [धिड़ि ।

के. (३) करहीसीस ,

संमुद्र के. ३

के. (३) के. ३ के. ३

के. (३) के. ३ के. ३

व

व. व. (३) व. व. व. व.

नाम—दी. ३. व. व. व. व.

संतान, व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

गुरु के. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

सो. व. व. व. व. व. व.

व. व. व. व. व. व.

रूपी धरुवा से बचन रुकी
बाण भी रावण के अतम
में बेध जाते हैं धनकी
मागो भपने उभार रुकी
संहमो से निकालना जा
ता है चाप निकालने का
सावकाश नहीं जाता ।

बकी (ट) बकुलो, चीन। फिर
कम प्रियलाग, कुवालो,
बकिदि मराहति मान
मराहो। बकुली को हमो
मान प्रममा करती है ।

बक (स) बगुलापक्षी, भक्त, गया
बकलाव्य (प) फला का
बकुला का बला ।

बकरी (ट) करी, पाला, यज्ञा
निगा गल्ल । दोहा । यज्ञा
काग माया यज्ञा निदि
मोहे यज्ञयाम । निगा का
मिलो कहत कवि, निगा
हरिद्रीनाम ।

बकरा. (ट) बैर, अज गल्ल ।
दो० । यज्ञबकरा यज्ञ पि
तामह, यज्ञ कहिये पुनि

हंस । यज्ञजीवन भरन
करत, यज्ञ एके जगदीश
बकुल (म) मोलसिरीदुप
मोलसिरी, मुरसको, ची
चंगक बकुल कहं बतमा
पाटल पनम पराम रसा
जा । नव पक्षय कुसमि
तह माना । चंगरीक पट
कर गाना । यद्योत बकु
मोलपी पाटल गुलाब
पाडरि पनस कट
रमाल याम चंदरी
पटली भ्रमर की पति

बका) म मोलता, बकता
बकता)

कयनिक, कहनेवाला ।

बक (म) बाड़ा, टेढ़ा
यक्र }

बग (म) कौर, बक, बगुला
बगल्ल प । मरपट, धा
भटपट ।

बगमेल प दो० । यज्ञ

बगमेल, बगुला, बगुला
ममट । यथा वि
बकल, बाक राबदि

वचसि(स) वसति, वचन ।

वचनचूष. सु० पवित्राग्नी ।

वचनचोदना, सु० वचन तोड़ना ।

वचनमेना सु० इकरार करना ।

वचनहारना, सु० इकरार करना ।

रमेना, माननेना ।

वचनतोड़ना, सु० करी वृद्धि

भाग से फिर जाना, गर्त

से फिर जाना ।

वचनवद्ध सु० कठोरवचन,

असम्यवचन ।

वचनदेना, सु० पक्षाकील

करना, पक्षकरना प्रति-

पक्षकरना ।

वचननिभाता या वाक्यना,

सु० कहे की वृत्ति करना,

अवलोकात्परपक्षाद्वचना ।

वचनसंभारना सु० वचन

देना, इकरार कराना ।

सु० वचन देना ।

वचनमानना, सु० बातमानना,

वाक्यावाक्यन करना ।

वचन (व) वृद्ध, वृद्ध, वृद्ध

वचन (व) वृद्ध, वचन ।

वचन. } (व) दयापात्रक,
वचन. } वचन दयावृत्त ।

वचनमी (म) समाजी, वाचक ।

वचन (म) नाम वचनविद्या,

कीरामणि, कीरा नाम

दोहा : निःशेषा इह,

वचन पुनि, कीरा, वचन

पुनः । सत्त्वतीयमननि

वितन, भूय भवन वचि

मेन इह इ गान, वचन व

गवाः दोः । गंध वचनमि

त्रादिनी, कृतिग वच

निर्घाति। दंभीति गत वचि

पवि, मिदुर इहादम

प्यात इह ममः दोः ।

वचनो - कृतिग नत्रा

पुनि, वचन कीर्तवोनाहिं ।

परी पुरी के भाग श्री,

मिरन करे रस माहिं ।

वचनवात(न)मान का निरना ।

वचनवर. (म) वचन, वचनवा

वचन वचन, सु० वचन, वचन

वचन वचन (व, वचन, वचन,

वचन ।

बहुल (म) देवदत्त ।
 बट (म) सागाम्यवृत्त, बहवृत्त,
 नार, कौड़ी, बट का पेड़ ।
 बट नाक नाम—दो •
 जटिल पटीरत्नपाल बट,
 जहपि पूतन्य मोध । यह
 बंसीबट देखु बलि, भव
 क्षिप्र निरुपध बोध ॥ १ ॥
 बटाऊ (सो) बटोही, पधिक ।
 बडालगना, सु • दागलगना ।
 बड़बोला सु • शेखी बघारने
 वाता ।
 बड़गाकुवा, सु • नूराप ।
 बड़पेटा, सु • बहुत खानेवाला ॥
 बड़ाकरना म • बड़ाना, चराग
 को बुझादेना ।
 बड़ाबोल, सु • घमण्ड की बातें ।
 बड़ेबोल का सिर नीचा, सु •
 घमण्डमे चराबी होती है ।
 बड़ा रस्ता पकड़ना, सु • मर
 जाना ।
 बड़ेपेट वाता होना सु • भंतीपी
 होना, धीरहोना, घमा
 वान होना ।

बड़ाई करना, बड़ाई मारना,
 सु • मराहना, प्रमंसा
 करना, लुगि करना, घमंड
 करना, शेखीबघारना,
 धोंग मारना, लस्यो बौड़ी
 हकिना, चपनी मराहन
 करना ।
 बटु (म) बिलार्थी, तख्तवारी,
 बालक, ब्राह्मण के पुत्र ।
 बटोही (म) पधिक, चारो ।
 बड़ (प) हल विशेष, सरगत,
 दट, बड़ा, पधिक, मेवाना ।
 बड़व (म) चमि, लख भीतर
 का पाग ।
 बड़वा (म) चमिनी, घोड़ी ।
 बड़वानल (म) चमि लख
 वासी, समुद्र की चमि,
 बड़वाग्नि, समुद्रकी पाग ।
 बड़सी, बड़िया (प.म) बंसी
 मोन की, कुलिश ।
 बड़ाई देना, सु • पादरदेना,
 रज्जतदेना ।
 बड़ीवातनहीं, सु • कुल कठिन
 नहीं ।

ਬੰਦੋਬਸਤੀ, ਸੁੰ. ਖੀਟਰੀਆ,
ਪੰਜਾਬ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦੀ ਰਾਜ।

बटेंजीनी, मु. प्रंदाग में बाहर
'बोर्गा'।

बडोई. (१) अधिक, बडा
१७. विभक्तान. सुप्य ११३

वनिजः स) महाजन-व्यापारी,
वनिषा मोद्गमरी तिजारात।

संज्ञा १ (म) साक्षात्, स्पष्ट
संज्ञा २ (म) साक्षात्, स्पष्ट

मन्त्री १०००००, १०००००
दत्त (स) दत्त दत्त ।

ਸਤਗੁਰੀ ਸੁ ਸਾਗ ।
 ਸਤਾਇ ॥ ੧ ॥ ਸਾਗੁ ਸੁਖਾਇ ॥

लंडन, द. य. ।
 मनीषा (भ) कृ. ना. कृ. ना.

गुरु पुरुषं कुरुते मया

सुविधा ५५०००० ६००००० ।
सुविधा ५५०००० ६००००० ।

बनारस, मु. बागली, बाल
बनारि बाबा ।

गणेशाय नमः ॥ १ ॥

वसतिगणना, "मु० - वसति
गणना, "मु० - वसति

बसो बंटा ११, मुं० घाव १० बनी
१. बसो बंटा ११ २० २०

वर्षा मी दिवसांमा, - सु. १००
दिवसांमा, १०० दिवसांमा

सत्ता चैवाम्, (ग) वल्लभ, गे. पु.
लेख. (ग) ग. वल्लभ. १००

वत्सल- (स). प। वत्सलः प्रहाटक
दयायुक्त दयायुक्त ३५१३

बद (म) बल: १०० १०००

याचो, - वा. १. २. ३. ४.

५८१ (स) कदम १०२२५

कावगाष्ट १०५२३

वृत्तः (५) कृष्ण, ७ शोभते

१५४ (ग म) बाटुवा, पत्नीबाटु

जब आँकी देर हुआ वहाँ

बदरि-(०) [नीचे, वैर को हथ,
बदरी-(०)] करलें हथ, वैर
का हथ, वैर का पेड़.
बदरी-नाम-रीहा ।
कर्मधु-बदरी-डवन,
कोलि-कोल-कोलीन ।
दिने नाम-गति-प्रेम-युत,
गवरी-गति-सुगीला ।।
दानमहा-वदरि-ने-गिष्ठा
दे । श्री- । भिन्न-विभ
कर-बदरि-समाप्त ।
पयीत-जिन-को-मंगर
हाय-वैरि-समान-दे ।
बदरी-वन- (स) प्रयाग ।
बदर- (प) निष, बटा, पगी-वार
पयले । [एव-प्रारो ।
बदरि- (स) करत-दे-रम
बदरि- (प) बरि-के, मायिके,
बदर-बदर-बदर
कर-के । [वाप ।
बदरी- (स) कल-पय, पविना
बदर- (प) निष, बटा, बदली ।
बद- (स) रर, बांध, रोहा
देव, निरर, ररित, रंध
दवा ।

बध- (स) हिंसी, रनन, रहता,
नाम, मारप, गधु-वा
बध-नाम-हिंद मिषरनी ।
मपल-पाराती-पहित
ममिवाती-रिपु-परी ।
विप-पमिष-दपत-परि
पंथी-दुख-बिरी- । हिट
मधु-दस-दुष्ट-पर-वैरी
दम-मुख- । गिया-खानी
ताकी-कदम-पध-कोनी
हर-सुख- । निपाती
मंगरी-इन-रत-वाती
बधनती- । बिडो-वा-पौ
देवा-बापि-सुग-भायो
पयती- । य-पुन-मानान
नगन-मगना-भाग-धुजा ।
कली-भोगी-राजा-मिषर-
निहि-हंटा-सुग-सुहा ।।
बधिर- (स) व्याधा, हटा-ल,
हा-पर, बहि-दिया ।
बधिर- (स) बरीर, कन-पटा,
बधिरा, बररा ।
बधुनी-बधु- (स) की, पय
बधु-पती, बधु-
विदरिता-की ।

बधू (स) श्री, पताङ्ग ।

बधूटो (स) नवीनता श्री,

'युवती, छोटी प्रवस्था को
श्री ।' । योग्य ।

बध्य (स) जननीय, मारने

बन-
(स) } जानन, जल, पानी.
(द) }

बोरीटनाल, बाटिका
समूह मधन बंगा जाको ब
होता है, जंगल, चारण्य
सपवननाम । दीहा । छती
भवन जगान पुनि, सपवन
कोर चाराम । यह सु-
न्दावन नाम तुष, जगु
बलि कवि को धाम १११
जानन नाम । दीहा ।
जानन द्विविध परम्यवन,
गहन बलु कातार ।
चटवी में दूधसे दई, मो
सम मन्द कुमार १२१ बन
नाम छंद पंखावकी । वि-
पिन गहन चारण्य कव-
वन । कातार चटवी दुर्ग
जानन । अथवा जानन

पति सरि निर्मल । धोहम
कला छंद पंखावलि १११
वन मन्द । दीहा । बन
पानी को कहत कवि, बन
वाटि को जान । बन
जानन ते सुरभी संग, बन
पावन नदनाम १३१ बन
विहार—छंद सुंदर । ह
भानुपुता हरि संग कि
वन छीनत कात बन
मुहार । फल फलनि फु
फली मगरी मदि ला
सता पति सौरभ छार
दनि मुनि परान सुषा
करे खन नातिक मो
गिरा सुन्दार । सग
बधु चंत मुन धरिये य
सुंदर छन्द सुरीत बहार ।

बनचल. (द) ठग, लवार, धूत
समोधान बंधन नाम
दीहा । करे हो भी पति
छोटी, कपटी बंध बचाल
व्याजि छतपी निदगी
दिविदिव चरे । मःन । ११

वनचर. (स) वानरादि वन-
वासी. वानर, जंगली, वन-
चर नाम—दोहा । बिच
कूट सेवत प्रभू, वनचर
व्याध हिरात । धानुष
तुल्य शर पुनि, दस्यु
पुलिंद हिरात ॥ १ ॥

वनचरलता. (स) बेगाच, बे
माच नाम—दो. । कोस
हस्तिना कपिलता, बिच
येव सोनाव । कंडु करति
ए चंग में, कानन छे
हस्ति लासे ॥ १ ॥

वनज. (स) वन भूर, जलभूर,
कमल चन्द्रमा, जलचर
मीनादि ।

वनवाहन. (द) नाव ।

वनमांस. वनमांसा, (स) फूल
में बनौमाना पक्षवन्त की,
तुलसी, कुन्द, मन्दार फूल
और पक्ष की मांसा,
सरोवर, पाणिनात । ५ ।

वनलवनु. (स, द) कमलवन,
वनलवन. धी. भारत दुष्ट

परिवाह निहारा । मानहु
तुदिन वनलवनु मारा ।
धर्मात् मानो पांसाने कमल
वें वन की मारा ।

वगाव. (प) वेप, गृह्णार, रंवाव ।

वनिच. (स) वनिया, महाजन ।

वनजाना. सु. होसकना, भांग-
जागना, किछत खुलना ।

वनजाना. सु. होजाना ।

वनपड़ना. सु. सुधरना, भसा
होना, बसा, होसकना,
सफल होना, सिद्ध होना ।

वनिज. (स) महाजनो, वनि-
योटी, व्यापार, ।

वनिता. (स) स्त्री, नारी, मेहरी ।

वनिच, वपिच. (द. स) वनिया ।

वनी. (स) दुसहिन, नयी मल,
मजरी का धन ।

वन्दन. वंदन, (स) प्रणाम,
नमस्कार, देखवत. सो
तीन प्रकार है १, एक
सदस भाव निवेदन
लेखे बाप आदि

वनारहना, मु० ठहरारहना
वकारानेना, मु० भाफ को बंद
करके गरी में जाने देना।

वमत-वमत. (म) बोलकर, चीख,
टाटना, रह, भड़ारि बां-
टता है. रहदरता है,
छांटकरन।

वदः वयम (म) विद्वज्ज, पान,
योदन, जात, पन-
या, पायुही, पनिर, वैज्ज
वगिया, वयम शब्द —
दोहा। वयम निहंगन की
कहत, वयम कहिये पुनि
काल। वयस जु जोदन
जात है, भगने मदम
गोदान्त ॥ कालगष्ट —
दो० काल चमिन बी
काल वय, धने राज पुनि
काल। काल व्याज के काल
हरि, मोहन मदन गो-
पास ॥ २ ॥ [वयम ।

वयन. (म, प) राजादिनेय.

वयसः (दो) बैठा।

वयस्यः (द, स) हरदे वयः।

वयाह. (द) दजासी, महाजनी।

वयार-वयारी. (प) पवन, वायु
हवा।

वये. (द) बोए, बोवा।

वर (म) ग्रेह, देवता, प्रेत,
सुन्दर, दुस्तहा, संसार,
कुंकुम, हत्या, टिकोर,
पति, तिय, वरदान, वस,
आशिय, दरना, जलना,
बोर, बट वस, कन्या का
पति, जनात्य, वर शब्द—
दोहा। वर सुन्दर संसार
वर, वर लो देवता देता।
वर कुंकुम वर हत्या पुनि,
वर तिय हिय हरि लेत ॥

वरवमद. (द) पच्छावैश,
नंदी।

वरवीर. (द) ग्रेठ वीर।

वरवेडा. (द) पति वशी।

वरकर. (स) विस्तार हाथ।

वरन. (म) वर्ण, पचर, जाति
दरन।

वरनी-वरपी. (द, स) कही,
भाषी, कहिय।

वरद (म) वर, धेनु ।

वरदसगील (म) वरदानी

विय निपदय व्याभा

विक, गुला विग्रह ।

वरदायक (म) गिर, मरुदेव,

विविधेनद्वारा । (म) ।

वरदेनिती (म) वरिदा वरदो

वरदानी वरवर्ग म मरी,

नेष्ट रग वाणी ।

वरवाट (म) वरुवाट ।

वरप्रसाद (म) वरदान का

प्रसाद ।

वरवसु (म) वरुवसु वरु

वरवि (म) वरिदेन मीर

वरवर्ग म मरुदेव ।

वरवलि म वर विग्रह

पान्ति म मरुदेव वरु

वरवर्ग विग्रह म म

वर वरु मरुदेव वरु

वर वरु मरुदेव वरु

वर वरु मरुदेव वरु

वरु वरु मरुदेव वरु

वरु वरु मरुदेव वरु

वरु वरु मरुदेव वरु

वरु (म) वरु, वरु, वरु

वरुधम (म) वरुधम मरुदेव

वरुधम (म) वरुधम मरुदेव

वरु वरु मरुदेव वरु

वरु वरु मरुदेव वरु

वरु वरु मरुदेव वरु

वरुधम (म) वरुधम मरुदेव

वरुधम ।

वरुधम (म) वरुधम मरुदेव

वरु (म) वरु, वरु, वरु

वरु (म) वरु, वरु, वरु

वरु, वरु, वरु

वरु (म) वरु, वरु, वरु

वरु, वरु, वरु

वरु ।

वरु वरु (म) वरु

वरु वरु (म) वरु

वरु वरु (म) वरु

वरु वरु (म) वरु

हरिषा- (द) तेजा, समय, वाग ।

हरिषा- } (द) बली, तेजस्वी,
हरिवंश- } बरुवंश, प्रतापवान् ।

हरिषा- (प) जोरावरी, जव-
रदस्ती ।

हरिषा- } (प) बली, जवर-
हरिषा- } दस्त, जोरावर ।

हरिष्ठ- (म) प्रतिघेष्ठ, प्रति-
ष्ठाम ।

वरी- (म) व्याही गारो, दरगा,
व्याह करना ।

वरीसा- (प) वरिष्ठ, वर्ष, वारह
नाथ ।

वव ववव- (शु) कटावित्, जात,
वज्रव, वस्त्र ।

ववधी- (म) बोध विनिय ।

ववधी- } (स) कसदेवता,
ववधी- } कस, व्यास, हय विनिय,

ववध नन्द — दोहा । ववध

कहत पति जोर के, ववध

ववध बी नाम । ववध

ववध नन्द जय, ववध

ववध नाम । ववध

ववध — दोहा । ववध

ववध नन्द ववध पुति, ववध

प्रचिता नाम । ववधति

ववधी सहित घट, ववध

ववधा धाम ववध पुनः—

दोहा । ववध प्रचिता

ववधति, कसवरपति

कसविस । तेतुपयिय के

ववधतर, नित वठि ववध

औ सीसा ॥ ववध नाम

दोहा । ववध ववध ववध

ववधति गोव ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

ववध ववध ववध ववध

को फेरतो हैं और धनुष
 और दान को फेरतो हैं
 प्रगट पथ यह कि जीवन
 की सरणि को धनुष
 जो हंसि चिते के हरिलेग
 हैं यो धनुषाय गो के अग्नि
 की, ज्ञान की को चिते के
 एसि के हरि लेत है।
 दोहा। ससग मंजु मुनि
 मण्डली, मध्य योग पुनः
 ज्ञान, सभा, जनु तनु धरे,
 भक्ति, सखिदानंद। इस
 दोहे में दोनों राम ज्ञान की
 का, पथ प्रगट है ज्ञान स-
 भा, जो भक्ति रूप ज्ञान-
 की, सखिदानंदरूपमाय।
 बलकावा (प०) कुदावा, पद
 लावा, पेंठे की बात।
 बलकीय, (स०) अनुमान,
 बलरूप, प्रधान बानर।
 बलकाकी (द) बल शक्त गया।
 बलदेव (स) बलभद्र, बलराम
 लक्ष्म के बड़े भाई।
 मलंबामुर बध—दोहा।

विपिन... प्रसंबद निपात
 पुनि, कर्तु केति बलदेव।
 मुमनयपि, कर जोरि सुग,
 चितय करत, दिव, देव ॥
 बलदेवाय नमः—हृद मा-
 र्दून विक्रीहीत। जानिंदो
 भिदनं प्रसंबदमन, मंकरं
 भुवरं। राम केगव पूर्वजं
 बल तथा तासां लोका-
 वर। कामपाल बलपुत्रं
 सख्यदेवं सीर पार्थिवसी।
 बलद्रंयुत रिवतीरमन बंदे
 रोहिणे मृगसी ॥ ॥
 दोहा। नाम बटदग कंद
 यर, मार्दव सखिवेक।
 मगन मगन जगनं मगन,
 दग्गतमन गुरु एक ॥ ॥
 बलय (स०) जवार भाठ।
 जल का बाटि।
 बलराम स० बलभद्र, मुगसी।
 बलका बराक, (स०) बलुका।
 बलुका, पक्षी खेतवर्ष।
 बलकाकी, बराकी, (स०) बलुकी
 पक्षिणी।

वलीना, वसन्तगाना, वसन्तवस
लाना ।

वल्लभ. (म) वल्लभा की वस्तुवत् ।

वल्लभना. (मु) चपनी बहाई ।

वल्लभ. (म) प्रिय, सज्जन ।

वसन्त. (म) प्रिया, मज्जनी,

दृष्टा नाम—छन्दधारी ।

चित्ते बिलुगे मिया कान्ता

दृष्टा । प्रिया दृष्टिता

वसन्तो यो प्रेष्टा न दुरवि

वल्लभा पतनी प्यारी ।

कलार, दृग्मत्ता छन्द से

धारी ॥ १ ॥

वली. (म) लता, पानपत्र वस्त्र ।

वल्लभीक्ष. (म) सुन्दरवल्लवान्,

वसन्त करके मोहित ।

वसन्तोली. (म) श्रान्त, सामान्य

पशु, वसन्तोली श्रान्त भंगा

वसन्तोली पशु मिश्रणेन । इति

चमर चटगत कोष प्रमाण ।

११ स्तम्भ ॥ ३ ॥ चण्डाय

यी भागवत प्रमाण ।

वसन्त. (द) वसें, रहें ।

वस वसवर्त्ती } (म) पधीन, प-

वसवर्त्ती. (म) पधीन, प-

वसिष्ठ. (म) श्रीरामचन्द्र जी के

गुरुदेव कुलपुरोहित ।

वसिष्ठो. (म) दूतजन, दीरादा,

कारिष्ठ ।

वशीकरण. (म) नामसिद्धि,

मन्त्रविशेष । [वकील ।

वशीठ वशीठो(द) दूत. वक्त्र,

वशीभू. (म) पधीन, पशु-

मत्तो पामा ।

वश्य. (म) पधीन होकै, पधीन ।

वयान वयान. } (म) वदन,

वयाना. }

कडनव, कडन, लुति,

कडा ।

वसन्त. (म) वसन्त, वसन्त । श्रीर

नाम—छन्द चण्डा । चण्ड

दृष्टा नाम वसन्त चण्डसेन

चौर । कान्ता गुरु पट

दूर दूर दूरक तीर ॥

मोहित विने करायमान

दीर्घ मन्दनद । चटमध

चञ्चला सुखद कोद पत्र

मीम् ॥ १ ॥

वसन्त- (स) पश्चिमी ऋतु ।

वसन्त नाम—दीपा । कु-

सुमाधुर रितुराग नधु,

माधव सुरभि वसन्त ।

नास्ती त्वो जोगयत संदा,

याते अधिक वसन्त ॥ १ ॥

पुनः दीपा । नधु माधव

रितुराग पुनि, सुरभि-

वसन्त विहार । वन वन

विहरत मुदितमन, राधा

नन्द कुमार ॥ १ ॥

वसन्तद्रुम- (स) पान्त्वहृष्ट ।

वसन्ती- (स) पीतवर्ण, पीला,

देवही ।

वसन्त फूलना- सु० सरसी के

फूलों का मिलना ।

सांखी में वसन्त फूलना- सु०

तिरमिरागा ।

वसन्त के घर की भी खबर है,

सु० यह जानते भी हो

बड़ा होरहा है ।

वहादेना- सु० सजाहना, नाम

करना । [फिरना ।

वहाफिरना- सु० भटकना

वससि- (स) वसत हो तुम,

तू वसता है ।

वसव- (प) वसवा, वैश्वदेव ।

वसीठ- वसीठी- (स) सुखिया,

दूत, वकील, परकारा ।

वसु- (स) किरण, पत्नि, पट-

पमर, नीर, धन । वसु

शब्द—दीपा । पटग वसु

है पश्चि वसु, वसु मूरग

वसु नीर । वसु धन, लग

में सी धनी, धन जाके

वन वीर ॥ १ ॥

वसु पटपमर विवरण (स) द्रोप

माण, २ ध्रुव ३ अर्क कही

सूर्य, ४ अग्नि ५ दीप ६

वसु ७ विभावसु ८ इति

योगागवत, ६ स्कन्ध, ४

अध्याय प्रमाण ।

वसुधा-वसुन्धरा-वसुमती- (स) पृ-

थ्वी, भूमि, काठ । काट शब्द—

दी० । काठ काट या

विसपट, काट पमर पुर

काट । काट लु बहुरि

वसुन्धरा । बुद्धिहीन नर

बहती (घ) बहती हुई, या तीव्र
 संज्ञा प्यात. एक पुर या
 पुरी, मगध में पुर को
 बिसेहा भी कहते हैं ।
 १ पाग २ मगर या म-
 गरी, ३ दीहा । दी यादि
 अष्ट (८) संज्ञा लोड्ड में हैं,
 संज्ञा पुर का जान ।
 लोड्ड (१६) में पुनि घर
 गलहि (१००), संज्ञा
 याग मगाय ३ १ ६ एक
 मत (१००) में घर उहला
 (१००) हैं, नगर बिना-
 वत बिना । यह लेखा में
 जानिये, समुक्ति गुनावन
 किन् ३ २ ३

बेष्ट (घ) बहती बसत ।

बह (घ) जलमध्यवहना,
 बहना ।

बहारा बहारा, (घ) गति
 याया पुनि अमपुनि अति,
 अनटाव देना, अनु अरहे
 अमपुनी बिदा ।

बहना (घ) उठाना, ले जाना ।

बहतीका (घ) अधिक, बहुत ।
 महिहंग. (घ) बाँझाग,
 दूर देग । [अमपुनी ।

बहिहंग (घ) धर्मविमुख,
 बहु (द) अधिक, बहुत, अति,
 अति नाम—टीका । उह
 अति से अति भेद अति,
 अधिकोत्तम अंत । अति
 सब में मलि नाहि करुं,
 गोमत अंत तुरंत । १ ।

बहुकालीन } (म. द) बहुत
 बहुकालीना } दिन का, बहुत
 काल का ।

बहुधा (घ) बहु प्रकार, बनेक
 बहुत प्रकार से, प्रायः
 अक्सर, बहुत प्रकार ।

बहुवाक् (द) रावण ।

बहुवर्हि, (द) किर ।

बहुवि (द) किर ।

बहुला (द) विरला ।

बहने पानी में झाँकती ना, मु-
 कबतक अमपुनी ना बहने
 बहने लगे अमपुनी बहने
 अरनेना ।

बहुत गई छोड़ी रही. सु० उमर

पूरी हो चुकी है ।

बहुत (स, प) बहुत स्त्री ।

बहुपाद [स] पुनश्च नाम,

बट नाम । [बह प्रकार ।

बहुविध (स) अनेक भांति.

बहुमीहि (म) अनास विमेष,

अनेक धन । [चपल ।

बहुस्त्री [न] अक्षर, विवित

बहुला (स) इसाची ।

बहुलाम् [स] विमेष, अधिक ।

बहु [प] बहुत, अधिक, स्त्री,

बहु, बहु ।

बहोरी [द] बनाय, फिर ।

बहेइ [म] बहेड़ा वृक्ष.

बहेरा नाम—दोहा । यह

विभीत कुरुघातफल,

सर्व भक्त कलिवृक्ष । भूता

हामु बहेर तर, है अति-

अक्षय सुगह ॥ १ ॥ पुनः

नाम—सोरठा । हितुप

भूतावास, अथ कलि-

दुम कर्पफल । बहो विभी-

तक पाय, मजगमनी

हित मी गई ॥ १ ॥

बहि [स] अग्नि, अगल ।

बघ्न [स] गया, जासी ।

बा [स] विकल्प, अथवा

पचान्तर ।

बहुबंधन (स) तीन और तीन

से अधिक की संख्या के

लिये जना ।

बाज [द] वायु, पवन, बाहरे ।

बांझ [प] लुधा, छिन्ना,

अच्छेद, बका ।

बांग [क] मय्य, पावाज,

बांगा [घ] अति, बाच, बाणी,

अपास । [फरि वृक्ष ।

बांगा [प] खवार, दुट,

बांवां पाव पूजना, सु० पाखंडी

मनुष्य के इस और पाखंड

की मानलेना ।

बांमपरचढ़ना, सु० कलही

होना, बदनाम होना ।

बांइ टूटना, सु० कीरे सहायक

न रहना ।

बांइ चढ़ाना, सु० सहारे की

तैयार होना ।

बांइ देना, सु० सहायता देना ।

बाहपक्षकता, मु० सहायता
करना, पक्ष करना, पानय
देना ।

बाहपक्ष, मु० सहायक, भाग्यो ।

बाहपक्षता, मु० सहायता करना ।

बाह गढ़े की साज, मु० सहा
यता कर जम्मा लीङ्गता,

बहु साज की बात है ।

बाह (घ) बगुना पक्षी, भग ।

बाहविजाया (ङ) बातचीत ।

बाहो (स) बगुनी पक्षी ।

बाह बाह [घ] बहन, बागो,
बहन योग्य । [भीष ।

बाह (ङ) बहनारी, पानय,

बाहविभूषण (स) बाहो को

पुत्रार, बाटिका का भूषण

चर्चात क्लृप्त का मन्त्रक,

बहन का सहना ।

बाहोय (घ) बाहोस्वर, सुव-

स्यति, पण्डित, बागो के

ईश, देवदासी ।

बाहोयः (स) बहोबागी ।

बाहूय बाहूरी बहूय (ङ)

— — — — —

, बाहो

बाहस्वर (घ) बाहोस्वर, बाह का
स्वर ।

बाह (घ) बहन, बागी ।

बाहस्यति [घ] बहस्यति, पण्डित ।

बाहो (स) बहो, पण्डित,

, बहनसमर्थी, बहवासी,

प्यथवादी ।

बाह्य (घ) बहन, योग्य ।

बाह (घ) - पुत्रार, बाह,
निष्कर्ष ।

बाह (ङ) पक्षी, बहनान् वि
जय, पुनः चौका, पुनः ।

बाह (ङ) बहो, लडाई, बाह
ना, कड़ना, बाह ।

बाहोय (स) बाहोय बहो ।

बाहोय (घ) बाहोय (घ) बाहो

कन, लाल दूध्यादि ३१३

टीकक, लोतार, लालदूध ।

दूध्यादि ३२३ बाहोय, लाल

लाल दूध्यादि ३३३ बाहोय

बहोय दूध्यादि ३४३ बाहोय

सहनाई, बाहोरी, लाल

मिठा दूध्यादि ३५३

बाहो, बाहो (घ) बाहो

बाहो (घ) बाहो

पद, छिन्न, वर्जित, देशी
दध नाम—दीहा । देशी
बाजी देहधरि, पायी यदु-
पति पाम । तस्य रदन
मुक्त छारि हरि, कीर्त्तौ
पद्मर दिनास । १॥

वाटः (प) नार्त्त, डगर, पद्य,
राज, रास्ता ।

वाटपरै-(प) नट होय, चूल्हा न
लाय, वाटगिरै पर्यात्
वाटवन्द होय लाय, रीझ-
गार लाय ।

वाग छूटना, सु० बेषस होना,
बस में न रहना ।

वादेपचनाः सु० झेली चतरना,
दहजाना, बदासही ला-
ना । [ना, बहना ।

वादे में भड़कना, सु० बहबहा
वागमोहना, सु० सीतला की
दहजाना, घीहे की
रीकना, काम से हटना ।

वाटिका- (प) फूलवारी, चप-
न, सामान्य बगिचा । दाम
नाम—दी० । शरी वाटी

वाटिका, वागवनी पा-
राम । उपवन सुखद वि-
सोक्तिद्वय, बसे सपन मुनि
राम ॥॥ कंदमुक्तहरा ।

मुनीमहि लेन मंडीप
चली सुद पाय समीप
विनीत प्रनाम । विमोर
समै पुनि देखि प्रमोदित
सादर साय दियो शुभ
घाम । प्रसून बनो हउ
बंधु गये सिय नयन चकारे
भये सखि राम । वसू ज-
गनं यह मुक्तहरा शुभ
हंद विनास कछो पमि-
राम । २॥ दी० । देखि स-
रूप चनूप कवि, लजक-
सुता हुदसाय । रघुवर दर
हित गौरि टिंग, विनय
करत मिरनाय । ३॥

बाह् बहाना सु० एकसाथ
बंदूक बसाना ।

बाह्भाङ्गना सु० बहुत बादे
मियों का एक साद बंदूक
दागना ।

वाङ्मयिगव गेन को ध्याय तव
रक्षवारी कीनकरै मु० निच
पर गरोसा हो जव पही
पुरा से तव कोई चीज
नहीं बच सली ।

वाङ्मयिगवना; मु० साग पर
चढ़ावा, तीखाकरना ।

वाङ्मयिगवना; मु० कांटी में
पीत को वा बिधी लगव
को धेरना ।

वाङ्मयिगवना; मु० तीखाकरना,
साग पर चढ़ावा ।

वाङ्मयिगव (व) बटली, बट्टक,
तोव, धनुषादि का एक
बार लोड़ना, दामना ।

वाङ्मयिगव (व) बलितर्मय, - क्षम,
हरिपद, पर, तीर गुण, वाच
रग्या वाचक ५ ।

वाङ्मयिगव (व) व्यापार, लय,
विजय, तिचारत, छोड़ा,
गरी । [जती, वाचा ।

वाङ्मयिगव (म) बचन, पर
वात वात (व व) पवन,

१. वायुवीग, कटिवा,

वाच विषय, वाचा, जवा
वाँ, वताच । [भीम ।

वातवात (घ) वृत्तान्त वाच,
वातव (घ) पलाय छेप ।

वातवठाना; मु० वातवठना ।
वातकरना, मु० बीसना, वात
चीतकरना, कचना ।

वात काटना, मु० दूसरी को
वात को रद्द करना ।

वात का बतलव करना, मु०
कांटी की वात पर बहुत
बीसना ।

वात की वात, वात } मु० दल
की वात में, } पर से,

पलभर में, योको को देर में,
कटपट, तुरंत ।

वातवठना, } मु० मतलबकी
वातवठना, } वातकरना, भू

ठीकात बनाना, बिधी
वात की वस तरफ से बना
कर, काटना कि दूसरी व
मन में लग जाय ।

वातवठना मु० बीसना बीसना

धुपरहना, ठहर ठहर का
बोसना ।

वातबधना, मु० कुछ कहना
शुरू करना, वातछेड़ना ।

वातघोत, मु० दोस्तघाल ।

वातटासना, मु० पसल वात
का चत्तर न देना और
और दाते करना ।

वातपर दात } मु० लिस
वादे पाती है, } तरफ की
धर्चा ही वही तरफ की
वाते पाप से पाप वादे
पानाती है ।

वात पी जाना, मु० कड़वे घसन
सहना, रुखी वात सुनना ।

वात फेरना, मु० ठड़ाकरना,
वे सोचे बिचारे कोई वात
बोसना ।

वातफेरना, मु० कड़वे वात
का मतलब ददल देना ।

वात बढ़ाना, मु० वादकरना
तकरारकरना, किसी वात
की खूब फेरकर कहना
ता छिड़ना ।

वात बगाना, मु० मतलब गी-
ठना, झूठ बहाना ।

वातबांधना, मु० झूठीतकी
करना ।

वातबिगड़ना, मु० काम का
न होना, भेद खुलना ।

वातबिगाड़ना, मु० मतलब
करना, बिगाड़करना ।

वातमानना, मु० कहना
जानना । [लीना ।

वातरंखना, मु० कहना, मान
वातरहना, मु० रहना और
पावर रहना, प्रतिष्ठा र-
हना । [निम्ना करना ।

वात लगाना, मु० चुगली खाना,
वातेकरना, मु० रबर धर
की धर्चा करना ।

वाते बगाना, मु० लक्ष करना,
खुमानद करना ।

वातेगारना, मु० गिरी करना
हीन गारना । [सहना ।

वाते सुनना, मु० कहनी वात
वाते सुनना, मु० कहनी वात
कहना ।

बातों में उड़ाना मु० हँसी
नुबस में टासना, ठंडा में
उड़ाना ।

बातों में धरसेना, मु० आगल
करना, नुपकारदेना ।

बातों में कपेटना, मु० बातों में
धीखा देना । [खागा ।

बातायन- (स) भरीखा, बासा
बातायु (स) मृग, हरिण ।

बात बातो (प) बरी, दीप
, , की, बरी, बरिखा ।

बातुल, बातुल- (द-प) बीड़ाह,
, , पागल, बारी बट्टी, बीभ-
का, बल्यपाती ।

बातोधर (स) खिरकी, दरेकी ।

बायसण्य (स) सेवक का दीप
नहि विचारण, पालक,
पीसनहार, प्रीति ।

बाहर- (प) मीघ, घटा ।

बादरायणि- (स) दलदेव ।
व्यास पुत्र सखा ।

बादल- (प) मीघ, घटा ।

बादले- (द) बादल, मीघ ।

बादि (च) निष्ठा, शीघ्र, प्रकाश,

वास्ता, प्रयोजन, व्यर्थ ।

बादिनी- बादिनी- (स)
विरोधिनी, मोक्षवाणी
यकबादकारिणी, मोक्ष
वासी ।

बादी- (स-प) विरोधी, भू-
कालू, विवादी, कष्ट
वाला ।

बाधक- (प) दुःखद, कालू ।
अभायनहार व्याधा, रीष
मेवाका, विघ्न, प्रतिबंधक
बाधक बाधक- (प) बाधावर
मेवाला बाधक ।

बाधा (स) रोक, छेड़, दुःख
पीड़ा, विघ्न ।

बाग बागु (स-प) मत्स्य, मति
जाल, क्रीडति, बाध,
प्रकृति, बागाचुर, बाध,
रंग, मोभा, व्यभाव, बाध
गर, तीर । बाग नाम-
हृद संशयस्य । सर नाराय
मिमीमुख पक्षी रोपक हृ
येन जलम विप्रिय विप्रिय
रोगर करण हृ हृ हृ

॥ अथ वानप्रस्थाय सायक इषु
 नागैश्च ॥ मंथाने मधु
 हंद् वला दायनमव कू ॥
 पुनः—दोहा । हाण
 कदावि वसितनय, विमिय
 पादि पुनि वान । वःप
 कदत कवि रगः को, यो
 हरि पद निर्दिष्ट ॥ २ ॥

वानप्रस्थः (म) मधुवाहण, आ
 यन तीसरा ।

वानप्रस्थायमकनौः (म) वध-
 चारी को कै विवाह करना
 पुनि वानप्रस्थ लेई स्त्री
 मङ्गित बन को जाना,
 तपकरना ।

वानाः (प) वेद, भर्त्ता, फटना,
 एक हथियार का नाम ।

वानिः वानी (प) वानाद, पादत ।

वानैतः (प) दो सीपाही जग-
 टेरदार, सीरफादेत, वाना
 फेरने वाला । विरदैत ।

वाधवः वान्यवः (न) नतैत, स-
 न्धन्वी, कुटुम्ब, स्वजन, मित्र,
 परिवार, भाई । [दीन ।

वापहाः (द) वापरी, दक्षिण ।

वापरीः (द) वापहा, दीन, क-
 ज्ञान । [वैर मानना ।

वापकागा, मु० वाप हं वरा-

वापनेरा, वाप रे वाप, मु०

पचंगा, चौर चीन चौर

छर पादि को जतमाने

वाला मन्द । [वैर ।

वापनारेका बैर, मु० बड़ा भारी

वाप न मारो पीरहो } मु० यह
 देहा तिरन्दाज, } कहा-

तत वहां बोधते हैं जब

लिखी के वाप दाटे कुछ

योग्य नहीं हो चौर बड़

कुछ बड़कर किया चाहै

दा दिखाया चाहै ।

वापिका. वापी (त) वापची,

जूनैद ।

वापुरी (द) तुच्छ, छरे रोग

वाला, वपुग । [माफ ।

वाफः (प) वाप्य, वफारा, धूर्वा,

वामः (म) कुटीर, मित्र, काम

जान, मनोहर, स्त्री, बाप

वाम के नाम । दो० वाम

कुटिर को वाम मित्र, वाम

काम तम कामः काम
 : 'मनोहर को कहत, तेमे
 सुंदर काम १११ काम के
 कामः ११० । काम भोग
 अभिलाष पुनि, मन्मथ क-
 विदे काम ३ काम का
 काम भुनि काम, भजिने
 मग परिहाम ३२ ।

वामदेव (५) देहा ११११ ।
 वामदेव स) देह पय, यति
 विद्वद गत । १० । तनि
 यति पंथ वामदेव जसेही ।
 बंधन विरवि देव जग
 जनेही । यतीत् बंधपंथ
 को छोड़ि वामदेव यतीत्
 पंथ गचार सग मकार
 मकार के कामें ता पय नी
 जगत के चोर जनी देव
 बदाय के जगत को हलत
 दे पय मचार यथा मकि
 १ मकर २ मग ३ मेटन
 ४ मुद्रा ५ मय मचार में
 मय १ मय २ मुद्र विमेष
 के को मुद्रा १० ११ मेटन के ।

वामन } (८) माटा, ठिगना,
 वाचन } विष्णु का पवित्र
 वाचना } पवतार, वामन

मामः १० । कुल पर्व
 वामन जघु, धारि सकर
 दिजेद । १११ देव सपाद
 वनिमी, ममोप पमुनीका
 वामा, (म) देवी, पार्वती, वा-
 टकी, ली, कटिनी, मनो-
 हरी । [पसारना ।

वायः (८) पसार करके, वाता,
 वायन. (९) दरवा, वारा
 सीगनवारा ।

वायनः [८] ध्याना वार, वैना,
 भाषी, डाकी, नेउता ।

वायनः [९] वायुकोनविमेष,
 दृशना, चलन । [कीपाः]

वायन [९] कागोनी, कोनी

वायुवधः [९] वनि, पनव ।

वायेः [८] वाम, वादी ।

वारः [९] दिवद, दिव,
 समत, पुत, वारवा,
 रवि, समुद्र, देव, देव,
 वाच ।

वारण (१) न) वायो, वर्जना
वारण (२) किसी की सहाय,

गज नाम । छंद मरहटा ।

वारण मार्तण्ड सुंगर

स्वामन दसो दंती व्यास

सुभीतंविम दिरद मेरुदंभ

गज मतंग सुंदर ३ पदो

हरि सिंधुर दंतावलि बरी

धो द्विप नाम नंदद ३

यह नामो चौबीसवसा

उगतिम विदिन मरहटा

छंद ३ १ ४ वारण मरु

—छंद ३ वारण छंदिये

वाजिबी, वारण द्वार म-

गदि । वारण गज धरि

परः, वारण दसो नद

छंद ३ २ ३

वारण (३) समारणदीप

दुर्गिणी, दूरकता,

वारण ।

वारणामा (४) वरार वरि

जिना, वंदाय जिना ।

वारण वार (५) नंदकाम,

गोदादि, वारण रदा ।

वारण (६) मरुकापन ।

वारणिते (७) मरुकापनते ।

वारणमा (८) वेगमा, पुत-

रिजा ।

वारण (९) वार, वेर, टफान ।

वारणको (१०) वारमिगुरो

मिषपुरी ।

वारण (११) गूदर, गूपर,

बनैला, वारणारतार—

छंद । दंती सुंदर वीण

हरि, किट वराह भूदारी

कोड धृष्टि पोषी वृषो,

मनुधरि हरिभूवार ।

वारि (१२) लम, वारनीतार

की, लट, त्याग, मरुकी

वादि ।

वारिचर (१३) लमकगु रंधीगु

गोन प्राज्ञादि ।

वारणमा, वृं देरी वरणा

वारणवाटकीना, वृं वरु-

मा, विमंडना, मरुनामा

कीना, दुधवाला, मरु-

दा वारणा ।

वारण (१४) वी, वा वार, वे

वार वरिधूरी वार वी ।

को दृढकरहु प्रेममन
सामा । तो तुम दुख पा
सब परिणामा ॥

वारिधरसेतु. (ग) कामदेव
चमक, मज्जको का मवार ।

वारिध वारिध. (घ) कामला-
दिष्ट, कामल ।

वारिध. (ङ) भेष, वादल ।

वारिधमाया (म) मिथीनेममूह

वारिधमाद. (य) मधमाद.

दम्भकोत, भेष का मध ।

वारिधर (र) वादल, भेष ।

वारिध, वारिध (द, घ) समुद्र,
सागर ।

वारि वारी (इ. ए.) जाति

विमिष टहलू पछिम देग ।

म्याल, प्रभाको चम वयो

पहूवोपा, पुनपानी, लेका

सब बाकी, जल, पानी,

झोटी निहावर, वारमा,

चतुर विहारीन पक कति

न में लिखा है । कविता—

चतुरविहारी वे मिलन

बाई बाया बाव मांग

दे पाशु कष्ट हम पे दे

इए । भीड़ कीड़ फूल ने

भीने पहिराए गोती

मग को पातरो हुताभ

को चारुए इच्छे पे दवा

को भरीयो के चंद्रि बेदि

एतू. मेरा प्रताप कवि

चरतिपति ध्याइए। प्या

चमुभाइये को कतर ले

दीहे एक सकति विमि

भाति वारी नई पाइए ।

वारीस (म) समुद्र, सागर, वा

रिध ।

वारिधो } (य) मदिता, मई
वारिधो } पछिम, मगल, वा
वारिधो } दनी मज्ज—दीहा ।

मग मति कविने बावनी,

सुन बावनी मागा । व

यिम दिमि के बावनी,

अनन बसदि तेहि ठाम ।।

वारि (य) दाल चमया, सबको

कोटि के, बावक, दी

कर ।

वारिध वारी (य म) दह

दिन, पक वार ।

बाहू (स) लक्ष, गौर, दाहू ।
 बाहू (स. फ.) देव, बाहूक,
 बाहूक, चमारी, सूर्य द्वार,
 बाहू, बाहूक मान—
 बाहू सुखद । शिखरन्दन
 पोत प्रभा पुष्पकं सुत बा-
 लक सुतु तनयं चंगल ।
 तनुलं पुनि तात चपल
 तनै पुनि दारक चर्मक
 सायक चामल । पुनि
 सुखद सुप कताग सुखं दल
 विरत मान पुरान यखा-
 गत । सुगनं वसु है सु
 अंत दिवे सुखदं यं सुंद
 लकीप गाथा ॥ १ ॥
 दोहा । चलेक सिरोरुह
 विहुर लप, कुंतल गुटिल
 सुदार । कबरी लसत
 लसाट ललु, चंदहि मई
 द्वार ॥ १ ॥ चंद बल कुंठित
 कुटिल, बाप विहुर लप
 वेम । चलेक शिखंडक कुत
 लं, सिरोरुह गिर देम ॥ २ ॥
 चनेरुचं न दिखी है ।

दोहा बाहू सिरोरुह बाहू
 सिख, मूल कराय बाहू ।
 बाहू सोई ऐ लगत नै,
 चले सुदाय गोपाल ॥ १ ॥
 बाहूमी (स) दाप दुभारा ।
 बाहू (स. प) बाहूमी, लहकी,
 कडा दाव की, ली, दाहा ।
 बाहू (स) राणीविगीय,
 सुमीव का लोठ दनु, चंगद
 का पिता, वानर छाति ।
 बाहूतगय (स) चंगद ।
 बाहूतत (स) चंगद ।
 बाहूगोपाल, सु. सपुजेबासे
 बाहू दसे ।
 बाहूबाधी बौड़ी मारना या
 लहाना, सु. वी लूजे निमा-
 नें ठीक निमान लगाना ।
 बाहूबासवैरीहीना, सु. दर-
 एक चपमै पीर परावे
 नै देर होना ।
 बाहू बाहू गल मोती पीरीना,
 सु. सुंद संवारना ।
 बाहू दसे, सु. सहदे बासे ।
 बाहू बीछा न होना, बाहू

• • • मर्जी न होगी, मु० किसी
तारक का बिगाड़ न होगा ।

वाचाचाई, मु० गया चाँद,
बासगोष्ठा, मु० बड़ लड़का
जो ऊँस कपट कुछ न

जानता हो,
वाचिग. (स-फ) मूखेता,
गिरहनी, पमोसा ।

बारीग (द) समुद्र की० । वाचिग

लक्षनिधि नीरनिधि,
लक्षधि सिंधु बारीस ।

चाय, तोयनिधि, कंपनिधि,

चदधि पर्याधि नदीस ।

अर्थात् जननिधि १ नीर

निधि २ लक्षधि, ३ सिंधु,

४ बारीस ५ तोयनिधि ६

कंपनिधि ७ चदधि ८ प

योधि ९ नदीग नीरयद

पूछा कि गैत सत्य कर

वाच किया ।

वानेन्दु वासेन्दु (स. द) दूज

का चान्द ।

वाच (स) इलायची, वाच ।

वाच्य. (स) वाक्यवग, लड़कपन ।

वाच (प) वायु, पवन, जवईग ।

वाचवाधगा, मु० सुगामद
करना ।

वाचवहाना, मु० हवापकना ।

वाच के धीरे पर सवार होना,

मु० धरुही होना, मँची

करना । [छीड़ना]

वाचसुरमा मु० पादना, हवा

वाचही (द) वाचकी, तडाग

कूप । [धूँसा]

वाच्य (स) वाक, वक्ता,

वाच- (द) एक वृत्त, वाच का

मिद-कागजी १ चामर

कठवांसी २ पहरिया या

फूवांसा ३ मलमूदादारी

४ चहर ५ ।

वास. (स) निवास, वस, मल

चो० । जहं जहं रातवास

बिद्यामा । तहं तहं करहिं

समेत प्रतामा ॥ चर्चा

वास राति के दो निवास

दिनके ठहरिने को स्थान ।

वासन- (स प) सुगन्ध, निवास,

माँहा, पाच, बरतन,

कान्हलादि ।

वासुकी. (स) मधुरीकता ।

वासुकी फूलों वासु नहीं, परदेमी

वासुम तेरी वासु नहीं,

मु. यह कदावत निरास

होनेपर बोली जाती है ।

वामी बच्चे न कुत्ता खाये, क-

कुछ वासुकी नहीं रहता ।

वाहर के फालावें, घर के भीत

गायें, ४० अपने सब धरे

रहे पीरहूनकों को लाभही ।

वासुव. (स) इन्द्र, सन्तुर्गपति

वासुव, शीतः—मत्त गत-

मत्तु मशीपति, संकंदन

पुरातः । कोमिक वासुव

हस्तवा, मधुवा मातकि सुताः ११

लिशु पुरंदर वलुधर, पाप-

लुत रिपु पातः । कोमिक

लह हपानरुप, को है इन्द्र

वराक १२१ पुनः संदु भी

पेशा । कोमिक मंजुदन

मनुषि, सुदमं सुनीपीर

पुरातः करी । मंतमत्तु

सुयं गोषादिमं तुरादा

उपीलीनपरी । हपमत

विधाती बलि आराति

इन्द्र चप्सगानाद्यपते ।

इय वृषत्तर्पा वासुद मधुवाः

मेववाहनं दिवसपते ११॥

दुयगत-मशीपति ऐरावत

पति पादमासनं मत्त-

लता । सुतात पुरंदर. से-

पदमं हरिवाहन लिशु-

मोषमिता । भूधरमद-

मोषन मधुसूक्ष्मोषनः

महात्मा माचीन वरा ०

पासंठन राजा मत्त वि-

लीला मरुत्वाग पीर-वप-

धरा ॥ मीरठा । पनरा-

भिन से नाम, वैशासिग

पनरादिगति । दग धनु

धनु दिशाम, तिरभंणी व-

तिनकल । दोहा । गिरि

नामनि पररिपु धरे, धर

नामनि पर राजा । दिव-

नामनि परपति धरे, नाम

दीय कुररात ११॥ पादुध

ताको बल है, दुष्य हज-

कति होय । वासु कदा

११) आगरावती, नन्दनक्षत्र है
शेषीय ॥ २ ॥

સા.સર. (મ) દિન, દિવસ, વા.સર.)

वाचुशी . (स) चर्चद्वा, पचदो,

अक्षा, विगतारूपा कृता-

ब्रह्मा, 'यासां शर भिद्यते ।

बोधोद्गीर्ण नियमं पृथक् मि-

मृतं विष्णुवन्मया । इति

मन्त्रः याज्ञिकः ।

भा. (स) पञ्च, घोडा, बाहन ।

સાદરે [સ] સામાન્ય સવારો

३३ रथादिनां, यमवारी; स-

धारी । [सधारकार ।

ब।रमी. [स] सेना. दल,

वाङ्मय. [स]. माद्य, वादरे,

- बाहर से ।

बाहिनी (अ) बाहिनी, मेना ।

• ચો. સંખ્યા મારૂં જિતી દોષ

५७ पादमरीः कति मयारन लि

निज भगि । अथान् पादक

सामान्यतः प्रत्येक वर्षे १०० करोड़ रुपये के आसपास का निष्पत्ति होता है।

॥ १ ॥

इ.पू.।

2

व.सू.अ. (स) १२३४, अथवा १२३४

अ. इ. उ. य. ः [स] = बहुतायतः

विषयसूची

साध्याः [स] बाहिर, बाहिरं

वि. [सं.] त्रिपुण्ड्रः

63-6-62

विष्णुः [५:३१-३:३३]

सिंहजि: [गले में हाथ डालकर]

संख्या: ११११

प्रिन्सिपल (ए) भाग्यदत्त कवि.

— 25 —

गवानिक, टङ्गा, निरुद्ध

[स] मयदूर,

ਪ੍ਰੀਤ ਨਗਰ ।

विष्णुसामोवाक्यं विरचितं,

प्रमाणैः । (कथयन्तीति ।)

अथवा (३) अथवा, पद.

निम्नलिखित (ग) सूचक, (घ) सूचक, (च) सूचक,

6-11-74, p. 131

[illegible]

प्रति दावे विषय,

还愿酒：1. 糯米酒 2. 糯米酒

निष्कार । अ ३ पञ्चमस्य, वा

लक्षादि, ११ प्रकारक दोष,
 चयमुदी, दिवार, देगुन,
 लाय, पारज । [विहित ।
 दिव्यान् [म] प्रकाश, प्रमक,
 दिव्यन् [स] पराक्रम, कला,
 विद्वान्, पराक्रम, होर, वन्द्य ।
 दिव्यान् [स] प्रविष्ट, प्रका-
 शित, चयसी, दिवित ।
 दिव्यान् [स] नाय, त्याग,
 रहित, योग, दिव्यान्, वि-
 शेष नष्ट, विविध भाग ।
 दिव्यान्विनेद [स] भेद, विदित ।
 दिव्यान् (४) विविधयोगी ।
 दिव्यान् (५) नाय, नष्ट,
 नामविष्टे, दिव्यान्, नाम
 करण ।
 दिव्यान् (६) शुद्ध, प्रकाश ।
 दिव्यान् (७) बाया, हन्त,
 रठ, विरोध, दिव्यान्, भ-
 न्दा, गरीर, देव, नडाई,
 फेलाय, प्रकाश ।
 दिव्यान् (८) गरीर रचना ।
 दिव्यान् (९) तीव्रता, गट
 करण, दिव्यान् ।

दिव्यान्, (१०) हन्ता,
 विपरीत । [फिरेत ।
 दिव्यान् (११) रमत, चयत,
 दिव्यान् (१२) फिरेत, चय-
 त, फिरेत, विचरणा,
 फिरेत ।
 दिव्यान् (१३) प्याग, जादिर ।
 दिव्यान् (१४) पलायन, भरीर ।
 दिव्यान् (१५) विविध चयनाना ।
 दिव्यान् (१६) चयन, स्वच्छ,
 चतुर, प्रवीण, पंडित ।
 दिव्यान् (१७) चारा रचित ।
 चो : तात वात, मंद रा-
 क्त संधारी । मर संधरा
 चय विचारी ॥ १ ॥
 दिव्यान् (१८) चनेकवर्ण,
 चायव्य रूप, चनेक प्रकार
 का, विहित ।
 दिव्यान् (१९) राहु ।
 दिव्यान् (२०) पगला ।
 दिव्यान् (२१) विद्योग, भिन्नता ।
 दिव्यान् (२२) जीत, नाम चयुक्त,
 पाण्डव, चयुक्त नाम—
 दो : विद्व, चयुक्त विद्वान्

रथ, फाला, मकिरीटी होय
गुहा बसगाँडोन कर, पाय
कपिध्वज भीय । ११ भारत
गति वसुधा चरित्र, सम-
रथ ममरथ होय । चरुम
जिमि धनुषर चरध, रथे
नेहारे भीगाय । द्वार पाकक
विजय कर्य ।

विजय (म) 'विजयमयप्रभा',

विजयकनकाभा, विजयी

विजय (द) विजय, गुणग ।

विजि (म) जय, कल्याण ।

विज (म) विजान ज्ञानी, जेठ ।

विज्ञान म चनुमन नियम,

ज्ञान, विमेषज्ञान, विज्ञान

विज्ञानी (म) विजय ज्ञानी ।

विज्ञान विज्ञाना द विज्ञान

विज्ञान, ज्ञान कय भीर

ज्ञान की दानि ।

विट (म) देवदत्त

विटव म दंड वर मुखडा,

मय, विष्टार, देव, वि-

टव । विटव मय - दीहा

विटव म म दख विटव

विटव कदत विष्टार ।

विटव दय की धार महि,

ठाट्टे मन्दकुमार । । ।

विटपायुष (म) युष है वशि
यार भित्त ।

विटपी (म) वृष, चेड़ ।

विहस्य, विहस्य विहस (म) विहस,

निन्दित, दुःख, मारण,

तगो, धन, वंश ।

विहस्यता (म) निन्दित, दुःख

दुःख, चपलान । [ठं ।

विहस्यता (म) दुःखित, दीन

विहस, (म) विहस निमेष, विह

राना, निमेषमय दीन ।

विहरी (म) 'विहरी' के, मय

विहरी (म) युग, विमेषमय, वि

तरा करण ।

विहरीना द विहरीना ।

विहरी (म) ममाई, बहकई,

विहरीना, ममाता ।

विहरी (म) ममाता, विहरी

'विहरी' (म) ममाई, बहकई,

ममाता, ममाता, विहरीना,

ममाता ।

विद्युवना- (द) कमाना, ध्वज
करना ।

विता- (स) विचारण, विवेकन, धन ।

वितक- (स) विचारयुत ।

वितात- (स) विस्तार, वीला ।

विताग- (द. स) वाजा, चन्द्रवा

यस्त यज्ञयाज्ञा, नरूप, गो-

भाकारी. तन्मु निवास क-

रपइका का. गांइव, बहुत

विस्तार, फैलाव, विताग ।

विता. (स) धन, सम्पत्ति, नक-

दूर, विता ।

विताग- (स) वासनात्याग,

धन चहत त्याग ।

धत्तेद- विजेमर, (स) कुवेर, सुर

मंकारी, धनराज. धनपति ।

विद्यिन- विद्युन- (स) गली

समूर, समस्त गली ।

विद्यक, (स) चरित ।

विद्यकहिं- (द) चरित होते हैं ।

विद्यवना- (द) चरित होना ।

विद्यकि- (द) भीम हति ।

विद्यि- (द) दितरानि, दितानि ।

विद्या- [व] वीदा, व्यादा, दुग,

विद्या ।

विधी- [स] गली, कूषा, मागूर्म

वाट, वीधी गान—दो० ।

अथ प्रतोषी वीधिका,

रप्पा कहिये ताहि । यही

गली चरिते वली, निपट

निकट पिछ पाहि ॥१॥

विद्यु- [द] पैला, पमारा,

विद्यु- [द] राखा पैले, विद्युग

फैलना ।

विद्- (न) ज्ञान, ज्ञानतव,

ज्ञात, ज्ञाननेपादा, विद्,

ज्ञाता । [करना ।

विदाकरना, मु० दखमत

विदक- [(न) ज्ञानयुत, नाम-

विदक] युत, पानेवाला, म-

नाई कहनेवाला ।

विदसि- (स) दिगा का खोन ।

विदन्ध (स) परिणत, समूर,

विद्यप्रद, जल्पटा ।

विदर, विदारन- [स] फटे,

फाड़े, पाटव, चीरव ।

विदोष (द) विदीर्ष, परगदा,

विदरना, फटना ।

विदर- [व] पाड़े, चीरे, दि-

दीर्ष, विदारना, फाड़ना ।

विदारहि (ट) फ. कुं. हैं, वि
दारता, काड़ता ।

विदित [म] ज्ञाता, प्रकाश,
विस्तार, प्रसिद्ध, ज्ञानतय,
जताया गया, विदित ।

विदिशि [म] दिशा का
विदिशि } चारो कोण, ईशान,
नेत्रज, वायव, धूम्र ।

विदुष [म] पण्डित, प्रवीण,
चतुरताम — दाहा । कुशल
निपुण श्रुत चतुरपट्टे, सो
प्रागल्भ्य प्रवीण । विदुष
विदुष, विद्यादा, सो
हसमुख प्रतिहीन ॥ १ ॥

विदुष- [स] पण्डितायुक्त,
प्रवीणतायुक्त ।

विदुष [स] पण्डिताई, प्रवीण ।

विदुष (क) निन्दादूषण ।

विदुषक [क] पण्डितजीन ।

विदुष मन्द या मध्यम ।

विदुष (ख) भांड, निन्दित,

विदुष कर्ता, निन्दक,

विदुष ।

विदुष [म] निन्दा, दुषण ।

विदुषहि [प] निन्दहि, दुषहि,
निंदा करते हैं ।

विदुषता [म] निंदाकारता ।

विदेह. (य) राजा जनक, देह
रहित, देह विना, विदेह ।

विद्यामाम् } (म) मोक्षद, वा
विद्यानाम } शिर, वसोमान्
है, होता, विद्यमान ।

विद्या [म] ईश्वरीमाया, ज्ञान,
गिद्या आदि १४ । माया
ज्ञान, रहित । [पदेया ।

विद्यायी [म] ज्ञान, गिद्य,

विद्यवान् [म] ज्ञानवान्, प-
ण्डित, विदुष ।

विद्युतः [म] बिजली, दामिनी ।

विद्युम [म] प्रकाशीकता, मूर्ता,
विद्युतः । [त, विदुष ।

विद्यान् [म] विद्यानाम, पण्डित

विद्य. [म] प्रकाश, रोति, भाति ।

विद्यवा. [म] मृतपति, श्री

विद्यवा. } राज्ञ, देवा, ईश्वर

जिस श्री का पति मारा गया

विनाशा. [म] वृद्धा, 'दा'व

विदेव, विनाश

विधात्री. [म] मञ्जारी, तिदेवी
विधात्री ।

विधापट. [स] सान, विध, देद ।

विधि. [स] वृद्धा, यदप, कास,
विधान, रीति, कर्म, यथा,
दैव. भाग्य, विधि शब्द—
दोहा ८ विधिकान्त विधि
देवता. विधि कहिये लो
विधान ॥ विधि की विधि
लो हरि रवि, सोरे विधि
ममान ॥ १ ॥

विधिपण्ड. [द] वृद्धाण्ड, वृद्धा
का पण्ड । [कारक ।

विधिकर. [स] दास, विधि.
विधिपर्व. [स] समत्, संघा,
विधि खेति ।

विधिवत्. [स] यथा, योग्य,
वचित, विहित, जैसा
चाहिये ।

विधिवाचित. [स] विधि ठग
अर्थात् विधि पर्यात् विधि
ठगा, गिन को । [चन्द्र ।

विधु. (स) विधु, चन्द्रमा, ममी,
विधुतद. (स. द) } राहुपद ।
विधुतद.

विधुवदनी. विधुमुखी. (स)
चन्द्र मुखी ।

विधुवैनी. (द) चंद्रवदनी,
चन्द्रवैनी । सवैया—सां-
वरे गोरे सघोने सुभाय
मनोहरता जित सैन सि-
यो है । मान कमान नि-
पंग कवे सिर सोहै लटा
मुनि वेप कियो है ॥ संग
सिरो विधुवैनी बधू रति
को जेहि रंचक रूप दियो
है । पायन तो पनही
न पयादेहिं कौं चसिहै
सकुवात दियो है ॥ पर्य
सांवर गोरे कुंदर सहल
ही सलीने मनोहरता
करि काम को लो जीत
सियो है या मनोहर
ताको खानते जीति के
सियो है । तीर कमान
दाप न बाठि काटे न तर-
कस सिर न लटा सोहत
है मुनिदेय को बनाये है ।
संग न विधू दरे सुधांस

दिदी। गुह्यनाम—दीदी।

विवर गुहा दीदी देरी,

गुहा कंदरा गेह । पुनि

पुनि खोजत निज पिया,

रामचन्द्र वन गेह ॥ १ ॥

विवरण (प) वेरंग, विनग,

हिरियाणा, म्यास्या, न

वान, टोहा, कुमिलान,

वरन नट ।

विवरण [८] विवरण ।

विवरण मयव (द) रूपरहित

हे नट । [गाना ।

विवराणा (२) सुभर्त्ता, यज

विवराय (४) चोरचार, विन

गार्, अतंग करण ।

विवरण विवरण (दस) थोड ते

थोड रंग होता, वा पा

तर ते मोट मोट ते वा

तर होता, तेच आर्ति

लुण्ठ, धरम वरा वन

पुढा, यजम ।

विवरण (५) अतिवाटि मडक,

विगेव, बहुल मडता ।

विनय (५) विनय, विनय, ध्या

कृष्ण विगेव वन

विवागत् विवागत् (स) सुख

दिवाकर, दिनकर ।

विवाक विवाको. [प द] नाय

चय, चदाय । [विवाग]

विविल, विविलि [म] एकाक,

विविष्य [म] छाटना, वा क

टना चदादिक ।

विदिप (स) विगेवमकार,

चमिक भाति छे ।

विदिधि. (स) नेमुण्णनित ।

विमुध (स) देवता, प्रदा, पंडित ।

विमुधधारी (स) देवमाया ।

विमुधनदी (स) सुरसरी, मठा

विमुधवत् (स) नन्दनवागु नाम

म, देववाटिका । भौगार् ।

विमुध विविन लक्ष कति

कम माहे । देवि राम

वन मकल मिहार्थे

अर्थात् देवतास के वन

जहा कति कमल में है

अर्थात् नेचरय मंदमादि

आनं थोड मपुवतादि को

भूमि म सो छन पीरामवत्

का देवि विदात है वि

इम ऐसे न भए ।

विद्युधैयः विद्युधैयः (स)

अग्निमोक्षमात्र, देवता के
द्वेष ।

विद्युधारिः (म) राक्षस, यक्ष ।

विद्युधारी, (से) राक्षसोन्मादी ।

विद्युधः (से) धत्, धमत् का
विचार, सोच, ध्यान ।

विद्युधनिधिस्तथा (प) सुत-
दत्ता, लक्ष्मी की स्त्री, दो० ।

श्रीसिन्धु शक्ति धीर धरि,

सुन्दर देवि मिथिलेन । श्री

विद्युधनिधिस्तथा । तुम-

हि सकलै रप देस ॥ अर्थात्

विद्युधनिधि तुम लक्ष्मी के

रक्षमा अर्थात् पक्षी कुम्ह

होन सिद्धा कहै ।

विद्युधनः (से) धत् का विचार ।

विद्युधनः (से) लक्ष्मी के वाक्ता,
मानव, यक्ष ।

विद्युधनी [स] लोहनेवावा,
मानव, यक्ष ।

विद्युधः [से] रक्षक, रक्षक,
रक्षक, रक्षक, रक्षक, रक्षक

विभक्त, विभाकर [से] सूर्य,
भास्कर, दिनकर ।

विभाग, विभाग (म) विभाग,
विभेद, वांट, संद, सुदाई,
वदरा, भाग्यहीन, दुःखड़ा ।

विभाति विभाति (से) प्रका-
शित, अलिखित होत है
सोचता है ।

विभाषरी (स) रात्रि, निशा,
रक्षणी । रक्षणी नाम—

दो० । दण्डा दण्डा तम-

क्षणी, गमी तमिया होइ ।

निशि श्री सदा विभाषरी,

रात्रि विजाना सोइ ॥ १ ॥

सुखद सोहाई सदा श्री,

कैसी रक्षनि लाति । बहुत

यदि मोहललाक ये, सत

हैटी पतलाति ॥ २ ॥

विभाषक (से) सूर्य, यक्ष ।

विभाषक (से) रक्षक, यक्ष ।

विभू, विभू (म) विभू, देवता,
यक्ष, यक्ष ॥ १ ॥ विभू ।

विभू विभू (म) यक्ष, यक्ष, यक्ष,
यक्ष, यक्ष, यक्ष, यक्ष

विभूति विभक्ति (स) ऐश्वर्य,
भक्तिसत्क, राख, सम्पदा,
भक्ति ।

विमिद-विमिद (स) फूटकारना,
मनु मित्रभाव राजनीति
- विमेष अंतर ।

विमल (द) विमिश्र मतवाला ।

विमल (द) विमिश्र मतवाला,
मदरहित । [कथा ।

विमल विमल (द) विमिश्र,

विमान (स) देवरथ, सुरवाहन ।

विमाच विमात्र (स) मेधा
मतारी मे लो देहा । [सूत्र ।

विमुक्त स कृदाकृपा पद्मगा

विमुक्ति (स) मोक्ष, कष्टार, मुक्ति ।

विमुख (स) विरोधी, नरानमुख ।

विमोचन स कष्टन, त्यागन ।

विश्व स चोद, अष्टमूर्ति, जल

प्रतिविम्ब कन्द

विश्व, विश्विद स जल

विश्वकर्म विश्वकर्म

विश्वकर्म स जल स जल

विश्वकर्म स जल स जल

विश्वकर्म स जल स जल

वियोग [स] त्याग, पदव ।

वियोगयुद्धार—छन्द पद-

राजिता । मधुपुर लव ते

प्रयाग कियो हरी । दहत

सर अमंग सदैव मती हरी ।

विरहवस भयो कलैर

गोपना । नगन नगन गंध

गंध धुमा धुमा ॥ ३ वि-

योगवा योगवा—मोहना

सन्धि हरि किन्तु विपंग,

पक्षक विरह विटोह न ।

भा लपताप कुमो, मद

कन चामे व्याजि नम ॥ ३

वियोगी विरह [स] पक्षक
जुटा ।

विरक्त विरक्त (स) बेराखवा

मोहो बलवान् दावी,

वीरगो ।

विरक्त (स) बेराख पदवि ।

विरक्ति (स) बलादिके विरक्ति,

विचरना, दलना ।

विमल विमल स जल

मृचरहित विवेक भाग

न पद पदा ॥ ३

करषा, श्री रसहृन् मे सत्यव
नहीं है। [पिता ।

विरहि. [म] सज्जा, सज, सग-

विरत. विरत. [च] तत्पर,
पाबिष्ट, पति प्रीति, मान्त
निवृत्त, बैरागी, बैराग्य-
नान्, मुमुक्षु ।

विरति. विरति [स] विमोक्ष
बैराग्य, निवृत्ति, मान्ति,
त्याग, पति प्रीति ।

विरथ. [स] विदारण, विगा-
रण ।

विरद. (क) दास्यो, दम, वीर-
दाया, मुक्ति, स्वाति ।

विरदावली. (न) गुनी को
प्रसंसा या समूह ।

विरली. विरली. (न) कद-
निका, शर्पनिका, विर-
लता ।

विरल. (द) विरल, विरल ।

विरल. विरल. (द) हथड़ोटा,
पोषा, गाड़ी, लोहड़, बरी,
होटा पेड़ ।

विरह. (ग) विहीन, विहीन,
मोक्ष मुदार्थ, विरहना ।

विरहित. (ग) विरहित, रहित,
तल [प्रगल्भ ।

विरहनिदार. (घ) कामदेव,
विरहम, द विरहिणी. विरह
गुं यद को को अपनी
पति से जुदा हो ।

विरहा. (प) विमोक्ष, धोषी
की नीत ।

विरहिणी. (घ.) पति निर्देय
ममिनी कामातुरीणी
आली राति समय एकर-
भि भाव में विना पुरुष
दृष्टमा से जोगि ते प्रीत-
कता पाए में अधिन का-
नातुर दुःखित होति है ।

विरति. (स) त्याग, नी. ।

विरति विवेक प्रियम वि-
मान्ता । नी. कदारथ वैद
पुमान् ॥ यथा विरति
त्याग विवेक सत चान्न
का मानमा विवेक गम्यता

विज्ञान अंतर्गत विचार वेद
पुराणीं गी यथायं बोधः ।

विरहित (स) चति रहितः ।
चति छोडि के, विगिय
रहित विगिय अरि रहि ।

विरही. (स) विरहवान् पदय
गोपी ।

विराग विराग(स) त्याग, विगत
वमाना वा रोह जगत
का बेराग ।

विराजना. [स. वि बहुल राज
शोभना] क्षि० च० शोभना
सुखभोग करना, रैन मे
रचना [प्रकाशित ।

विराजति. (स) शोभति,
विराजित (स) विराजतो है,
शोभतो है ।

विगाट, विगाट स जगत,
अधिराज, विरहद्व ।

विराज (स) निगिचन विगिय ।
विगाना [द] गु० परादा, द
अरि का विगाना ।

विरित, विरित (द) दो०

वेता, समय, व. ज, काज,
वेता, वेरा ।

विरज, विरज. (स) रोपहीन,
निरोमी, रोग नहीं ।

विरह. (स) प्रभृत्य, प्रकृत्य ।

विरहायनी. (स. स) वेग व
विरहायनी } ताप, प्रभुताप ।

विरहैत. (द) वानावाले बीर ।

विरह-विरह (स) विरोध, वेद,
मनुता, विरोधयुत, वेदयुत ।

विरोधन. (स) वन, युद्ध, वन्द,
दौत्य, गान धर्म । विरो

वन मन्द—दौत्य, वन्द

विरोधन सुख पुनि, वन्द

विरोधन गान । वन्द

विरोधन धर्म की, वन्द

वन सो तात । वन्द

विरोध [द] विरोध, विरह,
जुदाई ।

विरागन [द, गु० सी० विरो-
गिनी, वन्द सी की विरह

मे व्याकुल हो ।

विरोध (स) वेद, मनुता ।

विज (स) बीर, बीरमय, वि

विट, विट, भट, रोजन,
चुराए ।

विद्यमान (प) चक्रम, फुरन, च-
रुचित, म्पारा, चुरा, मान,
चुट । [गता ।

विद्यमानमानना गुः चुरा, मान-
विही भी चढ़ती है तो मुंह
पर पंखा धरलेही है क-
कह नहना चाहिये तो
दरसे चपना चबाम हो-
चमा चाहिये ।

विद्यमाना विद्यमानि, (२) वि-
द्याप करति, रोती ।

विद्यमाने विद्यमाने (३) चटनिद्या,
चटनिद्या, दिनमता ।

विद्यमान (४) चटन, चटित ।

विद्यमाना- [म] चुराचरित, च-
विद्याना ।

विद्यमान [२] चटान होना,
हो । चटनपर है चटन
मुनि, चुराचरित विद्यमान,
चटान विद्यमान चटान
हो चटान । [गता ।

विद्यमान [२] विद्यमान चटान,

विद्यमान (प) विद्याद, चरत,
रोचत, विद्यमाना, विद्या-
द नीचे चरना ।

विद्यमान [२] चटाम ।

विद्यमान [३] निम्नोक्त, प्रथम
विजयगोभित ।

विद्या [म] चरती तेदिनी ।

विही चंभागी होहा टूटा क-
चटोप्य ननुप हो चंभीग
मे चहा चान मिटा ।

विद्यावक (२) की एक राति-
को ला नाम ।

विद्यावः विद्याव, विद्याव, वि-
काङ् (क-द) कछारि,
विद्याव, विद्या, नाचौर ।

विहीना विहीनता (म) वि-
हीनता, वि हीन नयना)
विहीन नयना, नयना ।

विही (२) की विहीनी,
विहीनी, एक नामवर का
नाम । विहीनी नाम—
होहा ०० विही कवि वृत्त
चटु चटो, चटानादि
चटन चटो विद्या

पापु भुक्त, अथो धाम
 दमकंड १११ भात विभीषण
 मेटि पुनि, कथिनिवि वि-
 पिन नजारि । पुनि दया
 प्य वि पात गी, निम गज
 मभ्य गजारि १ २ ३ भंग
 बाटिका सुत निधन, सुनि
 कोप्यो दमगीम । १ वनवर
 तव नम कज, भीखी
 निर्भय बीम १ २ ३

विमल (द) श्री० अक्षय, दीप
 योग्य, नृपति, वुरा काम ।

विमल (स) विमल, विमल,
 विमल, विमल, विमल, विमल,
 विमल, विमल, विमल, विमल,
 विमल, विमल, विमल, विमल,

विमल (द) पु० नीचे का
 बीसवीं भाग, बीस गज से
 बना है ।

विमल (द) श्री० पूंजी ।

विमली (द) पु० छोटी छोटी
 बीज के समान ।

विमली, विमली । १ वि०
 २. मोह दीप ।

विमली (द) वि० मुनि
 विमली ।

विमली (द) वि० य०
 धीरे रीति, सिद्धिमा

विमली (द) पु० विमल, नदी
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विमली (द) वि० स० जेठ
 विमली (द) वि० स० जेठ

विश्वोय. (स) नयन, हेदन ।

विश्व. (स) वेष्ट वृत्त वा फल,

विश्वनाम—दीक्षा । हेन्नी-

फलमार्हिस्वसै, सूय विश्व

नायूर । ॥ ३३८ ॥ तपा

करिदित नई, पाप सञ्जी-

वन मूर । ॥ ३३९ ॥

विमती. (स) सता, सतान ।

विमद. (स) मुक्तवर्ण, वल्लभ,

सूट ।

विमसन. (स) वृद्ध, वरवान ।

विमास. (स) वार्तिदेव, मित्र

पुत्र ।

विमाद. (द) शोक ।

विमासा. (स) सीसवर्ण नक्षत्रः

विमारद. (स) निपुण, प्रवीण,

चतुर ।

विमारद. (द) चतुर । [चतुरी ।

विमारदो. (स) निपुणी, प्रवीणो

विमास. (स) दीर्घ, विस्तार,

सीदा, विमु, पीदा, वडा ।

विमिद. (स) शयन विमिद,

मद, तीर, विमूरति, चिंता

हरती है ।

विमिद लयानु(द) पन्निवाण ।

विमिद. (स) संयुक्त, लोदा,

सतम, वडा ।

विमूरति. [स] विमूरता, पना-

विनी, पनादरो । [पविष ।

विमृष्ट. [स] विमृष्ट, मृष्ट, विमृष्ट

विमृष्ट. (म) विस्तार, विमास,

मीद, सीदे, जाति, उष,

रधिष । [वडाई ।

विमृष्ट. (स) गुणवाचक,

विमोक्त. (स) शोध, विमोक्त,

विमोक्त शोक । [मन्त्र ।

विम. (स) वपक, गीतादिन

विमाम. (स) सुप्त, जैन, वक्त,

पाराम ।

विमोक्त. (म) विमोक्त, वक्त,

विमोक्त, विमाम

विम. (स) वक्त, वक्त, वक्त

वक्त वक्त, वक्त वक्त

देवता ।

विम. वक्त, वक्त, वक्त

(म) व वक्त वक्त वक्त

वक्त वक्त वक्त वक्त

वक्त वक्त वक्त वक्त

विष्णुनागर- [स] : मुंठी महा

1- श्रीपथ जगत्पथीय । २-

विष्णुमिषक् (स) मुंठी महा

श्रीपथ । । जगत्पथीय ।

विष्णुभर. (स) जगत्पथीय,

विष्णुभर. (स) धरती, मीदिनी ।

विष्णुरूप. (स) जगत्पथीय, संसार

रूप, सर्व रूप । [भाग ।

विष्णु (स) नापने का पात्र, कड़ा,

विष्णुकर [स] सुख, दिगकर ।

विष्णुमित्र- [स] विष्णु ससार

, जगत्पथीय, सब, मित्र, धारा

जिस के सब संसार मित्र

है । गांधी राजा का बेटा

को राजकुटुंब में जन्मग्रहण

होगा । कौमिक, कौसिक

शब्द -- दोहा । कौमिक

शुक्ल, सुदृढ़ पुनः, कौमिक

धूँ नाग । कौसिक

विष्णुमित्र है, दिन काचि

यो राम ॥ ११ [भरीमा ।

विष्णु (स) पथीय, धरती, त्रि,

विष्णुग विष्णुग (स) विष्णु

ब्रह्मा विष्णु, महेश ।

विष्णु [स] गरल, डकार, मातर

पुनः-वधः विष्णु का कृप

का कठोर वा. कोमल, वा

माता नाम -- हृद धता

नंद । रसगात्र कोल गर

विष्णु का काटक का कटू

विराग गरल । पद्मगार

प्रदीपन हृद बुद्धि सुतरा

एव रस में घोर वन । श्री

गरलवत् मधुर धारि पयो-

धर कुच में हन हन काचि ।

शुक्ल वधः अंशुना मरीचि

दोह व्यास मुख पद्म ह-

मि ॥ ११ विवरी कठोर

पदं कर्कशतय कठिन

हृद कोल मन । हरि का

हन पद्मगार हृद पद्मगार

फल, हृदुष कोमल सदन

तिहि गति जनविषय

सावित्री जननी माता धर

वन । एकतिग कस हंदा

धना नंदारग वसु पर

विष्णुग गति । ११ विष्णु

गति - दो. गरल वशीक

गत चरुत, धान कूट रस
 नांय । रसने विरमन धार
 वजि, वसिष्ठे वनरुह नाम
 विद्यारणेन [मोनारायण संज्ञा ।
 विद्यारणः [म] विद्यय, गरम ।
 विद्यदः विद्यदः [म] विद्यदाता,
 कामदेव, वसुदेव, मयद, पाक
 विद्यारणः (द) विद्ये, विद्ययमे,
 दायत ।
 विद्यारणः [म] वयं, पति, नाग ।
 विद्यमः [म] मंताम, युद्ध, भयं-
 कर, पांशु १ ५ तीनि १ ३
 मातृ मित भाषयुत, चत-
 नात, दौटा वहा ।
 विद्यमहानः [द] कामदेव को-
 वसुति वरुण कीर्ण वति
 लेम् । प्रमद्वेद विद्यमहान
 भवति ३ वयोत् विद्यम
 वान वयोत् पांशु वान
 वाजा वीर मन्त्री वा
 वयार ।
 विद्यमहानः [म] रामदेव ।
 विद्यदः [म] वयं, धन, वसि-
 योवद, ना वदवद, व-
 दय, वयं वद, वद,

गन्ध ११३ संसारिक चतु-
 राग भोगनेवाला ।
 विद्यया (म) स्त्री, गारी चक्रगा ।
 विद्ययो (च) संसारी, भोगी,
 विद्यय करनेवाला ।
 विद्यार (म) विद्यनामक विद्यय ।
 विद्यहा (उ) विद्यारा, वि-
 याहा, विद्यनामक ।
 विद्ययिषः (उ) विद्यभोगने वाला ।
 विद्याय (ल) दान, शीग, दान,
 दादीदान ।
 विद्याग (द) गृहि । [वहाग ।
 विद्यादः (म) मीरुमेद, वहादि-
 विद्यालु (ल) विद्यमरा, विद्यहा ।
 विद्या (म) मन्त्रमन्त्री, वहीद ।
 विष्णु (म) समयेवक, सम-
 दायक, नागदण्ड, वाहि-
 न दंड—सीदेवा । वसुत
 वानीदर वद विद्यमह
 वासुदेव वीरिद ॥ वसुत
 वसुतेश्वर वसु वसुतेश्वर
 विद्युद्वेग वसुदं १ दे-
 वादिनिर्देशन देवविन्दन
 केटनिर्देश विविधारी ।

केगव गारायण हरिजगन्नाथन
 अथ बेकुंठविहारी ॥१॥ सौरी
 मारंगो कलित विभंगी वद
 नाभभवंतं । माधव मधुसूदन
 विष्णु जगदीश विष्टरयवा
 चनंतं ॥ श्री लक्ष्मि निर्देन जग-
 मनरंजन विष्टरूप पञ्चदारी ॥
 केगव ॥ २ ॥ सुरगण चवतंमो
 श्री बलिध्वंमो श्री पुंगव पु-
 दयोत्तम । वामन जगदीश्वर
 कृष्ण गेदाधर कंसराति न-
 श्रीराम । श्री वसे चतुर्भुज श्री-
 य पयोधर दीनानाथ सुरारी ॥
 केगव ॥ ३ ॥ घनश्याम लपेन्ट
 विष्णु चमरेद्रं गङ्गध्वज गङ्गा-
 धन । मंगल विष्टेश्वर पीताम्ब-
 वरधर राम अविद्यानाशन ।
 जगदीश विनाशो राव घटपागी
 गङ्गेश्वर अविहारी ॥ केगव ॥ ४ ॥
 काशीमदमर्दन केशीसूदन
 ल्योतिरूप योगेश्वर । अख्यल
 चरुपं व्यक्त स्वरुपं गुणातीत
 अलिमेश्वर ॥ सर्वज्ञ वराह नि-
 लंनगाह रावनाति धनुषारी ॥

केगव ॥ ५ ॥ गरुडि
 चमपं श्रीपञ्चपुं विनाशक
 कमलेश्वर । देवियविहारन च-
 धनीधारन गरुडान्तक वृद्ध-
 पण ॥ पद्मेत पनीयं स्तम्भ न-
 दीयं वनमासी रितवासी ॥
 केगव ॥ ६ ॥ वज्रस्थ मनीष
 विष्णु कल्याणर हृषीकेश वर-
 दानो ॥ त्रिभुवनपतिस्त्रामी च
 तरुणो मोक्षगात्र मृदुवासी
 गोपति गोपाल दीनदयाल ॥
 न्द्रावरजगन्नाथी ॥ केगव ॥ ७ ॥
 यत अधिष्ठ चतुर्दश नाम ह
 धारण नित प्रभात उठिपीजे
 प्रथमं मन्ता द्वा पुनि द्वा द्वा
 द्वा छन्दोपेया कीजे ॥ पर
 कंन स्याम घन चंचरील मन-
 हरिविलास कलिहारी ॥ के-
 गव ॥ ८ ॥ दोहा—गिरि मणि
 नाम न धरधरे, गङ्गा रसा च-
 रङ्ग । देव पापनाशन वरुण
 नाम होय जगदीश ॥१॥ मंथ
 पञ्चजन कीमुदो, गदा बाव
 चारंग । जलसुदर्शन श्री चण-
 नन्दकृष्ण हरि मंग । २ ॥

विष्णुपदी. (म) गङ्गानदी, नि-
गमनदी । [रिभङ्ग ।

विष्णुपदमा. (म) हरिमिय, ह-

विष्णुपदमा. (स) कप्यो, श्री,
कमला, तुलसी ।

विस्मयी. (म) सत्ता, विमती ।

विस्तारद. (म) विस्तारद, चतुर,
प्रवीण, निपुण ।

विमूरति. (प) विमूर्ताकरति,
मोचकरति ।

विमूरना. (द) विमूर्ता करना ।

विस्तार. (स-क) विस्तार, वि-
मार्, विस्तारण ।

विजय (स) मोक्ष, कल्याण,
पादपि, पञ्चरत्न, दामोदर-

सीता तत्त्व वा विज्जेनाम—
हृदविष्णुपद । तत्त्व पट्टि

मयित दंडाहत काश सेय
मगरी । दियो बहाय

स्वाम संतनारै नातु पाय
पट्टरी । लवणवंधन

क्रियो दूरि हरि रिटपि
गिराय ह्ये । तासो प्रगट

भगदसूत विनती करि

निज शोक गये ॥ १ ॥

गोविन कप्यो विना भूक-
पन पतत हृष पस मे ।

कीर्तक विष चरो पाययं
पद्मन पद विज्ये ॥ सङ-

मानंद सुनु एतासाया
कीर्ता विष्णु भक्ता । पाद-

मङ्गल विद्याग विष्णुपद
हृद हवीम हृष्टा ॥ २ ॥

विस्तारप. (स) विस्तारप, भूष ।

विजित. (स) मोक्षी, चकित,
पंचभित, पञ्चरत्नयुत ।

विहग. (स) पक्षी विहङ्ग, खग,
पक्षेरु । [पक्षी, पञ्चपति ।

विहगवर. विहगीय. (स) गरुड
विहङ्ग. (स) पक्षी, पञ्चज, खग ।

उदुप मण्ड - दीर्घा । उदुप
विहंग उदुप नयनगग

उदु कैवर्तक पादि ।
उदुप पट्टे मोक्षा उदुप,

उदुप गरुड दह पादि ॥ १ ॥
खगमण्ड—दीर्घा । खग

रवि खग ससि खग पञ्चन,
खग पञ्चद खग देव । खग

विद्यया चरि सुगममतिज,

अथ नर ये महा विन ३ । १ ।

विद्युत्पथ विद्युत्तोल ॥ १५५॥

७८१ रुमैय ।

विद्यमानः न. प्र. प. वि. व.

रत्न, विहार जलमा, राणी

अथ ३०, पुनर्गणना, तिष्ठति ।

विदुषः विदुषः सः कौटु.

ब्रह्म विद्या

विद्यया विवर्धया । (इ. अ. २. ११)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विद्यया विद्यमानः अद्वा विद्यमानः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१५६६ ७५ ५५५५ ५५५५

सुखीन ।

१३५५ 'ग' स्वरान्त 'र' च न

1947 2 24 10:00

विद्युत् च ध्वनि, तेजः,

1997

● 2010年10月10日 星期六

W. J. H. [2]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

निर्वाह निर्वाह (५) कीर्ति.

नाना गीत एक देय्य च। नः॥

ਸਾਹਿਤ (੪) ਅਰਥ, ਚਿੰਤਾ.

निर्णीत, सोलु ।

वि. ४७१० (अ) आदिमिश्र, वि. ४७१०

ਦਰਿਫਤ, ਅਤਿ ਜੀਵ ।

विद्यमान (ग) मूल्यांक, माप, प्रमाण।

ବିନିମୟ (କ) ଅନୁକ୍ରମ, ସାବଧାନ,

१५॥ १५॥

निवृत्ता, विनयेत (अ) ध्यातुमर्हा,

गाम, जिस पौर को बांधा

मन्त्रमाला, मन्त्र, मन्त्र.

ମନ, ହନ କୋ ନୀତି କରନ୍ତି

ਸਾਧਕ ! ਮਨਸੀ !

ਨੀ ੨) ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅਧੀਨ ।

১৩২৪নং. মৃ. অফিস নথি।

॥ १ ॥

१५/४/२०२३ ॥ ६७ ॥

1947, 1948, 1949, 1950, 1951, 1952, 1953, 1954, 1955, 1956, 1957, 1958, 1959, 1960, 1961, 1962, 1963, 1964, 1965, 1966, 1967, 1968, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 26

1990年12月24日

[illegible]

विश्वविद्यालय प्रमुखः

()

()

काम केलिने मदान करना
हिन्दुस्थान में रीत है कि
जब किसी सरदार की
कठिन काम पड़ता है, तो
यह पवने भौकर चाकरो
को इच्छा करके उस काम
की कहता है फिर पञ्च
पान का बीड़ा पाद में
रख कर सपके मागने
फिरा जाता है जो उसको
उठाकर जदा ले वह काम
उस के जिम्मे हो जाता
है।

बीच दिव. (स) घनगविलग ।
बीचि (स) तारु, कल्लो ।
बीची. (प) बिहिया, चंगुली पंगु
भूषण । [पानी ।
बीर. (स) नून, तारण, दिया ।
बीर बीरा. (स) दीनबाजा,
विपलक, बीजागान—बी.
तंही बीरा वसयी, बहरी
विपंभी पादि । जंघ दशा-
वत सरदरो, बहुरो बर-
जति ताहि ॥ ११ ॥

बीत होत. (स) घग्नि, अंगल ।
बीचिन. (स) चांगिन, सचन ।
बीची, बीचीको. (स) गधी,
पुण्य प्रतीली, कूषा ।
बीन बीना. (स) बाजाभेद, तन्त्री,
नारद गमग बीण नाम—
दोहा । सीधे विपंभी वसकी,
तंघ यंभी बीन । हरिसंभोप
गावन समे श्रीदेवर्षि प्रवीन ॥
बीना. (क) प्रवीण, चतुर, दृष्टि-
वान् ।
बीमा. (प) बड़ा, भाड़ा, पावक ।
बीरघातिनी. (स) गति कही
संगी विभीष त्रछा की
दिया, बीर का नाग कर-
नेवाही ।
बीरता. (स) गुरता घोड़ापन ।
बीर, बीर. (स) गूरमा, भाद,
भैया, संपान, स्वधर्म, राव
ज्ञान, दान वरदान बीर-
रस कही पापंदेशै के काह
दृष्ट विभीषकरना अनेती
पोकलि, रसगोन बीर रस-
युत बीर रस—दंड नोहि

कदाम ॥ समे रणभूमि
खरे रघुवीर ॥ धरे धनु
मान जपाय तुगीर ॥
दगाखनिपाति दई गति
राम ॥ सुचारि जगाम
सुमोक्षिण दाम ॥ १५

दानवीर—छंदभूषण ॥ दान
विपाद धराहरि सीन्धी ॥
बाक कट, तनु तारन
कीन्ही ॥ अपिं सबे बलि
धर्महि राया ॥ छंद विभा-
गन कर्णहु भाया ॥ १ ॥

धर्मवीर—छंदललित ॥
कीन्ही महीपगण व्याज
दूत की से लोति नारि धन
धर्मपूत की ॥ तापे युधि-
टिर धर्म नातजा ॥ कर्णे
जगाम समनेधुना धुजाः ॥

दयावीर—छंद भुजंगी ॥
दिसे पाण योगी दधीचादिने ।
पराये हितं युक्तचल्दाद
ने ॥ दयावीर विख्यात
नामे रघो । त्रियसं भुजा
भी भुजंगी कछो ॥ १ ॥

कलि मन्द—दी०१ कलि
बल्लेग कलि सूरमा, कलि
जियंग संप्राम ॥ कलि
कलिजुग यह घोर नलि
केवस केयव नाम ॥ १

वीरभद्र. (स) शिवगण नाम
वीरासन (स) वीर के समान
बैठना ।

वीरस. (स) संप्राम, १ स
धर्म, २ । तप. १ । ज्ञान
४ । दान, ५ । दान वीर
रस कहो धन, पाखादि
देके काहुका कट निवेष्ट
चारि पानन्द दातव्य ।

वीर्ज. (स) चनल दुःख ते
भी दुःखित नहिं होय ।

वीर्य (स) सामर्थ्य, बल, बौद्ध
धातु ।

वीर्यवान वीर्यमान्. (स) प-
राक्रमी सामर्थ्यप्रतापी ।

वीर. वीर। (प) बीसधंया
बाचक २० ।

वीरहु (प) विषट्ठान, व
ठिनभूमि ।

बुद्धि (स) मनीषा, चतुःकरण
 वृत्ति, विवेक चेत। दो० ।
 बुद्धिमनीषा मेमुषी, मेवा
 धिपना धीय । मति मी
 मती करत चली, भली
 विचक्षण तीव्र ॥ १ ॥ पुनः ।
 बुद्धि मनीषी मेमुषी,
 धिपप नीची धीय । उप्
 रची प्रा चेतना, प्रेधा-
 संबित्त मनीय ॥ १ ॥

बुद्धिदा (म) मदिरा, दाहणी,
 मद, बुद्धिनाशक ।

बुद्धाई (द) समझाई, समझ
 करके, बुद्धाना, समझना ।

बुद्धबुद्ध (न) बुद्धबुद्धा, दिव्यबुद्धा ।

बुद्ध-बुद्ध (स) पण्डित, जगो-
 सुत, बोध चवतार, पीया
 पत्र, चन्द्रपत्र, बुद्ध मन्द-
 दोष । बुद्ध पंडित को
 कहत है, बुद्ध सबि सुगति
 बलान ॥ बुद्ध हरि की
 चवतार एव, पीछ मयो
 निदि साग ॥ १ ॥

बुद्धुदा (प) भोग की इच्छा ।

बुभुक्षित (स) चुक्षित, पेटू,
 भूखा ।

बुद्धा (म) बुद्धबुद्ध, बुद्धबुद्धा ।

बुद्ध भक्तजनना, मु० बुद्धापे में
 जवानो की बातें करना ।

बुद्धावा विगड़ना, मु० बुद्धापे
 में दुष होना ।

बुद्धादेना, मु० ठगना, छतना ।

बुद्धावटना, मु० निम्दाकरना,
 बदनामी करना

बुद्धा चोतना, मु० बिछी का
 बिगाड़ पाहना, बिछी की
 मुराई बाहना ।

बुद्धा देटा, खोटा पैसा काम
 पाता है, मु० चपना देटा
 निबन्धा भी हो तो भी
 बिछी समय काम पाता
 है ।

बुद्धागतना, मु० चपसंदहीना
 माराज हीना, नापुमहीना ।

बुद्धा लगना, मु० भक्तों न मा-
 न्यहीना ।

बुद्धाई पर कमर बांधना, मु०
 दुराई करके पर तैयार
 होना ।

सूदा वादी, सु. मेह की थोड़ी
२ सूदे गिरना ।

सूडसरना, सु. डूबसरना ।

सूदाघाग, सूदाधराट, सु.
बहुत सूदा ।

सूता (प) वन, काष्ठ, लोह ।

सूत (स.) हुंकार, यन्त्र, दा-
मन, देवमन, भेड़िया ।

सूत हुंकार जाकों काष्ठ
देस में योग काष्ठ देस में
भेड़िया कहते हैं ।

सूकरि (स.) हुंकार, वनमन ।

सूता (स.) नदीविशेष ।

सूद (द) समुद्र ।

सूजिन (स.) दुःख, पाप ।

सूदारकः (द) देवता ।

सूत (स.) गण्डन, रीति, पद्य ।

सूताना (न) बाराह, विवरण,
पता ।

सूति (स.) चित को जगती,
शास, अथवा, लोविका

सूतधारी () सूतका निवा
दिनेवाला ।

सूय (स) चमुरविशेष जो

रुद्र को पुरावन. हस्तो समेत
दिगन्तगयाया बाहे मारण हेतु

सूते तीन धनुष दधीनि के
पंजरा का बनाया, इति ॥

स्तुत ॥ ८० ॥ १० ॥ अथवा
योभागवत प्रमाण यह श्रीम-

हाभारत में विगद स्थात
ताकी विवरण, गाण्डीव धनुष

पक्ष - लामे २ - तीनि गुण
कही प्रताप बाहे वैद्यनाथ

में लामे प्रगट किये श्री वेद-
नाथ लू पद्या ताकी चर्चन

द्वन्द्वपक्ष मन्त्रित्व अधिकारी
अथो ॥ १ ॥ दूसरी यति काही

रुद्र धनुष पूरा लामे १५ की
गुण बाहे द्वन्द्व अधिकारी ॥ ११ ॥

तीसरी विनाश धनुष पूरा
लामे ७ सात गुण बाहे

श्री शिव लू अधिकारी । चौथा
पक्षय धनुष पूरा लामे ८ गुण

सूयादि देवत का दिवा
बाहे यागदमनसुनि परशुराम

सुनि का विता अधिकारी ता
धनुष कर अर्चित विगद के

दर्शन की श्री रामायण दान-
 दाह भी श्रीरामायण लू श्री
 परशुराममुनि की धनुष्यपर्वमित
 करे १३ श्री० । देव एक गुन
 धनुष्य हमारे । नव गुन परम
 सुभीत तुम्हारे ॥८॥ अथ धनुष्य
 गुण सहित विवरण । ॥
 गुण० नाम देवता गुणद०
 वार० १ सुख्य०
 लक्षार० २ इन्द्र०
 ग्रंथ० ३ विष्णु०
 गणेश्वर० ४ हरस्तुति०
 देव० ५
 धार० ६ बरुद०
 शेष० ७ मछा०
 काम० ८ कामदेव०
 कीदाता० ९ दिग्पाल०

८ इति नवगुण ।

हृदयदा (स) इन्द्र, पुरन्दर ।

वृद्धा (स) निष्ठा, अमल ।

दृष्ट (स) वृद्धा, पुराणा, प्राचीन
 होकरा ।

वृद्धदा (स) दास्य, धर्मावति ।

वृद्धा (स) वृद्धी, होकरा, बुद्धिया

दृष्टि (स) सरास्यपणा, सदृशी,
 दाह, दस्यो, दहोती ।

दृष्ट (स) दूध, भुण्ड, समूह,
 राजि । [गोर्वाण ।

दृष्टारक (स) देवता, दिवीग,

दृष्टारका (स) देवधू, पक्षता,
 देवता । [पाठवी रामि ।

दृष्टिक [स] विदु, बोलाकोट,

दृष्ट, वृष्टम (स) बैल, दधुद,
 ग्रेठ, काम, सुधर्म, सुर-
 पति, रूप, दूसरी रामि ।

वृष्ट नाम—दा० वृष्ट सुर-
 पति वृष्ट करम पुनि, वृष्ट

जे वृष्टम हय काम ॥ वृष्ट
 सुधर्म करि हरि भगो,

लो पाहो पुष्ट धाम ॥२॥

वृष्टकेतु [स] शिवगङ्गा, नद्यादेव ।

वृष्टम [स] बैल, ग्रेठ ।

वृष्टन [स] बैल, ग्रीव, वेड़िनी ।

वृष्टनी [स] गौ, गृद्धी, गृद्धा ।

वृष्टि [स] वर्षा, धारिण, मेघ,
 मेघ, वृष्ट समूह ।

वृष्टी [स] दधुबंजी । [विपुल ।

वृष्टत [स] भारी, दहा, स्तूत,

वेहापार होना. न० दुष्ट से
 छूटना. सबबादपरीहोना
 बेगि-बेगी- (प) तुलना, मोक्ष ।
 बेभान- [द] निश्चिन्ता, नाका चिन्त
 बेडा- [क] घनाई, चौबड़ा ।
 बेद बेद. [न] बांझ, बंझ, बां
 सुरी. राजा विजय ।

बेदी- [म] हथी, गद्दी का जंगम,
 बीठी, हुन्तानिवाट, का
 बरी नाम दी० १ बेमबेम
 बेनी बबरि, दंगपास एवि
 देन ॥ सात कुंभ के खंभ
 बजु, नागिन सुहरेलेत ।
 बंग बंग सोभित लक्ष्म.
 बरि हयमानुहुगारि ।
 बसंवार हादम तमा,
 बी घोडन नुहार १ २ ३

बेद- (न) सुरली, बांसुरी, बंझो,
 राजा विजय, बांस ।

बेन- बिदग- बेत- (द- म०) लक्ष
 विजय, बही, बित, बही,
 पाल, पाकान, मूल्य, (दिव
 पद- ७११ के एक तरफ की
 सबबादपार बरही । सी० ।

फूलै फूलै न वेत, लदपि
 सुधा रसहिं जलद । मूरख
 हृदय न चेत, गी गुन नि-
 राहिं दिरंजि सम १११
 इस मोरठे का लोग पनीक
 पद करत है परन्तु गिर्य
 करने से यह निबय हुषा
 बि वेत जो पापाम रूपी
 बृष है सो फूलता नहीं
 चाहे बादर राति दिन
 समत दरमा करे कोकि
 पाकान मूल्य है इस में
 समत ठहरता नहीं कैसे
 गुन करे ऐना ही मूरख
 का हृदय मूल्य है मछा
 के समान भी गुन हो तो
 क्या करे समरकीम में
 पाकान का नाम दिवत
 भी सदा है बही भाषा
 में दिगद के वेत हो गया
 १, बीना जिनि लक्ष निद-
 टत सरद पबासे । दिवसत
 वेत सुबनन दिवासे । प-
 र्नात् सैवे नाट जगु है

प्रकाशमे लक्ष घट जाता है
वेत अर्थात् प्राकाश सम-
भ होता है और कमल
विकसता है । वेत वृक्ष का
नाम । टी० वेत करी वि-
द्वीछरवि, भूय स्त्रियां
मीर । वंजुल मंजुल कंज
तर, बैठे है वल धीर । १।
प्राकाश का नाम टी० ।
अथ पुष्पा निष्पुण्ड, अंत
रीष्ट नभ वास । व्योम
अमंत विहाय भिन्न, सुर-
वर्त्मन प्राकाश ॥ १॥ गगन
को नहमग वनि रहे, नेकु
चहो तनि रोप । देवम
नेरो छप जगु, सुर तिय
कीष्ट भगीप ॥ २ ॥

वेतपाणि (म) हाथ में वेत
लिये कंजुल मणि छटित
पाया ।

वेतप. [द] वेत वृक्ष, प्रामान्य
वृक्ष, प्राकाश । [वा ।]

वेतः (न) जाता विज्ञ, जानने

वेत (म) वेतवृक्ष विशेष, एकही,

यष्टी, समान्य वृक्ष, ताबी
ममाण कथा यीवालीक ।
वेत्ते करालस गहो विनि
स्त्रित गगी न्यमुरवि रं
ने सदा तदा विवेचस्य
पुष्पितं गहिं । तथा मनु-
ष्यापि गुरोर्विनियतं हरी
विरनि गुरोः समोद्भवेत्
तथा दगाभ्येः प्रियया वि-
निर्णीतं विनिर्णीतं ज्ञान
निरञ्जन गतिः ॥ १ ॥

वेद (घ) आदि पुस्तक चारि,
पटम्, यजुप्, साम, अथ-
वेद्य ॥ ४॥ कत्यावाचक, १०वी
वाचक, देव यानि मूर्ति
पुस्तक आदि, ज्ञातव, चार
व्यावाचक ॥ ४ ॥ वेद
नाम । टी० । धरि दिग
वदु विगतो करत, वेद मद्र
मिहात । आश्रय नृति
माश्र दृति, प्रागम निगम
जतांत ॥ १ ॥ पुनः नाम ।
टी० । मद्र निगम नृति
वेद पुनि, प्रां मूल निग

लाम। निगम पगम जाओ
 कहत, सोइ वधि सुंदर
 ग्राम ११५ [वेदपाणी
 वेदगिरा- (म) पात्राय बाणी.
 वेदगिरा- (स) सुनि विमेष, धी
 वेद गिर पर रखे, सुनि
 विमेष या ब्रह्मा जाओ
 वेद गिर पर गिरन् धाम
 ते ज्ञानना दति । [माता।
 वेदाङ्ग- (म) व्याख्यान आदि को
 वेदान्त- (म) वेदका अन्तर्भाग ।
 वेदिका, वेदी, (र) वेदी, अग्नि-
 होत्र, चौक, बहुतरा, अ-
 ण्डित नाम प्रसिद्ध कर्म-
 काण्ड, करने के लिये
 छोटा बहुतरा वेदी पद
 को देखो । [पां०।
 वेध- (स) हिंदू, हिंदू, साध,
 वेधा- (स) ब्रह्मा, विधाता ।
 वेग, वेद- (प-स) वांसुरी, बंमो,
 बंदिषा । [पस।
 वेना- (प) पंखा, हीजना, पन
 वेनी- वेदी, [प-स-] नदी,
 देदी, चौटी, सुजानी,

संगम, एक, द्वि, त्रिगि,
 चारि, पांच, छी, सात,
 आठ, नव, दश, इत्यादिक
 दशार पदाद्यै मिलिके एक
 लगत सिद्ध होय बांकी
 भी वेनी संज्ञा ।

वेनु- देणु- (प-स) भूपरिमेष
 सुदीर्घमी जाओ कथा है
 कि राजा देनु राजा पञ्च
 के पुत्र उत्तानपाद के वंश
 के नाता बाकी पञ्चमे की
 पुत्री ताहि पंच यज्ञ करि
 के पञ्चमे अंग महा पद्म
 कुपाटी उत्पन्न भयो कि
 प्रौढ़ होते गोर्वा पर मि-
 कारहरप लगी, पिता ते
 यज्ञ करि राज लेके यज्ञ,
 दान, व्रत, पूजा आदि सु-
 धर्म की बाधा भयो, जहाँ
 वासव जीत सुनत तहाँ
 बाकी दण्ड करत धनवासी
 का धन लूट लेत ऐसी महा
 पद्म कुपाटी पण्डित भयो
 कि पृथ्वी घोर पद्मवार ते

समस्त उमाकोश भयो, पद्म-
 चादि निरस भयो, लोभी मवी
 कामी मोधी लोभी डीत भय,
 तब चरपियो विचार करि ऐसी
 पधम के नागदित यत्र पारंभ
 युक्त साथ करि हुड्डार मरण,
 मन्त्र ते पाहुत दियो कि वाकी
 मरण भयो, पद्यात् बिना राज-
 पति के पाहु ते अपित हृद
 अत्य होने लग्यो, तद कटपी
 यरो पुनि विचारदार यक्षो
 सत्य, निमित्त राजावेनु मृग
 के लंघ मयन किए वाते बिज-
 कुस मातापत्त पधम राजसी
 अय ते पहिसे नियादजाति
 पहिरिया लक्ष्य भयो । पद्यात्
 वाजे बाहु की मयन किए पि-
 तादेव पत्त में दिखत एक पु-
 रष विष्णुपंग अवतार राजा
 पुय, दोहरो देवीपंग सुदितो
 नाम कही राजा पुय की स्त्री
 सत्य भयो, उस राज में रा-
 जकाज प्रजा सुखी धर्मोदि की
 बुद्धि भकी प्रचारते होने लग्यो ।

वेष्णुपंग (द) बीम की कोठ.

बी० । पवही ते सर संसं
 होई । वेष्णुवंस पुत भवेति
 घमोई । अर्थात् वेष्णुवंस
 बीम की कोठ में ते कदा
 मे घमोई हुपा । [जहाज ।

वेरो-वेरे (क) गोका विमेष,

बेल (स प) समुद्रतट, पर्वत

काज, सता, विश्वजग.

तरङ्ग, वृक्षसंज्ञा । वेभ-

नाम—दोहा । पुम्भी विम

की सदा फल, वेसतात्र

मान्दुर । एयोफन तुप कु-

चन मग, कहत कहत क-

दिकर ।

वेजा (स प) नहर, ज्वा,

समय, बाजामेद, पुष्प वि-

शेष ।

वेजि (स) नागवेकी बार

कतानाम—दोहा । मा-

प्राप्तती वसती, विवती

विद्यती वेजि । बिटवसता

बली मदिन यह नवनाग

हमिल । १ ॥

देहक. (स) करिष्योपध ।
 देह. (स) कप, हरि, कटा, गोभा ।
 देह्या. (स) मपिषा, कपनी,
 पतुरिदा । देह्यानाम—
 हंठ-हीरक । वारवधु
 मपिषा विलोभितो दामि
 दामिदा । पुष्पाधु संभषी
 रूपशी वासंजिका । वार-
 मुनी देह्या भवै बहभा
 कानुधा । नृत्तत रघुनाथ
 कभाते रस रसहीरका ॥१॥
 देव (स) भिष, जाला । [नपेटन ।
 देहम. (स) पेटन, यकना, ।
 देहिन. (स) चारी चोर से टका
 कृपा ।
 देमर. (स) रघुनाथ पपिमदेम
 रत्नात खर खटुवा लाम-
 पर ।
 देमरि. (स) मृगमिद नाक वा ।
 देह्या. (स) हर, मयम, जाला ।
 देह. (स) दिद, देह, जाला ।
 देह्या. (स) दिददाल, खंहर,
 पयलीर, जाला, कीकड़ ।
 देह. (स) परभी दिद ।

दे. (स. प) निषय, निर्णय,
 स्थिर ठीक, अवस्था ।
 देकुण. (स) विस्तृ का धाम,
 नारायण ।
 देठनामा. सु. गिरपङ्कना ।
 देठरना. सु. छोड़टना, पास-
 तोड़ना, सुवा जीनामा ।
 देहक. (स) दूषण, विकार ।
 वैखानत्. (स) तपसी, यती,
 संन्यासी ।
 वैखानो. (स) माला विमेष ।
 दोहा न'पो मापो मूली,
 करी दरी कमठ बास ।
 पट्पट मुक्ता लहां होये,
 सो येनयेतो नास ॥ १॥
 धमावाजक ।
 देतरदी. (स) मजमदी, यम-
 हार, मजम विमेष, यमपुर
 हो मदी ।
 देता. (स) देत विमेष ।
 देहक. (स) हो देह की रीति
 से हो ।
 देदेरी वेदेरी. (स) मजमउली,
 कपुलीवि रीषध, होना

बैद्य. (स) विदित्तक, भिषकवर ।
 बैरपहता, मु. दुग्मगोहीजागा ।
 बैरलेता, मु. बदला लेता ।
 बैग-बैण (प.स) बंशी बाणो,
 बचन, बाक् राजा पृथु बैग
 पुत्र ।
 बैननेय (स) गरुड़ पक्षी, पंग
 पति, खरीय, शी. । ताचं
 सुवर्ण सुरंग जित, बैननेय
 हरिजान । नामांतक
 पक्षपति गरुड़, सरगरिपु
 गरुड़ मान ॥ १ ॥
 बैमध. (स) वाहन, ऐगव्य,
 लेकोय वन ।
 बैमात्र (स) सौतेला भाई ।
 बैयान बैना (स) कना, प्रभव,
 सृष्टि, उत्पत्ति, वचन ।
 बैर. (स) विरोध, दंय, मद्युता ।
 बैरागो. (स) बीनरागो, कदा
 मीन ।
 बैराग्य (स) विषयी का त्याग,
 पक्षि, पक्ष वा चारि म
 कार, हेतु बैराग्य ॥ १ ॥
 बैरग्य बैराग्य ॥ १ ॥ कन-

बैराग्य ॥ १ ॥ पक्षि बैर ।
 बैवस्वत. (स) चर्मराज, २
 कतात्त ।
 बैगन्दर. (स) बद्धि, चमि, १
 बैगवण (स) कुबेर, सुरभर
 मीनजन्तु ।
 बैगानर. (स) चमि विजय
 बैपरी. (स) मुख घोर बाप
 बैपाणस. (स) बाणप्रण
 यमी । [बैराग्य
 बैपात्र. (स) विष्णु कपास
 बैगन्दर. (स) चमि, चनक
 बैस (स) बैस, पक्ष्या ।
 बैसा. (स) बैठा, स्थिता, बा
 बैठना ।
 बैवे [द] बैठे, स्थितभय ।
 बीडा (स) मझाद, माझी ।
 बीटीवाटा फडकना, मु. १
 चालाक होना ।
 बीझा मिरपर होना, मु. १
 कठिन, चामका चानन
 बील चाल, मु. यात पीत ।
 बीबीठासी दुनागा, मु. तात
 देना ।

बोधः [स] ज्ञान, समझ ।

बोधिष्ठुनः [स] पीपलवृक्ष ।

बोध्यः [स] बोध के योग्य ।

बोरना [द] डूबाना । [चरि

बोधि-द] बोधि बड़े बोधाय

बोधासिनी- [स] बोध के प्र

गोच ता के प्रसादः

बधानः चेतःसि बोधानि

बोधासिनीयु च इच्छेत

परं भासिनी धर्म इच्छदा

इति शास्त्रीयान् ।

बोहित- बोही, [प, स] नाव,

तरणी, नौका, प्लव, नव

बोहा, बोहाडा [प] बटाटा,

बटाटा ।

बौह- [प] सता, बैर, बांवर ।

ब्यह- [स] रूपनान्, मरीर,

धानी, खड्ड, खुला ।

ब्यहि- [स] एकता, एकाई, सन ।

ब्यप-ब्यद- (स) विकल, सोमित,

भूषा भेटका, बहका ।

ब्यह- (स) परिहास, विदुष,

ठहा, चित्ति, निन्दा, निन्दित ।

ब्यसन- ब्यदन- (स) बीजन,

पक्षा, बंशवेता ।

व्यसन- (स) तरकारी, चायनी ।

व्यतिरेक- (स) पक्षग, भिन्न,

परक । [गत ।

व्यतीत- (स) बीतगया, हुआ,

व्यप- (स) होन, नाम ।

व्यधा- व्यधा- (स) पोड़ा, हेल, ग,

दष्ट, दुष्ट ।

व्याधि- (स) बहिरिया ।

व्यापक- (स) सब में प्राप्त ।

व्यवधान- (स) रीकावट, छेक ।

व्यवसित- (स) व्यवहार, घन्टा ।

व्यवहरिदा- व्यवहरिदा- (द) प-

रखिदा, पोतदार, महा-

सन । [नामिनी ।

व्यभिचारिणी- (स) परपति-

व्यभिचारी- (स) लुच्चा, परती-

वगानी ।

व्यलीक- व्यलीक- [न] कपट,

दहा ।

व्यसन- (स) भूषण, कृपाव,

दष्ट, मोह, दहेयनान-

दोहाः विधुर व्यसन कष्ट

न हन, नहन कलेमहु मोह

सहर चट महु स प्रभु,
सिमाहीन यम लोका ॥ ३ ॥
अमनो, अमनो (म) अकला,
अनार, जुगारी पादि कु
पाचो, बालि, मोच ।

आप्या (म) बपान, कयन,
टीका ।

आप (म) बाप, बलगन्तु ।

आग (म. प.) मित्रा, भगन,
अर, प्रयत्न, मित्रावन, ब-
जाना, गुरु, बडा, अल ।

मित्राको दे बचन धुमो-
नाम—दीहा । आकी
मित्रा कुटिल जल, बहमि
अहत कलीछ । अगटो
कातर कपर की, वेतिन
अहति मचीज् ॥ १ ॥

आप (म) अमन् ।

आह (मु) अगत, अमाह ।

आवा, (म) पीडा, अह, अट ।

आधि, (म) गीत दूध ।

आन (म) कप, लीप, हाचो,
कुरमर, दुष्ट आनद । आ
अमन्—दीहा । आग

काहत पै कुरमर, दुष्ट अ-
चर गल आन । आन
सर्फ सिर पर चहुन, सिर
बर मंडलाक ॥ १ ॥ ॥ ॥

आधु (म) बहिसिय, विनी-
मार ।

आकी (म) अर्थकारी, अगत
धारी, अंतरनामी ।

आग (म. प.) अतिशय,
एक अति का नाम मिदी-
ने वेदीत मुच अोर एराच
आदि बनाया, अर्थात्
मायक, विद्या, भारी,
देनाय, अधिकाट ।

आह (म) आहनाम—दीहा
आधिबोट आधि अहत,
प्रमो आह अगमान । अ-
रिच निवेग विवाह अहिर,
अहाह मयी अियमान ।

आहान (म) अहाहदन्,
अमन ।

अनाहरचना, मु. गादी को
कोती अहमि अहना ।
अनाहविनादना, मु. अना

सात की विगाह देगा ।
 व्याख्याना, सु० दुर्दान्त की
 घर में लागा ।
 धूर्त (स) कदम डले, अधि
 द, मेला की रचना, समूह
 लोम (स) मित्र-पाकाग ।
 मन्त्र (म) मोक्ष देगा, गति,
 प्राप्ति ।
 मन्त्र (स) प्राप्ति दीत दे ।
 मन्त्र (स) मन्त्र, चलन,
 प्राप्ति ।
 मन्त्र (स) प्राप्ति दीत है,
 मन्त्र दे-दृष्टान्त ।
 मन्त्र (म, ट) गूढ़ांग, फोड़ा,
 द्वि, पाद, लक्षण ।
 मन्त्र (स) उपवास, पुण्य कर्म ।
 मन्त्र (स) कता । अनुरक्तता
 मन्त्र—दी । मन्त्र
 विमली-मन्त्र, विमुनी
 यथाज्ञान, मन्त्रदेति-
 तिमि नृपदिन, मन्त्रदे-
 यत तपसाग ॥ १ ॥
 मन्त्रिरन्तु (स) मन्त्रिराधार ।
 मन्त्र (स) मन्त्रधारो, मन्त्र,

मन्त्रिराम—छंद संभगति ॥
 मन्त्रित योगीजटसीमिचुख
 मुंडी ॥ मन्त्रितपस्त्री यती
 साधु मुनि देडी ॥ मन्त्रि
 तापसी जंपी मन्त्रि-निर्वा-
 नी ॥ मन्त्रासी संघमीपट
 दग जानी ॥ १ ॥ श्री ।
 मन्त्र पट कता रचि
 ठानी मन्त्राग छंद गति
 छंद मन्त्राग ॥ [छंद]
 मन्त्र (स) मन्त्र संघा, रचि
 मन्त्र (स) परमात्मा, पादि
 मन्त्र, मोक्ष, वेद, विधि,
 मन्त्र मन्त्र मन्त्र—दीहा ॥
 मन्त्र मन्त्रकुच मन्त्र विधि,
 मन्त्र देव श्री जीय ॥ मन्त्र-
 मन्त्र संदन् म, ताहि ग
 मन्त्रति तीय ॥
 मन्त्रलोच (स) मन्त्राग ।
 मन्त्र-मन्त्र (स) मन्त्रति,
 मन्त्र, लोमघ, मन्त्रि ।
 मन्त्रिरो (स) मन्त्रा की वाणी ।
 मन्त्र धाम } (स) मन्त्रादीक ।
 मन्त्रागमन }

बृहस्पति (स) वेदज्ञानार्थं मुप-
नयनानंतरं प्रथमं आयम
मैद्युन रहित्य ।

बृहस्पतिवारि (रु) बृहस्पति ।

बृहस्पतिवारि (स) विद्या

अध्ययन, दक्ष भोजन, गुण

आज्ञा करण ।

बृहस्पति (स) बृहस्पति का दिया

दुष्प्रा, नाम भेद ।

बृहस्पति (स) पञ्चांग सप्त ।

बृहस्पति (स) सप्तमि, भृगु,

सोमस, अग्नि, ।

बृहस्पति (स) सप्तमिहार, सप्त-

मि, बृहस्पति नाम कन्द-

द्वये । हरिण गर्भं सोमस

प्रजापति सत्यस धाता ॥

नाम कर्म परमेष्ठि सदा-

नद दृष्टि विधाता ॥

आत्म भूषी अयम्भु चतुरा-

नन चंडन ॥ अजयति

सुरवेष्ट संस वाहन देवा

अज ॥ अः कमलासन

मनस्यटा पितामह विरवि

बृहस्पति ॥ यद यद क-

प्यरोहा चतुर्दश उल्लास
कथा । दो० । अज कर्म

अजग विधि पिता, अज

सिद्धि होय । अष्टा अ-

रानन धिपन, भीपन सं-

सोय ॥ १ ॥ सो सो स-

अवि कविन को, अज

होती अज माभ । तीति

रथी विधि निपुणता, हो

गयो कपूरी बाभ ।

बृहस्पति (स) पंति, युव

समूह भंड ।

बृहस्पति (स) विषय का भूतना,

अरुपानंद, भगवान का

सुख ।

बृहस्पति (स) बुद्धि, हरिण,

२ नारंगी, बरंगी ।

बृहस्पति (स) अजमीदा ।

बृहस्पति (स) अजान ।

बृहस्पति (स) तृण ।

बृहस्पति (स) पीतल ।

बृहस्पति (स) चार रंग का कहरा

बृहस्पति (स) दाना ।

बृहस्पति (स) पञ्चांग ।

द्वन्द्वसुखस्य (स) दुःखद्वय ।

द्वन्द्वस्य (स) } वसनेठी ।
द्वन्द्वस्यद्विधा }

द्वन्द्वस्य (स) द्वा ।

द्वन्द्वस्य (द) द्वि ।

द्वन्द्वस्य (स) द्वयस्य, द्वि,

अतएवादि चार मन्त्र द्वि-

शेष द्वन्द्वस्य वा द्वय, वा

दीर्घ वा पीन नाम—द्वन्द्व

कलहं, द्वाव वा द्वय

द्वि द्वि द्वन्द्वस्य ॥ भूषण

सर्व मोद नयो भूषण

मन्त्र ॥ करि द्वाव कूट

व्यत कर द्वयद्विधा ॥

निम्न द्वय सप्त द्वय द्वय

सप्तद्विधा ॥ १ ॥ नदिपाव

कोट तनु दीर्घद्विधा ॥

गुरु प्रांश द्वयत सायुत

तनु द्वाव ॥ पुनि पीन

द्वन्द्व द्वय करि निम्न

द्विधा ॥ द्वयद्विधा द्वन्द्व

द्वय द्वय द्वय ॥ २ ॥

द्विधा (स) द्वि, द्वि, द्वि,

द्विधा ।

द्विधा (द) द्वि, द्वि, द्वि ।

द्विधा (स) द्वि, द्वि, द्वि,

द्वि ।

द्विधा (स) द्वि, द्वि, द्वि, द्वि ।

द्विधा (द) द्वि, द्वि, द्वि ।

अ

अ [स] अक्षय, अक्षयिणी चदि

२७ । अक्षय, अक्षय, अक्षय,

रामि, अक्षय, अक्षय, अक्षय

[अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय]

तारा, अक्षय २७ द्वि जैवे

१ अक्षय, २ अक्षय, ३

अक्षय, ४ अक्षय, ५

अक्षय, ६ अक्षय, ७ अक्षय,

अक्षय, ८ अक्षय, ९ अक्षय,

१० अक्षय, ११ अक्षय, १२

अक्षय, १३ अक्षय, १४ अक्षय,

१५ अक्षय, १६ अक्षय, १७

अक्षय, १८ अक्षय, १९

अक्षय, २० अक्षय, २१

अक्षय, २२ अक्षय, २३

अक्षय, २४ अक्षय, २५

अक्षय, २६ अक्षय, २७

भजन [न] सेवा, सुखावाद,

भक्ति, ध्यान, आराधन,
तीरना ।

भजन [उ] सामर्थ्य, विदारण
तीरना, नाशकरना ।

भजामहे. [य] भजत ही हम
सब, हम सब भजते हैं,
हम भजते हैं ।

भजामि. (य) मैं भजतु हूँ, मैं
भजता हूँ ।

भजी. (य) चङ्किरकीर,
चङ्किरकीर, भजता ।

भजे. (य) चङ्किरकीर, मैं भजता हूँ ।

भजय. (य) गायक, वाद्यक,
चयकारक, गाय, गाय-
करनेवाला ।

भट [उ] चोर, चूर, तनूर,
चीथा, बहादुर, सिपाही ।

भटभेर-भटभेर [य] बट, दुप,
धका खात फिरत, धका
खाते फिरते हैं, टखत,
भजनादिका सतसंग होने
का, पणाय का विज्ञ
प्राप्ति करना ताकी भट

भेर कही । [उपाधिभट]

भट. [न] पण्डित, विद्यावान्,
भट्टाकी भट्टिया [न] बैगन ।

भट्ट [य] निरिक्त ।

भट्टिहार-भट्टिहार (य) स्नान

का स्वभाव चंचल निरक्त में

चोरनाई रगोईधर गी

भाई, या गी गी चंचल

संगभक्तों गी पापनों

भोजनकु-खोजना, चोरी,

भट्टिहार घाट दे । धी. । धी.

द्वेष सीस साग की नाई ।

इत सत चित्त चला भ-

ट्टिहार । पदार्थ भट्टि-

हार चोरी करे चले गान

ट्टिहार चोरी की बुद्धिखल

छादि स चङ्कत है ।

भट्टी-भट्टीतकी. [य] नञ्जीठ ।

भट्टीर [य] चिरित, चोरीर

साग ।

भट्टीरी [य] नञ्जीठ ।

भट्टीश [य] निरिक्त ।

भट्टर-भट्टर [य] चङ्कत है,

कहने हैं ।

भर्षति. [स] कहत है सब ।

भर्षि भनि [प] कहि के,
कह करवे ।

भर्षित भणी भनित [स] च-
यन, कथित, सत, कहा
हुआ, कहना, कविता ।

भर्षु भनु. [प] कहो, कहते हो ।

भर्षु. [प] कहत हो ।

भर्षे. भने. [प] कहै ।

भगता. [द] कहते हैं ।

भदेय. भदेस [स. प] प्रकृति
प्रत्ययरहित, निन्दित, निन्द
नकारा, खराब, गवारी,
गंवरजं निदायोग्य ।

भदेस. [द] मंद ।

भद्र. (स) कल्याण, मन्त्रा, चन्दन,
भाग्यमानी, सुख, मंगल,
सुख ।

भद्र. (स) गी ।

भद्रपर्षी. [स] गन्धार, गंध
प्रसारिणी, युक्त ।

भद्रमुष्ण. [स] रमसरक्षा ।

भद्रमुष्ण. [स] नागरमीमा ।

भद्रयव [स] इंदियव ।

भद्रवती. [स] कायकर ।

भद्रवला. [स] गंधप्रसारिणी ।

भद्रयो. [स] मुपेदवन्दन ।

भद्रा. [स] कायकर, चनसुर ।

भद्रैसा. [स] बड़ी ब्रह्मादनी ।

भनी. [स] कहो ।

भद्रहीना. मु. सिर के बाह
घोर दाढ़ी मूंछ की बाह
मुंडाणा (हिन्दुओं में एक
रीति है कि जब कोई मरत
है तब अथवा तीर्थ पर
बाह मुंडाते हैं) ।

भव. [स] जनम, संसार, मर्त्य,
कुल्याण, सुयम, कुटुम्ब,
परिवार, होय, स्थिति ।

भववागा. [द] भव महादेश
वामाप्ता, पार्वती, निरिना
मैसना ।

भवतः [स] दिहोत है ।

भवताम् [स] दिहोय ।

भवति. [स] एकहीत है ।

भवत् भवद्. [स] एकहीय ।

भवन. [स] घर, गृही सदन,
स्थान, मकान, गृह ।

भवन् [स] सब होय ।

भवभयशापा [स] संसार के भय
के हरनेवाले ।

भवन्ति [म] सब होत हैं ।

भवभोरा [द] संसार का भय ।

भवा भवानो [स] पार्श्वतो,
गिरिजा ।

भवान् [स] पाप तुम्ह ।

भवास्तुताप [न] संसारमनुद्ध ।

भवाप [स] जगत्, जन्मप्राप्ति ।

भविष्य [स] होनिहार, भवि-
तव्य, जाने ली होगी ।

भविष्यत् [म] भावीकाय,
पानिशला जमानद ।

भकुप [स] कल्याण, गत ।

भय [स] दुस्तर, कल्याण,
भाषी, मुम, सत्य, योग्य ।

भभरना [प] रहनी, घर-
रावना, कुटुम्ब होना ।

भरमना [स] किसीपर किसी
दात का संदेह होना ।

भरमसुसना, दा सुसना-
मु० भेद सुसना ।

भरमपीलदेना, मु० दोरी दात

की प्रगट कर देगा ।

भरमगंवागा, मु० अपनी यग
की बड़ा लगाना, पावर
खीना ।

भरमनिकलजागा, मु० भेद
सुस जाना । [यासा ।

भसघोड़िया, मु० अच्छे घोड़ा-
गलाकर भसा हो, सोदा कर

गफा हो क० लैसा करेगा
वैसा पावेगा ।

भनापादमी, मु० पच्चा पादमी ।
भसामानना, मु० पदसाग

मानना । [गाना ।
भलाचंगा, मु० निरोग मोटा

भलाहगना, मु० पच्चागा-
नून होना । [पाये ।

भरीपाये, मु० दहत देर में
भलाई लेना, मु० सीनी दे साय

पदसाग करना । [गा ।
भलाई रहना, मु० सुयोग रह-

भलाभय (स) भलागाय भला
भलाई पानेवाला, पवीरी ।

भगर भर, मु० सारी भर ।
भीमभर, मु० पूरा उद होय ।

शेरभर, मु० पूरा एक शेर ।

भयखाना, मु० डरना ।

भभरि. (प) घबराइ कै, फुट
काट कै, घबरा कर डे ।

भभरो (ड) घबराया ।

भय. (स) डर, कास, भीति, शोक.
भयमनि—दोहा । साध्या
डर पातंक भय, भीत भीर
पुनि चाम । डरत सचरी
सकुच तें, गरि कंवरि के
पास ॥ १ ॥ पुनः—छंद मारं-
गं । पादंक भे भीत साध्या
दरं चाम ॥ भीमिय को
कोव सुप्रीव के कास ॥ छे
भीर कोन्ही बिनै नाय दै-
त्यारि ॥ मारंग ये छंद त-
गान के चारि ॥ १ ॥

भयहर. (स) भयानक, भीड़ा,
हरीना, भय जनक, खीक-
नाक. लिस के देखने से
भय हो । भयहर वा सम
वा सुभाष नाम छंद दोये ।
राम व्यास तनु मस वि-

नीमभयकारी ।

भीषण बीर भयंकर भैर
प्रति मये भयानक काशे
दद युत कोरि येंपु दीव
मिभि चाणूरादिषे मोरे
संम सख्यो संगे स्याम जाते
सम सदृश सदृश तनुवारे
पुनि मचाग सदृश सेवारे
सुख सधर्म समाना ॥ का
संघहरि केय गछे नृपध-
रवि चटक दत प्राजा ।
कोमल प्रकृत भीत दिशि
हरि चनिज निमग्न सुभाषे
धाम दिखी निज कला
भीस बहु दोये छंद बजावे
॥ २ ॥

तिर ।

भयंकर. (स) भय भीत, गंदा-
भयङ्क (ग) लघु भाई की स्त्री ।
भयानक. (स) भयंकर, दैत्य
विशेष भयानकरस दोहा ।
निपट विचट नरसिंह बर
सुगण निकट न जाते ।
कीरि पावि प्रह्लाद तय,
कीन्द बिनै बहु भाते ।

भयानकः (स) भयदाई ।

अथावहा (म) डानिवाला ।

अथं भारण, जरण. (म) पति.

अथिह, धारण, पोषण.

पातन, भृ भरना ।

अथा (द) धीमा, पोषण, पो-

सना, धारण ।

अरणी. अरणी (म.ट) भेकाकार

जन्तु सप्प उदरमागड,

मस्रविजिय. एक नक्षत्र

का नाम, मधुकुल रश्मि

गोत. मूम जी वृक्ष देश में

पनिह दे । नाप का भाडा,

पक्षी विजिय. रेवा, गरुड

सन्त ।

अरत- (म.) खण्डविजिय, राज

जन्तु आता हेतयो पृथ ।

अरडाण. (म.) कृति विजिय ।

अरव- (ट) दिताहना, छाटना.

छाटन, दितावह ।

अरि, भारिता (प) पूर्ण, पूरन ।

अम (म) } भेकावा ।

अमरं धा- (म) वेगनी ।

अमरगर्भा- (म) रुपेद् सीसव ।

अमटज (म) हरिश्चकार ।

अमर्भर्ग- (म-) शिव, गिरीय,

ह्योति, तेज, प्रकाश, रो-

जनी । [लक्षा

अमर्त्ति- (म-) भतार, पति, पा-

भवना (द) वर ।

अमपंथ (म) मरणाजोना ।

अम- (प) भेषा, हृषा, भवा,

संसार, शिव, जना, भव-

गष्ट-दोहा । भव मंदर

संसार भव, भव कष्टिये

कल्याण ॥ भव मंदर जस

जगत फल, जब भविये

भगवान ॥ १ ॥

अमंत (म) पाप की ।

अमटं (म) पाप का वरप ।

अमपंठ (म) संसार का पंदा ।

अमवारिधि (म) संसार रुपी

समुद्र ।

अमज्ज (म) भय. राख, दारि,

[द्वार ।

अमर- (प) मदी, फीव कीद,

भोरा हर्म भनर, भनर-

गोत । दो. ॥ प्रकटि

पधारे हरिश्चकार, लोहे

हरि को यम ॥ पञ्च सुना-
वत विद्यपति, योगज्ञान
नन्देय ॥ १ ॥ छंद वाला ॥
ज्ञानविज्ञान तप योग-
धारे ॥ ध्यान सन्यास गुण
राग नारे ॥ दीन संदेय ये
नंदलाला ॥ सप्त दग मत्त
को छंद वाला ॥ २ ॥

भा (म ट) प्रकाश, चमक
सामा, भवा, दुषा, ।

भाङ्ग भाङ्ग (प) पाष नकल
करनेचारा ।

भाङ्ग (प) प्रेम, स्नेह का लक्षण,
भाङ्ग, भावना, सत्ता, लक्ष्म ।

भाग भाग्य (म) अंग, विस्मा,
वाट, पारथ, नसीब, विभाग,
एकदेश, विभाग्ययोग्य,
शुभाशुभसूचक लक्ष्म । प्रा-
रथ, क्लृप्तमग, भागनाम ।

दोहा ॥ भाग धेय विधि
दृष्टिपुनि, देव भाग यम

कंस ॥ बोधि पठायो जान
निज, सकल भई मति
अंस ॥ १ ॥

भागसुखना, भागजागना
भाग्यवान् होना ।

भागभरीसा. मु. धोरज, दा
भागनिष्कलना, मु. निष्क

समा, भागचक्रमा ।

भागचक्रमा, मु. निष्कलन
भागजागा, चक्राजान

भागना, पक्षाना, दीव
पञ्चा करना ।

भागभाग, मु. दोहादीव
भागजाना, मु. चक्राजान

रक्षककर होना ।
भागचक्रपुर (द) एक गहर

नाम जो मूखे विचार
है । एक गाँव का नाम

जो मझोली राज गौर
पुर में है वहा एक प्रम

बहुत पुरानी है ।
भागी (म) साझे, बँटत, संभ

भागोरथ (म) राजपुत्र विधि
तपशूर । [शेष]

भागोरथी (म) गङ्गा नदी वि
भाग्य भाग (म प) कपा

दृष्ट, पारथ ।

भाष्यवत्त. (म) पारव्यी, सखी-

यान्, धनयान्, । [पाप.]

भाष्यभाजन. (स) भाष्य का

भाजन. भाष्य. (स. प) परतग.

भाहा, बासन, पाप, योग्य।

भाजा. (द) मोहा।

भाजीमारना. दु. रोकदेना।

भाङी. (म) परतग, भाङ।

भाषा. (प) बासन। [खोस।]

भाया. (स) तरकम, तीर का

भासी. (म) तरकम।

भादों की भरन. दु. बहुत

भारी मेह ओ भादों में

बरगता है। [मान्।]

भाधर. (म) गोभाधर, गोभा-

भाधु. (म) धूल्य, भास्तर, रवि,

प्रभु, राजा, सूर्य।

भानुवर. (म) सूर्यदिरल, पूरा

भानुकलकैरधेदु. (द) राम;

शोभ गांव गांव पस चौद

चनेदु. देखि भानुदु--कै

रधेदु. रधेदु भानुदु

को कोहें वा रन है ताके

चंद्र की राम की देखि है

गांव गांव में पस चनेदु

होत है।

भानुपीठ. सोमसुखी पथरी।

भानुफला. (स) कोठा, लीला,

हंसि।

भानुजा. (स) जमुना, रवितगया।

भाप. (स) प्रकृति, चादर, मेम।

भावी. (स) रीतवाली।

भावुक. (म) कल्याण, मुक्ति, गत।

भामा. (म) स्त्री, गारी, लोपमुझ।

भामिन. (म) कोंपी, कोपी।

भामिनी. (स) स्त्री, गारी, क-

कंपा, सड़ाणी, लोपमील

स्त्री। [विवाह विमेष।]

भास्वरी. (प) हुमाचट, विधि-

भाय. (म) आता, भाय।

भायन. (प) भावपता, मैदारा।

भायि. (प) भाव, सुन्दर।

भाय. (स) बीक, पांटी, बकरी।

भायतो. (म) चरखता, बायो।

भायतोहार. (स) दलीपवीत,

चनेदु।

भायराज. (म) भावरे दली,

भारदाज मुनि मुज।

भारवाह (स) बहार,
मोटिया, बहंगीदार ।

भारमधी (स) पृथ्वी का भार ।

भाइजी (स) बभनेठी ।

भारीभरकम मु० गंभीर, भ-
क्षामानुम, सहनेवाला ।

भारी पत्थर पग } मु० जो
भर छोड़ देना } काम चपने

में न हो सके उसको छोड़
देना । [होना ।

भारीहोना मु० बहुत कठिन

भारी (दे) भारी ।

भोगोव (स) शुक्रवार ।

भोगोवो (स) मोला दूध ।

भोगी (स) बभनेठी ।

भोगिया (स) फली, पत्नी, सिद्धरी,
विवाहिता फली ।

भास (स) सीकाट, सखाट,
तीर, का फाक, माछ, माछा,

संस्कार । [खेल, मांग ।

भासा (स) बर्छी जयिधार,

भासोत (प) बर्छेत, बल्लम की-
कैत ।

भाय (स. प) प्रेम, भावना,
जनना, सखा, मोल, जगु ।

भावता (स) प्रिय, चाहित,
प्रेमी ।

भावना (स) मोहात, पसन्द ।

भावना (स) भावना, मोहात,
पच्छासयना ।

भावयताना, मु० नीचसावर-

ना, नाचने में हाथ पैर
चाँप पाटि पंगी दे ।

भारत करना ।

भावी (स) होनहार ।

भाप (स) बचन, गान, बह,
भयना ।

भापण (स) बचन, करना ।

भापा (स) फली, भावना,
बोसना, बोसो, बापी, स-

रखती, जो संस्कृत नहीं
है । प्राकृत, गरबोको, गर-

बापी, पट्टेयबापी, श्रीवा-

संस्कृतं प्राकृतश्चैव सूरदेनं
च मागधम् । नैषादं पार-

सश्चैव भाषायां श्रुतं पा-
ति पट्ट ४ । ॥ बाण, न-

बान, बह, भापना,
बहना, भाषा, भावदगुब

दर्द - गोविन्दवादी नि-
 पुषी रामकौण्डल सदा ।
 रामस्मरसखी जिहो ब्रह्मो
 लोमःप्रमितः ॥ देवदाग-
 वनागानां भाषामिहो
 बह्वहः । भूतप्रेत पिशाचा-
 नां भाषाविद्राघवः प्रभुः ।
 अमृतान्मदेष भाषामिह-
 नैव व्यवहारकः । सर्वत-
 त्तरी रामः पारसीमपि
 पेठियान् । कीयानां भा-
 यया रामः कीमिषुव्यरदे-
 गितः । अष्टराघस पक्षेपु
 तेषां नीमिस्तदेवमः । या-
 दंतः क्षारवीलीचे देश वि-
 व्यापजीवमः । तेषामाषा-
 वीतां मात्पोरामी दागराचि
 हुँदैः । भाषा बोली जैमे
 मद्रासि में बङ्गास, भीट में
 भीटिया, मद्रास में मय
 पाली, बङ्गीर में बङ्गीरी
 पंजाब में पंजाबी, सिन्ध में
 सिन्धी, गुजरात में गुजराती,
 राजपुताने में देसवाली,

ब्रज में ब्रजभाषा, तिरहुत
 में मैथिली, बुन्देलखण्ड में
 बुन्देलखण्डी, उड़ीसे में
 उड़िया, तिलंगाने में तैल-
 गी, पूना सिन्धारी की त-
 रफ अङ्गाराद्री, कर्नाटक
 में कर्नाटकी, द्रविड़ में
 तामली, जिमे 'पम्' भी
 कहते हैं वोसियां वोली-
 काती हैं । इन सब में ब्र-
 जभाषा बहुत प्रसिद्ध और
 पल्लव मङ्गर कोमल प्यारी
 और रसीली है, और
 कितनेही साख के पल्ल
 इस भाषा में कवि लीगों
 ने बहुत मङ्गर और गामों
 रचे हैं । पुरानी पौण्डरी
 में जो इस भाषा लिखी
 है पदांत पंचमीह और
 पंचद्राविड़ । पंचमीह में
 पारसत, शागकुस, गीह
 मिदिषा और उड़िसा और
 द्राविड़ में तामल महा-
 राट् कर्नाट तैलंग और

युजैरा सो इन में से जो
 मोक्षी काम्यकुहा में बोझी
 जाती थी वही हिन्दी की
 जड़ है। प्राचीन समय में
 यही प्राकृत प्रयोग मा
 गरी भाषा बोलीजाती
 थी, बौद्धमत और जैनमत
 की बहुत पौखी इसी भाषा
 में लिखी हैं।

भाषित (स) कथित, कहा-
या, कहावुया : [निवाका ।

भादिने- (स) बाही, बात नर
भादि- (प) बहे, बये, बीने ।

साध- (स) टीका, टिप्पणी,
सुबाध्य ।

प्र.सं. (स) प्रमाणित ।

म.स. (म) भूचक्र, ज्योति

भाष्यः भाष्यत् (स)सूर्य, दिवा-
 र, सूर्य, प्रकाशक, चमि

अ.प्र.क. (स) नैजमी, हासिमा न

प्रिन्सिपल (म) देववीर
जायरावदास देववीर

विनिर्दिष्ट (ग) भीत को बाहर ।

भिक्षुपात्रः (८)

क।त। :

मिस्त्र. (स) पुत्र, यज्ञ, यज्ञ, यज्ञ.

पटगया, सुदः

मिथपावनी- (म) कृत्याशोही ।

भित्त. (म) व्याधा

भिक्षा: (५) ...

भिक्षा. (क) } मङ्गल ।

भिक्षुः पण्ड. (म) कर्मभक्त

भिवडुमाता (५) बाई

भयसा (म) भात ।

मिथ (स) तः समस्यता,

भिक्षा (म) भीष ।

मिषः। मिषः। मिषः।

तपसो, भिषगो, १५

सम्यग्मतिः ।

मिहिरा (स) गीर्वाण

निम्नलिखित (अ) भाग में

मि. सा. ग. म. म. — २५

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वैद्यो विद्या संनमन्

६६ विना, ६६ विना

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

म. (५, ५) ५१ (५५५)

३४ । १२०

भीड़भाड़. सु० ठठ, भीड़ ।
भीड़भाड़ना. सु० बहुत नै पा-

दमिणी का दहड़ा होना ।

भीत (प०) भित्ति, दिवार, डर ।

भीति (प०) भय, डर, गहना,

तास, हीकार, भित्ति ।

भीम (स) डेरीना, भयंकर,

रोगविनिद, पांडव वायुपुत्र

पापी बघा है । भीमसेन

नाम—होहा । कीचनमल,

प्रकोटरे, पुरविषु वायु

कुमार । भीमसेन भेटे

हरद, अरुणकमुत बहु

दार । १ । सदै भेटि प

मूरपति, मधुपुर हरि

मि पाय । खबर पांख

तन की सदै, मधुप बहो

मममनाय । २ । सोरहा ।

मधुपति भक्ति प्रविष्ट, प

अन करे दिव्यामना । ३ ।

भूमिदि कवनिदि, तट

वहत निजदार पर । ४ ।

भीर (स) डरी, करिब, डीना,
(प) धूम धान ।

भीरा (स) रोम्मा, भीड़, पर ।

भीर { (स) डरफ, भयंकर,
भीर { कादर, सी, डरपे-

कना, कातर ।

भीर (स) बलाही मनावर ।

भीरक (स) नेतारी ।

भुमार (स) बागा ।

भुज (स) भुजा, बाँझ, टण्ड

पल्लव—संद । हर मोम

बर भुज परन, जहं गहं

भने मदि परत । पदीन्

भुज पल्लव बर पदुना ।

हंम दिगाम भुज पल्लव

हामे दिजादठ और हर

हामे सुदरी बटन पादि ।

भुंरहार (स) नाछाव द्य भेट,

दून से करे दक माय है ।

१—भीमनादरिदा, २ अम-

रद, ३ दमोदिदा ४ मने-

रिदा, ५ दीनना ६ मका-

अर ७ डीमपदार ८

दिव्यार ९ डीम १०

दवटकार ११ परमरिदा

१२ दिदिदा १३ दिदि-

रिदा १४ दिदवार १५

मरदनी १६ भीमरिदा

१६ मेखवरिया १७ धेवरानी
१८ बौरिडा १९ दोघव-
इत २० लघवरिया २१
कोरांवे २२ बेनियार २३
चरनवार २४ भडान २५
भारडाजी २६ चरदध २७
सरवे २८ चरवार २९
लक्षेवार ३० चरवार ३१
चरदावे ३२ लाजी ३३
सूफरगने ३४ बेरदूपा
३५ लक्षेचनिया ३६ । य-
व्यगोती ३७ ।

भुजबीडा (द) बीसीभना
वाजा, वावन । यहाँ
बीसा मे बीडा बना है ।

भुजङ्ग (स) सप्य, व्याज,
भुजङ्ग (स) चदि, साप ।

भुजङ्गमानिनी (स) नागिनी ।

भुजङ्ग (स) सीसा धातु ।

भुजङ्गनाय (स) गिव, गहर ।

भुजङ्गाची (स) नाई ।

भुजवसी (स) लक्षदुवा, पगी ।

भुजवस. भुजविनामा (स) वा-
हुवस ।

भुजङ्ग (प) भोग करेगा ।

भुरची छानगा, सु. जादू पे रस
मे करलेगा । [छानगा]

भुजावादेना, सु. धोखा देना,
भुज (स) ज्ञान, धर्म, पा-

जाग । [धावा]

भुजङ्ग (स) नाग, भुजङ्ग,

भुजङ्गिनी भुजङ्गिनी (द)
नागिनी, सापिनी ।

भुजव (स) गगण, पृथिवी,
लक्ष, विभुवन नावक,

मन्दिर, नगस, पासाय,
मनुष्य, मन्त्रादि ।

भुजविचार (स) शोक ।

भुजविगत कोटीना योत्रा
नानामितागुभा । सद्यः

मगाधतलतापादपधु-
ता । ११ मयोदादय कोटिव

पक्ष कोटि बनानि च ।
पुरवहनयामासद्विगति

कोटयः १२३ इति वज्रुमान
नाट्य प्रताप ।

भूतिशब्द (स) रीतिग, यगिपा
गुर । मिहोडा ।

भूग (स) म बडेडावण

भूग (स) म (स) भूमि

य गाल, पुष्पागल, य गी

म, भूग गुर । (गिण ।

भूग (स) (स) गीगाला, टिडी.

भूग (स) यगिपागुर ।

भूग (स) (स) बडेडावण ।

भूग (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

म (स) म (स) म (स) म

भूतिशब्द (स) भूतिशब्द ।

भूग (स) यगिपा, गुर

राग ।

भूग (स) यगिपा, गुर

भूमि भूमि (स, द) धरती, गेठ,

पृथ्वी, धानमाच, मिडा,

पृथ्वी । [भूतिशब्द ।

भूग (स) यगिपा, गुर

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमि यगिपा (स) यगिपा

भूमिपुत्र (स) ब्राह्मण ।
 भूमिसह-भूमोसह (म.ट) भुंरेंस
 भूम्यामनाजी (स) भुंरेंचयरा ।
 भूयः (स) बारम्बार, पुनः फेर ।
 भूयोभूयः (स) पुनः पुनः और
 और फेर फेर ।

भूर (म) विस्तार, दान, द-
 क्षिणा, पहाड़ ।

भूरि. भूरी. (म, द) चाफाग,
 विस्तार, कच्छ, चक्षु,
 दहृत । अनंतकाम—दो०
 चमिता नैक चक्षिं नरिम,
 चति अनंत भूचिष्ट । च-
 हन भूरि गामृत कर, प-
 प्तत विपक्ष बहिष्ट ॥ १ ॥

भूरिगाम. (म) बड़ागाम्य ।

भूरि. (स) सरहीसीज ।

भूर्ज. भूय. (द. म) काव, गो-
 कपचसह, भूर्यगाम—दो०
 एही चर्मी गृहत्वचा,
 भूर्य गदान पदित । देखी
 परी कहू मन प्रिया, कासु
 सिंगार दिखित ॥ १ ॥

भूर्यपत्र (म) गोलपत्र ।

भूर्जतव (स) भोजपत्रका हथ ।

भूनाविमरा } सु० भटकाह-
 भूनाभटका. } चा, रास्ता भू-

नाकर इधर उधर फिर-
 नेवाला ।

भूय (स) भक्तहार, श्रीमा ।

भूषण (स) चलंकार, श्रीमा,

गहना, जेवर । भूषण वा

दर्पणनाम—छंदचंदरीक ।

सोभित रमणीक कुंजफूले

तर समन पुंन लेता गंध

अरु गुंन मिपिन गहरी ।

सित सुगंध पयत मंद

सुधा वैग शकुन हृन्द चर-

गण युग पूर्णचंद्र मंद गर्व-

री ॥ मंद गिगर हिम वसंत

प्रोपग वरपा बंदत पट

चतु गुप छवि अनंत रास

निमिकरी ॥ ऐसी सखि

दनविहार समग समग

मन उदार कीर्तिसुता

हवि निहारि मोद मध्व-

री ॥ १ ॥ कुसुमनि भूषण

सगारि मंदन प्री सुसं-

किरि चमरस्य चो परिष्कार
 विरभि निग्न करो ।
 राधे के चंगधारि किन्हे
 मोहग सिंगार नय शिष्य
 को सब प्रकार रूप ना-
 गरी । देख्यो प्रतिबिम्ब सु-
 कर दृपण चादगं सुधर
 तिभुवन दुति छेपि निजर
 काहली धरो । चादगं दा-
 दग तिवार बसुवन पुति
 अंत धारि हरिविज्ञाण
 छंद सार निच चंचरी ॥२॥
 चादगं भयवनाम—छंद
 रोला । गीतसाज सोभाग
 मधुर बीननि तनु कोमल ।
 बेनीमैमं चंटाचमंद विहं
 मन वपु निर्मल ३ वति
 से प्रीति चमन्य यहुरि
 कोड़ा दंतो गति । यह
 चादग चाभरण छंदरोला
 बीबीम भत ॥ १ ॥ गहनी
 के नाम—चमचट, चंड-
 पा, चाड़ चारही, चतनी,
 चंगुडी, चमूटा चमूला,

कंगना, कचमी, चमर
 चस, कंटवा, कंटिया, क-
 टेगरी, कुंझ, कड़ा, कंडा,
 कंठी, कसपूस, काव,
 करधनी, कसकी, चविवा,
 गहना, सुटिया, चोचिया,
 गजरिया, गुंजरी, गुन-
 चरी, गुनचन्द, गोप, इल-
 चंवर, सुग्गी, चमूला,
 चमूला, चमूला, चमूला,
 चोटी, चूडी, चोकी, चक-
 दला, छंगनू, छाप, छक-
 दला, जवा, जुगनू, जूनी,
 जोगन, जहांगीरी, कंठ-
 पुष्प, भूमर, भासा, भू-
 गक, भाविया, भजना, भि-
 म्भिमिया, भुग्गी, इ-
 या, टीका, टीक,
 कडा, टरकोवा, ठोका,
 तैली, तिकरी, ताड़ा, त-
 तरिवन, (तपनी) त-
 तावीज, दोहरिया, दु-
 री, दस्तबन्द, धुङ्गरी,
 दुनी, नदिया, नदिया,

गोगगा: (नवरत्न) नूपुर.
 नेहरा, नादपत्नी, नक्ष-
 त्र, पायस, पाजिर, पोरि-
 या, पाग, पगवान, पैगमी,
 पटुपा, पटिशा, पटुचारी,
 पटुनी, पतामी, पता, पी
 परदत्ता, पैरी. पटा, पे-
 रलरी, पटुनी, परीक्षक,
 पुष्पदरी, बाजू, बरेली, ब-
 हुंटा, बांक, दाहुसा, दि-
 कादठ, दम्पी, विहिद, द-
 मर, दासा, दारी, (दासी)
 दिङ्गी, दही, दुगाक, दं-
 गुरी, दंघनी, भुजदम्पती,
 दनमाला, माना. नंदार-
 नाटा, नोती. नोरभंडर,
 नोतीकहा, नदली, संग
 टोका (टीका) संघ, (जंतर)
 राधाच, रावटी, रहु, रर
 क, रच्छा, रदंग, रिरदरां.
 (रुहा) गोगपूल, सुरग-
 नुषी, गोगसरी, गिररी,
 सहृ, रेली: सतलरी,

रेकल, रमीर, रंघनी,
 राधवान, दास ।

भूषित. (म) भूषणयुक्त, गोभा-
 वाजा, गोभित ।

भूषण. (द) ग्राह्य, गद्दीपुर ।
 भुवुटी. भुवुटि. (स) भौंड, भु,
 भुडकी ।

भुवुटीभंग. (स) भौंड का फेरगा
 भुग. (स) भुवुसा. भुग. ठांग,
 मुनि विमेष, भुलदार ।

भुगुरायम. भुगुदेव. (स- टो) एष
 तीर्थस्थान सो जिरा सा-
 लीपुर में श्रीर परगना द-
 त्रिदा ने है । ददरीगान
 भी भुगुदेव का है ।

भुगुभया. (म) बभनेठी ।

भुगुनाथ. भुगुपति. (स) परगु-
 राम विप्र । [भौरा ।

भृङ्ग. (स) भ र कीट, भृङ्गर,

भृङ्ग. (स) भध, तल भिदराज ।

भृङ्गरा. } (स) भिदराज ।
 भृङ्गराज. }

भृङ्गी. (स) भृङ्गारी कीट विमेष,
 भिष, दूत विमेष, नौरी,
 भरादेव का गद ।

मृति- (स) क्षमीर्ह, मज्जुरो, वेगन
भूय (म) दाम मेत्रक, चोकार,
चेला, छिद्रमतगार, मृथ-
गाम, टो० । विधिवरकिं-
कर दाम पुनि, पमुनर
अमुगम दत्त । मृथकिरत
लहं मैतवे, कवि यैरगी
गहिं जात ॥॥ [चेला ।

भ्रूया (स) दाभी, चाकरणी,
भ्रूयं (स) यारव्या, चधिन,
भ्रूयजध्वी. (स) भुराओइडा ।
भै-भयै. (स) भैवा, इपा ।
भिरै. (स) भीजा, तर, भयत,
हुपा, गीनी, भिगाया,
भैना, भिगीना ।

मि. (५) मिड, गैस, जूटाई, फूट
आजना तोड़ना, ममी.

भैरव (म) गैरुक्त भोग भोग,
 शृङ्गार, मित्रता, भोग, इति ।

मेटमेट (द प) मेट्रो, जाली,
नवमाला, मल्लिकार्जुन ।

ਮੈਂ (ਸੁ) ਮੈਂਡਾ ।

मिद (घ) नियमाव, अय, गुम
की बाग, ते, मे, मांर, तो.
इत्यादि देहाभिमान, मांरक

राजनीति विमेष, दुःखता
 भवत्, ऐश्वर्य, अभिषेक
 पर्व, मेजगद् मे देवो ।

भैरवदाया; (४) भैरवदाया ।

मैदनीनाः सु० द्वितीयां पुर्वीयं
 श्री गणेशाय नमः ।

गोदसदना, मु० हिपागे जीव
साय को सददेना ।

भेदखोना: मु. द्विपीनाह
सी पण्ट करना।

मिथुनवृत्तनामा. ग. अंगिरसोः

मेडियाधनान्. म० सद जाते

है कि जिस पोर एक सी
 जागो है, सब जगो। पोर
 जगो है इसलिये सब जग
 जादगी ये जग में शिरी है
 कोटे जगो है सब जग
 गदगद होला जाता है।

भिक्षु. (स) सदा नो, कोइने
५११।

ॐ नमः शिवाय विष्णवे ब्रह्मा

सुप्रयोगरत्ना, अर्थात्
गारा, अर्थात् सुप्रयोगरत्ना
यथा वाचा ।

- (प) भेद, गम, जूझाई, भोरा भोला (द) दीप, सुधा ।
 नर्म, फूट करणा, तोड़ना । भोरे (द) भूलवेगो, मातकात ।
 २-भेम (स) स्वरूप, चाल, भोरि भोरी-भोरी (प) भूली,
 होल, हवि, । [सौपध] बावरी, सीधी, भूलगा ।
 धन. (प) सौपध, द्वाई, भोरहोना, मु० विद्यान होना
 धन (द) सौपध । भोलागाय, मु० महादेव, शिर ।
 १. (प) भेया, दुषा । भोलाभासा, मु० सदा ।
 २-रय (प) भयानक, एष्टेव । भोली बातें, मु० सीधी बातें,
 ३-री (प) भिर, महादेव, रो बे रूपट बातें ।
 मन्वीधनवाचक । भौ. (प-द) भौति, भय, दण,
 भोग (स) सुख । [मर्दनगरी] चाम, भेया, दुषा ।
 भोगवती-भोगावती, भोगा (स) भौतिक (प) भूतलतलपात ।
 भोगन (स) पदम, पादन, सी- भोग (स) मङ्गलवार, पद
 मता, पाता, भोगन नाम— विविध, मंगलपद ।
 दीक्षा । पदम पदम भोगन- भोगलस (स) } इसीसी का
 पमल, मलन भोग पदार । भोगासः (स) } पानी ।
 २-द्वन्द्वन दित रो रसी म- भो पढ़ाना, मु० दुष्कादीना ।
 धुवर-ही दितनारि । १ । भोटेडाकरना, मु० लोरी
 भोगनसुविधि (स) बाटना, पढ़ाना । [द्वाना] ।
 धूमना, बीजावला, बीना । नीचे तातना, मु० लोरी प-
 भोगनखानी (द) रसीरे का म्मास (प) छाधन, दितन ।
 या घर । भंश. } (स) धस, नाग,
 सीम- (प) सुख, बदम । भम. }
 भोर (प) भूल, दूध, सुख, मात ।

ललाहरन ॥ गहन सधन
 गह गधत ललन संज्ञ का-
 रत रहन दारनटहर गग-
 धर ॥ लललनननन गल-
 लधन ललललरन लललत
 ललन ललन भलल लल-
 धर ॥ लललललल लल
 ललन ललन लल लललत
 ललन लल ललन ललन
 लल ॥ ललल ललल लल
 ललन ललल लल लललत
 ललल लल रललन लल
 लल ॥ ॥ ललल ॥ लललन
 ललल ललल लल, लललत
 लल ललल ॥ ललल
 लल लल लललली, लललत
 लललल लल ॥ ॥

भूट (म.) पतित, पधर्मी.
निषिद्ध, नष्ट ।

આગરીજીવ (સ) માધવી ।

भ्रामर (७) गहल ।

भ्रातृ (सं) गोमा, ससित ।

भ्रातृगन्धर्वाणां, } (ए-द)योनिता,
भ्रातृगन्धर्वाणां }
सहितान्, हीमना।

भारत (४). पड़ोस के भाई-

आता (उने वन्यु; भारे; दोटे
भारे को पनुज कहते हैं।

१. अनुज्ञास—दीक्षा । संग
 मभु रीद लघन्यता, मीय
 र्गनीय कतिष्ठ ॥ यदीयान-
 क्षति मायगं, भवरल अनु-
 ल यद्विष्ट ॥ १ ॥

मान्तः आस्ति (सः) भूय,
 चूक, जेम, पुता, भगप,
 पययार्थी ।

मिंशी (म) सुपेदकटसरैया ।

भुङ्कटी. (स) भौं, गदां :

भूधरसुता (भू. पृथ्वी धर, धृ
 धरनेवाला, सुता, पुत्री
 यथात् पारयती) स्तो.
 गिरिजा, द्विगगिरिसुता,
 प्रमाणं स्तोत्र । दामोद्री च
 विभाति भूधरसुता देवा-
 पगामस्तुते । भालेवान्न-
 विद्युर्गले च गरुडं यज्योर-
 सिद्ध्याक्षराट । स्तोत्रं भूति
 दिभूषणः सुरवरस्तर्वाधिपः
 सर्वदा । सर्वः सर्वगतः

मिश्र, यमिनिभः श्रीशिव-
 र वातुमा । यथीत् जित
 मकर मकाराज के सामीप
 में भूधरमुता यथीत् वा-
 बंती को विमेष माभाय-
 मान है और मस्तक में
 मङ्गा और ललाट में वा-
 लविष्णु यथीत् तयाजीद
 और मध्ये में विष्णु और
 नर न गय म है विभूति
 करिक भूयित और देवता
 में येन और सब के सामी
 और सबे यथीत् सर्व कव
 मग और सबगत यथीत्
 सब व भिन्न और मिश्र
 ज्ञानानन्द और चन्द्रमा
 व समान गितवर्ग यो म-
 क । मकर मको जना कहें ।

३५ म मीर, दीव, मङ्गदी ।

म

मकर मकर म म माता का
 म म म म म म म म म म

म म म म म म म म म म
 म म म म म म म म म म

मकर (म) मकर, माय, (म)
 मोभाया में के का म म
 जाता है ऐसे लोक, का
 माक, माय, यादि विवि
 विमेष, मोम, मकर का
 कस्तु, समुद्र, मृगयादि
 मकरादि, मकरादि, म
 यादि, मकर ।

मकरनादनी (म), कोमरी
 मकर की यादनी, मकर
 यादनी नाम — (म) ।
 तिग्राम पुनि कोमरी,
 मकरनादनी नाम । को
 की परति बदमरी, को
 र्दमि बनि जाना ।

मकराज (म) मातदेव, म
 मातपुत्रा । पुन मा देव

मकराज (म) सुपुत्र, म

मकरी, मकरी (म) को

मकरी (म) मकरी

मिश्र, पात्री का एव म

मङ्गदी, मकर म

लीला मिश्र के याद है

मङ्गदी, मकर म

सभा नी चप्पराखी देपि
को हंसे खारण की दुर्गि-
मा मुनि के ग्राप तें मकर
की ली मयी, इति पुनए
मसिह । मकरीनाम—दो०

घुषा सुता मकंटक, तं-
वाय तंहुवाय । उर्ष नाम
पुन लग यया, पद्मनाभ
मुननाय ॥ १ ॥ हजत
विजत हरि हरत पुनि,
जयनि पुनि संसार । पं-
जतल मय नीध सुत, वि-
रचत खारंवार ॥ २ ॥ पुनः
दो० । सुता सुता मकरट
करी, जर्म नामि पुनि होय
लनु रह मकरी पुन करी,
पकरी विद्या सोय ॥ ३ ॥

मकुट (स) सिहरा, मुकुट,
मीर, चिरीट, ताज ।

मकुट (स) पारसी, दर्रेद, मुं-
देखने का पारिजद, दर्रेद ।

मकुट (स) तागाकड़ी ।

मकुट (स) निरंजी ।

मख. (स) गध, याग, चप्पर ।

मंघमंग (स) यज्ञशामंगलोगा ।

मग मगु. (स) मगद देग, म-
गध, शोट, मार्ग, रस्ता ।

मसली-झागा सु. बिसोकी खु-

गामद या गुलामी करना

मंगली देना, सु० उधार देना ।

मसलीबूष, सु० कंजूस, रूम,
लपट ।

मसली मारना, सु० मुझ बैठा

रहना, बिहारबैठारहना ।

मगध (स) मगद, देगविजय ।

मगत. (स) पानन्द, प्रसन्न,
लवलील, हर्षित, ललबू-
ड़प, हूडा, खुश ।

मगर. (स) कुम्भीर, मगर
मच्छ, पाद ।

मम. (स) मुदित, प्रसन्न,
खरदूब, लय, लीन,
हृदयाना । [वासं ।

ममवा. ममवान्. (स) इन्द्र,

मम (स) ममर विदेव ।

ममहिं (स) ममाते दे ।

मंगलद्रव्य (स) दुष्पादि ।

मिवः मयिनिभः श्रीगुरु-
रः पातुमी । अर्थात् जिन
महुर महाराज के सामांन
में भूधरसुता अर्थात् पा-
वैती जो विजय गंगाभा-
मान है चोर मष्टक में
गङ्गा चोर कलाट में बा-
लविष्णु अर्थात् नयाचोट
चोर गने में विष चोर
चर ग मय सार्ई विभूति
करिके भूयिन चोर देवती
में येन चोर सब के व्यापी
चोर सब अर्थात् सर्व रूप
मय चोर सर्वमत अर्थात्
सब के भिव चोर मिव
कल्याणदय चोर चन्द्रमा
के समान गेनवने यो म-
हुर मवेदा मरी रजा करें ।
४५ (म) मीर, टीप, भट्टी ।

म

महुर मय (द म) माता का
चर, मेहर ।

मय मय 'दो कदा' मय र
— मय मय मय

महर (स) मगर, प्रायः, हि-
न्दोभाषा में ल का ग हो
जाता है जैसे बाक, बाग,
माक, साग, पादि । विवि
विजय, मोन, मगर अक-
कम्प, समुद्र, दमरादि,
दमरंरागि, मकली, मोर
पादि, मष्ट ।

मगरनादनी (द) मीरुनी
मगर की नादनी, मगर
नादनीनाम—दो । म-
तिग्राम पुनि मीरुनी, म-
करनादनी मार्ज । मीर
की परति बदलने, मीर
हंसि बनि जानें ।

मकरध्वज (स) कामदेव, म-
मानपुत्र । [फल का रस]

मकरन्द (म) पुष्पारस, पराग,
मकरी, ममरी । (प) मीर,
मकली ।

मिव, पानी का दल मीर
मवेटी, दल मीर म-
कीका मिव के बाक के
होते हैं । मय मय मय

समि मंघी नदन, मंघी
भाग प्रचंड । मंघी बहरी
राहु है, को हरि कर विष
मगड ६ १ ॥

मंदप. (द) मध्य, मिदाजी की
गुच्छाग पत्तनाग—टी.
दरम वेद देवद पण, रं
पद मंदप बाहु। तब पिय
नदहरि तग चिते, मुमु-
की कुंपरि तनाकु ॥ १ ॥

मंडसाधार. (स) गोलाधार,
कुण्डली ।

मण्डली. (स) मनुष्य, समा,
घोष, गुरीय । [राजा ।

मंडनिक } (स) मण्डलेसर
मण्डलीक }

मण्डुषपणी. (स) मीनपत्ता ।

मण्डुषपणी. (म) मजीठ, दरगो ।

मण्डुषा. (म) दरमी ।

मण्डूर. (स) सोहनिदान ।

मण्डित. (स) रुहित, भूषण,
मोहित ।

मण्डावर. (स) मण्डिका पानि ।

मंत. (म) मति, रीति, धर्म,
देहाद ।

मत्तग. (स) मत्तबारा चापी ।

मत्तग. (स) एक कपि का

नाम यथा ची. रिपि म.

तंग मदिमा गुग भापी ।

लोव परावर ररत सुखा-

री । पर्यात् कपि मत्तग

की चायोर्बाद् ने वहाँ के

जानेवाले को दुख नहीं

रहता, चापी, नातक,

इसी ।

मत्तग. [म] चापी ।

मता [म] एवदेश, विचार ।

मति [म] बुद्धि, सेवा, मनो-

या, ज्ञान, इच्छा, श्रुति ।

मतिवृत्ति [स] बुद्धि का ठहरना,

बुद्धि का ज्ञान ।

मतिवृत्ती [स] बुद्धि का बंदर

देना ।

मतेम. [म] मत्तबारा चापी ।

मत्त [म] मत्तक, मत्तवाला,

जननत, पनकी, पागल ।

मयानी. (द) छेदरि जिम ने दही

मदि है की निदानत है ।

मत्तशामिनी. [स] युवा स्त्री ।

मसमेटहीना, मु० नष्टहीना ।

मसरचना, मु० मरजागा ।

मसमारना, मु० सुपरचना ।

मसन्न (स.) घान, मोच ।

मसन्न (स.) धंवेत, चठोर,
गुमर ।

मस्यारि (स) बिसार, बिगा ।

मसिहा (स) मजीठ ।

मसोर मंजिर (स) बिहृपा,
वाद्मयय निशेय, पायजव
यादि ।

मसोरा (स) भांभ, मजीरा ।

मसु (स) लज्जत, मोती, सु
न्दर, मोभावमान, मनी
हर, मोमय ।

मसुव (स) मोमक, वैतमय सु
न्दर, मनीहर, सिद्धि ।

मसुमसि मसुमनि, (स) मस
मुन्ना, वाचराज ।

मसु (स) मोम, मोमिल, सु
न्दर, वाहिता, लज्जत, मोती ।

मसुव (स) पिटाही, लज्जत ।

मसुव (स) लज्जत ।

मसि मसो (स) हीरादि, मस

सर्पादि, सामान्य मस

दिर, गुतादि रत्न ।

मसिबन्ध (स) पटुचा, बाबली

मसिगय (स) समुद्र, सामर

मसिपा (स) मासा का दन्त

मसिहिडा (स) मोदा तद्भाष

में वैद्यक में सतावर ।

मसिगय (स) वैद्यानीत ।

मसिपारा (स) मसिगुन कर्म
विशेष ।

मसिपर (स) हीरामसि

मसो (स) कर्म मसिपारा

मसु (स) मोम, मोती
मोती । [मोती]

मसुव (स) मोतीरोटी, मो

मसुव (स) भूषण, मोती,
मसुव, मसुव ।

मसुव (स) पासाय, मोती
मोती, मोती, मोती ।

मसुव मसुव (स) मोती,
मसुव ।

मसो (स) मोती, मोती

संसि संधी मदन, संधी
गाम प्रचंड । संधी बहुरी
रोहरी, लो हरि हर विष
गुण्ड ६ १ ६

संदर्भ. (८) पद्य । विद्याकी लो
नुसखान पद्यनाम—दो.
एक वेद वेदद पद्य, रं
पद्य संदर्भ दाह्यातव पिय
सद्वरि तन दितै, सुसु
पी सुंदरि तनाह ॥ १ ॥

संदर्भादार. (स) गीताधार,
सुसुकी ।

नन्दरी. (स) समूह, सभा,
दोष, गुरीर । [राजा ।

संज्ञिक } (स) मण्डलेन्द्र
मण्डलीक }

मण्डूवर्षी. (स) सोनपत्ता ।

मण्डूवर्षी. (स) मण्डूठ, दरगो ।

मण्डूरा. (स) दरमी ।

मण्डूर. (स) लोहनिदान ।

मण्डिर. (स) लहित, भूषण,

मोहित ।

मण्डार (स) मण्डिका पानि ।

मण्ड. (स) मण्डि, रीति, धर्म.

मण्डार ।

मत्तगज. (स) मत्तगुरा दाघी ।

मत्तग. (स) एक कृषि का
नाम यथा लो. रिपि म.
तंग मद्रिमा गुन भारी ।

लोव चराचर रसत सुखा-

री । यथात् कृषि मत्तग

को यामोर्बाह के वडा के

खानेवाले को दुख नहीं

रहता, दाघी, नातङ्ग,

रहती ।

मत्तगज. [स] दाघी ।

मत्ता [स] पदमेम. विचार ।

मति [स] बुद्धि, सेवा, मनो-

या, ज्ञान, दृष्टा, कृति ।

मतिवृत्ति. [स] बुद्धि का ठहरना,

बुद्धि का नाग ।

मतिचंदी. [स] बुद्धि का चंदकर

देना ।

मतेम. [स] मत्तवरा दाघी ।

मत्ता [स] मत्त, मत्तवादा,

मत्तमत्त, मत्तली, मत्तवादा.

मत्तानी (८) लोहरि निष के दूरी

मत्ति. [स] लोहरि निषमते

मत्तशशिनी. [स] युता लो

मत्स्य. [स] मीन, मछली ।

मत्सर. (स) ईर्ष्या, चीड़, डाढ़,
हैथ, ललन, डोह, खाह,
परऐखयँ का न सहना,
पराई संपत्ति की देखकर
ललना, क्रोध, क्षपण. डाह
खाना, न सहना मत्स्य
रता—हृद तारक ॥ हरि
गोविन प्रीति प्रतीति-
भुजानी । करि खेदि
दरी कुबला पटरानी ॥
तजि हंसिनि हंस पकी
मन मानी । सगन चतुर
गुरु रीत बखानी ॥१॥

मत्स्य [स] मीन, मछली,
मच्छ, मत्स्यापतार —
दोहा । गंध मारि छै वेद
धरि, भक्त बधु नास प-
नीस । मत्स्यो सब विधि
दुखलना, उजाला बसु
बीस ॥१॥ मीन नाम—
हृद उजाला । तिमि तिमि
पति मीनज मकर भय
पहरिना चउनीनया ।

यै नारिण बिलिखि म
गरा सरसर दंड पा
नयो ॥ राजीव माकु
छो गहक शकुल मिष
नल मीनयो । यादो ।
मारि रोहित सफरि
तय चल्यो मीनयो ॥

मत्स्याघ्न [स] मझुषा, मीन
तक । [अलपीपर

मत्स्यगन्धा. (स) होहवेर, मछी
मत्स्यगर्भ. [स] मछली का घंटा
मत्स्यनिघ्न. [स] चीलहक
मत्स्यपिप्ता. [स] कुटो ।

मत्स्याण्ड. [स] मछली का घंटा
मत्स्यगर्भ. [स] मझुषा । [हो
मत्स्यादनी. [स] अलपीपर, न
मत्स्याचो. (स) मझुषा
मछली । [मझुषा

मयित. (स) मझुषा हक
मद. (स) मदिरा, मराह, मुरा
पंचवार, पणिमान, निम
वा पट प्रकार ॥८॥ मति
मद, कुहमद, कपमद,

नद. धननद, विद्या-

द, ध्याननद, ज्ञाननद ।

(स) मगरा ।

नद. (स) इयं का घर ।

(स) कामदेव, दत्त, मै-

नफर, काम, सुरा, धतूरा ।

नारी. (द) मन्त्रदेव ।

नद. नद. गङ्गा. (स) शिव

नारी ।

नद. (न) देवी, शायी ।

नद. नदी. (स) नद. के मतवाली ।

नद. नदी. (स) नदीका ।

नद. नदी. (स) पवित्रान प-

दित ।

नदी. (स) दाऊ, बिरौता,

नद, मराठ ।

नदी. (स) रावट की स्त्री ।

नदी. (स) नदी, तदभाव

न नदी ।

नदी. (स) नदी ।

नदी. (स) नागुर नदी ।

नदी. (स) सुरा, नदीरा,

नदी. (स) मराठ ।

नदी. (स) सुग्री, नदीविद्या ।

नदी. (स) देवनाग, नदीरा,

मद, नम, नल, पय, सुधा,

राष्ट्र, पुष्कर, वसन्त

नदी, दुम, नदीपुष्क. ना-

नदीपुष्कनाम ली स्त्री के

संग में रती पर मधु उभो

नाता पुष्कसित है पर

कानदेव पुरुष भग न व-

सित है । कथा वेदकथा ।

नदीमधुसूत परिग्रहति

हृदय नास्तीदय हरम् ।

प्रसाद इति श्रीभागवत् ५

स्तम् । श्रीर नद, मक-

रंद, नदी नदी एव तैल

का नाम । प्रसूत का नाम

ही. । नीम सुधा वीर्य

नधु, प्रगट राग सुनीत ।

प्रसूत नदी कादर कथा,

नदी रजत सब लीग ॥ ४

पुनः रजता श्रीर प्रसूत

नाम दी. रजत रजता

नदी हरि, प्रसूत प्रसूत

वीर्य । सुधा पनी सुर

भाग नधु, दया नदी नदी

दूध । १ । पुनः पनी नदी

मै दी० । मधु यचंत मधु
चैव द्रुम, मधु मदिरा म-
करद । मधु कर मधु पय
मधु सुधा, मधु सुदन गो-
विन्द ॥ १ ॥ नाममात्रा मै

दी० । माधव मधु द्रुम मधु
अर्वा, मधुहोव, गुहफल ।

एज मधुक के फल मलि,
कहु तुप गहुनी तूख ॥ १ ॥

मधुक (स) जेठोमध ।

मधुकपूष्य (स) गहुपा ।

मधुककटो (स) मधुकाशरी ।

मधुकर (स) भौरकोट, अमर,

भौरा, मधुमयिका, अम-

रनाम—दी० । मधुकर

अमर द्विरक्ष प्रसि, यहर

धिसीमुख भृत् । चंजरीख

रोलंव पति, कीला से मा-

रंग ॥ १ ॥ मधुपम मधुवृत्

मधुरसिद्ध, मधु वाचन व-

गपोर । अमर बिना के-

तकी न कहु, वेतति बिना

मधुकरो, (स) दू

पतिघो को

मधुकत (स) मधुनाली

मधुकैटभ (स) समो राच

मिप, निमिषरमेदी

मधुकीप (स) गहुद का

मधुगंधवा (स) मोसवरी

मधुखदा (स)

मधुच्छिष्ट (स) मोस

मधुचीर (स)

मधुदुत (स) रवाचव

मधुच (स) दू

महिना (स) ममाव

मधुद्रुम (स) मधुवाच

मधुदूत (स) पाम

मधुदूती (स) पाच

मधुधातु (स)

मधुप (स) अमरकोटी

भौर, भौरा

मधुपक (स) मधु,

यह, तिषय, एव

काग के पार

को महुवा

के विधि

पाइन सोगीं सो मान
सनीमान कान मो दाद
पाप पुनदाय के पुष्पे म
धुदकेचित्ताद पयात् पात
गनाज्ञ देत है या पयित
देग की रीति है ।

सधुपकिटिका (म) नील ।
सधुपकिटिका (म) सुदमीन ।
सधुपकिटिका (म) गकार ।
सधुपकिटिका (म) दहा रसीलासक
सधुपकिटिका (स) गदुपा ।
सधुपकिटिका (स) भगर, भंवर ।
सधुपकिटिका (म) गदिरा, सुरा,
गय [रीक ।
सधुपकिटिका (म) भगर कीट, रंवर
सधुपकिटिका (स) सोनागजो,
गजो का सहत ।
सधुपकिटिका (म) नीठारक, धीप, च-
न्दर, खाद, गिररक ।
सधुपकिटिका (स) नीठा मन्द ।
सधुपकिटिका (म) गदुकिटिका ।
सधुपकिटिका (स) जीवक सदागद
की विहाईलद ।
सधुपकिटिका (स) दाददुपारा,

गकार, धुरपहार ।
सधुपकिटिका (म) भगर, पति ।
सधुपकिटिका (स) सौक ।
सधुपकिटिका (म) सोपासाग ।
सधुपकिटिका (म) सीठी, रसीली,
सदावनी ।
सधुपकिटिका (स) कदही
सधुपकिटिका (म) गदुपा ।
सधुपकिटिका (म) गधु का यकर
... सीनी की दाननी ।
सधुपकिटिका (म) मुंनगा ।
सधुपकिटिका (स) गोम । हय ।
सधुपकिटिका (म) गदुपा
सधुपकिटिका (स) पुनहार ।
सधुपकिटिका (स) गदुपा ।
सधुपकिटिका (म) गोम ।
सधुपकिटिका (स) लीदनी ।
सधुपकिटिका { (स) गदुपा ।
सधुपकिटिका { (स) गदुपा ।
सधुपकिटिका (म) भगर, रादक-
नायक, विष्ट ।
सधुपकिटिका (स) दादा सधुपकिटिका
या मातक ।
सधुपकिटिका (स) धुरपहार ।

मधुली. [स] सुपिंट गौड़गं ।

मध्य [सं] मांभ, बीच, में, प
मत्तार, बीचकै, पत्तवर्ती ।

मध्यगति. [स] उदासीन ।

मध्यदिवस [स] दोपहरदिन ।

मध्यम. (स) उदासीन, बिचवैत ।

मध्यस्थ. [स] साची, बीचमान,

बीचवाता, मध्यस्थायी,

बीच का, सासिच ।

मध्याह्न [स] मध्यकाश, द्विप-

हरदिन, दुपहर ।

मध्याह्निक. [स] दुपहरिया ।

मध्याधार. [स] मोल ।

मधवालुङ्ग. (स) गकरकंद ।

मन [स] चित्त, हृदय, आत्मा,

आत्माशब्द—दीक्षा । मन

बुद्धि चित्त सुभाव तन, धर्म

जीव पदंकार । इन को

कहिये आत्मा, परमात्मा-

मा आधार ॥१॥ विभिन्न

ज्ञात अंतःकरण, मन

आत्मा कह्ये । अग्रचित्त

मानस हृदय, हृत आकृत

सचेत ॥ २ ॥

मनन, मनोज्ञात } [स] काम

मनसिद्धि. } [स] काम

मनन. (स) परामर्श, चमत्कार

स्मरण, विचार ।

मनस. (स) आनेन्द्रियविशेष

मन, दिक्ष ।

मनजस. (स) मानस, विचार

मनमय. [स] कामदेव, पद्म,

मदन, मनोज्ञात । [स] काम

मनमाया. (प) मनमोहा, मन

मनशिका. (स) मयनमिल ।

मनसिद्धि (द) कामदेव, पद्म ।

मनसारी. (द) उदास ।

मनसहिं. (द) मन में ।

मनसा. (स) हृत्सा, मन ।

मनाक् मनाग् (स) बारम्बार,

अल्प, थोडा सा । चो. ।

तद्वि मनाक मनहिं तवि

पीरा । अर्थात् मनाक

किंचित नहीं है मन में

पीरा । [सो ।

मनागवि. (स) अल्पमी, थोडा

मनाग् (स) अल्प, मृत्त, थोडा ।

नदिः (स) सपं हे मिः न की

की नदि, मिरीनदि ।

नतिपारा (द) नदिपुत ।

नतीपा (म) नेश, सुधी, दुहि

दकुष ।

ननु (स) सायम्बादी चौदह,

कृति, तीस करीर सतसठ

साष्ट पाठ सवस्र वषं की

राष्टं वरै. सायंभूमनु १

एकन २ सारोविष ३

तानस ४ रिक्त ५ सा-

यम् ६ सायंटेव ७ सायदि

दद्वःदि ८ सल्लाबा-

दि १० धर्मसायदि ११

इदमायदि १० देवता-

यदि ११ इदमायदिननु

१४ सादी १५ ननु नी

सायंभू पादि चारि ननु

सादि वं प्रविष्ट मुसुद वै

विमले दह सदि भार की

भयभान वं मानकी पुत

वै १ प्रोच । सायंभूयदेव

दुरो वंकीवं विस्तराष्ट्रः

दक्षिण द्वादशार्थ ननु-

नत्यानुवदस्रः ११ सा-

रोविषो द्वितीयस्तु ननु-

रन्नेः सुतामयत् । सुमस्तु

येवरोविषात् प्रमुखास्तु-

सात्मनः १२। अतीय ३ तमी

गान मिदप्रतं सुतो ननुः ।

एवमः एकयोयः ३। सा

वास्तासुताद्वः १३। अस्तुयं

एतम भूता, ननुर्गंगा व

तानसः । सुदुस्यातिनरः

केतुरित्याद्याः दय तक्रताः

१४। इति श्रीभागवत च-

एन सन्ने प्रमाद्य ।

सायंभूमनु १ सारोविष २

एतमननु ३ तानसनु ४

दी० । सायंभू एतम सा,

रोविषु तानस ज्ञान । ए

सारो ननु पादि वै, सा-

नरत वरै प्रमाद्य ११ ।

मनरातः (स) वदास, एवसा,

एवसा ।

मनरात (द) मनराता, श्री० ।

एव विवेक वर वैदं वि-

धाता । नर तदि दीप

गुणहिं मनराताः अयं—

गुण में मनराता यथात्
मीति करे।

मनुज. मनुष्य. (स) मानुष्य.

गर, मानव, मर्त्य, मनुष्य

मात्र, पुत्रपत्नी, मानव,

ईमान, पादमी नरनाम।

दाहा — मानुष परमपवित्र

वपु, मानुष मनुष्य प्रमाण।

नर जनि जागहु जंदसुत.

इति ईश्वर भगवाने ॥ १ ॥

मानुषवाचक शब्द की प्राप्ति

परि वाचक, शब्द रूपने

में दनुज वाचक का बोध

होता है।

मनुजाद. (स) राजस, दैत्य।

मनुजाद। (द) मनुजादु, जो०।

सविपात जल्पसि दुर्वादा।

अयंमि कालवस सठ मनु-

जाद। यथात् हे मनुज

के पानेवाले तैं सविपात

में कालवस हीकर दुपेचम

कहता है। [नीरविषय।

मनुजाद। (स) निगिचर मनु (स) मनेचर बाट, मंद

मनुषोई (द) पुत्रपत्नी।

मनोज्ञ (स) कामदेव, मा

मनोभव (स) सिद्ध, प्रती

काम। [धिर, मनोहर

मनोघ्न (स) सुन्दर, सुकृप, १

मनोगुप्त (स) मनुषी केतारी

मनोद्वंसा (स) मयनमिवा।

मनोमव मनोभूत (स) च

मनमय, कामदेव।

मनोरथ (स) इच्छा, कामना

कामना, मनप्रमिवावा

मनोरम (स) सुन्दर, सुकृ

मनरमित।

मनोसर्व (स) मन की पूर्ण

मनोहर (स) सुखाना, सुन्दर

मनोरम, मनोघ्न, धिर

मन्य (स) उपदेय, सहा

मार ताएच यदि मंद

उपदेय। [मंद]

मन्यराज (स) राम ताएच,

मंथिन् (स) मंथी, पोसाक,

मनोर (स) [फेकदी की]

मन्य (स) नाम चरी राव

मय—दोहा १ मंद कनी-
 पर मंद चुन, सेंद पसुप
 मय मंद । मंद मूढ नर
 से मयत, सेन भोजहि मंद
 मंद १ १ १ 'खन' दलप.
 पय नुज. रज, नीम, धोर
 पानती रोती, मूर्ख, हीन
 भाव्य, मित्रिज, पपेस्त
 धीरे, पमागी, मूढ ।
 मन्दतर (म) पतिनीय. पति
 धीर. पति मूढ ।
 मन्दर (स) ग्रैव, मिदि, पर्वत.
 मन्दराज, पर्वत ।
 मन्ददधि (मि) पषणमाटनी ।
 मन्दावनी (न) स्वर्गावस्था.
 मन्दा की ।
 मन्दार (म) हेमन्त कृष्. चर.
 तर. मुपेद पक्षवग ।
 मन्दिर (स) नगर, गृह, समुद्र
 मन्दास (स) राजा, इया,
 मीदा ।
 मन्दा (म) पमड, कामदेव,
 मंद इरिपद । मीरकेतु

संदर्प नमोभाव नक्षत्र
 मगमिग नार । पंचपाग
 कुमुमेपु पगन्यन मकर.
 भुवज संवरारि । सेन म-
 तीग पतंग पर हयवन्ध.
 धनु भी कात दपेक पी
 प्रहस्य पालभू रतिपति
 दास्य नाम ॥ दो. ।
 इन नामग पर रिपु धरे,
 नाम उनापति जान ।
 सप्त सतास्य मगि चरन
 हरिपट लद वधान । १
 मनु. (स) तासक, पमर्ष,
 लोध ।
 मत्त (म) मसता. मीता ।
 ममद्वीही (द) मेरा निंदक
 मगता (न) मोद, चेद, मे
 साया, दर्प, पक्षर.
 मत्त ।
 ममतृष (स) ममता, स
 मन्त्री. (स) पक्षीन भय
 पय मदी. मुप्य
 मय (स) प्रधान,
 विमेष, मिला,

गुणहिं मन्त्राताः चर्ये—

गुण मं मन्त्राता चर्यात्
मीति करे ।

मनुज. मनुष्य. (म) मानुष्य.

गर, मानव, मर्त्य, मनुष्य

मात्र. पुरुष स्त्री, मानव,

इमान, पादमी । नरनाम ।

दीहा — मानुष परम पवित्र

वपु, मानक मनुष्य प्रमाण ।

नर जनि जागह नदसुत

वृरि ईश्वर भगवान् ३ १ ॥

• मनुजवाचक शब्द से भागे

चरि वाचक, शब्द रखने

में दन्त वाचक का बोध

धीना है ।

मनुजाड (म) राजम, दैत्य ।

मनुजादः १) मनुजादः, नो० ।

मन्त्रपात कल्पमि दुर्बिदा ।

भयमि कालवस यठ मनु

जादः । यथागुं मनुज

क धानवाने ते मन्त्रिपात

क कालवस जाकर दुवेयन

कहना है । (१) विमय

मनुजादः २) मनुजादः मन्त्र (म)

मनुभारे (दि) पुनपांरय ।

मनोज्ञः (म) कामदेव, मन-
मनोभवः । चित्र, चर्चते,

कामः । [धिर, मनोहर]

मनोज्ञः (म) सुन्दर, पुरुष, व

मनोगुप्तः (म) मनुष्य, वेताही

मनोवृद्धः (म) मयनमिष्टा ।

मनोभवः मनोभूतः (म) प्रवृ

भवमय, कामदेव ।

मनोरथः [म] इच्छा, वासना,

कामना, मनपमिष्टावः ।

मनोरमः (म) सुन्दर, वन्द्य,

मनरमित ।

मनोस्त्वः (म) मन की सुखी ।

मनोहरः (म) सुखार्ता, सुन्द

मनोरम, मनोज्ञ, वरि

मन्त्र (म) सुन्दर, मन्त्र

सार तः [म] यदि मन्त्र

सुपदेयः । [मन्त्र]

मन्त्रराजः (म) राजा तारक

मन्त्रिन् (म) मन्त्री, पामाजी,

मन्त्रोरः । [मन्त्रिन्]

मन्त्रः (म) नाम केरी रुद्र

मन्त्र (म) मन्त्रेयः वरि, मन्त्र

सुनिविशेष, दानवविशेष ।
 यारीगर मन्दिष, रूप,
 -वारज, बहुत, प्रचुर, म-
 धान, चसूर विशेष, दैत्य ।

मयङ्क (स) गगो, चन्द्रमा,
 स्थान, चन्द्र-नाम । चन्द्र-
 मन्तरन । चन्द्रमा सुगन्ध
 पदु चंभुन राकेग इदु कति
 मान् कुमुदबंधु विधू सर्व-
 चीग दे । हिमकर चो
 शुभांगु रमा यधु चो हि-
 सोगु तारापति चो सुभांगु
 गगो यामिनीग दे ।
 ककामिधी सुधा चरः गग
 पर कर्वाकरः कलावष्ट
 निगाकरः हरि चोयधीम
 दे । दिनराज चो विभास
 चो गवाक्ष सीमरासि भा-
 र्ज सा चरिषिमास सर्व
 नाम तीग दे । टी० ।
 मा. ए. इ. क. ति. म. य. न. म. ह.
 म. म. ह. व. म. वि. न. म. ।

चन्द्र मन्तरन नाम
 - ककामिधी सुधा चरः
 चक्र-नामन पररात्र
 निश-नामनि
 चन्द्र, पूर, नाम, होय
 चन्द्र, १. १. ४
 च. पूर्व मो. सोत. च.
 - भा. १. गारिपराहु
 यतम, सिद्धयेयसर
 १. १. ४. मयु
 बुन,
 तप्य मम मी हरि
 तारी चमितास

मयङ्कवादिता (व)
 मयङ्कमयः [स]
 मयङ्कता [स]
 चरति मन्दीदरी
 मयङ्को [स] मिष्टताई
 मयङ्कानवः [स] दैत्य
 विशिष्ट ली कर्वा
 केरि के. र. र. १. ४.
 चै रा. ल. च. म. य.
 मयङ्क [स]

वसुधाय- (स) मेवार सरई ।

वसु- (स) निर्धनश्रेय, सुदृष्ट, ससर ।

वसु- (स) शायु, पद्म, ४८० संख्या ।

वसु- (स) देवप्रिय ।

वसुधाय- (स) नयनपथ, नवधा ।

वसुधाय- (स) वंद्य, वंद्य, श्री । वसुधाय नयन- भयं-

कर देही । देखत हृदय

मोघ भा तेही ॥ वसुधाय- वं-

दर वंदन सुख भयंकर देह-

उत्थापन देह ।

वसुधाय- वसुधाय- (स) वानर, वन्द्य,

वसुधाय, चारु पथी ।

वसुधाय- (स) वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वानर ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय

वसुधाय, वसुधाय, वसुधाय, व-

वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय, वसुधाय

वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय, वसुधाय,

वसुधाय, वसुधाय, वसुधाय, वसुधाय

वसुधाय, वसुधाय, वसुधाय, वसुधाय

वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

वसुधाय- (स) वसुधाय, वसुधाय ।

महसुभाष (स) गेवार सुरई ।
 मह (स) निर्लक्ष्मि, सुखमस,
 लसुर ।
 महत् (स) गाय, पवन, ४८ संख्या ।
 मह (स) देगविमेष ।
 महसुभाष (स) महनसुभाष, महसा ।
 महकटवदन (स) दंडवदन,
 श्री । महकटवदन मह-
 कर देही । देखत सुदय
 लोभ भा तेही ॥ महकट वं-
 दर वदन सुष महकर देही
 उरावन देह ।
 महकट-महकट (स) बानर, बन्दर,
 मकड़ी, सारस पक्षी ।
 महकटिल्लुख (स) महकटेंदु ।
 महकटान्न (स) पानदा ।
 महकटी (स) बन्दरी, महकरी
 कौट, कमाध, पारा, क-
 नाछ, विरविरी ।
 मह्य (स) मूग, बूडा ।
 मह्यारि (स) विद्या, विदार ।
 मह्य मह्य (स) मातृप, नर,
 मनुष्य, बल्लुखीक ।
 मह्य (स) नागकरके ।

महि [ट] महकरके ।
 महन (स) महन, रमज, दहन,
 नाय, नागज, पीसना, घ-
 यैष, सुखन, देपय, विभना
 महना ।
 महना [०] महकना, रमजना ।
 महि [०] महकै, रमजकै ।
 महिमहि [०] रमज रमजकै ।
 मह्य (स) मह्य, श्री, सुदय
 कठोर, प्रात, सनाचार,
 कोक, गूडा, पक्षी ।
 मह्य मह्य (स) प्रात, मा-
 रय, मदी, पतुर ।
 मह्य मह्य (स) मह्य,
 नाय, सीमा, पत, पवधि,
 मह । [४६२]
 मह्य (स) मह्य, पाय, विद्या,
 मह्य (स) पक्षी विमेष ।
 महय महयज, (स) श्रीकंड,
 मह्य मह्य, महयगिर,
 मह्य, सुपेद मह्यन ।
 महय (स) कौठा, बल्लुख ।
 महय महय, (स) मह्य,
 मह्य, महयक, मह्य ।

मस-मास, (स) यादु योडा,
 बलवान्, बीर, दुष्ट, दहल
 बाग, ममोली के राज्य-
 लुल की पदवी ।

मसोभा (द) मसोभगग है गय ।

मसिका (स) भसेली-पुष्प,

मसिका ।

मसिकापुष्प (र) कोरेया ।

मसाध (प) मरुष, आगध,
 पाछा ।

मग मगध, (स) मगध, मीग,

विचार, मांछा, लुटकी,

जांस मगधर । . . .

मग (म) मरुष, विचार, स-

मात । [अपड़ा ।

मगहरी (स) मगधर तिवारक

मगान (प) मगधट, मुहंछटी,

मृत्तु ।

मग (स) मृप, मगधरा, सेमा,

मीन, मिरता, साम्भ ।

मगधर (द) मगधरी [मगधर]

मगध (स) मगधरा, मगधरी,

मगधर (द) मगधर विचार

मसि (स) मियाही, री

मसि (स) कण्ठ, छात्रो

मसुर (द) मसुरी घघ ।

मसुरविदला (द) पनिर

मसुर (स) बांस ।

मसुरी (स) मन्पासी ।

मसुरी (प) बीर, राग ।

मसादा (स) देवदार ।

मसु (स) दही का पानी ।

मसुका (स) मिर, भाषा

पाछ ।

मसुधारी (स) देवरिभू

मसु (स) मृष्ट, दहल, म

साग, मदान, चतन

मसुति (द) मसुती, बड़ी ।

मसुति (स) लुपीमर, म्या

परमपि ।

मसु (स) रक्षापन, सेडा

मसु (स) मृष्ट, दहल, म

धारी, मीठा

मसुति (स) मसुति (स) मसुति

मसु (स) मसुति (स) मसुति

मसु (स) मसुति (स) मसुति

महर्षी (२) कुरगियों की पदवी
 है, कुरगियों के लक्ष्य पर
 मेह है यथा—पञ्चप्रिया,
 पञ्चनाभतः, पीङ्गवर्णा,
 सरस्वती, शोषवर्णा, पुन-
 र्जिता, समस्यार, जेव्यार,
 चण्डीया ।

महा (३) येठ, उत्तम, बड़ा,
 निपट, गट ।

महाकुमारी (४) देवतीकुल ।

महाकुमुदिता (५) मन्त्रार ।

महाक्षीमातकी (६) जेनुषी ।

महाक्षीमून (७) बह गोंधना ।

महाक्ष्म (८) फलेदा कामुग ।

महाप्राप्ति (९) खेवटा ।

महानोय (१०) गुलुग ।

महापादा (११) मागवन्द ।

महापद्मा (१२) बड़ा पद्माङ्ग,
 फलेना कामुग, जेनुषी ।

महापाप (१३) बीडा, असाक्ष ।

महापुत्र (१४) देवाय भूग ।

महामुक्तिता (१५) बड़ी
 मुक्ति ।

महादुःख (१६) बड़े दुःख ।

महामुनिप्राणी (१७) वसिष्ठ,
 वामदेव, जाषाति, गौ-
 तम आदि । श्री । पाए
 सचमुच महामुनि प्राणी ।
 पर्यान् सब पाए ऊपर
 लिखित मुनि ।

महागद (१८) बड़ा रोग ।

महाग्रन् (१९) येठजन, वेद
 माक्ष्य में जिसकी यज्ञ हो,
 बनिया ।

महाजन् (२०) महाज्जा, महा-
 गय, जिसका उत्तम स-
 भाष हो ।

महान-महानु, (२१) येठता,
 बिष्णु, बड़ा, महत्त्व ।

महागद (२२) नद विशेष भा-
 गर, समुद्र ।

महानिमि- (२३) पड़राति ।

महापद्म-महापद्म, (२४) निधि
 विशेष, समुद्र ।

महावत (२५) हाथीवाग, मन्त्र-
 प्रेरक, महावतनाम, दी ।

महामन्त्र मन्त्र निधन करि,
 पुनि संवट निपाद । नेता

यन्तावस्थपी, इति इति

यस्य यस्माद् ॥ १३ ॥

महापुरुषः (स) साधु, सत्त्वः ।

महापुरुषः (स) समस्त सृष्टि

का भागः ।

महापुरुषः महापुरुषः (द) सत्त्वविशेषः ।

संयुक्ता नाम—दीर्घा ।

पेदी माध्वी मधुसूतः मधुः ।

मानवस्य मधुसूतः । मधुसूतः

गुरुः पुण्यतः, प्रियः किल

महः भूतः ॥ १४ ॥

महावाक्यपुरुषः दुः (स) तस्य

मविमानवेद, अयमात्मा

अप्रतिपद्येद, आनन्दस्य

प्रोतिपद्येद, सौष्टमात्मा

प्रोतिपद्येद ॥ ४ ॥

महापुरुषः (स) निवारमुद्रः ।

महापुरुषः (स) यत्नात्मुद्रः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः,

महापुरुषः तदभावे स-

तावत् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) नामदमनः ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) पौरः ।

महापुरुषः (स) सत्त्वः ।

महापुरुषः (स) देवीपतिः ।

महापुरुषः (स) साधुभावे ।

महापुरुषः (स) मधुसूतः ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

कृत्वा ।

महापुरुषः (स) गौरीपतिः ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

महापुरुषः (स) यत्नात् ।

ते स्त्रीगण को नख रंगित
होत है, साँची, साँच का
रंग ।

महासिद्धि. (स) कल्याण, गत ।

महाद्धि. [स] ज्ञेयनाग, पक्षीय ।

महि. [स] पृथ्वी, कोन । कोन

द्रोण मय्य - दोहा । कोन

मही पर कोन दिव, गृ-

ह अंतर कवि कोन । द्रोण

काक पर द्रोण गिर, कर

कवि वारिज द्रोण ॥ १ ॥

महिपाठे. [द] पृथ्वी में गिरा

दिया । [घस ।

महिषेय. [स] महिषासुर रा-

महिभार. [स] पृथ्वी का भार ।

महिबाध. [स] संग्रह, मङ्गलवार ।

महिमा. [स] नामसिद्धि, प्रा-

प्ताम, बढ़ाई, प्रभाव ।

महिमा. [स] स्त्री, नारी, मेहरी

वाराहनी अर्थात् पृथ्वी ।

महिपाल-महीपाल. [स] राधा ।

महिदेव. [स] ब्राह्मण ।

महिष. [स] भैंसा, धर्म, यम,

दैत्य विषेय, भैंस महिषासुर ।

महिषासुर. [स] दैत्यसंप्रा, रा-

घस विषेय ।

महिषी. [स] भैंसी, धर्मरात्री,

राजपत्नी, पटरानी ।

महिषेय. महिषेय. (स) परणा

भैंसा, यमराज, यमवाहन,

महिषासुर का ईश, महि-

षासुर । चौ. । तेज क्षया-

तु रोष महिषेया । अघ

अवगुण धन धनिक धनेया ।

अर्थात् अग्नि का सा है

जिन का तेज दित घोर

अनहित के उलाने में घोर

महिषेय अर्थात् यम का

सा है रोष पाप घोर अव-

गुण के धन के धनी कुबेर

के सम है । [पढ़ा ।

महिषवेज. [द] पृथ्वी में गिरा

महिषावृद्ध. (स) प्रियङ्गु ।

महिषमल्ल. (स) साधधान ।

महिषाच. (स) गुल्मुच ।

मही. (स) पृथ्वी, धरती, छाछ,

भूमि, गी, जमीन, गाय, रसा

मय्य - दोहा । इसा मही

यः तिव इति, इति उमा
 अभिराम । इति सत्यति
 यः मने, जो जाने अभि-
 रामः ॥ ५ ॥ मन्त्र — ॥ ५ ॥

इहा चाहि नम देवता,
इहा भूमि चमिराम । इहा
चंद्रिका, सात 'मी. प्रीति
देव चमिराम ॥ २ ॥ एथी
का नम कंचुलीता—वय

૧. ૧ જાન્યુઆરી ૨૦૨૦
 સુધી જાહેરમાં મુદત પાસે
 મુદત મુદતો પુરતી જાહેરમાં

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

१. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 २. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 ३. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 ४. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 ५. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 ६. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 ७. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 ८. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 ९. श्री गुरुदेव की आज्ञा से
 १०. श्री गुरुदेव की आज्ञा से

दोहा । पुनि भू
 भद भद, होच यिम
 योच । कंदमुगीत
 कवि, कवि
 बीम । ११

महीतल (५)
महीदेव (६) माझक,
महीवर (७) माझक
पणत, पणत

महीप, महीपति,
(७) राजा, सुव,
पथी पात्र.

महीरज (न) धुलि
महीरज (स) धुलि
महीरज (ध) धुलि
महीरज (न) धुलि
महीरज (स) धुलि

१. १००० (१) १०००
 २. १००० (२) १०००
 ३. १००० (३) १०००
 ४. १००० (४) १०००
 ५. १००० (५) १०००
 ६. १००० (६) १०००
 ७. १००० (७) १०००
 ८. १००० (८) १०००
 ९. १००० (९) १०००
 १०. १००० (१०) १०००

सत्त्व, महोच्छी ।

महोदधि- (स) गद्दीविशेष,
विनास उदधि ।

महोदधि- [स] सप्तसुत, सौंठ ।

महोदधि- [स] गद्दीकी वरंभी ।

महोदधि- [स] निगिपर बीर
विशेष । [शेष ।

महोदधि-महोदधि- [स] पक्षी वि-

महोदधि- [स] सुम्मे, हम की ।

महोदधि- [स] मांघी, मांघी ।

महोदधि- [स] एक राजा का नाम

जिस के नाम पर बगारम
में मानमंदिर है ।

महोदधि- [स] सप्ती, श्री, निवेद
बापक, नहीं ।

महोदधि- (म) सुम्मे की, माता । माता

नाम—दी० पंथा सावित्री

प्रभु, जननी माता मान ।

जननी राधा कुंपरि की,

बेठी जंगल धान १ १ १

महोदधि- (द) पावस का प्रथम

प्रथम जिसने नक्षत्री बहुत

प्रदित होती है ।

मांघा- (म) संगत जनसमूह,
बंग के प्रथम करनेवाला ।

मांघा- (प) खिरगया, ख्यात भौ ।

मांघा- (द) माता, माया करने

वाली । बी० विविध भांति

होइहि पहुनाई । प्रिय न

काहि पस सापुर मांघा ॥

मांघा है मांघा वा माया क-

रने वासा सापुर । बी० ।

तब तब बदल पैठिहीं

पाई । सत्य नहीं मोहि

मान दे मांघा ॥ मांघा के

ग्रन्थ में माया उत्पन्न कराने

का प्रयोजन है सत्य के

साथ में प्रलयवर्त्युत महा-

बीर का है ।

मांघा- [द] लोहित कुण्ड ।

मांघा- (प) माता ।

मांघा- (द) लोथ, सौंदा, सप-

टाई, भज्जा, सगाना ।

मांघा (द) दी० पंथा यथा । बी० ।

देखिउं पाद ओ कहुं कपि

मांघा । तुम्हरे सांग न

रोप न मांघा ॥ प्रधान

अपि द्रुमान्भी जी कछु
माया तुम्हारा स्वभाव कहा
सी सब में पाइ पपने नेवी
सी देखा कि न तुम्हारे
साज हैं न रोप न मोधी
स्वभाव है न माखी चपमा-
नादि कारखो पाइ तुम्हारे
मन में ईर्ष्या नहीं पावत ।

माखी (प) माखी ।

माखी (स) किसियाना ।

मागध (स) मगध देय विजय ।

भाट, बंगची मगध करन
वाला ।

मागधी (स) एक भाषा, पुष्प

सुही जगु पीपल, पीपर ।

मागन (स) मगध जन, सिधारी ।

मागमा (स) मागधी जन जगु ।

माह (द) बनोड़ी, अपटाई

बचन, बगाने अपरने,

इर्ष्या, मोक्ष ।

माया (द) मय, घाट, पल्लव ।

माखी (न) प्रविष्ट, फेन कहा,

घाट ।

माया (प) नवीन बचने जगु

का फेन, दावे पाप

मर जात है । मोक्ष

सजस तग घरघर ब

मागधि पाइ भीत

मापी । चर्चातु पा

पांशु भरि पाए, मो

करि के घरघर को

मागी माजा पाव

झरो माती नवीन

के जल परने बचुं

मागा एक रोग हो

वा बेहूत पादि हारे

में जी फेन उत्पन्न हो

ताकी माजा कात

माखी (स) राद, पीर, पू

माखी (द) चयन हाइ ।

माखी (प) नवीन बच

का फेन ।

मागध दोबीच, मय राशि

मागध (स) मय का म

साज, मामाज जग

मागधो क कुगधु ज

साज माखी जग

मागधो की विरह

मातङ्गः (स) बाघी, मुनिविशेष ।

मातङ्गकरना, मु० बाजो जीतना ।

मापाठनकता, सु० किसी काम के बिगाड़ने का हाथ पड़ने से मालूम हो जाना ।

माया रमड़ना, मु० बहुत गरीबी से प्रायः करना, या देवता, पयवा राधा से गरीबी के साथ मांगना, बहुत निश्चय करना ।

मायेपरबड़ना, मु० धन्याय करना, लूट करना, मजा को बहुत दुख देना, सताना ।

मातरिखा. (स) वायु, पान ।

मातलि. (स) गाने रन्ने का सारथी । [को.]

मातहि. (द) मतबारा वा माता

मातसिद्धत. (स) पुरन्दर, रन्द्र ।

मातुच. (स) मानो, रन्द्र का सारथी, धनूरा ।

माव. (स) माता ।

मातुमेग. (स) विभीषा सेवू ।

मादनी. (स) भाग ।

माधीक. (स) संहत ।

मात. (स) परिमाण, पन्दाज, सखस, पवधारप, पस्य, यही भर, उतनाही ।

माभा. (स) गुण, लेश, स्वर ।

मास्त. (स) ईर्ष्या वाच, ईर्ष्यक, ईषी, डाही ।

मास्त्य. (स) डाह, ईर्ष्या, जलन, मास्त्यनाना. दो० वासन्ती पुष्पांक सोह, सुकृत सता पुनि नाच । इत माधविषा परत तन, नेकु बितै बलि जात ॥ १ ॥

माधम. (स) वैशाखमास, विष्णु, मधुसूत, श्रीकृष्णचन्द्र जी का एक नाम ।

माधविका-माधवी. (स) मधुरी लता, बराहीकन्द, खांड ।

माधुरी. माधुर्य. (स) मीठी, सुन्दर, सुन्दरता, मिठास मिठासबचन को समृद्ध सब जानना । [को.]

माध्वी. (स) मदिरा, सुरामद्वे

मान- (पञ्च) नाम मर्यादा, पत,
 चमक, वाहित, मातृ,
 तोर, पञ्चवार, चमत्मान ।
 मान नाम दो० पञ्चवार
 मङ्गल्यं पुनि, मङ्गं समे
 समिमान । मान राधिका
 कुम्भदि को, पञ्च को पञ्च
 कल्पानि ३३३ पुनः केन
 चन्द्रवर्मा । अन्धपति
 देखी वाहितने । पति
 तेन प्रताप समीत मने ।
 दुर्धित पति तथ उद्दीपत
 है । ओषोड उद्दीपनपति है ।
 मान पञ्चवार नहिंन है,
 मङ्ग के म नोच मङ्ग पञ्च
 है । पञ्च शीघ्र, सुमानम
 सुपेदका, अङ्ग चन्द्रवर्मा
 नववर्मा अङ्ग ३३३ पुनः
 कु० पञ्च वरमा नम चाप
 कुञ्ज मरिचकनि मङ्ग
 मङ्ग । पञ्चवार पतिमान,
 अङ्ग ३३३ मङ्गल्यं पतिमान

मङ्गल्यं पतिमान मङ्गल्यं मङ्गल्यं

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

मानकः (४) मानकः

बाहुरहिंसा पर बिना
रा ससखा बाहरवाची वा
पूदी एह हिंसा स्यात
हे, मध्य मास संघा ने हंस
रहत हे, पर माची संघा
मोहंसनी सदा दिवाराति
रहती हे, मास संघा नाभि
हंसनी कबहु नही लाती
हे, राबिबास हंस ने
पपने स्यात ते हंसनी के
स्यात माची संघा मो
पायत हे ।

नप्रद(स) मानके देनेवाला ।

नागसिक्क.(स) मनहारा विमेश,
नन सम्बंधी ।

नायता (स) पूज्यता, योग्यता ।

नासिक्क. (द) लवाहीर, लास ।

नाप-नाप (द) परिमाण,

नाप, पूर्य, व्याप्त, व्यापा,

मापना, व्यापना । धी० ।

तलजत विपन मोह नन

माया । मोहा मनह मोन

कहुं व्यापा पदात् नापा

दहे व्याप मोहा मदा

वरपा के लस के जेन
कहत हे ।

नापी. (द) मतवाची, थोड़ा
मानभिरघय(स) मो को र
करह ।

नाया. (स) लस, दाया, जरा

नेह, मोहनी, जानना,

विगुपमक्ति, कपट, पविद्या,

धी० । जिह के कपट दंग

नहिं माया । तिह के प्र-

दय बसहु रघुराया पवति

इहां माया का नान पवि-

या सेना दी० नाया खस

नायादि सह, याया नेह

कहत । माया मोहनसाध

की, जिन मोहि सब सत० ।

पुनः दी० नाया दया जरा

धना, धनु ऊपन धनु कोस

कदना करि कदना निजे,

दिमा करहि तनिरासुर०

मायावी. (स) लसी, कपटी,

प्रकारक, माया जानने

वाला ।

मायावति. (स) ईश्वर, नासिक,

मायाकरनेवाला रोमचंद्र ।	मारगिराणा सु० पक्षा
मायाकपी (स) रायस, पसुर ।	पटवदेना ।
मायिक (स) मिषा, भूठ,	मारकाचमा सु० जीनिवा
ऐन्द्रनाचिक, छे हो, माया	प्रापसेना, श्रीवेना ।
करनेवाला, मायासम्यंभी ।	मारदेना सु० मारना, वि
मार (स. क) विप्र, विप,	मारपकुना सु० विटना,
बामदेव, पतिपसृत, सय्य,	पाना । [रना, पी
नाग, मारना, मारमय्य—	मारपीटा सु० मारकुटा,
को० । मार विघन विप	मारमारना सु० धाई वत
मार पुनि, मार कहावे	रना, पालवना वत
बाम । मारि पसृत भू ते	कफारे मी बेरी को वत
पसृत, सुन्दर निरधर	मारना । [छे
नाम ३३३	मारलेना सु० मारना, को
मारना (व) माफे, वाट । मा-	मारकाणा सु० मूठकाणा
मैमाय—छंदमाओ विप	मारवटाना सु० जोतरे
टिरत मी प्रभुमदगदवयना ।	मारन पीर निवाकरी
पहवाट करिच पदवीमूल	मारमय्य मारमन (क)
पदना इ वम मागे वम	पालवना, तालव, वा
अधुना पी अवर । यह	तार, वतना ।
माको अद वला उम पमु	मारव माचर । व
पर ३३३	विजय भुवना वनाकरी
मारकुटाई सु० मारना को	मै मारना वतना ३३३
कुवचना, मारना	वतना
मारकाणा मारना सु०	
विटना	

नारात्मक (म) हिंस्रक, घात-
क, वधिक, ऊच्यपीत ।

नारायणना-सु० नारायणना ।

नारानाराकिरना-सु० मट्ठिता

किरना, डोंशाहीसकिरना,

इधरउधरकिरना ।

नारानारी-सु० पापस न मार

पीट, धीसधया, घातनुद्धी ।

मारित् (म) नसी दीनी ।

मारीच- (स) पु० नामराचस

राचप-का नाना (सु

मरना, वा मारना) एव

राचस का नान, श्री तार-

का राचसी का पेठा पीर

राचप का नौकर या निघ

की श्री रामचंद्र ने मारा,

दैत्य विमेष, ऊँची ।

मादत-मादति- (म) वायु,

मनीर, अनुमान, पवनपुत्र

पवन, जवा, भीमवेन ।

माद- (स) रागविमेष ।

मादतसुत-मादति- (सद) नडा-

धीर, श्री अनुमान श्री,

भीमवेन ।

मारी (पच्य) से, खारप, नि-

मित, जैसे गरमी से मारी

प्याकुल होगी ।

मार्द्धि- (म) खिचता ।

मार्द्धि- (म) भेगराज ।

मार्ग- मार्ग- (स) पय, सहक,

बाट, रास्ता । मार्गनाम-

दी० । वर्म चध्या मार्ग

पय, संघर पदह विहार ।

नम देखत तो पदं गदं,

नौकन नंदकुमार ॥ १ ॥

मार्ग- (स) पु० तोमर, बाप ।

मार्गगीप- मार्ग- (स) पग-

गिर- मार्गगीप- } अनुनास,

संघसर, संगधिर । नम-

गिरा एव नमप का नाम,

इस महीने तो पूरा चांद

इस नचत के पास रहता

ऐ पीर इस महीने की

पूर्वनामी के दिन यह

नमप होता है ।

मार्जित- (स) परित्कारकरप, पुः

हिकरप, भारपा, मोहारना ।

मात्रीर-मात्रीर- (स) विचाड़,

विष्ठा, मानु, विष्ठाप, विष्ठी।

मार्जिर (द) वनविस्तार।

मार्जिगंधिका (स) वनसंग।

मार्जिष्ठ (स) दिनकर, सूर्य।

मार्प (द) मर्वा दोनी।

मार्ज (स) समूह, वीरजन,

मज्ञ, मार्जा, कुम्भीवाज, शार।

मार्जव (स) देग सजल, मार्ज-

वादेग। [ध्यवसादो।

मार्जाकार (स) मार्जी, पुष्प-

मार्जा (स) समूह, शार पुष्पा-

दिक, पोयी, पंगति, पंक्ति,

मार्जा, शार, मार्जानाम-

सो०। सीता गमन मराज,

शर में स्त्रुग वीगण वती।

दाम शार स्रुगमाज, राम

कंठ मेंसी हरषि २१३ दो०।

मार्जा यक स्त्रुग गुण पति

हि, पर्जन नामको दाम।

नी नर यह कंठहि रखै,

मंदर के लवि धाम। २४

मार्जिका (स) मार्जा, शार।

मार्ज (स) वीरजन। [द।

मार्ज (स) समूह, शार पुष्पा-

मार्जव (स) नाममंडो

के पिता या मा

मार्जा या पिता

रावपु का नाम।

मार्ज (स) वीरजन

माप (द) स) क्रोध

वेष्टा पय।

मापी (व)

मासा (स) मास,

मास. मास (स)

चक, या भाषाय शार

वाचक। १२।

माह. अय (स) महल

मास (स) मास,

मास नाम दोहा।

पेयि चामिप

पक्षपक्ष मास।

भचदया

निवेत विष्ठा।

मासरस (स) मास

मासरीणि

मास विष्ठा (स)

भनूप एह दो

मास है। [

मासगु टक (स)

माहन्-मानक. (म) मान का
हंद ।

माविष्ठा- (म) माहवा ।

माविष्ठा- (म) मानिक रत्न ।

माविष्ठा- (म) देव्या गौत ।

माविष्ठा- (म) माना का
सहजा, धन, आकृत ।

माविष्ठा- (म) मान ।

माविष्ठा- (म) माने की ।

माविष्ठा- (म) आकृत ।

माविष्ठा- (म) पीर साय ।

माविष्ठा- (म) मान, मध्य, म ।

माविष्ठा- () माविष्ठापुर ।

माविष्ठा- (प) तीता रस, गरल,
विष, अहर ।

माविष्ठा- (म) माविष्ठाता ।

माविष्ठा- (म) माविष्ठापुर ।

माविष्ठा- (म) दत्त ।

माविष्ठा- (म) देव का कृत ।

माविष्ठा- (म) हरीद ।

माविष्ठा- (म) वन हरीद ।

माविष्ठा- (म) हरीद की बीड़ी ।

माविष्ठा- (म) हरीद की बरी ।

माविष्ठा- (म) माविष्ठा ।

माविष्ठा- (म) बी ।

माविष्ठा- माघी- (म) गहत ।

माविष्ठा- (म) नदीद, हिताय,

त. तीव्र सावरी, हद,

नाप, अंत घोड़ाया ।

माविष्ठा- (म) माघ, सुपे, हित,

सापा, दोस्त, पति, मित्र,

म. न-दी हावन विपरत

हनुमन्त मिच्छी, मंटे पुत्रध

दीपा हरि संभाषन पुनि,

धले. जेहि मिरपर सुदीय ॥

देवत हट वसत सुहृद.

म. पणोद संवंध । मित्र

साधा सुपेय कह, खीन

साध सह संवंध ॥ २ ॥

साध नारिकर लपकथा,

मैल बसे रघुवर । पुनि

सुकठ मद सा'न मनु,

धनुष पठायो तीर ॥ ३ ॥

हनुद मित्र वसत कथा.

मैल बसे रघुवर । पुनि

सुकठ मद सा'न मनु,

धनुष पठायो तीर ॥ ३ ॥

हनुद मित्र वसत कथा.

मैल बसे रघुवर । पुनि

सुकठ मद सा'न मनु,

धनुष पठायो तीर ॥ ३ ॥

मुंह देख कर बात करना मुं.
खुशामद करना, ऐसी बात
करना जो सुननेवाले का
मन भाये ।

मुंहदेखना मुं. नष्ट खाटना,
सहायता मांगना, किसी
का बहुत पाटल ममान
करना, घबराना, या बेच
होना ।

मुंह का फूड़ मुं. बुरी बात
बोखनेवाला, बद्'जबान,
निन्दक । [पतादर, बुरा ।

मुंहकाशा मुं. कलंक, अपमान,
मुंहकाशा करना मुं. कलंक
खाना, दाग खाना,
बाद'जबान' करना, सभा'देना ।

मुंह के कोड़े चढ़ाने मुं. उदास
दिखाने देना, व्याकुल
दिखाने देना ।

मुंहखाचना मुं. गा'बी'देना,
निन्दा करना ।

मुंहचटाना, मुं. हिंस्रमिम
जाना मर'जाना मान'ना
करना मर'जाना ।

मुंहचूना, मुं. खाटना, या काटा
खाटना, जेबे धोना ।

मुंहचोर, मुं. गरमी'का, सप्री'का,
ह'पोकना ।

मुंहचोरी, मुं. काज, गरम ।
मुंहमांगा, मुं. जेसा चाहा वैसा
ही, जेसा मुंह में भागा
वैसा ही ।

मुंहमारना, मुं. चुपकरना,
जीभपकड़ना, मुंह बन्द
करना, काटना ।

मुंह में पानी पाना या भर हुं
किसी चीज को बहुत चा
हना, किसी चीज के बिने
मन बहुत ललचाना ।

मुंहमोड़ना, मुं. फिर जान
खजाना, किसी काम के
करने में रुक जाना ।

मुंहलगाना, मुं. मिरिच खादि
चर'रो'ची'क'से मुंह लगाना,
या चरपराना, हिंसा
जाना, मुसा'ब
पका दीस होना ।

मुंहलगाना, मुं. छोटे

१. 'सिद्धि' शब्दना, दित्तना,
२. 'मिच्छा', बुद्धादिव्ययाना
३. 'सिद्धि' शब्दना, दित्तना,

मुंबई तेथे राहणाऱ्या, मुंबईमध्ये
मै घुमवीजनाऱ्याः

मैंने उसे मुझसे इनामुं नाची
देना, बिछारना, स्निह्यता
मुझसे (ज) दियी।

सुसंस्कृतः (च) विरीट, नकुट,
पङ्कतोच्चः योय वा सुसंस्कृत

नाम—श्री ॥ नमः
नृवी मिर्मि मि, पत्तनाग
ज्योतिष

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।
 पुनः, पुनः, पुनः ।
 गोमय । ॥ १ ॥

नाम । [वृत्तं, मोती ।
 जता, नुदा. (दृ.प) दिनाः
 (य) दिनाः, अनेक

सर्वो नियोजित, साक्षी

... (b) ...

१. गोदावरी (१) गोदावरी
 २. गोदावरी (२) गोदावरी
 ३. गोदावरी (३) गोदावरी
 ४. गोदावरी (४) गोदावरी
 ५. गोदावरी (५) गोदावरी
 ६. गोदावरी (६) गोदावरी
 ७. गोदावरी (७) गोदावरी
 ८. गोदावरी (८) गोदावरी
 ९. गोदावरी (९) गोदावरी
 १०. गोदावरी (१०) गोदावरी

५५५ (ब) पारसी, दयंप।
 ५५६ (ब) कंठिका, दयंप।
 ५५७ (ब) कंठिका, दयंप।

मु. (न) शाही कल्याण गो,
प्र. मो. व. ल. पानंदित,
हुटाइपा।

सुनिश्चयः (५) सुनिश्चयः श्री . ।
यदि किं सुनिश्चयः सुनिश्चयः

सुकृत्वाः पर्याप्तं सुकृत्
इष्टिने कथा जन विपत्ति

दिया ।
तबता (स) गधुरी बजा ।

१. सुखासुखी (स) सीसी ।
 २. सुखदूषक (स) पेपाम ।
 ३. सुखमिद (स) गारंगी ।

दुःखं (न) नृप ।
दुःखं (न) नृप ।
दुःखं (न) नृप ।

सद्व. } (च) नीती, नवि.

नोती नाम—दे. १ नसि
नोती नोती दुखी, दुख

शंख, शक पक्षी, बहूत
बोसना ।

सुषरतरः (स) ताद वाजा,
शंख । [छात ।

मुषागरः (स) बुधगो, मु
मुषः (स) प्रवान, मुशिया,
पडिला ।

मुदपटकः (स) मुंग का बारा ।
मुदपटीः (स) मुंगवरी ।

मुषकुन्दः (स) मुषकुन्द फूल ।
मुषः मुषातकः (स) सरको ।

मुदः (स) मुद, कपार । शी०
कोटिग रुंड मुद विमु

होसहिं । सीस पर मदि
कय कय बोसहिं । विना

गिर के रुंड होइते ई पीर
छनके कटेहुए रुंड जीतो

ओतो बोसते हैं ।
मुषो. (स) छोटी मुंडली.

विना सिंध का हरिन ।
मुन्डीतिहा (स) छोटी मुंडली ।

मुषा (स) मूख, पचानी, सुन्दर
मुद । [सुन्दरी ।

मुषा (स) कन्या, कुमारी,

मुषा. (स) निष्कली, मिथ्या ।

मुठिमे. मुठिमेरी. मुठिमेरो. मु०
मुठिभिराध. समुष, गभीर

से छात, मुटजाना, मिषट
से ।

मुठिका. (३) मुळ ।
मुठिमेहि, मु० सान्गनाहोगा,

मिषजाना ।
मुग्गे बाधना, मुग्गे चढाना मु०

बाय पीठपोछे बाधना,
लकड़ना ।

मुष्पीति. मुद. मुदा (स) इधे,
पानेद, पछाद ।

मुद्रा (स) प्रत्यपकारको, मुषर,
टाप, विश, इलाचर,

रपया ।
मुद्रित. (स) इपित, निहाल,

बागेदित, मुग्ग । -
मुद्रिर (स) नेष, बादस ।

मुद्रिका (स) मुन्दरी, पंगुठी ।
मुद्रित (स) संज्ञित, विद्रित ।

मुद्रिता (स) प्रसयता, शी० ।
मुद्रिता नमपद प्रीति

अनाया । अर्थात् समयता ।
 चोर मेरे पद मे कपट
 रहित मोति ।

सुधा (स) तिष्ठ, भूत भूता ।
 मुनि म चट प तपस्वी सत
 सदा, पिर विन, रामादि
 रहित जन ।

मुनिना (स) मुनिरुत्थ ।
 मुनिपट (म) धनकन के कप
 डा, वाहन का कपडा,
 वस्त्रकनदि ।

मुनिपुष्प (व) समस्त फूल ।
 मुनि भूषण (व) गुणकी कम-
 लाय म. ता. द ।

मुनिनागत (स) तुम्हादि ।
 मुनिपुष्प (द) समस्त पुष्प ।
 मुनिद्रुम (म) समस्त कन ।
 मुनिनागत (म) विद्रुम
 मुनिपुष्प (म) दान ।

मुनिना (द) वसित की,
 मुनिना (म) वाटे

मुनिपट (म) मुनिपट तट

मुनिपट (म) मुनिपट म

मुनीचोर (स) भोच मय ।

मुनीन्द्र (व) मुनीन्द्र, रिम ।

मुनीम (स) मुनिप्रधान, सति-

मुन्दा मुन्दी (स) कड़ा, चंगुली

मसापी ।

मुन्दिचा (व) चंगुली, मसापी ।

मुमुक्षु (म) मुमुक्षु की इच्छा, वाचा ।

मुर (म) मूलवन, रासम ताम

भौसेना मुर का दूत, पुरा

नमुर का बासी कृषीपति

मुरमदन, मुरारि (म) विद्रु

मुरा (म) पहाड़ी ।

मुर (प) मुर, विद्रु ।

मुता (स) मसाके कद निर्मेत ।

मुगल (म) मुगल घन कुडरे

का चपल, लाली, बदल

वाचपल, लीक लक मारे

का, मुर विद्रु, मार पल

मुगली (व) मकमल, मुरारि

पिटा की के वचन वचन

माम की । रोहितेव दक

भद्र वचि, कंचन कचि

धम । मोहावर (व) मो

रुप, मूयनपानिक राम
 ॥ १ ॥ पप्र रंयुष नदी पुप
 करे, कत देडी मिय सेत ।
 हरि हसपर है बीर की
 जीत बड़ाई देत ॥ १ ॥

मूय (१) बाह, मुया ।

मय (२) पूषा, मूय ।

मय (३) कठपंजर ।

मि, मुष्टि, मुष्टिका- (४)

मुदी, मुठी मुखा, मुडी ।

मिह (५) मुखा ।

मि (६) गोधा ।

मि (७) ।

मि (८) देवती मीमा ।

मि (९) (१०) ।

मि (११) देवी, पहर की पी-

मि (१२) (१३) देवमय, दो

देवमय, (१४) देवमय ।

मि (१५) (१६) देवी देवी, वा

मि (१७) (१८) देवी, देवी, वा

मि (१९) (२०) देवी, देवी, वा

मि (२१) (२२) देवी, देवी, वा

मि (२३) (२४) देवी, देवी, वा

मि (२५) (२६) देवी, देवी, वा

॥ २ ॥ प्रानमूय ॥ ४ ॥

मूय (५) मूय, मूय, पप्रानी,

पप्र, मयक । मूयनाम—

मूय बागद ॥ मूय मूय

मूय पप्र मूय मुष्टि मूय

॥ ॥ मूय मूय मूय मूय

मूय मूय मूय मूय

मूय मूय मूय मूय

मूय मूय मूय मूय

मूय मूय मूय मूय

मूय मूय मूय मूय

मूय (१५) देवमय ।

मूय (१६) देवमय ।

मूय (१७) देवमय, मय ।

मूय (१८) (१९) देवमय, मय ।

मूय (२०) (२१) देवमय, मय ।

मूय (२२) (२३) देवमय, मय ।

मूय (२४) (२५) देवमय, मय ।

मूय (२६) (२७) देवमय, मय ।

मूय (२८) (२९) देवमय, मय ।

मूय (३०) (३१) देवमय, मय ।

मूय (३२) (३३) देवमय, मय ।

मूय (३४) (३५) देवमय, मय ।

मूय (३६) (३७) देवमय, मय ।

मूय (३८) (३९) देवमय, मय ।

मूय (४०) (४१) देवमय, मय ।

मूय (४२) (४३) देवमय, मय ।

मूय (४४) (४५) देवमय, मय ।

२१ मराकाति २२ सुन्दर

२३ पञ्च २४ तथा २५००

पतामुद्रा चतुर्विंशति प्रद-

मितं जाये ।

मूरि (म) बूटो, लङ्गो, सन्नी-

वन् बूटो, सन्नीवन् लङ्गो,

मूल, लङ्गो, वा चामामूल ।

मूर्तिनाधार वरमना, सु-वपुन

जोड मे मेह वरमना ।

मूर्ति (म) विजयद्वीग, चानहीन,

चनः द्रव्योष्ण, चनवपदेग

योष्य, मूर्त्युद्धर्य भंगनत,

चनः सुद विद्यादिन

मूर्तिनाम २५०० मूर्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

चनवपदेग मूर्ति मूर्ति मूर्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान

मूर्ति. (म) गिर, माया, भूटो ।

मूर्ति (म) चान्ति, मूर्ति, चान्ति,

चान्ति, चान्ति, चान्ति, चान्ति,

चान्ति ।

मूर्ति (म) मूर्ति, मूर्ति, मूर्ति ।

चान्ति मूर्ति के दमन चान्ति

मूर्ति मूर्ति । चान्ति चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति । चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति चान्ति चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति ।

मूर्ति (म) मूर्ति, माय, निडा

चान्ति मूर्ति, चान्ति ।

मूर्ति, मूर्ति (म) मूर्ति, मूर्ति,

मूर्ति मूर्ति, चान्ति (मूर्ति)

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति, चान्ति

हमने हरिना : हरमी प
 यन बनाय हरि वात पय
 भुवनना : पन कुरंग
 बिलोखि प्रभु धाये धनु
 धरिजे : इति दममुच
 कीता हरी कष्ट नेय हरि
 के : : : दया साग कीजेय
 खा नंदन यह पाता :
 सारनेय कुडर परीयति
 पतिततडाका : प्रान किं
 हरि भाग विम हुरत से
 पटादी : तेरहदम बसुद
 दह मोहनोदहादी : २ :
 सखी की पनवाहट कुरंग
 मान—दी० : ऐन हरिम
 वातप प्रपद, हरि सा-
 रंग सो पाय । हमनिच
 केने दैगची, चली घोर
 पनवाहट : १ :

हमनामी. हमनद-(१) कनूरी
 हमनद, हमनदया (२) धूप
 में प्रभु धांति, हमनदया,
 नरीबिका, निर्द्वंद्व देय मे
 रतकी नमह पर सुदकी

दिरपी ने जसास हमने
 की प्रचको धन-हीना
 पीर कत न निषना ।

हमनति-(स) सिंह, हमनप,
 हमनेट्ट ।

हमनद-(स) कनक की डांडी ।
 हमनत-(स) कनूरी, मुगंधवनु ।
 हमनाया-(न) हमनद, हमनदुखे ।

हमना-(स) पाखेट, पहेर,

मिथार, व्याधकर्म । मगट
 की कि छोटी पीर यड़ी
 बिड़ियों के पनेक मथारों
 में जिन जिन मथार की
 जिन २ बिड़ियों की प्रायः
 सोम मिथार कर के खाते
 हैं कम से १०० बिड़ियों
 के नाम बहुत खोज के पीर
 इस देम के मिथारियों ने
 पूछ कर हममः लिखे
 साते हैं । प्रानमा चाहिये
 कि यद्यपि इन नामों में
 बहुत फंतर पाया जाता
 है पीर प्रायः खाते में भी

२१ महाकांत २२ मुन्दर
२३ मन्त्र २४ तथा २५
एतामुद्रा चतुर्विंशति प्रद-
मितं जायते ।

मूर्ति (स) बूटी, जड़ी, सभी-
विषय बूटी, सभीवन जड़ी,
मूल, जड़ी, वा जगामूल ।

मूर्तिधार वरसना, सु-चकृत
जीव से मेरे वरसना ।

मूर्ति (स) पित्र्यहीन, ज्ञानहीन,
अनार्योद्य, अनार्यदेश-
योग्य, अन्यद्वय बंगवत्,
अनाडी, मूढ, विद्यारहित
मूर्तिनाम—दी० । मुख्य
मूढ अड मूर्ति नर, अथ
अथर्व वेद मंठा मूर्ति जन
आने कहा, मनि जैसे कपि
कठ १२० । [मुद्रा ।

मूर्तिप्रीति का (स) नैराभी

मूर्ति (स) मुख्यचक्र बाजा ।

मूर्ति (स) बाजा, अक्षय, पतिमा.

पुतली देह, दृष्टता तम

बीर । [मूर्तिमान्

मूर्तिमान् । (स) नाकारवत्,

मूर्ति. (स) गिर, लाया, भू

मूर्ति (स) मोहि, मूर्ति
अर, अथ, लुप्त, पंजी,
कारण ।

मूर्ति (स) मूर्ति, मूर्ति, मूर्ति
मूर्ति जिन के दृष्ट
अथ फूट । अथ
मूर्ति अथ दृष्ट । अथ
जिन के दृष्ट, कारण ।
फूट मये है ।

मूर्ति (स) मोहि, भाव, नि-
वर कीमत, वतन ।

मूर्ति, मूर्ति (स) मूर्ति, मूर्ति
मूर्ति, मूर्ति, मूर्ति [प्रा
मूर्ति बाजा (स) मूर्ति, मूर्ति
मूर्ति (स) मूर्ति, मूर्ति, मूर्ति
मूर्ति (स) मूर्ति, मूर्ति, मूर्ति
मूर्ति ।

मूर्ति, मूर्ति (स) मूर्ति, मूर्ति
मूर्ति मूर्ति, पतिमा,
मूर्ति, पति । मूर्ति नाम
नाम—मूर्तिमूर्ति । मूर्ति
विवध मूर्ति मूर्ति

(कटा, पलका, धरेय हरियक
 रिन); पंडुय धवर, पंडुय
 रूदक, पंडुय कोदिया, (तीत-
 पा), पंडुय इटकोड़िया
 (मरीती), कोयपंडुकी, बभ्रुवर,
 (भ्रुव), गिरधवाभ, भूजीट,
 निराभी, नुषी, भूया, शोच-
 पोटा, सुभे, साच, नकस,
 बरा, समूय, जोड़हा, काचनी)
 मगई, तिधगीर, सोनइई, महुत
 छोटी, मनीरी, (मनीरा), विमंछई,
 निगदेवी, सोना बाज, पोवा,
 पंडुय, नीरा, दुया, मोठइयो ।
 विदित होखि यंयपि यज यज
 बिड़ना दधदेय को नहीं है ।
 इन मे पायो मे पयिक समधीर
 बा पूर्य वा पन्थान्य देनी और प-
 हाडी को से पररिती, बिधी
 केतु मे कोई लोही कोई बहुत सर-
 दय देय मे ताची मीची नदियों
 की लो दिवारी और यनी
 कागी और लोही पादि मे
 निधती है । यदापि यज नी
 उधय है इस से भी प्रविष्ट

इन के प्रकार नों किन्तु
 जितना सोच से मित्रा
 किन्तु दिया है और बहुत
 इन्हीं के नाम एते भी जाते
 है, वरन इन मे भी कोईर
 पनथ्य से और कोई र
 घोड़ी मिलती है वा किसी
 स्थान मे कोई और कोई
 विविध मिलती है, निदान
 यथ ताची नदियों और
 यनी पादि मे सब नहीं
 विधती । इन का विविध
 व्योस और रङ्ग का स्थान
 तथा इन के मिथार को
 प्रनेक रीति और मिलने
 का समय पादि मिथारी
 ही मनी मांति हागत है ।
 सृगपतिठमति (इ) विंशठमनि,
 निमंजता ।
 सृगयावर उ पासेटी, पहेरी,
 मिथारी । [सृगमिरा ।
 सृगराज, सृगराज (च) विंश,
 सृगमिरा सृगमीर (च) नंदय
 विविध, पांथवा ।

कहीं किसी चिह्नियों की खाते हैं और कहीं भस्म छोड़ें दूसरी को, पर यहाँ वही नाम लिखि गये हैं निम्न को इस प्रोग्राम के मांस खानेवाले प्रतिष्ठित लोग (ब्राह्मण, और चण्डाल) भी खाते हैं, और नाम भी यद्यपि कुछ छुट्टे पड़वा आस्युतापु म हैं पर ज्यों के त्यों वही लिखि गये हैं जो यहाँ के बड़े नित्य और मोरगिहार पुकारते हैं क्योंकि भूष के मुख्य आंगहार वही लोग हैं । पानी में तैरने वाली पशुन पनिकर या सु-गंधी—गंगवाड़, भैंसा, बतख-गमीरी, बतमीगुलवा, बत-जीनिगा, सुरमाव, दिघउष, साजगर (डूगर), निचमड़, नहिंय, गकटा, रेव, मैल, मंछार, कहीं, पधेगा, बैजला, मिथही, पदन, मसका, धौन-वाड़, गिरा, बानसे, गंधिया, घोवर, जोवार, लोकाही (पनमुष्की) करमा, टिकवा

(किसेरार) धोहेर, विपुला, मेसुनिन, भिन्नी। वही और संवे पैरवासी पशुन नीझारी—गैवर, मंछेख, कुलंग, तुरनी कुलंग, करधरा, हंस (हंसाने), जोविख, जगसंग, घोविख, टंटाई। गोझारी के छोटी पशुन सहराई—दाविख, मंरुं करकिंल, कोवार। गोझारी और सहराई के सिवाय कुछ वही जो पानी में चरती हैं । चाजग, खैर, बाक, मोमी वर, पवसकचन । चाड़ा के म-कार। गोदवार, सरंगर, बमबम। घोटेरा, भैंसा (दोभंवा), पुपुषा, मंछेगुलवा, सुरमा, पाल, चाफेग, करिवाइटे, टुटुतापी, कमुनी, सांभी, नपरवा, बटाक, करवानख (बटसिरी) बर-दानकवड़ा। बन में और इस पर रहनेवाली—मोड़, तोतल, जाला, मोतरमोरिया, तीतर, कैर, तीतर मोठिभा, बकीर, बटेर, लवा वड़ा पडाई

प्रा (म) } नमोदा
नदी जा
मिपिमिव

ਪਵਿਤਰ ਹੋਵੇ, ਗੁਰਮਤਿ,

ए. सु. रि. सु. र. त. र. दिन

६५५

एन्यः ॥ राघव नर सिंधु

नदी नामा । मंडा

निदर धर्मि ब्रह्मना

पञ्चमः श्री गंगा सरस्वती

कमुना नर्मदा गोदावरी

ਸਾ ਪੰਥਕ ਹੋ ਕੇ ਨਵ ਪਰ

मान सर पादि हो समुद्र

सोनी पने व नही सो नद
नदी नद रिने

... इति ते नृपतिः ।
... ॥

५१ मन्त्रान्तरात् ॥

नं. ६८५. (ग) {

१) ५०००००
 २) ५०००००

१-३३३ १-३३३ १-३३३
१-३३३ १-३३३ १-३३३

100

- १५१ -

१८. हनी . छटिभुप

श्रीमान् नरसिंह व
वि. न. भट्ट

सुप्रसिद्धा, अनेक,

सभी गज काच, चीन, बटि

वा. मेपत्ता नाम—दी. १३

कनक चोखि कटि मेंपना,

सुइडेंटिको जालव रचना
संस्कृति, संतति

होनी किंकिनी, यथा
नमः विद्याय नमः ॥

સુપરિન્ટેન્ડેન્ટ (ન) ટાઉન, પેટ્ટો,

नमः (नं) बटा, प्रम विमिष,
नमः (नं) बटा, प्रम विमिष,
नमः (नं) बटा, प्रम विमिष,

प्रणय । मादल, दा ।

...ધારાધર સત્તર...
...અમીયન જીન... સુનિ...

यनाङ्क तद्विषयति,

[illegible]

पुनः विदुः ज्ञातिः
पुनः विदुः ज्ञातिः

सि ताहि केइय माहि

यही
प्रमाण
है।

पुनः छंद गोपाल
प्रसाद दारिद्र

घाघा दा
पन जीनू पता

पुस्तकीनि धाराप

पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः

वर्षा, १९५५
१९५५

निम्न, दृष्ट

정읍시립도서관 { }

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 { }

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 { }

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

정읍시립도서관 (가) 정읍시립도서관

सुग्यावक- (म) सुग्यावक,
सुग्यावक।

नृमः दनोः (सु) कङ्को दनः दनः ।

ਸਰਕਾਰ (੪) ਨੰਬਰ, ੧੯੯੧

नवाहीन (च. मूलरात्र, सिं. ५)

ਜੁਗਾਜੁਗ (ਜ) ਤਮਾਸ, ਰਜਾਹੀ,
ਧਰਮਾ : - [ਹਨਾਫ਼ੀ ।

सुगाची (स) सुगलेरी, सुकी
सुगी (स प) सुगी हरिणी,
सुगवरी (स प) सुगी हरिणी ।

सूत्र- (क) मृदायाः, चिह्न ।

नृडांशो-सि'निरिआ, वाच्यनी ।

लुवाय म) हमरु हाँटि, हमरु
 को नह हमरु क' दगरी,
 भुँडे । [हँस]

नृपाक्षमूत्र (३) कमल का
मूल-पत्रः न मीरटी मही ।

ਸੁਕਨ ਭ ਖੇਰਤੀ ਨਿਹੀ ।

नृदण्डः 'स' शुद्धोऽयम् ।

सुहृच्छदा । (सु० पञ्चर ।)

सुदृढ, न सिद्धि ।

महर्षिजी ५, छिन्दा.

मङ्गलम् ॥ ५३ ॥

सू. ३४- (५) मौनः यः

सु. सु. सु. (सु) सु.

मरा, मुषा, निर्वीर्य -
मुदक ।

मृत्तिका: (५) निही.

मृत्युः (म) नीत, मरण,
प्रदिविद्योग ।

महोदय (म) मंत्र, मि
एष नान. का. लो.

सू.३५ (म) श.प्र.१.१६।

नद्व- (४) अक्षरान्तर, अक्षरान्तर
वाच्यम् । -

मदु मद्रस (क) कोनस, ध
मम, नरन, यातः।

ਨਵੀਂ ਥਾਂ (੨) ਦਾਸ ਕੁਮਾਰ

ਨਰਿੰਦਰ (੬) ਧੁਰ, ਸੰਧਾਨ ।

सुधा- (स) निष्ठा, ध्यातृ, भू-
वृद्धि, पदस्य ।

ਜੇ (ੳ) ਸੁਝੇ, ਜੀਯਾ :

मेषः (५) राशचरित्रि
पञ्चैतद्विद्वेय ।

नवद्वैत (४) द्वायत विवेक

नैक श्रमैव सुता । (स) } नर्मदा
मेघनमुता । } नदी जा
नैक श्रमैव सुता । } मिदिमिव

सिद्ध पथिषु होत है, मत्ता,
पी. सासरि सरसर दिन
करक्या। नैक श्रमैव सुता गोदा
परि धन्या। सब सर मिधु
नदी नद नागा। मंदा
हिनि कर करहि ब्रह्मना।
पदात् पी संगी सरसती
समुगा नर्मदा गोदावती
को धन्या है पी सब पर
मान सर पादि पी समुद्र
पी पी पी पी पी पी पी पी
मोगा द्रष्टि ते मंदाचिनी
कर यष्टाने जोग है।

नैक श्रमैव सुता । (स) } नर्मदा
मेघनमुता । } नदी जा
नैक श्रमैव सुता । } मिदिमिव

नैक श्रमैव सुता । (स) } नर्मदा
मेघनमुता । } नदी जा
नैक श्रमैव सुता । } मिदिमिव

समै वस कोत, चौक, कटि
वा सैपता नाम—दीरा
कनक योषि कटि सैपता,
सुदपटिका जालव रचना
हानी किंकिनी, सतति
सुन विनाच ॥ १ ॥

नैक श्रमैव सुता । (स) टाटि, पट्टी, पंजाड ।
नैक (स) बटा, पत्त विमेष,
जय रव । मंदल, दी. ।
धाराधर ललधर जेकद,
जगजीवन जेमुन । मुद्दिर
सत्ताडक तड़ितपति, पर
जन जेय सुपूग ॥ १ ॥
पन विहारी जो बौजरी.
रही सनस नति होय ।
नै तादि देवता भासनी,
कह पति कारन मोद ॥ २ ॥
पुनः छंद गोपान । नैक
धनधन बारिद होय ।
धन जीमूत बकाश होय ।
धनधन धनधन धनधन ।
धनधन धनधन धनधन ।
धनधन धनधन धनधन ।
धनधन धनधन धनधन ।

सुगयावक (स) सुग. का. वधा,
सुगयचा ।

सुगादनी (स) बड़ी दगादन ।

सुगाद (स) गगी, चन्द्र ।

सुगाधीग (स) सुगराग, सिंद ।

सुगालव (स) उपेवन, रसुपा,
सुखेगा । सुगादन ।

सुगाची (स) सुगनेरी, बड़ी
सुगो (स) हरनी, हरिणी,
बनचरी, रोग विमेष ।

सुगेन्द्र (स) सुगराग, सिंद ।

सुहायो (स) गिरिजा, पार्वती ।

सुहाव (स) कमल छटि, वमल
को गड, वमल को दगाडी,
भसीडि । [अन्त]

सुहासमुख (स) कमल का

सुहासका (स) सीरटी गहो ।

सुसन (स) भरठो मिही ।

सुदुच्छद (स) सुकरीया ।

सुदुच्छदा (स) धनुर ।

सुदुष्य (स) मिरिध ।

सुदुष्यनी (स) खेडमा ।

सुदुष्यनी (स) सुदुष्यनी सुदुष्यनी ।

सुदुष्यनी (स) मोनडा या दास

सुत (स) गध, मुही

सर, सुधा, निर्जीव गरी

सुदुष्य ।

सुतिचा (स) मिही, माटी

सुत्यु (स) गीत, गरण, चाप
माधवियोग ।

सुत्युच्य (स) सुंदर, गिव का
एक गान, चापजीत ।

सुदुष्य (स) सुदुष्य मीद ।

सुदुष्य (स) सुदुष्यीया, सुदुष्यी,
वानिम ।

सुदुष्य (स) कोमल, धीमा,
मम, गरम, मात ।

सुदुष्य (स) दाप सुदुष्य ।

सुध (स) सुध, सुधाम ।

सुधा (स) मिथ्या, व्याज, भूत,
सुधि, धन्य ।

सु (स) सुमे, गीता ।

मेघस (स) रागसुधिविमेष,
धन्यतविमेष ।

मेघसमे (स) धन्यतविमेष ।

सुगमावक (स) सुग. का. बचा,
सुगवचा ।

सुगादगो (स) बड़ी इनाहन ।

सुगाद्व. (प) गगी, चन्द्र ।

सुगाधीग (स) सुगराज, सिंद ।

सुगाचय (म) उपवन, सुगंध,
सुसंग । [इगाहन ।

सुगाची (स) सुगन्ती, बड़ी

सुगो. (स) चरगी, चरणी,
बनचरी, रोग विगेष ।

सुगेन्द्र (स) सुगराज, सिंद ।

सुहायो (स) गिरिजा, पार्वती ।

सुहात (स) कमल हाटि, समत
को जड़, कमल की दण्डी,
भसीडे । [कन्द ।

सुहासमूल (स) कमल का

सुहासको (स) सोरटी गद्दी ।

सुसना (स) मेरठो मिट्टी ।

सुदुष्ट (स) सुकरीया ।

सुदुष्टदा (स) सुत्र ।

सुदुष्ट्य (स) चिरिपु ।

सुदुष्टो (स) खेडसा ।

सुदुसा (स) सुनीहानी दुधारा ।

सुदुसा (स) सोनका या दास ।

सुदु. सुदु. (स) गव, सुदीर,
मरा, सुधा, निर्जीव गरीर,
सुदुह ।

सुदु. (स) मिट्टी, माटी,
सुदु. (स) मौत, मरण, बाज,
प्राणवियोग ।

सुदु. (स) शंकर, शिव का
एक नाम, साक्षी ।

सुदु. (स) बाजा मेद ।

सुदु. (स) चतुर्थी, उपवास,
वाक्त्रि ।

सुदु. सुदु. (स) सोमल, धीमा,
मन्त्र, मरम, मान ।

सुदीवार (स) दाव दुधारा ।

सुध (स) युद्ध, सुधाम ।

सुधा. (स) मिथ्या, व्याज, झूठ,
सुधि, पसत्य ।

मे. (स) सुमे, मोका ।

मेघस. (स) राजव्यवस्थित,
पर्वतविशेष ।

मेघसमे. (स) पर्वतविशेष ।

नैकसं गैत सुता (न) } नमोदा
नैकनमुता } नदी जा
नैकनमुता } निदिगिव

सिद्ध पवित्र दीन है, गंगा,
बी.। सुसिद्धरत्न दिन
करदन्ता नैकनमुता गोदा
परि धन्ता सुव गर भिधु
नदी नद नागा । मंदा
विनि कर करधि देवता
पद्योत् ची गंगा सरस्वती
लमुता नमोदा गोदापरी
को धन्ता है दी सव पर
मान सर पादि बी नमुद
पोनी पने द गदी को नद
नोना द्वादि ते मंदाचिनी
कर यद्यन नोना है ।

नैकधा. (न) } बुधनामु गी
नैकली. } को, कनःपगी
नैकली. } को, कनःपगी
नैकली. (न) } गीर्ही का नमुद
नैकली का नमुद ।

नैकली. (न) } पादुन, देता,
गंगा, कटिमुय, करवनी
चिदिनी, कटिमुयन
कोपीना दरसन वसा,
सुद्वंष्टिका, लनेव, लुग

वमे गत कोत, चौड, कटि
वा मंदता नांम—दी नय
कनक योषि कटि नैपता,
सुद्वंष्टिका जालवे रचना
कांती किंकिनी, सतति
मून विद्याध ॥ १॥
नैकली (न) टाटि, पट्टी, पंजाड ।
नैक (न) वटा, पन्त विजिप,
कन रव । पादेता, दी. ।
धाराधर जेनधर जेकट,
जगजीवन जीमूर्त । सुदिर
वन्ताडेक तदितपति, पर
जन जय्य सुपूज ॥ १॥
यन निजुगी ज्यो बीजुगी,
दही पनत नैनि दीय ।
नै ताहि देवता भांजिनी,
कन पति कारन कोय ॥ १॥
पुनः द्वा गोपान । जेन
धमयन वारिद दीय ।
यन जीमूग वन्ताडेक कोय ।
धमकोनि धारावतेश्वर ।
पन्तमुय गरवन्तापुता ॥ १॥
धम मुदिर जयमु नूतन
बाद । जयवर कद मो-

समस्त वाचं चतुष्टयं प्रकार
भाष्य, चक्रण, १ मयन, २
कीर्तन, ३ चित्तयन, ४ वात
पदान्ता, ५ इष्टमयन, ६
यत, ७ प्राप्ति ८ ।

मैना. (म. प.) नागझी, राजा
 दिमाचक, मारिका गधो
 विमिश्र, पायेंती की माता
 द. मा. १. [ना. १.]

मैत्र. (स) एक पद्येत्, का
मैत्र. (प) गरायु ।

मैत्रलङ्कृतम्, स. विम्वरम्
साधु चरम् ।

मैनकाटपः ग०- माकृतरना,
धनः, निमिनकरना ।

भैरवाकरना, सु. गंधाकरना
अनाकरना, अपवित्र
करना, । गंधना ।

मैल कुवेला, रु० मैला, मंदा,
मैलाहोला, रु० मंदाहोला
मदुलहोला, रु० मंदाहोला ।

हेटिङ्गा. (स) मरिच, भेंसा ।

मीरे. (प) मीरी, मीरा, मीरना।

गण मोरे । कलुष देवमाय
 नति मोरे ॥ पर्यात् सोम
 मोक्ष फलो यम ये वम ॥
 सो. गण. पी कलु देवमाय
 यो माया मे भी. नति. मो
 मोदी । - [- पा. ॥

मोघ- (स) विषय, सुधा, लय,
 मोघा- (उ) पांडुरंग,
 मोघ- (उ) कवच, कवच, मवच,
 मोघक- (उ) गुनना,
 मोघन- (म) भाग, उदा, यद-
 दरण, दीरगा।

मोषनिव्योत. (म) मोषरस
 मोषरस. (म) मोषरस
 मोषा. (म) निवार, केश
 मोषाक्ष. (म) मेसर का मु-
 रना, केश का मुमर्ष

मोनायाव (म) मोनरम ।
 मोनिका. (म) मोरपा मऊको ।
 मोती को मो पायत ना. मू
 वे। प्रत होना, किसी का
 अपमान होना, धनहर
 होना ।

॥ श्री० ॥ श्रीग श्रीग श्रीग श्रीग ॥ श्रीग श्रीग श्रीग श्रीग ॥ श्रीग श्रीग श्रीग श्रीग ॥

मोतीपिरोन : (यश
 मुद्रावरा पांख के त्रिधे
 योषा जाता है) =
 मोतीपिरोन, मु० मोती मूँवना,
 निटास के साथ बीचना,
 रोना ।
 मोदः (स) आनन्द, हर्ष पना-
 स्कारपकृत्य, सुखी ।
 मोदकः (न) हर्षद्वारा, लड्डू
 विशेष ।
 मोदनीः (व) बहुर ।
 मोदितः (म) हर्षयुत, हर्षित ।
 मोरटः (घ) घुरनहार ।
 मोरटाः (स) फटा हुआ दूध ।
 मोरध्वजः (च) राजा विशेष,
 धर्मगुरु ।
 मोरपट्टः (स) मोर की पांख ।
 मोरद्वितीः (म) हतरी मोर से,
 नेरी मोर से ।
 मोरिका (घ) नेयो ।
 मोचः (स) नायादिमें भापन-
 की नानना, मछान ।
 मोचनी भागा, मु० भपते मिल
 घघवा प्यारी के भवानक
 निचने से भवित शीताना ।

मोहलेना, मु० भिजाना, बिसी
 का मन अपनी मोर में
 लेना, लुभाना, बस करना,
 मंच फेंकना ।
 मोहनः (स) भजन, मनीहर,
 मित्र, मुखापनहार ।
 मोहनोः (च) मुखापनहारी
 मोहिनी ।
 मोहमयः (म) भूटा । [खाली]
 मोहागाः (प) बेघो, मूँवना,
 मोहापहारी (च) मोह का
 नागिका ।
 मोहितः (स) मुद्धित, भवित,
 लीबुषा । [बटपत्तो ।
 मोहिनीः (स) बेव्या, रूपवती
 मोचः (स) मुक्ति, सुगत,
 निर्मल, मोक्षा । भपवगे,
 संसाराधि वृत्ति, परब्रह्म
 गति । मोच नाग—दी०
 मोच मुक्ति भपवगे पुनि,
 क्रमत् यव निर्वाण । हरि
 पद गति क्रौडय-युत,
 प्रसनि दीर्घ भगवान् ॥१॥
 मोचकः (स) मोक्षा ।

મોખાશ્વ (૮) ને ૩, ૫૧૫ ।

ਅੰ. ੨੭੪ ੫ ੬ ੭ ੮ ੯ ੧੦ ੧੧ ੧੨ ੧੩ ੧੪ ੧੫ ੧੬ ੧੭ ੧੮ ੧੯ ੨੦ ੨੧ ੨੨ ੨੩ ੨੪ ੨੫ ੨੬ ੨੭ ੨੮ ੨੯ ੩੦ ੩੧ ੩੨ ੩੩ ੩੪ ੩੫ ੩੬ ੩੭ ੩੮ ੩੯ ੪੦ ੪੧ ੪੨ ੪੩ ੪੪ ੪੫ ੪੬ ੪੭ ੪੮ ੪੯ ੫੦ ੫੧ ੫੨ ੫੩ ੫੪ ੫੫ ੫੬ ੫੭ ੫੮ ੫੯ ੬੦ ੬੧ ੬੨ ੬੩ ੬੪ ੬੫ ੬੬ ੬੭ ੬੮ ੬੯ ੭੦ ੭੧ ੭੨ ੭੩ ੭੪ ੭੫ ੭੬ ੭੭ ੭੮ ੭੯ ੮੦ ੮੧ ੮੨ ੮੩ ੮੪ ੮੫ ੮੬ ੮੭ ੮੮ ੮੯ ੯੦ ੯੧ ੯੨ ੯੩ ੯੪ ੯੫ ੯੬ ੯੭ ੯੮ ੯੯ ੧੦੦

એવું (૫) જુદા, મુમ, સુખોમ્
જગતના, સુખોમ્ ।

मोनि (४) मन्त्र, गुरु, यं
नर पासादिन, मिथ्या,
माया, कौटिल्य, उपद्रव,
पदचोटी ।

મોતો - ૧૦૦૦૦, ૧૦૦૦૦, ૧૦૦૦૦
 ૧૦૦૦૦, ૧૦૦૦૦, ૧૦૦૦૦
 ૧૦૦૦૦

अग्निः (५) मजीवता, सुखता ।

श्री गुरुभ्यो नमः । (५) वेदविचार-
कोश । नवप्रकाश, वेदवि-
चार । १०० पृष्ठानि, नीलम-
यान्त्रिक, मिश्रितरङ्ग ।

ਭੋਗਵੰਤ [੪] ਚਤੁਰ੍ਵੰਸ਼ ॥

अथपुनः श्रीमन्महाभारतम्

य

पु. (५) स. ४८६ नि. १००, १०१
४११

[illegible]

• ॐ नमः, ॐ नमः, ॐ नमः

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

4410, 70, 21, 21, 21

युगमः (युगः द्वयम्) पु० म०

सत्य, पुनः ।

ਪ੍ਰ. ੨੨. ਪ੍ਰ. ੨੨ (੨) ਦੇ ਤਹਿਤ, ਸੀ. ੨੨।

महाभारतम् (सु. अष्टमोऽध्यायः)

यश करनी/ पु० यशकल

द्वितीयः सर्गः

३
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

यजः (म० गुरुं गृह्णाति) १

यजुर्वेद, ३५५ (वेद)

यत् (य. यत् १.११) य

गद्य १२१॥ ३१९

गोखर ।

— 2 —

...for the purpose of the ...

3000 7000 10000

[Illegible]

1000

[illegible]

— 100 —

— ८२ —

... ..

1. 4. 1941

... ..

11574

एक के सजीवन मन्त्र जानत
 रहे। पर सजीवनी विद्या
 नहीं। पर देवजानी नाने
 गुणाचार्य की पुत्री पारव
 वर्य की पयसा वा भी एक
 पटमास कष के साथ पढ़ती
 रही। छोटे थाप युवा कोर ते
 सव ते देवजानी ने भोग की
 इच्छा किया। परन्तु याने गुरु
 पुत्री जानि नहीं मानेठ। तद
 देवजानी माप दिई कि हमारी
 आमा ऐसी भंग किया तेने तूं
 हमारी पिता कि विद्या पढ़ाई
 विजृत हो छाहुने। तद कष
 भी माप बाकी दियो कि जो
 तुम को पारव भोग का भी तौ
 तुम्हें पत्नी पति छोड़नी। एक
 माप देवजानी भी याही रहो।
 और दूसरो प्रसंग जानो बारिचे
 कि एक दिन राजा हयवर्ष
 देव बानानुर का भ्राता ताकी
 पुत्री मन्दिटा सहचिनी रुहित
 और देवजानी गुणाचार्य की
 पुत्री भी सहने नदी नी बस

छाड़ि छाड़ि श्री सभाष सान
 कोड़ायुत करत रहो। संयोगात्
 यो नारद जू को भावत देखि,
 सबी जस ते निसरि पति
 सजित, पातुर होय वसत गइए
 करप लगतो याही कान्त वसत
 मन्दिटा वा देवजानी ते, सचटि
 पचटि बदस्त भयो। पचात्
 स्मिर हुए मन्दिटा ने वसत
 पपनी देवजानी, के शरीर नी
 देखी दीनों ते परस्पर दुर्वाद
 बकवाद नीव जल होने सगो
 कि पूर्वे मन्दिटा ने कही कि
 तेरो पिता मेरो द्वार का भिक्षु
 है। तुम्हें हमारी वसत गइए का
 कड़ा जगद हो तूं ने पड़नी
 किया। भसी जौ तू को रास-
 पुत्री का वसत भासा तौ तूं राज
 पत्नी होवगी या माप दिई।
 देवजानी भी याही ऐसी कहि
 माप दिवी कि हे राजपुत्री हम
 तुम्हारे पिता के गुरुपुत्री हूं जौ
 कदाचित् वसत गइए नी पोया
 हो गइ तो ऐसी कृपा पद-

चित्त दासोपत्तु बिदे' पर' कहें
 तें तूं भो दासो भाव को माति
 होइगी । या ग्राप सुमत मर्मिष्टा
 ने मोगों मीं चावत पति को
 धिग वदा सब बाको दिनाय
 कप माहिं दियो गिराय । येह
 सब चपने' सहेलियो को याह
 के कहें ते बर्जित वो ताड़न
 करि घर चलो गई । याके
 दोधरी दित राजा यजाति ने
 बाहोदिया गिहार करत जस
 हेतु वा' कप पर' भाके भीतर
 याके एख कन्या दिगम्बरी पति
 कपयलो देखि दयायुक्त बाको
 पाग वल्ल चपनी गिराय खोड़ी
 बाको ऊपर होत दाध' पकरि
 ऊपर खेचि लियो, ऊपर होय
 वार्ता दया भट पाति की बातें
 पुछते भए उछो ने चपनी परि-
 कप गुलाबाय्य की पुती' पर
 म्रिष्टा की कुवाली राजा तें
 बियो पर' कहो छि
 भी उम' कुमारी को होय तूं ने
 पर' बियो, ती पर दोधरी

तें पावि
 चको पिता को चपने' हम
 भाय तुझारी पती होय
 का' यम' यदा
 पुत्री जानि' इनकार
 परन्तु उछो ने नहीं
 ते राजा के' चपने' माय
 को मय' बिदे, तब दिवस
 वा को पिता पाव' के
 गुलाबाय्य ने सब वार्ता
 करि पति
 कपयली को गाप भय
 सन्या तब कपयली
 की पीतु कीरु यतन ते
 नहीं पायो, परन्तु जब
 बाय्य ने देवभीमी चपनी
 के रहते राजा की पुत्री मर्मिष्टा
 को दासो होय चपने' पुत्री
 जानी के मायदायी बड़ी को
 जाने कछो, तब राजा कप-
 यली ने चपने' जान माय राज
 पाट रखा हेतु भोज एव पुत्री
 का उठाय यवन मानि मर्मिष्टा
 पुत्री को चपने' परते जिहासि

देवजानी के साथ करि दियो।
 तब गुन्नापायें ने राजा याया-
 ति की देवजानी को बिवाह
 करि बिना कियो दोर ग्रन्थिटा
 की साथ करि वा पर छुट्टि
 कारणें राजा की बनिन करि
 दियो, राजा जब देवजानी
 ग्रन्थिटा सहित अपने घर
 पायो, कोई बात दिने राजा
 ने ग्रन्थिटा की देवजानी ते भी
 पति रूपवन्ती रही कामातुर
 लोकीन बापर होय देवजानी
 ते मोत छेव छाड़ि दियो, तब
 देवजानी ने राजा की पति
 विषयी की रीति देखि अपने
 पिता के पास जा रही, गुन्ना-
 पायें वृत्तिवाराणा की पाकर
 लकी सुनि बाकी माप दियो,
 वा युवा पयसा की प्रहृत नों
 हवभाव की प्राप्त भयो, कोई
 बात करि योते कोई पाकरों
 कि देव्या अपूर्व रूपवन्ती राजा
 के समी नों जा रही हे राजा
 ने बाहर भावते वा पर पति

कीभीन होय-पम्पनारगति
 दृष्टावसा ते विषय हो रहा,
 पद्यात् पूर्वे गदुनाम छेठ पुत्र
 ने अपने युवावसा प्राप्ति
 कियो वा न दयो, तब वा की
 राजा ने यापराभीन वंग का
 दियो, पद्यात् पुत्र छेठ पुत्र ते
 प्राप्ति कियो, वा ने पिता
 प्राप्ति मानि अपने युवावसा
 तत्काय संवसर करि पापु हव
 पयसा की प्राप्त होर रहा,
 पर राजा ने वा दिनीते अपने
 कामातुर होय प्रथम की
 नागा प्रचार करितपर रहा,
 एष दिन अपनेरा मरते यो
 ग्रन्थिजू की कछो कि हम सदेव
 सुपुत्र जाने की प्राप्ति हो,
 श्रीग्रन्थिजू वा पायें वाती
 सुनि ग्रन्थान्तर पर टाछ दिप,
 तब राजा ने श्रीविद्यामित्रगुरुदेव
 ने अपने कल्पना अपनी कही
 तब विद्यामित्र ने जग दृष्टि
 करि न्त पावाहन करिराजा
 की पावाग मार्ग की सदेव

यथाया, मिंकट घुरपुर
 जात देवतोने विचार कर्हि
 पायर्थ्य जानि घुरपुर की
 मर्यादामानि सपने सपने
 तर्जो के प्रताप राजा की
 घुरपुर जानैती नीचे मर्या
 कीर्त्त मी गिरा दियो घुर-
 पुर की जानै म दियो ।
 यजन- (स) पूजन, चाराधन,
 यज्ञ । [धर्मिय ।
 यजुर्वेद- (स) दूसरा वेद, वेद
 यज्ञ- (स) मेध, याग, बलिदान,
 मंड, सत्र ।
 यज्ञभूषण- (स) कुम्भ ।
 यज्ञवृक्ष- (स) कंटार ।
 यज्ञाङ्ग- (स) गृहस्थभूषण ।
 यज्ञीय- (स) चर घृष्ट ।
 यमपायन- (स) पवित्रयम ।
 यज्ञभूष, यज्ञीयवीत, (स) पुं-
 धित, भेष, जनेत्र, जमोप-
 धित, कंठभूष, जगीत ।
 यतन- (स) स्थान, सपाय, यत्न
 यतन ।
 यतराज- (स) नाराज, विमुख ।

यति, यती, (स० यत जतन
 करना मुक्ति के लिये) पुं-
 तपस्वी, भिक्षारी, सन्या-
 सी, वैरागी, जैनियों का
 भिक्षारी ।
 यत्तवपण- (स) पैसा नीन ।
 यत्- (स) जैतिक, जहाति ।
 यत्तु- (स० यत् जतन करना । पुं-
 सपाय, यतन, सद्योग,
 प्रबन्ध, तदबीर, कोशिस,
 निहनन, सावधानी, जतन ।
 यत्र- (स० यद् जो वि० वि०)
 जहाँ विप्रे, जिस स्थानों,
 जहाँ, जिस जगह ।
 यत्रतत्र- (स) जहाँ तहाँ ।
 यथा- (स० यद् जो वि० वि०)
 वथा, जैसा, जिस रीति,
 जैसे, सादृश्य, जैन प्रकारण,
 जिस प्रकारसे, जिस रीति
 से, बराबर, तुल्य ।
 यथाक्रम- (स) परिपाटी से,
 जैसा, जाओ मर्याद ।
 यथातथा- (स) जैसा, तेरा,
 वथा, वथा ।

यथायोग्य (स० यथा जैसा योग्य
ठीक) क्रि० वि० । जैसा
उचित, जैसा चाहिये, ठीक
से, यथाचित ।

यथायं (स० यथा जैसा, यदं
अभिप्राय, नतसह) पु०
क्रि० वि० । उच, खरे, मां, ज,
सत्य यथायोग्य, ठीकठीक,
जैसा, चाहिये ।

यथायित (स) यहिले, जैसे ।

यथायत (स) सनात, संपूर्ण,
सब । [यथायोग्य ।

यथाविधि (स) विधिपूर्वक,
यथानुक्ति (स० यथा जैसा या
अनुसार, गति बध) क्रि०
वि० । जैसी सामर्थ्य हो,
यथोक्त के अनुसार, अति
तना हो सके ।

यथोपास (स) उपानुसार ।

यथाउत्थ (स) जैसा हीने
का योग्य ।

यथायित (स) जैसा का जैसा,

यथो का ली । [यथा ।

यथोक्ता (स) यथा उक्ति, जैसी

यथोक्त (स) जैसी कही गयी ।

यथाचित (स० यथा + उचित)

क्रि० वि० । यथायोग्य, जैसा

उचित, जैसा चाहिये,

यथायोग्य ।

यद् (य) अब, क्योंकि । [लेहे ।

यद्यपि (स) जब से, कहां से,

यदा (स० यद्वा) क्रि० वि० । जब

जिस समय में, जब जगि,

जखिन् जाते । [भी ।

यदापि (स) यद् नियम, यद्

यदि (स० यद् वा) क्रि० वि० । जो

कदापि, जैसा, क्षि,

पश्चात्तर, विच्छेद, अब ।

यदु (स) पु० एक राजा का

नाम जो राजा यदालि का

बड़ा बेटा और योद्धा

का पुरदा और यद्वंशो

राजा भी जे पांचवीं राजा

या ।

यदुक्त (स) पु० यदु राजा का

पुराण, यदुगं ।

यदुगाध यदुगत (यदु यदुगं-

जिनी का, नाथ या पति

मालिन्ध) पु० श्रीजय,
वासुदेव ।

यदुवम० (स) पु०। यदुकुल, यदु

एव राजा या प्रगता ।

यदुवमो (स० यदुर्वम) पु०। यदु

वि वंश वि कोम, यादव ।

यद्- (स) जय, ज्योतिः ।

ययति- ययपि- (स) ययया०

जो भी, जो नियत, मन्दिष,

ययपि, जो भी, जो ।

यय्य- (स) यय्या, यय, टाट-

या, यय ।

यय्यि- ययि ताया या यय्यी

कपाटादि, कुलुक ।

यय्यित- ययिता या ययिता जुंभी

सो यय्य । [यय्यती ।

यय्यी । यय्यी । यय्यी । यय्यी ।

यय्य, (स) यय्यी, यय्य, यय्य,

यय्य, यय्य, यय्य, यय्य, यय्य

देवता ।

यय्य (स) यय्यी, यय्य ।

यय्यरररर (स) यय्यी देवता ।

यय्यररर (स) यय्यी देवता ।

यय्यररर ।

यय्यररर (स) यय्यी देवता ।

यय्यररर (स) यय्यी देवता ।

यय्यररर ।

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

यय्यररर यय्य- (स) यय्यी देवता,

आच छान्त सन, धर्म
राव होपंत । ते सुद पिय
सुम नाम सुनि, वर वर
वर आपंत ॥ २ ॥

यमहाञ्जन (स) नाम द्वितीय
वा हय हो वे कुवेर सुरमं-
जारी का द्विपुत्र एव नर
बड़ा, दोहरा मोटा सुव
सुंदर नारद ब्रह्मपति
दोनों हय जीवा हो वे
भीकुसुमान में योनस्प
ब्रह्म हारे स्थित भए श्री
सुरासवार होने ने जखर
दे हवा आनि वे उधार
उरी आ दुपा ।

यमानुषः (स) यमुनामदी ।
यलोवे (प) संवनी येने ।
यमुन. यमुना- (स) नदी विमेष ।
यमुनाकाता. (प) आच, यम,
धर्मराव ।

यदा (उ) भांग । [यम ।

यव (उ) श्री यम विमेष, इन्द्र-
यवहरदीट (द) पुन ।
यवनह्वान (म) टिटरव ।

यवनेट (स) देपाय, बहसुन ।
यवरोटिणा (म) यवकी रोटी ।
यवमल (म) यव का मनुष्य ।
यवमोच (स) यवपा ।

यवमात्रदा. (म) भवारम ।
यवधार. (स) भवधार ।
यवापम (म) गवापार ।
यवानिवा (स) जडांग ।
यवान (म) यवमा ।
यम (म) श्रीर्षि, दुष्ट, पति ।
यदी (स) जेठोनध ।
यदीपुष (स) विर्तविष ।
यदीनध (स) जेठोनध ।
यम (प) येना ।

यसद (उ) वस्ताधातु ।
यमिनू (स) अविविषे, निमनी ।
यहां का यही, मु. ठीक इसी
प्रगट ।

यमपावन (स) पवित्रयम ।
यम (म) यमराज, देवजाति
विमेष, पूजन, दान ।

यवदूष (स) धना ।
यववर्ति. यवगाट (स) कुवेर,
सुरमंजारी ।

यज्ञभूषणः (५) कृष्णः ।

सप्तहृत् (म) कण्ठः ।

यज्ञः (म) गन्तव्यः ।

यज्ञीयः (म) अथर्ववेदः पञ्चास
सूक्तः ।

यः (५) यत्न, मेव ।

યાજ્ઞ (૬) યાજ્ઞિક મિથુન,
 મનતા, મિથારી, માંગલ
 યાજ્ઞ (૭) (૮)

या नव (४) परीक्षा, यत्नः

योजना (५) राजस्व का कार्य ।

या ३. (५) यज्ञ, मेध ।

यः श्रुत्वा तस्मिन् (स) मृद्वि विगेष ।

या प्रश्न मः यमकानां, यम
कानां प्रश्नः

ପ୍ରାୟ ୧୫୦ ମିଲିମିଟର

石: 191 241 4 世 4 1 5, 4 4 4

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

५०० । सुख दुःख । करिषि
 करिषि । करिषि । करिषि ।

अथ भुवनं त्रैलोक्यं च वर्णय

ଆମ୍ଭଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ସମସ୍ତଙ୍କ

五、五、五、五、五、五

५१३५ सं. एष. १. ४३८

राधभू एवम् श्री श्री

तो भी नाच करीया आन

भानु कुमर से माग को

सद्योग करीयो ।

व.वा. (न) तीर्थ, तीर्थ, अंज.
प्रथमः ।

ਸਾਹਿਬ (ਸ) ਪਾਤਿਸ਼ਾਹੀ ਸੀਸ਼ੀ ਸੇਵਾ :

यथायमिह (५) दीक्षितः

Norman, 1990; Norman et al., 1990; Norman and

6. (a) $\frac{1}{2}$ (b) $\frac{1}{2}$ (c) $\frac{1}{2}$ (d) $\frac{1}{2}$ (e) $\frac{1}{2}$ (f) $\frac{1}{2}$ (g) $\frac{1}{2}$ (h) $\frac{1}{2}$ (i) $\frac{1}{2}$ (j) $\frac{1}{2}$ (k) $\frac{1}{2}$ (l) $\frac{1}{2}$ (m) $\frac{1}{2}$ (n) $\frac{1}{2}$ (o) $\frac{1}{2}$ (p) $\frac{1}{2}$ (q) $\frac{1}{2}$ (r) $\frac{1}{2}$ (s) $\frac{1}{2}$ (t) $\frac{1}{2}$ (u) $\frac{1}{2}$ (v) $\frac{1}{2}$ (w) $\frac{1}{2}$ (x) $\frac{1}{2}$ (y) $\frac{1}{2}$ (z) $\frac{1}{2}$

સાત જાણીતી (૭) સ્તંભ સ્તુપો

ଦାନ [୩] ୧୩୩୩, ୧୩୩୩,

— () —

(c) The following information shall be provided:

ਸਮਾਜ (੧) ੨੦੨੧-੨੨

1997年12月

Journal of Management Studies, 1987, Vol. 24, No. 6, pp. 601-614.

$$d_1(u) = d_2(u) = 1$$

ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ (1913)

1917-18 (1917-18)

西上經 三載、五十五 萬餘里

पु.मं. (मं.) १२३४/१५४ अ.५

514 J

यावक. (स) चापो, चाक्षवर्ण,
नडावर, चारत ।

यावक्यम. (स) दृपरियापुष्य ।

यावत्, यावद्. (स) जवन्ननि,
जवताई, जितना, जव नक,
जवांघी ।

यावानादी. (स) गुर्गा ।

याव. (स) ज्ञानी ।

यावयू. (स) जयाखार ।

यास. (स) जयाना । [सटा ।

युक्त (स) उचित, उपाय, योग, सग ।

युद्धारमा. (स) रासगा ।

युक्ति. (स) प्रवीचता, द्यौटी,

न्याय, अनुमान, दहील ।

युग (स) द्विसंख्या वाचक,
जोड़ा, सत्य, वेगादि
चार, पारण दई, दोयुग्म ।

युगपचक. (स) कपनार ।

युगपत. (स) एकेवार, एकत्र,
एक जाल ।

युगच. (स) दो, युग्म, युग,
जोड़ा, दो० । मिरधरि

रत्न गुरु पाद युग, युगच
यनल यन दाय । युग्मवैत

मियुनं उभे. बंद द्विते युत

सोय ॥१॥ गुरु बिरंच-गुरु

नध्वरो, गुरु शरेय गुह्यंभु ।

हरिबिज्ञास सिर नाय पद

कौट मन्त्र पारंभ ॥२॥ शुक्त

शुक्त पुनि शुक्त युत; -रवि

तिचि हय तिमिरारि ।

भवि शुक्त भव शुक्त निधि,

नृ युत बयं उदार ॥३॥ रागा-

नुभ पद इट-निज, रामानुज

पुर धाम । रागान्धय मो

जन्म निज, हरिबिज्ञास

निज नाम ॥ ४ ॥

युग्म. (स) जोड़ा, युग, दो । -

युत. (स) भिन्ना, विगिठ, सटा,
जड़ित ।

युयिक्ता. (स) युयो, पुष्य विजेष

युद्ध. (स) रथ, संघात, सड़ाई ।

धौ० युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध-दोठ

बन्दर । शानपताप मुनि-

रिचर अंतर ॥ युद्धविरुद्ध

अर्थात् युद्ध न विजेष पक्ष-

भि गये ।

युधिष्ठिर. (स) कुन्तीपुत्री पांडव ।

युवती- (म) दा, तवचो, नवान ।

युव- (म) युवा, तवच, योव ।

युवराज (म) राज अधिकारी,

नाम, राज का प्रभाव

युव भागु चक्रेत युव को

राज देना राज मही को

अधिकारी, राजपुत्र ।

युवा (म) तवच योव न नवान ।

युव- (म) युवा चक्रेत ।

युव न तवच, युव ।

युव- (म) युव अधिकारी ।

युव (म) युव नवान, नवान

युव, युव ।

युव- (म) युव नवान, नवान

युव, युव ।

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

की युवा देवी महे ।

युवी- (म) युवी युवी ।

युवी- (म) युवी युवी

युवी ।

युव- (म) युव नवान, नवान

युव, युव- (म) युव, नवान

युव- (म) युव नवान, नवान

युव ।

युव- (म) युव नवान, नवान

युव, युव ।

युव- (म) युव नवान, नवान

युव- (म) युव नवान, नवान

युव, युव ।

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

युव नवान चक्रेत युव

मती योगाद्रे दे पदसी ।
 योगनिद्रा (य) काश्चिद्रा,
 जागता । [ग्राही ।
 योगिनी (स) भूतिनी, पि-
 योगो-(स)तपस्वी, योग साधक ।
 योगेश्वर (भ) योगीश, सिद्ध,
 दीक्षा । सन्ध्याभो वर व्याज
 पति, जटनी मुंछी होय ।
 दंष्ट्र बाहू भगवान सन,
 निर्वाणी पद सीय ॥ १ ॥
 रिपि शिष्य कृतापन ० पी,
 जतो तपी मुनि पादि ।
 योगी जग जनविगत करि
 नितही खोजत तादि ॥ २ ॥
 योगेश्वर नव विवरण ८ (स)
 कवि, चरि, पद्मरीध, प्र-
 बुद्ध, पिप्पलायन, पावि-
 होत्र, द्रुमिल, पद्मस, कर-
 भाजन, एते नव योगेश्वर
 योग्य (स) उचित, सम्भव, उग-
 युद्ध, सायक ।
 योगनवमी (स) गजीठ ।
 योधा (स) युद्धकर्त्ता, वीर,
 सयानर्द ।

योगि (य) भग, उपज स्याग ।
 योगिचौराभी लचविवरण (स)
 स्यावर वीर २० रुच,
 लसनव ८ रुच सुम्भ
 एगाद ११ रुच, पची
 दग १० रुच, पशु तीग
 २० रुच, नर पारि
 रुच । ८४०००० ।

योगी (स) स्त्री ।

योगित, योगिता (स) स्त्री,
 पयला, नारी, पुतभी ।

योगिप्रिय (स) इन्द्रो ।

योगिनीसि (स) जो तूं दे सो
 तूं दे, जैमे तैमे ।

योऽ (भ) योऽ योऽ वा संग्रा
 नाम । सोरठा ॥ रष्टपट-
 दंता वास, पधर योऽ
 नंदलाल दे । करत विंव
 मदनान, पी प्रवाल
 दिट्टन उदित ५५ ॥ १ ॥
 नामनाजा । दीक्षा । बानि
 योऽ पुनि रदन रुद,
 पधर मधुर एदि भाव ।
 नामलिखित नाम ॥ १ ॥

विशेषः कथं योऽपि ज्ञायते ॥ १३ ॥
योगसूत्र (म) १३, १३, १३ ।
यस्यैव [३] तादा ।

र

रत्नकोटिना, मु० धरणा, रत्नना,
वचना ।

रत्नदेना, मु० धरणा, रत्न-
कोटिना वचना ।

रत्ननेना, मु० लेनेना ।

रत्नभागादना, मु० धरणा, रत्नना,
वचना । [दिव्य]

रत्न रत्नना [म] रत्नना ।

रत्न, म, रत्नना, रत्नना, रत्नना

नाकरना, तामा धाम, द-

वदुरिया फल, रत्नना ।

रत्ननाम रत्नना रत्नना

रत्नना रत्नना रत्नना

रत्नना रत्नना रत्नना

रत्नना रत्नना रत्नना

रत्नना रत्नना रत्नना

रत्नना रत्नना रत्नना

रत्नना रत्नना रत्नना

रत्नना रत्नना रत्नना

रत्न मरवि भव, रत्नना
नियमनाम ॥ १३ ॥

रत्नना [म] रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नना [म] रत्नना, रत्नना, रत्नना ।

रत्नरीमः [न] रीठा ।

रत्नदीपा (स) सिंदुरिपा ।

रत्नमानिः (स) ज्ञान धान ।

रत्नप्रागः [न] ज्ञानचन्दन,

पतङ्ग, अथर वृक्ष ।

रत्नाङ्गः [न] केसर, ज्ञान

चन्दन, कमला गुच्छी ।

रत्नाङ्गो [म] मञ्जीठ ।

रत्नाङ्गः [म] ज्ञान पञ्चम ।

रत्नाङ्गः [न] ज्ञानाङ्ग ।

रत्निष्ठा [म] ज्ञानकर्षणी ।

रगः [म-प] गिरा, गाढी, नक्ष ।

रघुः [स] शुभ संज्ञा, जीवसंज्ञा,

सूर्यसंज्ञा, राजादिसंज्ञा वा

पुत्र । [वे राजा ।

रघुः [स], रघुः [प] (प) रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रघुः [स] रघुः [स] रघुः [स]

रत्न [स] दासिह, निर्धन, हरिह,
कंगार ।

रत्न [स] भरमर, गीमा, पति

वर्षित, ज्ञान पीठापादि,

सुरारांग । रंगनाम ज्ञान,

पीठा नीता, गुत्तापी,

ज्ञाना, पीठा, धुंधला, हरा,

पञ्चनी, वैजनी, सीसनी,

नारंगी, वनफली, कासनी,

भूरा, सुगहरा, नाफरंजानी,

संदरी, नाफरानी, मिटिया,

पञ्चासी, बीतसी, पिस्तई,

सुरमई, ककरिनी, काही,

धानी, जसुरई, जंगली,

मुंगिया, पियाली, ज्ञानवर्दी,

तूषी, फालमई, गंधकी,

कपूरी, चदाबी परगना,

गोरा, पगरई, चम्पई,

बादासी, बसंतो, चमोपा,

जदा, पहरंगा, हरंगा,

कुसुमी, मलागीरी ।

रंगसङ्गता सु० रंग चटाना;

भगदा चटाना, बसिदा

चटाना ।

जोड़पुर पादि हैं । राजपूती
 (चचिचो) में करे एक भेद का
 यहाँ पर नाम लिखा जाता
 है—सूर्यवंशी १ चन्द्रवंश २
 भृगुवंश ३ वयसोवग, ४ भोज-
 वंशी ५ सोम वंशी ६ मिथो
 दिवा ७ कछवार ८ राठौर ९
 सोडान १० बाडा ११ पणार
 (पंवार, पण्यर, पण्यार) १२ पटिवा
 १३ बालुल १४ मन्वरिया,
 बैय १५ तिकोचवंदी बैय १६
 जंभी बैय १७ प्रतिटानपुरी
 बैय, १८ बघेला १९ चदेला २०
 जिनवार २१ मन्वरिया २२
 लवतमो २३ भोजम २४ चमि
 ठिया २५ टिटिवा (टिटिवा
 २६ मन्ज २७ मन्ज २८
 जोवरिया २९ पाल ३० बर
 मन्ज ३१ विरवेल ३२ कास
 पार ३३ पुरवार ३४ विवेक
 ३५ बैलर ३६ मन्ज ३७ तिकुम
 ३८ मन्वरिया ३९ मन्ज ४० मन्ज
 ४१ मन्वरिया ४२ मन्ज ४३
 ४४ जोड़मिया (जोड़म)

४५ जोड़मिया ४६ मन्ज
 (मोनिया वा गुनिया) ४७
 ४८ भूतवा ४९ मन्ज ५०
 ५१ मन्ज ५२ मन्ज ५३
 ५४ राजपूत ५५ मन्ज
 ५६ मन्ज ५७ मन्ज ५८
 ५९ मन्ज ६० मन्ज ६१
 ६२ मन्ज ६३ मन्ज ६४
 ६५ मन्ज ६६ मन्ज ६७
 ६८ मन्ज ६९ मन्ज ७०
 ७१ मन्ज ७२ मन्ज ७३
 ७४ मन्ज ७५ मन्ज ७६
 ७७ मन्ज ७८ मन्ज ७९
 ८० मन्ज ८१ मन्ज ८२
 ८३ मन्ज ८४ मन्ज ८५
 ८६ मन्ज ८७ मन्ज ८८
 ८९ मन्ज ९० मन्ज ९१
 ९२ मन्ज ९३ मन्ज ९४
 ९५ मन्ज ९६ मन्ज ९७
 ९८ मन्ज ९९ मन्ज १००

निहं ५५ मरये ५५ रोवेते ५५
 चमूपायनी ५५ नमो ५५ छन
 ६० आट ६१ रैषरा ६२ केस
 वार ६३ सोनवान ६४ शीघ्रित
 ६५ वद्वतिदा ६६ विषया ६७
 पनेटो ६८ वरदिया ६९ चीनक
 १०० कनकन १०१ कनकन
 १०२ बीपट खन १०३ गिनि
 यार १०४ वरदास १०५
 वद्वतिदा १०६ ननवन १०७
 कविद्वयो १०८ ननवन १०९ रव
 वारे ११० मही गुजर १११
 विवेकगिया ११२ सोवने ११३
 पटिनी (पटिनी) ११४ वीरदा
 वार ११५ वीरद्विदा ११६
 वरवर ११७ वीर ११८ मरव
 तिव ११९ विजयगिया १२०
 वृद्धवो १२१ वृद्धवो १२२
 विवेकगिया १२३ गीत वी नमो
 वीर १२४ वीर वी वीर १२५
 वद्वतिदा १२६ मयदिया वा
 वद्वतिदा १२७ वनगिया वा वन
 गिया १२८ वद्वतिदा १२९ वनगिया
 १३० वीर १३१ वीर १३२

१३३ वीर १३४ वीर १३५
 विनिवार १३६ विनिवार १३७
 १३८ वीर १३९ वीर १४०
 १४१ वीर १४२ वीर १४३
 १४४ वीर १४५ वीर १४६
 १४७ वीर १४८ वीर १४९
 १५० वीर १५१ वीर १५२
 १५३ वीर १५४ वीर १५५
 १५६ वीर १५७ वीर १५८
 १५९ वीर १६० वीर १६१
 १६२ वीर १६३ वीर १६४
 १६५ वीर १६६ वीर १६७
 १६८ वीर १६९ वीर १७०
 १७१ वीर १७२ वीर १७३
 १७४ वीर १७५ वीर १७६
 १७७ वीर १७८ वीर १७९
 १८० वीर १८१ वीर १८२
 १८३ वीर १८४ वीर १८५
 १८६ वीर १८७ वीर १८८
 १८९ वीर १९० वीर १९१
 १९२ वीर १९३ वीर १९४
 १९५ वीर १९६ वीर १९७
 १९८ वीर १९९ वीर २००

यरी र व्यास रईगा यच सुन
 उस की सन्देश हुआ कि
 इस से नीरा प्रयोजन क्या
 तब शंकर ने कहा कि प-
 पने पति के मिलने का
 भी प्रसन्न सुन। श्री०। अब
 छंदुसंग छप्य अवतारा।
 होइहि हरन मदा मदि
 भारा। छप्य तनय होइहि
 पति तोरा। बचन पन्यया
 होइ न मोरा। अर्थात्
 छप्यतनय पद्युख की
 काम के अवतार हैं।

रती वमकना सु० बड़ना,
 कसन! फूटना, भाग्यवान
 होता।

रतिनाथ (स) कामदेव, श्री०।
 सून कुलिस पसि अगव-
 निहारे। ते रतिनाथ
 सुमन सर मारे। अर्थात्
 त्रियुख वचन तरवार पादि
 के संगवनिवारे सहने वाले
 को काम ने फूटवान से
 मार दिया।

रतीपति (स) कामदेव, पनझ।
 रतीवन्त (स) धनयन्त, भाग्य-
 वान, मातृव्यी।

रत्न (स) मणि, मुक्तादि, स-
 पुतली, मणिमुक्तादि यैष्ठ-
 वस्तु, मोती पादि जवा-
 हिर। दी०। श्री मणि
 रत्ना वाक्प्री, चमो मंख
 गजराज। कल्पद्रुम ग्रीष्मी
 विष धनुष, धन्वन्तरि धेनु
 वाज ॥ १॥ अर्थात् मणि
 यी, रंभा, वाक्प्री, चमो,
 मंख, गजराज, कल्पद्रुम,
 धनुष, धेनु, ग्रीष्मी, विष,
 वाजी, धन्वन्तरि ॥ १४ ॥

रत्नसागु (प) सुमेख पर्वत।

रत्नाक्ष (स) गङ्गीदधि, सागर,
 समुद्र।

रघ (स) चार पैरों की गाड़ी,
 अभिलाष, समूह, कुंभार
 का चाक, चक्र। चक्र गन्ध—
 दी०। चक्र प्रान्त यथ सप्त
 गण, चक्र विहंग विसेष।
 चक्रमुदगेन छत्रु श्री चक्र

पत्न्यो रमणीयः (च) शोभाधाम, सुन्दर,
 ततो ह्यर, शोभायमान ।
 रमतः (स) खेवतः, कीर्तुषः,
 विद्यारतः ।
 रमाः (स) सखी, विष्णु, पत्नी,
 रमागामं यी जानकी जू
 वे तापनी प्रादि नै दे ।
 रमापतिः रमाः (न) विष्णु ।
 निवासः रमैः (न) विष्णु ।
 रमाविनायकः (स) जगन्नाथ जगत्
 सुदिनः (स) सुन्दर ।
 रमाः (स) शोभित, प्रकाशित,
 रमाः (स) कंदली, बेला, केरा,
 गोपी प्रपूषरा, वेला, लंग
 की वेला, केलावृक्ष । क-
 दली नाम—दोहा रंभा सो
 सो जगन्नाथ, तं वलिया सु-
 कुमार । ए कदली जिन ने
 कछु गले लंघन पनुहार ।।।
 पुनः—दोहा । रंभा पुनि
 बानर बसा, कदली पुनि
 काटीस । बड़रि पंमु मत
 फल गदून, कनक खंभ गणि
 नोस ।। रंभा मधु—दो-

रंभा कहिये अपसरार, रंभा
 कहती नाम रंभा गोशुल
 की वधु, लिंग मोड़े घन
 प्याम ॥ १३ [योग्य ।
 रस्य. (म) मन्दर, मगोहर, रसय
 रस्यक. (म) पलकस का कर्क ।
 रय. (म) रोग, गलदी ।
 रये रए (द) रंगी, बोड़े ।
 रन (द) पधिर, बिप्यार ।
 रन (स) गन्ध, नाद ध्वनि,
 बीज, भगट, दोर, रोग, वपन,
 परावाज । [दोरधूपके ।
 रवकि (प) बोलिके, भगटिके,
 रवि स त, म्ब, पकरन ।
 रविप्रय (म) तामा धातु ।
 रविपीतल (स) हलहल । [पच ।
 रगन स किटिनी कहि भु
 रंभ स मगल कहिय
 रस्य. [म] विषय, बीर मोर, नव
 पुन, समुत, विष सार,
 पाग, सार, वच, रोग, मोर,
 मधुगादि, नृगादि ।
 रस्यम्—दोहा । रसन-
 वरक पुनरस्य समुत,

रस विषया पच नीर
 रसवर को रस प्रेम रस
 जाहे रस वल नीर ॥ १४
 रसक. [स] अपरिधा ।
 रसगर्भ. [स] रसवता ।
 रसधातु. [स] पारा ।
 रगना रसना [स] बिहारी, भीम
 काचो, बंगी का मोर, रा-
 सना, मोयपोविशेष, रसम
 किंकिनी । दो. । रसना
 काचो किंकिनी, कुंदमिषय
 कास कुदा यक्षि लम्ब मेत
 गृह, वंशो बंदन माज ॥
 रसना गन्ध—दोहा । र-
 सना काचो कहता कहि,
 रसना बहुरी दाम । रसना
 कीभ्या नामुकी, को न म-
 लाहि हरि नाग ॥ १५

रसा. [म] मोरिनी, बरती,
 पूथी, गढ़, रासना, मोयवी
 विजय । [भुवन ।
 रसातल (म) पाताल, पथ

छ) रसमय, पाम-
 वा नूतने नूतने दोनो,
 रस, नीठा पान
 मेह, रसासय। श्री-
 य देखदहि बिटप
 बवाप। पावति संतु
 रसासय तमाटा। पर्वति
 संतु शान्त, रसासय पान
 तनासक प्रवृत्त नूनि मेह दो
 नाम दे प्रसिद्ध है। पान
 नाम—दो०। हे चहकार
 रसासय है, पान चूत पिब
 प्रीय। पति चोरन बह
 तुन सखी, रसासय पान
 चोव ॥ ११ पिब संतु
 जानांय पुनि, नददुतपम
 चहकार। यह रसासय श्री
 नाम बहि, नैतु रनी पच
 भार ॥ २२ रसासय पर्वति
 पान खा मेह—दो० ॥
 नासक (यह देम मेह दे
 है) बिटप (बिदा दे श्री
 हत्यक हो) २ चिन्तुरिया
 (चिन्तुरिया) ३ चोरी पवा

५ गोपी ६ रोहिणीय
 (श्री रोहिणी नक्षत्र में
 एक थाय) ५ भद्रपद
 (श्री भाटोनजीनातक रहे)
 ६ बरहमसिया (श्रीवारही
 सखीना श्री) ७ एक पान
 चतर नैतु सता है। पचपु-
 रसः (श्री चऊसा होता
 है) १० चोरिया (चिन्तुका
 साद पदा न हो, चोर श्री
 कुच पावक का साद पदा
 ता श्री) ११ चोरी पवा (श्री
 प्रसन्न खोटा होता है)
 १२ संतु (यह एक सात
 भी इस का सदा साता
 पचपु में जाभीपुर में संतु-
 का एक मेह है) श्री प्रसिद्ध
 है चोरी व साद वा टंग
 पर श्री होता है संतु का ये
 नाम दे प्रसिद्ध है ॥ १२
 चोरी (चिन्तुका पाकार
 बसा सा होता है) १३
 रसमय (स) पुब।
 रसायनी (स) नमोठ, गुहिर।

रचक, रचकः [स-द] पाचक,
जानी, रचकार, रचा करति
याना ।

रचय [च] पाचन, योयय,
भवाय, रचा ।

रचय, राचय (च) निमाचर,
भुत, योयोहिंसक, क्षाति
विशेष, राचय नाम—द्वंद्व
रुच भीमादि । राचय योयय
नैकत भवेत् । ज्ञानाद
यत्न राचिचर ॥ पुस्तक
नानिदमात्तत्रयामराय-
तथाग विमितावन निचर-
पेनो यधन यथा कुरुया
कर । पादि पाचिमरयामत
रचुनर ॥ भुतत विमोयय
विने निदा दर । दंकराय
पुनि दंकर तिषक कर ॥

रचा [स] वधार, पाचन, वाच,
परिचाय, विज्ञात ।

रचित [स] विज्ञातत किया
पुष्पा ।

राच [द] राचा नृप, राचिजा ।

राच [द] राचाः नृप, नृपति ।

राचत. [द] सरदार, योष्ठ,
मदती, राजा ।

राउर [द] पाप, पाप का,
पञ्जूर, नयोदयापक,
मदन, रागनन्दिर, राउर
कड़े मंदिर, रागनन्दिर ।

राज [द] राजा, नृप, नृपति ।

राए (प) राजा, राया, राजपूत ।

राए रायान (प) राजा से
प्रधान ।

राया (स) दीपितासी, पूर्णिमा,
पूर्णिमासी, नारद पूर्णा ।

रायम } (न, चंद्रमा, पूर्णचंद्र ।
रायन }

रायायति, राजानयी (स) दीर्घ-
नासी या चन्द्रमा ।

राय (प) विभूति, मन्त्र, भभूत ।

राय (न) रायना, खेच, गान,
खीच, प्रार, पौति, यनुगन ।
दीप, पाप संख्या वाचक,

राग रागिनी नाम—द्वंद्व
दीपमाया । भैरव गिरी
नेव द्वितीया दीपक तथा
नाम दीपमयं राग को

गान ॥ टोडी- कलंगडा	रागी-(म) मायक, पिया, कौपी ।
मिस्तावत अलेया सन्निता	राजा (प) सगा, रचना, राजना
मिधु पासावरीभैरवीजान	रागना ।
गारुनट गूगरी मुषकलौ	राजकवेर (स) बड़ा कवेर ।
गौड सारंग पीनू कुमुद	राजकुमार (प) राजाका पुत्र ।
योगि यातना । गौरी	राजकोशातकी (म) भोगी ।
जिदारा भुपासो पजे देम	राजकम्बू [उ] जलेंदा ग्रामुन ।
सोवठ धनाश्रीम खंमाथ	राजत (न) प्रकाशित, भीमित,
कल्याण ॥ १ ॥ जे जेवती	सोदता, सोमना, राजना,
कादरा भी बिहरागे तथा	सोदना ।
एमतरागिनीतीमपधान ।	राजन् (स) लृप, राजा ।
मैसारि वंगाल माध्वी भं	राजति (स) मचागति श्रीम-
भोटी पटं जंगला भास	मान् होत है, सोदती है ।
मिदुर भुनभानि । रागो	राजत्य (म) राजभाव, राजा
काले सांझी पुरवी काफो	का काम, प्रभुता ।
वरना सदाना हमोरं महित	राजधर (स) मन्त्री, मन्त्रीव ।
मान । मपरारिनी म हजं	राजग्य (स) खिरगी ।
मानकनि कीन्द चानीम	राजधानी (म) राजपुरी, राज
खसहद ये दीप मानाग ३०	स्थान, राजधाम, राजा
रागद्वाना. सु. रंग रंम होना,	का निवास स्थान ।
माना यजानाहीना, गान	राजध्वनिचा (स) राज
मिजाना ।	बेशी पुण्य ।
परग. सु. मागावजाना ।	राजनीति (म) राजनियम ।
गन्धी (स) गान नेद, तास	राजगय) जानून । राज

करने को पालन वा चारि
प्रकार धान, दान, दण्ड,
विभेद ॥ ४ ॥ धान वाही
हे ओ समय जीवन्त का ल-
भाव समता सध जीवन्त
पर रहना बैर नीति काष्ठ
पर नहीं ॥ ११ ॥ दान वाही
हे ओ द्रव्य, वाच्य, घोड़ा,
पयदर, रथ, चतुरङ्गी मेना ।
घोष पायुध पनेक करि
कै पीर कोई राजा का धन
धान, इत्यादि नीति लेनी ।
किन्तु कोई दोहरी राधा
जवरदन्त पपने तें पपने
राज्य में पायें, वाको द्रव्य
देकें पपनी राज्य की रक्षा
करना ॥ १२ ॥ किन्तु द्रव्यदेकें
पर राज्य की कै लियो हे.
तहां दान ओ राज्यनीति
हे, ताको गुण करि कै
कोई प्रकार नीति लेनी, १३
दण्ड, वाही हे ओ पनीति
कारकों की गति देनी ॥ १४ ॥
विभेद, वाच्य हे ओ पीरी ।

कोई राजा का कामकाजी
नम्बी चादि वा भ्रता वा
पुत्र इत्यादि कह को फौरि
कै बहिषाय लेनी ॥ ४ ॥

राजपत्नी (न) राजी, नहिपी ।
राजपुत्र (स) मासदही भाग ।
राजपुरुष (म) राजा का पादमी ।
राजपुत्रिका (स) बनेली ।
राजपुत्री (स) रेमुका ।
राजमाय (न) दोनोरीड़ा ।
रागराज (न) कुवेर, सुरभण्डारी ।
राजरीति (स) पीतल ।
राजमन्त्र (स) गन्धमसारिणी ।
राजवती (म) राजवती नाम
दो । धर्म अष्ट गज वादनी
राजमन्त्रिका चादि ।
तुमहि देवी फूनी चुवति
रं वक्त एहि तन चादि ॥ १५ ॥
राजपुत्र (म) अनन्तताप ।
राजमानन (म) राजाका दण्ड ।
राजगिम्पी (स) परगिया ।
राजा (स) प्रद्योत, कामी,
भूगति । राजा नाम—
लंद खंजा ॥ राज ॥

की ओर बहुत धर्यही ।
रात, दु. रात ही में ।

(म) निना, यामिनी,
रात, रादिनाम—दंड
बंगला ॥ तभीविधा मा-
रखनी निनीघनी ॥ तम-
सनीरादिनिगाइ यामिनी ।
दवाइ म्माना सुख दाइ
जर्वरी ॥ सनत दोपाव-
पदादि भावरी ॥ १ ॥ दोहा ।
पीहनमाननि कर धरे,
नाम होत है धरे ॥ अमन
तमन अमन रगत, बंग-
स्वान यह छंद ॥ १ ॥ धर
धारे ते धानिगे, धीर
निगावर नात । गधु गद
ते गमन नदि, कहत देह
बधि याम ॥ १ ॥

रात्रिपर-रात्रिपर (म) रात्रिपर,
मेत, मत्त, धीर ।

राह (म) पीर, नात्रि पुंर-
राह (म) बिहट, समीप, बड़

ही जाति ।

राधपुष (स) बड़हीपुत,
अनार बधा, ।

राधा (म) समीप, भीष, पामे,
दुपमानुपुता, ठयमिदा,
बड़हिषी । [कुमार ।

राधेम. (म) पवन, ठय, कपी

राम. (म) उर्वरगावद दमरप

गन्दन. पामुराग, पवि-

राग, विमंस्यावाधक ।

मेनी यमन (सुसप्रमाण

दिशीवाध) धंवन १८८

म हुय ई पनेधार्घ नाम-

नाला बहुत सुंदरछंय रखा

ही राम गद्दार्घ । कविता ।

रिच नम पचयम नंदधनु

परनुन संगी देवसिंह

धन्यसिंह गुच्छ धानिगे ।

दुन्दुनी मंवर गठ यमिनि

नूर सय पय अम कोनक

कहाभीत विम ठानिगे ॥

कीर हासुदेव रिच गरह

नदिमहाय त्रिनकी धी

मोलीनाम अचदेनुधानि-

दु. मय मति धंवन

नरमति लिखा मन्त्री भित	वाधीयं जंदाधीयं मद्वा
ग १ गुन छट रविमान	हरास विहास कर ११३
मानिये १ १ १ पुनः छंद	रागजन. (म) मल्ल, सता, साधु
मदनहरा--मदुरधनु खंडन	रामननी. (म) भक्तिनी, सज्ज
रघुकुलमंडन दक्ष चक्रवर्त	नी, वेग्या, नीरी, कचनी
वेद परे घर चाप धरे ।	रामरस. (म) सपथ, नक्ष, नून।
काकुला मनोहर राम-	रामर. (म) राम वाच, गरुड,
द्विषाघर ध्यात निगाघर	तृषवित्रीय ।
नाग करे सुर गोच करे ।	रागायन. (म) राम को कथा,
मनमिल मद्मायन मर-	रामपरिच ।
भिमजीवन विभुवन रीजन	रामाचार (म) राम का अकार
देवगती जेसीधमतो । दग-	रामायुध. (म) धनुषमाय ।
बदननिर्धनधनु रघुनन्दन	राध. (म) राधकृमाय, राधा,
करन निधन धरामपती	सपाधि वित्रीय, धन ।
विदि छरछती ११३ रायव	रादि. राराय) भगवरा, विगारा
रघुवंशी कुल अरतंसी विभु	राज. राजर, (म) राजा, मृग,
अरन्योदुदुदुदुदुमनिगा	महज । [वज्र ।
करन नम नय कायक की	रावणी (द) धारणा, भीमन ।
नित मायक भोतामायक	राठ (म) मयनकन ।
वाह महे रति अचक करे ।	रायन. (म) चायरोवे चोद की
रघुनाथ दगा कर भरता-	रीगावे निगिपर (म) मय,
धन हरि दाहरवी मर	कहेय ।
येवराह दृष्ट करन धरा ।	रावदारि (म) रायन का चर,
दद नान वरीयं दक्ष	योगासद, १५०.७

रामठ (स) डींग ।

रामदूति (स) नामपुष्पी ।

रामफली. (स) कमरख ।

रामसेनक (स) बिरैता ।

राम (स) धूना ।

रामराम, सु० सन्नाम, प्रपाम,
रामस्तार, (गंवार लोग
सन्नाम की धगड़ राम
राम कहते हैं) ।

रामननु भाई (द) भरत,
भी० । देवविमुपन योग
लग जोई । अनुर बिरंछि
दीन नोदि सोई ॥ दगरय
तनय रामननुभाई ।
दीन नोदि विधि वादि
महाई ॥ पर्यात् भरत की
कहते हैं कि यह तो बिरंछि
की अनुराई दवाय है
कि धन में ली कैसेई के
पुत्र होने का योग मुक्ति
दिया परन्तु दगरय का
पुत्र और राम का डोटा
भाई कर के मुक्ति विधि ने
धन रक्षाई दी और अपने

की अविधि करवाना ।

रामबल्लभा (स) सीता, शोक ।

उदभय स्थिति मंदारकारि-
णोक्लेशहरिणो सर्वत्रेय
स्तरि सीतां नतोहं राम
पद्मभां ॥ पर्यात् उत्पत्ति
घोर पालन घोर प्रलय
की करनेवाली घोर लोभ
की करनेवाली घोर संपूषे
कल्याण की देनेवाली श्री
रामबल्लभा सीता को मे
प्रपाम करता हूं ।

रामगिरि [स] चित्रकूट, का-
मदनाय, भी० । पटनुराम
गिरि बन तापस पत्त ।
पननु पमिय सम कंदमूल
फल ॥ पर्यात् श्रीगम के
गिरि भी बन पौतपस्विन
के घर का पटन कह
करना ।

रामेयर (ध) रामचंद्र का स्था-
पित गिय चिंग । भी० ।
श्री रामेयर दरसन करि
है । श्री तन तमि गन

धाम निधरिहे ॥ चर्चात
रामेश्वर मन्द का चत्वीन्य
भये होता है रामेश्वर ईश्वर
वा रामः ईश्वरो यस्य यही
मन्त्रा भाव है ।

राममैत्र } [१] जामन्द नाय,
रामधैय } होता । राम मैत्र
समा निराल, भरत हृदय
चतिमेम । तावस ताप-
कनया निम, सुप्री
मिहारे नेम ३१ ॥ राम
मैत्र चर्चात जामन्द नाय
की गीता देख ।

रामकह लो मु. वही जगो
वान, लखी कथा, रामायण
रायमुनि [म, लाखनाम पत्नी
हैद भय कलाजल मु.
कुल इन्द्र हारण मरच मु.
प्रद प्रलो प्रल इन्द्र वद ।
रज परम खारच आदभ' व
सदा विमो । मुर मुनन
बर्हिहि बर्हि कंठुभ वल्ल
दृष्टुभि मङ्ग मही । कंथान
आमन राम अंग वनद

बहु गोमा चर्चा । सिरजडा
मुकुट मसन बिच बिच
भति ममोहर रामर्षी ।
जगु भीन गिरि परत
पटल समेत छड़गच भाव
ही । भुज दण्ड मर की
मेरत बचिर कण तन व
वने । जगु रायमुनिव त
माप्त पर मैठी विपुष पुष
पापने । चर्चात—नीन
गिरि स्थान मे रघुनाथ
का गरीर के चोर ५
स्थान मे रघुनाथ चोर नि
जगो स्थान मे बाहो की
चमकनि है चोर तारा
स्थान मे फुलो की रंजि है
यो रघुनाथ भी का गरीर
जो तमाल कुल व समान
जगम के चोर जगमर मङ्ग
से मिथगत क बचिर है ही
जग रंजि है जन की व
६. मांकी विपदे है मि
माने तमाल कुल पर मङ्ग
मुनि का चर्चात जामन्द नाय

पमेष सुपपूर्यक वैठ रहि छै ।

मि(स) ठेरो, निपादि बारह,

धान्यादि समूह ठेरो, नैप

हृषभादि द्वादश रागि ।

राट्- (स) यसाहुवादेन ।

राट्टिका- (स) वनभांटा ।

रास- (स) लोहा, व्याजि, वाग ।

रासा- (स) रासना ।

रासम- (स) खर, गदहा पंछ,

गधेन, गधो । रास पंचा-

ध्यायो—दीक्षा, पूर्य चन्द्र

निमि गदै सवि, भाव

विदिन धनैदान : धादि

मुधापर पांभुरी, ठेरो ददे

युगयाम ॥ १२

रानी- (प) गधन, रिसा बैसा ।

राहु- (स) दाठवांघघ, यइविमिप ।

राघन- (स) पसर, कौलप, का-

तिपिमिप, प्रादिभिंसुच ।

रांड का सांड- सु- विधवा

तुगाई का विगड़ा हुपा

सड़का ।

रिह- (स) गन्ध, खासी, रीता,

वन, हरिह, नृप, रदित ।

रिज- (स) दुट, गत्रु, बैरो, परि

दुयमन् ।

रिपुषन, रिपुसदन- (स) गदुष,

चक्रुडन ।

रितुराज- रतुराज- (द-स) वसंत ।

रिपुपाथ- (स) इन्द्र, पुरन्दर,

हुट, पसर ।

रिपुषन- (स) गदु व ।

रिगि, कपि- (द-स) सुवर्ण दर्मी ।

रिपिगायक- (द-स) पञ्च

कपिगायक- कपि, वगिट-

रिपिगायक- सुनि ।

रिट- (स) इपित, जनन्दिग, सुय ।

रिस- (स) क्रोध, कोप ।

रिसानो- (द) क्रोध, क्रुडमई ।

रिसाना ।

रीते- (द) चागी, हूँड ।

रीह- (द) गाल, गालुव, ।

रिजेम- (द) बागवत ।

रितिहुनु (स) अस्त्र ।

रीति- (स) साध पयन, प्रहार,

जननीना, सागाव, तरह ।

रक्क- (प-स) रीह, पवि-

चाइट, सुय का गहाम ।

धाम सिधरिहे ॥ पर्यात्
रामेश्वर गज का पत्नोन्म
भये होता है रामेश्वर
का राम, देवरो यस्य यही
मन्त्रा भाव है ।

रामजैल } [१] कामन्द नाथ,
रामजैल } श्रीराम । राम जैल
संभातिरिध, भरत हृदय
अतिमेव । तावत् तप
कृतमात्र निमित्त, सुखी
मित्रा मे नेम ३ २ ३ राम
जैल पर्यात् कामन्द नाथ
की गीता देख ।

रामजैल } ॥ ५१८ ॥ श्रीराम
काव, लब्धो भय, रामायण
रायमुनि [५], लाजनाम पत्नी
राम-प्रभु का जन्म म
कुल इन्द्र वरुण गरुड मुनि
प्रदुर्गमो वृन्द दत्त वन्द
रुद्र प्रभु आर्य आर्य व
सुदा विधो । मूर मुनि
वर्षादि वरुण वरुण व
मुनि मुनि मुनि वरुण व
आर्य राम जैल वरुण

वहु गोभा खजो । सिरका
मुकुट मस्त बिज नि
अति ममोहर रात्री ।
जन्म नील गिरि परती
पटल समेत उड़गव भा
जो । भुज दण्ड गरुड
जिरत बहिर लपतन प
बने । जन्म रायमुनि व
माध पर मैत्री विरुद्ध
चापने । पर्यात्-वीर
गिरि व्यान मे रक्त
का गरीब है चीर वन्द
व्यान मे रक्त नाथ पीर
जलो व्यान मे रात्री व
रमकन है पीर त, रात्री
व्यान मे रक्त का पीर है
न वरुण वरुण वरुण
नो राम न राम वरुण
राम न राम वरुण वरुण
मे राम न राम वरुण
राम न राम वरुण वरुण
राम न राम वरुण वरुण
राम न राम वरुण वरुण
राम न राम वरुण वरुण

वक्र- (स) कृपाधातु, चाँदी,
सवर्ण, सोमा ।

वृष (क) तप, मरजी, मनुष्य,
नगर, दया, क्रोध, दया दृष्टि ।

वृष (स) सोष (भोग) २
- विजोगालेभू ।

वृषि (म) प्रकाशमूर्त्यादि वृषा-
व, चाँद, चतुर्गण, मृदा,
गोमा, भूष । [चाँदमान् ।

वृषिमन् (स) प्रकाशमान्,

वृषिर- (स) वृषिगरा, सुन्दर,
मनोहर, मधुर ।

वृष (म) रोग, चाँद, गूदा,
व्याधि, पेशा, बीमारी ।

वृष- (स) ताम्र, क्रोध, क्षीप ।

वृषी (म) क्रोधित ।

वृषमेय- (स) मदिरा मद्य, दाह ।

वृष (द) चाँद, चाँद, चाँद ।

वृष (स) मध्यधर, धड़, कवच,
देवविनामिर, पशु, विना

मिर बी सोय, धर ।

वृद्ध- (प. म) रोद्ध, वृद्धवाँ, ।

वृद्ध- (म) वृद्ध, वृद्ध, वृद्ध,
वृद्ध, वृद्ध ।

वृद्ध- (स) गिर, एकादशसेखा
वाचक- १२ ।

वृषामूषा, मु० सादा, मेखाद
खाता, कड़ा, कठोर दात ।

वृषाणी- (म) गिरिभा, पावती ।

वृद्धित (द) रोना ।

वृद्धिर- (म) सेह, भीह, कृ०,
लोह, खून ।

वृष- (स) चाँदी ।

वृष- (स) पुषेदेष्ट ।

वृष (स) क्रोध, क्रोधित, रोषित ।

वृष- (स) मेला । [वृष ।

वृष- (स) उत्पन्न, जन्म, मित्र ।

वृष- (स) वृषादृष ।

वृष- वृष- (स) कृषा, कठिन,
वरधरा, निर्येष्ट, पेन रहित ।

वृष (म) वृष, तह पद्वर ।

वृषा (प) निरस ।

वृषी. (द) मिषहरी ।

वृष- (म) वृषविशेष ।

वृष (स) गवक, वाचाग ।

वृत्तान्तसंग्रहविवरण- (स) सत्य

युग मृष्टवर्ध- वेतागव,

चं, हापर ग्नाम मर्षे, कठि

एव हीन वयस नान हरि
भाव प्रसिद्ध ।
इन्द्रविन्दु (न) टिकनीरुवे की
रुद्रादौ (प) पथिठ, सुन्दर,
सुन्दरताई, वेडता ।
एव (न) रुद्रा, हरि ।
रेव-रेवा (न) उधीर, निज,
नितिती, पनित ।
रेवड़ी के डेर ने पड़ना, मु-
कठितता से जनना, देव
से पाता ।

को राजा होता भूठ है ।
रुद्राई (प) पचाई, रैनता,
चनाना ।
रेवमी (न) निनीप, बट पची ।
रेवु, रेनु, री धुकी, रय, मूख
बाबू, पद धूमि की र-
बिबाद, भरी खिमें पड़े ताकी
भी रेव नंदा है ।
रेवठा (उ) पाशुरान की
माता, धूँट पाका ।
रेवुध- न डंरुट । [पूर ।
रेत, रे त-ही दाबू, रज, धूस,
रेतः (उ) डक, दीप, बीज,
धान ।

रेवपांशना बा रेवा पांशना
बा रेवापांशना तु-
निदवडरना, ठे ड डरना ।
ओ-पूडा मुनिरे रेव तिग
पांशना । भरत मुपाध डीव
यद सांवी । यथात् मुनी
अतिपिपीने की ब बाँव
यता है । बा मुनी यथे
अतिथी रमल बाले पादि
से पूजातिदीने रेवा पांशि
यथात् निधय हरि यदा
हि भरत राधा वं द्विने
यद सांवी है भाव यीपन

रेतल (न) बाबू ।
रेवती । न । वसुधैव कुटुम्बकम् ।
नयन विधिय । [रान ।
रेवतीरमल- नो वसुधैव कुटुम्बकम् ।
रेवा (उ) मुझार, मीना, नदी
विधिय नदीना नदी ।
रेव [उ] रेवा, रेव, दीप
रेवो, न । डीवरी, डीवरी, र-
रेवठा (उ) रेवुडा ।
रेव-न । निमा, रजनी, र

रोग-(स) व्याधि, बीमारी ।

रोगावश्य. (स) कटु ।

रोगक-(स) रुचि कारक, पाचक
महिमाजंकार, भण्डितर ।

रोगग, रोगना. (स) रुचदी,

गोरोगन, रोगी, दर्पण,

वैशरं. [सिमर का भेद ।

रोगन. (स) कमलागुण्डी ।

रोगनी. [स] लुपसांकी ।

रोगि [स] सूर्य दीप्ति ।

रोगिका-[स] रोगी । [हरिण ।

रोगि [स] जाला पाङ्क का

रोगति, रोगितो [स] रोगति,

रोगत है, रोगता है ।

रोगग [स] रोगा, कल्पना ।

रोगनी [स] रोगी जवाभा ।

रोगनी [स] मेदिनी, भूमि,

पत्नी ।

रोगि [स] गट, घाट, गौर,

विनारा, कूत, रोग, दिक् ।

रोगनः (स) रोगाव, घटकाव ।

रोगा [स] प्रलम्बतरंग, विद्या

हासना, जीव हासना ।

रोगिता [स] रोगरूपा द्रव्य ।

रोग [स] श्रेय, बाल, रोग ।

रोग नाम - रोगी - रोग

रोगतनु रुद्ध मी, वृद्धतर

रुद्ध ग्रंथ । सो रोगित,

गन्धमुत्त भयो, प्राण

तेज अस्त्रं ॥ १ ॥

रोगका [स] डिपिड ।

रोग कूप [स] रोग द्विष्ट, रोग

का सुराष्ट ।

रोगपाट [स] कर्मसाद्विपत्ती

वधा, जनवध, दुर्गता

आदि, उनी कपडा ।

रोगाव [स] रोगावडा, मित्रा

रोगावशी [स] रोगी का सन्त

रोगाव [स] भूमि, घटपद,

पत्नी । [गुण्डा ।

रोग [स] रोग, पगर्ष, रोग,

रोगिणी, रोगिनि [स, द] नक्षत्र

विशेष, पद्मना की स्त्री,

पद्मना की माता ।

रोगिता [स] जाल रत्न, रत्न के

पद्मना की स्त्री, रोग,

गन्ध विशेष, नाम राजा ।

रोगिता [स] पद्मना, पत्नी

रोग-(स) व्याधि, बीमारी ।

रोगायुष्य (स) कृत् ।

रोगक (स) रोगि कारक, पाचक ।

महिसाजहार, भण्डितर ।

रोगक, रोगना. (स) उलदी.

गोरोगक, रोगी, दर्पण,

बेगन । [सिमर का भेट ।

रोगन (स) कमलागुण्डो ।

रोगनी (स) पुरुषनाली ।

रोगि (स) मरी दीन ।

रोगिणी [स] रोगी [इति] ।

रोग [स] लला पाट का

रोगिनी [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] लला पाट का

रोग [स] रोग, बाल, रोग ।

रोग नाम—दीना—दी

रोगतनु रुद्ध में, व

रुद्ध अंड । सो सुनि,

गन्धसुत भयो, बाधे

तेज अखंड । १ ।

रोगका [स] डिष्टि ।

रोग कूप [स] रोग छिद्र, रोग

का सुरास ।

रोगपाट [स] कम्पनादिपक्षी

बन्ध, जनबन्ध, दुर्गा

आदि उनी कपडा ।

रोगा [स] रोगपाट, मिहल

रोगावली [स] राखी का बन्ध ।

रोगाव [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

रोग [स] भ्रमर, पटपट,

श्रीकृष्ण [४] श्रीकृष्ण ।
 श्रीकृष्ण [४] रक्षा परना ।
 श्रीकृष्ण [४] निरुद्ध, यन्त्र,
 सरदरी ।

रंभ [४] दरिद्र, निरधन ।
 रंभ [४] लिट्, टोप, लिट् ।
 रंभन [४] रंभ देवताकी ।
 रंभनी [४]

रंभित [४] एष राजा का
 नाम ।

रंभ्य [४] रंभत, रंभी ।

रंभ्य [४] नरकविनिष, न-
 दानक ।

रंभित्य [४] वसन्त, रंभनी
 पुत्र, वधवार, रंभनी पुत्र ।

रंभित्य [४] रंभ, कुटुम्बी ।

रंभित्य [४] मन्त्री ।

रंभित्य [४] रंभित्य ।

रंभित्य [४] रंभित्य ।

रंभित्य [४] रंभित्य ।

ल

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।
 लक्ष्मण [४] लक्ष्मण ।

राग म य रि, वं साग।

बौद्धाचार - १५

बै. प्रश्न । मं. सं. नं. ५७१४

महिला - १.४, ३३.४४ वर

बोधन रचना, ग. छ. १८)

गौरव : रोडी दफ़्त.

नैगर । [सिद्ध का ईश्वर]

बैंगन । कृष्ण , लाल रंग के

4. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ 1/4 = 25%

157

1 2

2014

1

40

— — —

4. 4. 17

4

राम [स] पैय, बाल, i

पौन नाम - दीक्षा

श्री गतसु रुद मै, बस

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ

गण्डकुल भयो, 'स

तं न अस्त्रं ॥ १ ॥

श्रीमन्महा [५] डिप्टिस्ट ।

रौम कृ १ [स] रौम द्वि १

॥ श्रीगणेशाय ।

विश्वनाथ म'कम्यज।दिपद्व

वृषा, श्रवण, मृगशिरा

पति मनी कपडा ।

श्रीगणेशाय नमः

^२ 'स' शब्द की विसृति।

म भ्रमर, यदपदं

[गल्लह]

अन्य, छोट,

१. डा. न. म. द. न. म. र.

१ नभम। की छी,

2000 年 12 月 1 日

॥ १ ॥

41

१११३३

 \mathbb{Q}_2 et \mathbb{Q}_3

विचना ।

दसा करना ।

[द] निहराई, चगी,

दरी ।

[द] दरिद्र, निरधन ।

[द] द्वेद, दोष, द्विद्र ।

[द] दुर्प देनिवासी ।

दी ।

द्वय [स] एक राजा का

नाम ।

य [स] रजत, चांदी ।

रय [स] नरद्विनिन, न-

यानक ।

रीरिद्वय (स) बसन्त, रीरिदी

पुत्र, बुधवार, पन्द्रमा पुष ।

रीरिदी [स] रूई, कुटली ।

रीरित [स] गड़गै ।

रीरितय [स] रीरितय ।

रीरिय [स] रगिया घर ।

रीरी [स] रीरितय ।

ल

लङ्घ [स] बड़बड़ ।

लङ्घ [स] लाठी, लड़ी,

लङ्घी ।

लङ्घटद्वयगिरना [स] लाठी

रुद्र, गिरै न पधाय

रहित भाव ।

लङ्घु [स] सातकनरुद्र ।

लपन [स] पतख, बापी,

मय ।

लगि [प] लगके, बाले, तक,

निमित्त, प्रबलव ।

लग्न [स] राशि का रुद्रय,

पायल ।

लविता [स] विवि विविप ।

लघु [स] लोटा, मीन, छत्र

पक्षर, इच्छा, इच्छा,

योड़ा, सुन्दर, पक्षर,

भाररहित, रुद्र पक्ष,

संचित, सामझः ।

लघुलघुतीय [द] लोटे लुच

ली ली ।

लघुनूयक [स] लोटी मुरद ।

लघुनामि लोटी नामपड़ी ।

लघुतरपी (स) लोटीगाव ।

लघुता (स) लघुलाई, लोटाई,

लघुलई । [लघुलन ।

लघुतापच (स) लोटा, तपसी,

समुदायन (स) छोटा दूत । नटन [प] मुक्त, सुप्ता है ।

समुदायन म यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन [स] छोटी तामा सता (स) पुष्पादिपत्ती, श्रेष्ठ,

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

समुदायन (स) यदुट । [नटो] सटगा ।

संज्ञा]

[५३५]

[चकार-

चिह्न. पार. प्यारा, दुधारा ।

चमकि [द] उमगि ।

चमना [स] म्नी, नारी,
नेहरी, प्यारी ।

चमट- [स] । चिवाट, नाचा
मारव, नमूना ।

चमाम. (म) मूषक, नहना,
चैठ, रतन ।

चमिल(स) मीमांसा, सुन्दर
चैटारिप, जोति ।

चम(स) पत्त, पंथ. चपचप
तिनिप का चाँठवाँ भाग,

चैम, बिनाम चाल, परि
नाच, नेद, राजमूला पुष

चमचारे (म) श्रीलमाना ।
चमट. (स) लता चिह्न, लैम,

चौदप ।

चम(म) लीन, नीन, निमल,
सुन्दर, मनक ।

चमचम. चमचमिपु (म-म)
चौमचम. चमचमचम ।

चमचम. (म) चारा चलो.
चमचम. (म) चम ।

चमचम. [स] पत्त में पत्त,
पत्तकृति, पति सद्यतर ।

चमचो. [स] चर्का रेवड़ी ।

चमचो. [स] बटेर, पचो चिह्नचो ।

चमचारे. [न] नवीनी चिह्नारे
नो, चिह्नकरके, चिह्नारे,
चिह्नारे चो । [दरन्तो ।

चमच. चमचम. [न] चमचा

चमचारे [प] मूठा, चिह्नचारी ।

चमचारे चमचम । दोहा ।

चातकि चाचो गाव दय ।

चम चम चातकि चाचि ।

चातमचि निमलत चमि

चोर नैक चम चाचि ।

चमिचम । चातम चो चाचो

गांव चम चमचोचम चम

चातम चो चातम चमचम

चमचारे चम । चातमचो चम

चम चमचो चमचो चम

चमचम चमचम चमचम

चमचम चमचम चमचम

समुदायन (म) छोटा दूत ।

समुदायन (म) कट । [गडो ।

समुदायन [म] छोटी तामा

एक सडा (म द) कट देग,

तदत देर, दर ।

समुदायन (म) सडा का राजा ।

समुदायन (म) सडा की छोटी,

निमिषरो ।

समुदायन (म) सडा का राजा ।

समुदायन (म) सडा ।

समुदायन (म द) मिशरा पची

नीकादि सामने का यन्त्र ।

समुदायन (म) संकोच, साज,

अप, गण, सजा नाम

दीहा । [सजा

अं हा अपा, मकुचन फर

विन काज रिय पार पे

पारय बनि अपद म्हात

कि साज ॥ १]

समुदायन म पानी की सजीती ।

समुदायन म संवीरपुत्र सजि

अप नन्दयुक्त, गमेल ॥

सुट प मट क प म म

विमन

मटत [प] सुगत, सुरता ॥

मटत ।

सता (म) पुष्पादिपती, येन,

दाख सा हथ बाँवर,

बोरि, प्रियंगु, मासकोनी,

गुह्यादि । [दाता ।

सताकष्टरिखा (म) मुम्ब

सतामणि (म) विद्रुम, प्रवाहो ।

सताकप [म] सृष्टा ।

सतास्फोता [म] समुद्र ।

सतवहा [म] मासकोनी ।

सत्य [म] साध, साध, जपार्जित ।

सत्य [म] पाने के योग्य,

मिशनवार ।

सम्पट [म] भूठा, भूषा, तपिर,

कुट खेता, सामी, विषयी ।

सपम [म] सामन्त ।

सम्यमणे [म] पुरवा पारपदा ।

सम्योदर [म] गणेश, विनायक ।

सय [म] तटाकच यक्षाकार

हृति एकरम, पासस निद्रा,

नग, देर, ताउ, सर ।

सयन [म] कुतूब, कोतक

त्रिजुट वातुका वेत्ति ।
इत इजायनी पम मङ्गत,
यदि रंजय सुख नेत्ति ।

चाञ्च- (प) संकोच, लज्जा ।

चाञ्चा- (स) धाम की चाया,
छोड़, छड़ विभेय, भंगन
द्रव्यजड़ी, सोझ में चञ्चीनी
रखात, जो इन्द्र के अग्नि-
में समुद्र होत है, लज्जा ।

चाञ्चन- (घ) बिना, लज्जा ।

चाट- (प) सटपटी ।

चाटी- (द) तानूपादि मूषे, मुहम-

खाना, ताड़ पादि नूखे ।

चाड़- (प) दुधार, प्यार, प्रभोष ।

चाड़ना- (प) दुधार, प्यार, पीव ।

चात- (स) पगु, चरप, पैर,

पाव की मार, पदाघात ।

चाड़- (प) बीझा, भार, पन्त-
ही, चानी चिचाने का

पाव पमुवी का ।

चाधे- (प) पाए, चारु ।

लान- (स) गजबन्ध, बेरी ।

लापन- (स) मुष, बहुचयन ।

चाम (घ) प्राप्ति, उपाज्जन,
फल, व्यात्र ।

चाभ्य- चाञ्च- (न) सामग्रीय,
प्राप्तियोग्य ।

चास- (स) नयविभेय, कर-
जनो, रंगविभेय ।

चानञ्जक- (स) चानञ्ज ।

चानन- (द) सचन, चापलुसी
प्यारवापी, प्यारो, दुधारो ।

चासना- (म) पूर्व सूर्यवदय
चान की चाती ।

चाससा- (घ) इच्छा, वाञ्छा,
चाहता, महाभिचाप, मृ-

हा, स्वारिम ।

चाची (प) दुधारो, प्यारो,
चासना दुधारना । [पञ्ची

चावक- चावा- (स-प) बटेर
चावख- (स) मोभा, सुन्दरता,

तिनकीनी, सौंदर्य विभेय,
चावचना ।

चांचे- (न) फाने ।

चाश- चाञ्च- (द) चाम, प्राप्ति

चाञ्चा- (स) चाही । येवती
मुचात्र ।

(३) रीत, रीत, रीत।

(४) रीतारपद।

दा, लुङ्गप्राना, नुं

रना।

(५) तारा, तुमल

दू, नरनयन, लुङ्ग

(६) नकरीहीट, नयनानी।

दातना, नुं पापन

ना, प्रदाना, नयन

ठाना, बलिङ्ग नयन।

लुङ्ग, नुं लुङ्ग

लुङ्ग, नुं लुङ्ग

भरत।

लेखन (७) देवता, रिषार

दृष्टी दे, देवता दे।

लेखन (८) रिषार, रिषार

दा, रिषारदा।

लेखन (९) रिषार दे।

लेखन (१०) रिषार दे।

लेखन (११) रिषार दे।

लेखन (१२) रिषार दे।

रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (१३) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (१४) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (१५) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (१६) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (१७) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (१८) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (१९) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२०) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२१) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२२) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२३) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२४) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२५) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२६) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२७) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२८) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (२९) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (३०) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (३१) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (३२) रिषार, रिषार, रिषार।

लेखन (३३) रिषार, रिषार, रिषार।

તેજ, પાત્રાકરમર પેસાતો

અચર તો જોઈ જોઈ

નંદર જોઈપતિ અચવાજ,

મંદિર તો જોઈ, દિકાતો

તેજ તો જોઈ, અચર તો

જોઈ જોઈ, અચર તો

અચર તો જોઈ

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો

અચર તો

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

જોઈ (૧) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો

અચર (૨) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર તો જોઈ, અચર

અચર (૩) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર, અચર, અચર

અચર તો

અચર તો જોઈ, અચર

અચર, અચર, અચર

અચર તો જોઈ, અચર

અચર (૪) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર (૫) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર તો જોઈ, અચર

અચર (૬) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર (૭) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર તો જોઈ, અચર

અચર તો

અચર તો જોઈ, અચર

અચર (૮) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર (૯) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર (૧૦) પુનઃ વિષ્ણુકા

અચર તો જોઈ, અચર

मल पाटन मुखी, नाग
 दीप सत सीए । लोचनगना
 दृग दैवली, ताडिन देखे
 कोय १११ [निच, पांय ।
 लोचन. [द] लयन, लोचन,
 लोच [सप] चंचल, लम्बाइट,
 पांगू, पधर पची, पतुर,
 साकांघा, जिघा ।
 लोला. [स] लोलता, पयला,
 लोच, चंचल ।

लोचप. } (स) चंचल लोभी
 लोचप. } लाचपी, कुकुर,
 लम्बाइट, झूठा, चंचल, लुग-
 ला, लोचपाच-इन्द्रोदिक,
 पति लोभी लम्बाइट ।

लोवा. [प] लूमरी, लोचिर ।
 [स] देवा, योजना, डेवा,
 लाह, लप, लोभी, पर्याप्त
 मद्दरी, लालट, लांठ; मदी
 का टेला, लोहे का मैला ।
 [स-प] लोहा, गुह, रप,
 मल, लाह पगर ।

लोहा [द] लोहा पायु विविध ।
 लोचन वारा [द] चंचल

पचारावाला ।

लोहिता [स] रत्नपत्र, लासुरंग,
 लानिक रत्न, इंगर, रत्न-
 न्दग, रधिर, योनरो पत्र ।

लोहिताङ्ग [स] मङ्गलपार ।
 लोहितपुष्पक [स] पनारफल ।

लोह [प] रधिर, लह ।

लोह पोट होना, मु० लोहित
 होना, किसी रङ्ग में डूबना ।

लोहमिचंखाना, मु० पपनी
 तरफ से बहुत बड़ा कर
 लहना । [लहना ।

लोहावजाना, मु० लच्छवार से
 लो [पोतलक, लक, लग, पवधि ।
 लोका [पस] विज्वली, लमल,
 लोहा, लुम्मा, लूमी ।

लोहिक [स] लोक व्यवहार,
 लोकाचार, प्रसिद्ध, लोक
 प्रसिद्ध ।

लोह [प] लच्छमाच, पविमाच ।
 लोह लच्छ. [द] लाटी ।

लोह [स] लोहा । [सिंघासन ।
 लोहाचंदासन [स] लोह
 लोचनगना, मु० ध्यानकरना,

व] वृक्ष विमेष, वङ्ग ।	वन्ता- (म) गोरोवन । [फूच ।
[स] गोक्षी ।	वन्तुजीव-वन्तु- (स) दुपहरिपा-
[स] बालक, ब्रह्मचारी ।	वन्तुकपुष्प- (स) घासन ।
[स] मयान्, तुल्य, सदृश ।	वन्त्याषकोटि- (स) फूलेकता ।
(न) वयं, प्रिय, वङ्गडा ।	वज्रि- (स) पत्ति, पीता पीपधि ।
र- (स) वयं, नात ।	वय- वयन- (स) वेश संहन,
न- (स) तुल्य, कथन ।	बीजधान, बाल मुहुधान,
र- (स) वराही वन्द्य ।	बीजबीना ।
रा- (स) वराहीकन्द, हरहर ।	वदमा- [म] शोदवेर ।
दो- (म) वैर ।	वपु- (म) देह, नरीर, निष्ठा ।
दरीमदन्- (स) बड़ी वैर ।	वयु- [स] वयूर ।
व- (स) सीसा धातु । [लृकार	वन्तु- [स] वाय ।
वधू- (स) पक्षारी मुंग्यवाला,	वगन- (म) वदन । [पक्षी ।
वन- (स) पानी ।	वयस- (स) बाल्यादिष्वस्या,
वनकोदक- (म) वन का योदी ।	वयस्या- [स] दीर का कोषी, तद
वनज- (म) मृग्युक्त ।	भाषे चमसंध, वरे, गुर्वि ।
वनकुल- (म) निरंगी ।	व- (म) विसर ।
वनकुलाट- (स) वरविचार ।	वरटा- वाटिका- [म] वरे ।
वनलति- (स) वरमद, पुष्पकल-	वर्पायन- (स) नाष्टाय, स्विय,
रहित वृक्ष, पक्षिपा दीव ।	वेष, मुद्र, वृष्टा वयं गृहस्थ,
वनिता- (स) स्त्री, पद्मत्यादि	वागवत्, सन्धान ।
वृक्षमात्र ।	वर्तित- (म) धनदापर ।
वनीक- (म) वाचक, निदारी ।	वरतिदिका- [स] पाठ । [देष्ट ।
वनीक- (स) वानर ।	वरदा- (म) हर हृषा, पसमंघ,
वन्धाक- (स) बांदा ।	वरदा- (म) मुष्टक, मुष्टिक ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता फूल स

म

मदद दे रहा ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

व

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव (म) आता ।

वसुदेव ।

वसुदेव ।

वसुदेव ।

वसुदेव ।

वसुदेव ।

वसुदेव ।

वसन.]

[५४७]

[वातारी.

वसन. (म) वन, जपड़ा।

वसा. [स] शरदी।

वसिष्ठ. (स) वासुध।

वसीर. (स) नमदीपर, लान

विरचिरी।

वस. (म) वही नीचसरी।

व. (स) सुपेद पकन।

वृषा. वसुंधरा. वसुमति. (स)

पृथ्वी, धनीन।

विरसा. (स) राद्या।

वसुचिद्रा. (स) गदासेदा तद-

भावे गतावर।

वस. (न) पल्ली।

वसु. [न] द्रव्य पदाये, बीज।

वस. [स] वसन, जपड़ा।

वसुज. (म) कुमन।

वसुनी. [म] नभीठ।

वट. (म) सुमन्यवाका।

व. [स] वृषाज, जस, धूर्त

ठन। [नमज्जार।

वंदन. (स) नृति, प्रदान।

वंशो. [स] वंसलोचन।

वां. [स] विषय, जपता, वितर्क,

पादुपे, उमुचर।

वानुषी. (म) वकुषी।

वाज्य [स] पद उमुदाय, वसन,

क्रिकुरइ। [वाज्य, वाषी।

वाच. वाचा. [म] वागिन्द्रय,

वाचलति. (स) वसभा, पोषरा,

सनचि।

वाजा. (स) इच्छा, पुषा, उवादिवा।

वाजिमन्या. (म) वसगन्य।

वाजिदन्त. (म) वाचस।

वाशी. वाजीवाह. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वाया. वाया. (स) घोड़ा।

वागताः (व) सो चण्डत्वादि
ह्यस्य मात्रः ।

वाग्न (म) गहनः ।

वापि वापी [म] जलाशयः,
वावकुः ।

वाय (म) वायवी ।

वागीमत्स्यः (स) वागीमत्स्यः ।

वायस [म] वायव्यः, कोशः ।

वायवी (म) वायवी, वायव्यः ।

वागमोन्मत्तः (म) वागमोन्मत्तः तद्
मात्रं म समग्रम् ।

वायु [म] पवनः, हवाः ।

वार [म] वारि, जल, पानी,
दोषः वायु वापी ।

वारस्य (म) वारस्य वाकेयः,
वारस्य (म) वापा, वापी ।

वारण [म] वारणः, वारणः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारण्य (म) वारण्यः, वारण्यः ।

वारा [प] सस्यान्, वारा
निष्ठावरः ।

वाराण्यो [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [प] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [स] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वाराण्यः [म] वाराण्यः, वाराण्यः ।

वार्तिक [स] बनेले ।
 वादिका [स] वेलाफूल ।
 वान् वाना [स] सुगंधवासा ।
 वास्तवीयन [स] दूत ।
 वालपद [स] खयर ।
 वास्तुनिष्ठा [स] नाविका ।
 वास्तवता [स] धेनु ।
 वास्तविक 'स' वेनमुठ ।
 वालिका, दाली (स) नाविका ।
 वास्तु (स) दालू ।
 वास्तव (स) केंवटोनीया ।
 वास्तव (स) गदैहीकितारी ।
 वाल्हीव (स) हींग, केसर ।
 वान्हीका (स) नीलवास्तव ।
 वापक (स) दोनीतवा ।
 वास्त (स) वरनद ।
 वास्त [स] दिवस, दिन, रोज ।
 वास्त (स) वास्तव ।
 वास्तली (स) वस्तु को नेवार
 नावनी फूल ।
 वास्तुप (स) वनसुर ।
 वासा (स) वास्तव ।
 वास्तव [स] वस्तु, वस्तु, वीर ।
 वास्तु (स) वस्तुपा ।

वास्तुवाकार (स) पत्ताची ।
 वादनी [स] रघादियान, सवारी ।
 वाहिनी [स] घेना, नदी ।
 वास्त [स] भित्त, पृथक, वहिर्भव ।
 विपा (स) हीरवेर ।
 विकटन (स) कटार ।
 विक्रमा (स) मजोठ, रोडणी ।
 विकिर (स) पची, चुपांडी ।
 विशीर (स) वास्तवकवत ।
 विक्रम [स] विक्रमयोग्य पदार्थ,
 वेषने के लायक चीज ।
 विख्यात [स] प्रसिद्ध, मशहूर ।
 विष्णु [स] सपद्रव, विष्णु ।
 विष्णु [स] पण्डित, विद्वान,
 चतुर । [सपूर्व ।
 विविच [स] पण्डित, वाच्य,
 विजय [स] जय, जीत, फतह ।
 विजया [स] हरे, भांग ।
 विहास [स] नाट्यारि, विहास ।
 विह (स) वास्तव नील ।
 विहङ्ग (स) वागिरंग ।
 विज [स] धन, द्रव्य, स्वात,
 विचारित, ज्ञात, सम ।
 वित्त (स) घोड़ा ।
 वितुष (स) तूतिपा ।

वातता (व) एषो षष्ठ्यादि
सुप्त मात ।

व ७ म गडा ।

वाव वापी [म] जहागय,
वाहडो ।

व ८ म वावनी ।

वामीमतस्य (म) वामीमडनो ।

व ९ म वावनी कोवा

व १० म वावनी आवा ।

व ११ म वावनी ।

व १२ म वावनी ।

वागु ७ म वावनी, ववा ।

व १३ म वावनी, जक, वावनी ।

व १४ म वावनी ।

व १५ म वावनी ।

व १६ म वावनी ।

व १७ म वावनी ।

व १८ म वावनी ।

व १९ म वावनी ।

व २० म वावनी ।

व २१ म वावनी ।

व २२ म वावनी ।

व २३ म वावनी ।

व २४ म वावनी ।

व २५ म वावनी ।

व २६ म वावनी ।

व २७ म वावनी ।

वारा [प] चम्पार, ववावा,
मिहवावर ।

वागपसो [म] वामी, वमारवा ।

वागपार [प] वामीपार ।

वारव [म] गूवर, गुवर,

वमवा गुवर ।

वारावकी [म] वमवकी ।

वारावामी [म] वामावामी ।

वारावो [म] वारावो ।

वारावोचन्द्र [म] वारावोचन्द्र ।

वारि [म] वम, वामी ।

वारिद [म] वम, वामिद ।

वारिदनामज [म] वामी ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वारिद [म] वम ।

वार्तिक- [स] बगेरी ।
 वार्धिका- [स] वेत्ताफून ।
 वान- वान्ता- [स] सुगंधवाद्या ।
 वासजीवन- [स] दूध ।
 वानपथ- [स] खयर ।
 वान्तनूनिष्ठा- [स] नाविष्ठा ।
 वान्तवत्ता [स] धेनु ।
 वासविन्द- 'स' वेत्तमुंड ।
 यानिका-वाली- (म) नाविष्ठा ।
 वालुषा- (स) बालू ।
 वात्तेपत्- (स) केवटोमोवा ।
 वालेज- (स) भद्रेक्षीकतारी ।
 वाल्डीक- (स) हॉग, केसर ।
 वाल्डीका (न) मोलवानान ।
 वाजक- (म) दानोमोवा ।
 वास- (स) बरगद ।
 वासर- [स] दिवस, दिन, रोज ।
 वासक- (स) वाकस ।
 वासन्ती- (स) वसन्त को नेवार
 नाथजी फूस ।
 वासपुष्प (स) वनसुर ।
 वासा- (स) वाकस ।
 वास्तव- (म) यथार्थ, सत्य, ठीक ।
 वानुष- (स) वयुषा ।

वास्तुकाकार- (स) पत्तांची ।
 वाहनी- [स] रघादियान, सवारी ।
 वाहिनी- [स] घेना, नदी ।
 वाद्य- [स] भिन्न, पुयक, वहिर्भव ।
 विपा- (स) होइवेर ।
 विकटत- (स) कटाई ।
 विक्रमा- (स) मज्जीठ, रोहणी ।
 विकिर- (स) पत्ती, चुपाड़ी ।
 विकीर्य- (स) सालपकवग ।
 विज्ञेय- [स] विक्रिययोग्य पदार्थ,
 वेषने के लायक चीज ।
 विख्यात- [स] प्रसिद्ध, नमझूर ।
 विघ्न- [स] उपद्रव, विघात ।
 विघ्नज- [स] पण्डित, विद्वान,
 चतुर । [सपूर्व ।
 विविच- [स] पङ्कत, पाथर्य,
 विजय- [स] जय, जीत, फतह ।
 विजया- [स] हरे, भांग ।
 विदाल- [स] मार्जारि, बिन्ताव ।
 विड- (स) कान्ता गीत ।
 विडङ्ग- (स) बागिरंग ।
 विता- [स] धन, द्रव्य, ख्यात,
 विचारित, ज्ञात, सत्य ।
 वित्ति- (स) धोड़ा ।
 वितुङ्- (स) तूतिषा ।

वानता (व) स्त्री चमत्त्वादि
सुख मात्र ।

वाक्त् (स) श्रुत ।

वावि-वापी- [स] जलामय,
वावही ।

वाप्य (स) वानजी ।

वागीमत्स्य- (स) वामीमत्स्यी ।

वायस- [स] काचपत्नी, कौवा ।

वायसी- (स) कपेया, वारार ।

वायसीनी (स) काकोली तद-
भाव में चमत्त ।

वायु- [स] पवन, हवा ।

वार- [स] वारि, जल, पानी,
ठोकर, घाव, वापी ।

वारश्च [स] निवारक, रोकेया,
बाधक । [बाधा, बाधो ।

वारथ- [स] च-आथ, रोक,

वारंथ [स] प्रवृत्ति, प्रवृत्ति ध-
निधिय, सञ्चय, गत ।

वारवञ्जभा }
वारवदुपा- } (स) वृक्षा ।
वारवदुमा- }

वारन [स] चपल, भेट, बलि ।

वारता [स] चेरता, भेट वदना ।

वारवधू- स वारवमता, निम्न,
कुचटा, ' गत' ।

वार- [स] चर्या, ववावा,
निष्ठावर ।

वारपसो [स] कामी, वनारवा ।

वारपार- [स] वर्यपक्षिपार ।

वारव- [स] गूकर, मुपर,
वनेखा मुपर ।

वारवकर्षी- [स] चमत्त ।

वारवङ्गी- [स] ताम्रङ्गी ।

वारही, } [स] वाराही-
वारहीकन्दू } कन्द ।

वारि- [स] जल, पानी ।

वारिद्- [स] मीन, यादव ।

वारिदनामक [स] मीन ।

वारिधि- [स] समुद्र ।

वारिपणी- [स] कुम्भी ।

वारिनामो- [स] वरदुपा ।

वारिजिरीपिचा [स] वलका-
देवर ।

वारी [स] पानी ।

वारुषी- [स] गराव ।

वारुषी- [स] इनादत ।

वार्तक [स] वनमार्ता ।

वार्तक- [स] वैगन ।

वार्ताकु [स] वटव वैगन ।

वार्तिक [स] बगेरी ।
 वायिका [स] वेसाफ्त ।
 वान-वाना [न] सुगंधवाचा ।
 वास्तजीवन [स] दूध ।
 वालपद [स] खयर ।
 वाननूनिवा [स] नाविका ।
 वानवत्ता [न] वेनु ।
 वासविन्दु 'स' वेनमुठ ।
 वानिका, दाली (स) नाविका ।
 वालुषा (स) बालू ।
 वानेपत् (स) केवटीभोवा ।
 वानेज् (स) भदेसीकेतारी ।
 बाल्हीन (स) हीन, केतर ।
 वान्नीषा (न) गोलदामान ।
 वानज (स) दोनोंजर्मी ।
 वास (स) वासद ।
 वासर [स] दिवस, दिन, रोज ।
 वासक (स) वाक्य ।
 वासली (स) वेसला को नेवार
 नावरी फ्त ।
 वासुष्प (न) वनचुर ।
 वासा (न) वाक्य ।
 वास्तव [स] यथावत्, तत्त्व, ठीक ।
 वानुष (स) वदुषा ।

वास्तुकाकार (स) पत्ताची ।
 वाहनी [स] रवाहियान, सवारी ।
 वाहिनी [स] वेना, नदी ।
 वाद्य [स] भिन्न, प्रयत्न, वहिर्भव ।
 दिपा (स) हीहवेर ।
 विक्रान्त (स) कटाई ।
 विक्रमा (स) गजोठ, रोहणी ।
 विकिर (स) पत्ती, चुपाड़ी ।
 विकीर्ण (स) साक्षपकवग ।
 विक्रेय [स] विक्रेययोग्य पदार्थ,
 वेचने के लायक चीज ।
 विख्यात [स] प्रसिद्ध, मशहूर ।
 विज्ञ [स] उपद्रव, विघात ।
 दिवज्जद [स] पण्डित, विद्वान,
 चतुर । [उपपूर्व ।
 विविच [स] चिन्तित, पाचय्य,
 विजय [स] जय, जीत, फ़तह ।
 विजया [स] हरे, भांग ।
 विदाल [स] मार्जारि, बिल्लाव,
 विडु (स) खासा भोज ।
 विडङ्ग (स) बागिरंग ।
 वित्त [स] धन, द्रव्य, ख्यात,
 विचारित, ज्ञात, मय ।
 विति (स) घोड़ा ।
 वितुङ् (स) तूतिषा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा,

विभु [म] चन्द्रमा, कर्पूर ।

५३३

विध्य स [म] नाग, विद्यार्थ,

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश । [अनुवय ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश [म] मित्र, मित्रान,

विश्वकोश [म] मृत्यु, पदमंथ,

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

धाम ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश मित्रविश्वकोश द्वयम् ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश [म] हृष्य, धानद,

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश, हृष्य ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा, नाग,

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा, मुनी-

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा, मुनी-

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा । [भाषा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा, मुनी-

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा, मुनी-

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा, मुनी-

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

विश्वकोश म कवटी लोवा ।

(म) भोवभाफल ।

(म) दुग्दह ।

(घ) विच्छेद, सुदाह ।

(घ) विच्छिन्न, विरत, गगरहित ।

[घ] विधोग, सुदाह ।

म. [छ] रागगुण्य ।

म. [छ] स्थिति, व्यास, अंत, चयदान, निष्ठति, चनाति । [छछटा ।

वृह. [म] विरोधदुल्ल, विरोधी, विरूप. (म) कुरूप, भयानक ।

विरोध. (म) वैर, विरुद्धता, ग्र-
दुगा, लहाह । [दिर ।

विलम्ब. (म) बद्धाक्ष, चमोघ, विलक्षण. (स) विप्रयान्वित,

चर्पक, विविध । [जन्तु ।

विचक्षा. (म) विन के रहनेवाले
विक्षाप. (स) रोदन, परिदेव-
नोक्ति ।

विक्षास. (म) शयनेद. क्रीडा,
विहार, आनन्द, हर्ष ।

विलेगय. (स) सरसा ।

विलेगया. (स) गोष्ठ, चरसा,
विहीतो, सांप, मूस आदि ।

विधोग (स) विपरीत, उल्टा ।

विलय. (म) वेश ।

विभक्तकर्मटो. } (म) विलभंत ।
विभक्तैगिक. }

विलयफल. (म) विल का फल ।

विचर. (म) छिद्र, दोष, मू-
राष्ट्र, पैर ।

विषया. (स) यल्लुमिच्छा, कइने
की इच्छा । [विरुद्धवाद ।

विवाद. (स) व्यवहार, कलह,

विवाद. (स) टारपरिहार,
पाणिप्रहण, व्याह ।

विविध. (स) चनेक प्रकार,
नागाप्रकार, बहुतरंग ।

विवेक. (स) सत्यज्ञान, विवेचन ।

विशल्या. (स) तामाशड़ी,
गुरिष, करिहारो ।

विग्रपुष्पी. (म) मयनफल ।

विगारद. (स) पंडित, चण्डर.
मगल्लभ, येठ ।

विगास. (स) विस्तारी, वृद्धता,
सुन्दर, बड़ी इगाहन ।

विगासात्वक्. (स) कृतिवन ।

विमेष. (स) अधिक । [फल ।

विमेषय. (स) मेदक धर्म, सि-

विशेष. (स) गुणादिभिर्भेद,
विशेषण. ई, मोक्ष. ।

विश्राम. (स) निवास, स्थान,
स्थिति. । [मगधूर.]

विश्रुत. (स) विख्यात, प्रसिद्ध.

विश्व. (स) जगत्, संसार,
वदभिमानो, जीवसमस्त,
मक्षल, शीठ. ।

विश्वभेषज. (स) शीठ. ।

विश्व. (स) पतिस, शीठ. ।

विश्वामित्र. (स) गाधिमित्र, मुनि
विशेष. ।

विश्वाम. (स) पतीति. अडा,
पूर्ण, नियय, यकोन. ।

विश्वम्भर. (स) परमात्मा. ।

विष. (स) गरल, जहर,
नेवारसुरर. । [खेचसा.]

विषकंठिकिनी. (स) फूल

विषकर. विष्कर } (स) पत्नी. ।
विषपत्नी.

विषकारा (स) कीटकर पत्नी
वासे पत्नी बटेर पाद्वि. ।

विषय. (स) चौराह साग. ।

प्री (स) बहुवेर, पीला फूल
या वंदास, वरंज. ।

विषतिन्दु. (स) मंकरतेद. ।

विषनागिनी. (स) दोनी राखा. ।

विषमस्तन. (स) कमल. ।

विषम. (स) पमम, दाहण,
संकट, प्रयुग्म. ।

विषमच्छन्द. (स) कतिवन. ।

विषगुटीक. (स) बखारन. ।

विषय. (स) इन्द्रिय गोचर,
शब्दादि, देश, स्थान. ।

विषा. (स) पतिस. ।

विषाण. (स) पशुग्रह, इक्षी-
दत, वराहदन्त. ।

विषाणिक. स. ककराभिन्नी. ।

विषापी (स) विषज तद भाषे
विनाहकन्द, मेढ्राभिन्नी. ।

विषाद (स) शोक, क्रोध. ।

विषापट्ट. स. सुफेद मदहप-
हस, नागदमनी. ।

विष. (स) विष्टा. ।

विष्टी. (स) पानी खा वपी. ।

विष्टा. (स) मल, पृथिवी. ।

विष्णु (स) व्यापक, परमेश्वर,
अमृत, गुरु. । [विष्णु.]

विष्णुकाव्या. स. सुन्दर चरित. ।

[कसेन]

[५५३]

[वृत्तफल]

वक्ष्येन (स) प्रियंगु ।
 वारि (स) नखनी [वांग]
 विनो (स) कनक का पं-
 सुविका (स) रोग विमेष,
 देहा ।

विद्यत (स) विन्तीर्ज, कैला
 दुग्धा । [कैला दुग्धा ।
 विस्तार (स) विन्तीर्जता,
 विस्तार (स) इडुवेर ।
 विस्तृत (स) विन्तीर्ज, विस्तार-
 युक्त, कैला दुग्धा ।
 विस्तृत (स) पापर्व, पद्म, त,
 संमद । [इरान ।

विस्मित (स) विस्मितयुक्त,
 विस्मृत (स) नरपरहित, भूल ।
 विहग (स) पक्षी, नेत्र, गत,
 नूतं, चन्द्र । [पक्षी ।
 विहङ्गन विहङ्ग विहङ्गन (स)
 विहित (स) जिस कर्म की
 मात्रा में विधि हो ।

विहृत (स) भयादि कर के
 व्याकुल । [करप ।

विधिप [स] त्याग, प्रेरण, दूरी
 वीज (स) दीपा ।

वीजकर्पास (स) घासन ।
 वीजखोम (स) कनक का पता ।
 वीजपूर (स) विजौरा लेनू ।
 वीजपूरीपर (स) गङ्गुषांठरी ।
 वीर (स) शौर्ययुक्त, बहादुर,
 एडनेवाला, भार, कङ्कपा ।

वीरप (स) भार ।
 वीरपन्थ (स) खसखस ।
 वीरतब (स) भार ।
 वीरपती (स) रोहिता ।
 वीरवृक्ष (स) नेलावा, कङ्कपा ।
 वीरसेन (स) सुधानी ।
 वीरा (स) कैला, काकोली तट
 भावे समगन्ध ।

वीर्य [स] शुक्र, पराक्रम, बल,
 प्रभाव, तेज ।
 वृद्धा (स) बड़ी गौतसरी ।
 वृद्धोवदु (स) बड़ी गौतसरी ।
 वृद्ध [स] मिडिया ।
 वृद्धा (स) दाघ ।
 वृद्धी (स) पठ ।
 वृत्तकोपा [स] बन्दाच ।
 वृत्तपुष्प [स] युक्त ।
 वृत्तकट [स] साहचिरविरी

व्यक्त (म) म्यष्ट, गक, गित, बुद्धि
मान, म्यून । [जन ।

व्यक्ति (म) पयगासक, प्रकास,
म्यङ्गदुष्यर्ग । [म] केम न ।

व्यस्य स व्याकुल, व्यासक ।

व्यजन (म) पम्हा ।

व्यतिक्तम स विषये, चन्द्रा

व्यथित, म' ताल, गुजराट, पा

व्यथा मोचन पोट, तलनीक

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्यवहार म नि डन आवार

व्याकरण [म] म्यष्ट, धातु, प्रत्या
टि, बोधक ग्रास, इफ, तडा ।

व्याकुल (म) उदिम, गोष
म्य, व्यपचित, उदास ।

व्याम्य स विषये, जीवा, कवन ।

व्याम्याग म' व्य, व्या, वरुण ।

व्याघ्र [म] सिद्ध, बाघ, गेर ।

व्याघ्रतण्ड [म] बडो गणो ।

व्याघ्रपाखी [म] कटार ।

व्याघ्रपुच्छ [म] सातरेण्ड ।

व्याघ्रपुच्छः स बडो गणो ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

व्याघ्र [म] रगती ।

प्यासः (स) सप, साप, हिंसक,

पशु, चीता, बाघ, सिंहादि ।

प्यासः (स) मुनिविशेष, वि-

स्तार, कुतर ।

प्युत्पन्नः [स] पंडित, विद्वान् ।

प्योगः [स] ग्रीष्म, पीपर, मिर्च ।

प्यपः (स) घाव, छिद्र, फोड़ा ।

प्यात्यः (स) यज्ञीपवीत, संस्तार

र रहित, सावित्रीपतित ।

श

शं (स) कल्याण, येय, शुभ ।

शयः (स) मकार, भांति, वार ।

शकः [स. फ] सम्पत्, मकारा, समर्थ,

धोखा, शुक्ल, संशय ।

शकटः (स) गाड़ी, छहड़ा,

रथ, यान विशेष ।

शकधी (स) नक्षत्री ।

शकाना (स) भयमाना, डरा ।

शकानी (स) शकुनांगी, स-

जिता, लज्जुष ।

शकाया (स) समन्तर, यथ ।

शकुनः शकुनः (स) पक्षी,

शुभ, शुभ का चिन्ह ।

शकुनाधमः (स) काग, वायस,

अधम पक्षी ।

शकुनाहतः [स] शासधान ।

शकुनी (स) शोध, गृध्र, पक्षी ।

शकुन्ति [स] खण, पक्षी,

विड़िया ।

शकुचाङ्गी [स] अक्षपीपर ।

शकुलादनी (स) कुटभी ।

शकुलाची (स) गाँहरदूब ।

शक्तः [स] सामर्थ्य, वस्तुवान्,

कठोर ।

शक्तिः [स] भावा, सत्ता,

वक्त, बर्ही जियार, स्त्री,

तारी, जोरी, पक्ष विशेष

सांग, सामर्थ्य ।

शक्यः [स] होने के योग्य,

साध्य, शक्यतर ।

शकुः [स] नक्षत्रा, इन्द्र ।

शकुमाषी [स] कोरेपा ।

शकुमुनः (स) अयन्त ।

शकुमारी (स) नीचगाद ।

शकुप्रा [स] इनरजव ।

शकामृगः [स] वानर, बन्दर ।

शब्द (म) कुलिय, वच ।

विमिष मिला मुख बात ।

शब्द सः शब्द जाति ह
रित वा ।

कल मागेन ताराच हृद,

धात्री तोपन पान ॥ १३

शब्दोऽस तासाकडी ।

स, वृक्षवाय 'पराय पुनि,

शब्द (म) श्रेष्ठ, कल्याण कल

बहुते सिमिट मिश्रित ।

बटवर्ची समुर, मृगधनुष

वचनतीर को पीर वलि,

शब्दरारि (म) कामदेव, अनङ्ग ।

मिटै न ह्यो नृगजान ॥ १४

शब्द [म] विकार, मल बट

शरदमवेर स ज्ञर, कानिष

स्वरधी ।

की बात ।

शब्द स सोर शब्द उर

शरदंजल स वनेका विग्रह

शब्दमत (म) शब्द, धामित ।

धानीका नृग वल विद्या ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द स निद्रा, निद्रा शब्द

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द स शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द स शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

शब्द सो शिव, शब्दर ।

शरद्वि स नृग मर के ।

विज्ञास गरायागतः ।
 रस्व. (म) गराप, गरापयोग्य,
 रचणीय ।
 गरात्. गराद्. (न) कृतुविशेष,
 आग्निन. क्रांतिश्च, आग्निग
 क्रांतिक्र नाम, बल्लर ।
 गराभङ्ग. (स) मुनि विशेष ।
 गरानित. (स) क्षजित ।
 गरादिष्ठा. (स) भिक्षुया पक्षी
 पानी पर हरनेवात्ता ।
 गरासन. (स) धनुष. धनुवा,
 बाप, बाप, कमान ।
 गरासुर. (म) बापासुर ।
 गरीर. (स. फ.) काया, देह.
 पांग, दुष्ट, गात्र, निम्न ।
 गरीरनाम—दी. । काय
 कनेवर कुनप वपु, देह
 प्रातमा श्रंग । विप्रश्च सप.
 धन चंमदन, धान सरीर
 पतंग ॥ १ ॥ तुप तन सम
 सरिकरन लुगि, सने पगिन
 रूप लेत । कीनज्ञ सरग
 सुगंध मदिं. को कवि सप
 ना देत ॥ २ ॥ गरीर ने
 एष भाग का नान जेव :

३ । कंध नाम—दीहा ।
 उन्नत हरि सम सुगन
 हरि, कंध कंधरं शंस ॥
 कर धर दीर्घतिज्ञा सुदित.
 जिम चरुं नज्जि शंस ॥ २ ॥
 गरी. नाम—छंदसं सपत्र ।
 गात्रधाम संपदन खंसेवर
 सपवन है । कुनप देह संह-
 नन गरीरदु वपु तनु है ॥
 काय नृति विप्रश्च पतंग
 युग पंषदग है । वंमपवयश्च
 छंदश्चा पट पंडग है ॥ ४ ॥
 गरीरी (म) देही, कीयात्ता, प्राणी ।
 गरीप (स) बाप ने, बापहरिश्चै ।
 गरीरा. गरीरा. गरीर. (स) रस,
 पांङ्ग, गरीर, नीनो, बालू ।
 गरी. (स) कल्याण दायक,
 सामी, मित्र ।
 गरीरी. (न) निगा. रजनी ।
 गरीरीनाय. (स) चंद्रना गमि. सं
 गरीरी. (न) कल्याणदायक
 सामी, मित्र, पार्येत
 गरी. (न) सुप, धर्म ।
 गरीप. गरीना (स) विप्र सं
 गरीप नाम ज्ञाति का स
 ७१

मल्लतः [स] निरंतर ।
 मल्लम् [स] घरा दूध ।
 मल्लगा [स] घोषोदार, पद्म,
 गोहायत ।
 मल्लमुरीजः [स] दासा कनक ।
 माश [स] भाजी, तरकारी,
 हरत, पीत, बज, लोह,
 होपविम्व, तरकारी ।
 दिवा लो, लज, लूछ, पत्ता,
 हंटी, जड़, गोहरकाता ।
 माचपाच [स] पचाया तर-
 कारी ।
 माचभरीदः [स] सांभरनीना
 माचराट [स] बघुपा ।
 माचघोट [स] लीवन्ती ।
 माचयदिय-माचयनिय [स]
 कुंजरा, विवाती ।
 माचक [स] होम लो वन ।
 माचका [स.द] बज, लाल,
 दई, मनुगा ।
 माच [स] मति के सभासक,
 पदिय दिम्व ।
 माच [स] कुंजरा विम्व,
 माचका, लाली ।

माषा [स] डासी वृक्ष, बहु-
 विध विचार ।
 माषासम [स] वागर, बन्दर ।
 माषो [स] हज, पेड़ ।
 माषीट [स] सिहोरा । [हरा]
 माग [स] भाजी तरकारी,
 मान [स] पत्तरी चाकू पादि
 तेजकरल ली, लान, मिनी ।
 माण्डिल [स] (स) वेनवृक्ष,
 माण्डो [स] सुनिनाम ।
 मात [स] सुख, पानन्द, तोप ।
 मातन [स] लोम, कट ।
 मातपरि [स] विवाह, यज्ञ ।
 मात [स] मधुर, कटुवधन
 सजिता, लिर, ठाटा, लदु,
 कोनक, लोम, लोमो रजित ।
 मातकुमा [स] लोना ।
 मातका [स] लरही लोप ।
 माति [स] सिरता, चेन,
 ठाटा, रई, घना, निवारण,
 लाम लोवादि का लीतना,
 दिपरी के लन का लोठना ।
 माप [स] चाप, माप, पिछर,
 कोना, लालीम, बद्धुपा,
 लुगन ।

मायन (म) न. वदेत ।

मायानुषर (म) मायका नहार ।

मायुन (म) मोग, मय, य'वा ।

मायन (म) बाय, तीमर, माय ।

मायन दी बाय ।

मायन (म) यकीन, निपुण,

मेखये, भूयित, कृतवत ।

मायन (म) यकीन, निपुण

य'वा नो मायनमय ।

मायन (म) यकीन, निपुण

य'वा नो मायनमय ।

मायन (म) यकीन, निपुण

य'वा नो मायनमय ।

मायन (म) यकीन, निपुण

य'वा नो मायनमय ।

मायन (म) यकीन, निपुण

य'वा नो मायनमय ।

मायन (म) यकीन, निपुण

य'वा नो मायनमय ।

मायन (म) यकीन, निपुण

य'वा नो मायनमय ।

मायन (म) यकीन, निपुण

य'वा नो मायनमय ।

मायनपथिका (म) यकीनी ।

मायन (म) मायन, मायन, य'वा, मायन

मायनमजेय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

मायनमय (म) मायनमय ।

भारती ननु नराची ३१३
 गान्धर्व. (४) कनकचन्द ।
 गान्धर्व. (५) चौक, नैवारसुद्ध ।
 गान्धर्वी. (६) नेतर ।
 गान्धर्वीनिर्घ्यासः } (७) मोक्ष
 गान्धर्वीवेष्टनः } रस ।
 गान्धर्व. (८) वासपची, वचा
 चूनादि ।
 गान्धर्व. (९) मोक्ष ।
 गान्धर्व. (१०) नित्य, मनातन,
 निरन्तर । [निरन्तर ।
 गान्धर्व. (११) सतत, नित्य,
 गान्धर्व. (१२) पात्रा, दण्ड, ता-
 दृश, मित्रा । [दोष्य ।
 गान्धर्वीय. (१३) ताड़नीय, दण्ड-
 गान्धर्वी. (१४) पात्रा, राज्यदण्ड ।
 गान्धर्व. (१५) दंड, पुस्तक, पोथी,
 पात्र, शितानुमान चन्द,
 वेद, नभविषय, पूर्व नो-
 नांमादि पट गान्धर्व ।
 गान्धर्व. (१६) गान्धर्ववेता, पटित
 गान्धर्वी. (१७) कन्याद, यथा ।
 गान्धर्वी. (१८) गान्धर्व, विदुष, रिक्त
 मिषी. (१९) ननु ।

मिषी. (२०) (२१) सुग्री ।
 मिषी. (२२) [२३] वृषस्यति ।
 मिषी. (२४) [२५] मयूर, मोर ।
 मिषी. (२६) [२७] पर्वतटिभीर, नाद,
 धार, चोटो, पर्वताग्र,
 पर्वत की चोटो ।
 मिषी. (२८) [२९] पर्वत, पहाड़
 बिरबिरी ।
 मिषी. (३०) [३१] नक्तस का टोकी,
 दीपादि का टोम, फण,
 पणि, ज्वाला, दूडा,
 चोटो, देशविशेष ।
 मिषी. (३२) [३३] नृतिया ।
 मिषी. (३४) [३५] नदूरनव, मोर-
 कनूज ।
 मिषी. (३६) [३७] मयूर की मेढी ।
 मिषी. (३८) [३९] नदूर, पणि, पाग,
 पनेका, तिरिपारी । प-
 लिनान—टो. । पायथ
 दण्ड दण्डन क.च, सिंधी
 धनदौ जीय । दण्ड कप
 वृष वायु उष, मित जोष
 पुनि सोय ११२ गान्धर्व वेद
 ज्ञान धीति इति, विष-

समाप्तः, (म) नित्य चर्चादि,

सदा. वृत्तपक्षः प्रामाण्यतः ।

समाप्तः (म) स्वामीभूतित,

कृतार्थः ।

समाप्तः [म] वृत्ततर पक्षितः ।

समाप्तः [म] वृत्ततर, वृत्ततर,

पतिभूतितः ।

समीप [प] निवृत्त, नप, समीप

धनेष्ट [प] धेष्ट, धीति ।

प्रत्यक्षः दा. । दोष्ट

दाष्टि सनष्ट वित, प्रने

नाम चर्चरागः । कृतार्थः

ना. प्रत्यक्षः प्रामाण्यतः

वृत्तः ।

समाप्तः (म) समीप पक्षः

ज्ञातः । वृत्तपक्षः वृत्तपक्षः

वृत्तः । वृत्तपक्षः वृत्तपक्षः

वृत्तः । वृत्तपक्षः वृत्तपक्षः

वृत्तः । वृत्तपक्षः वृत्तपक्षः

वृत्तः । वृत्तपक्षः वृत्तपक्षः

समाप्तः (म) समीप पक्षः

ज्ञातः । वृत्तपक्षः वृत्तपक्षः

वृत्तः । वृत्तपक्षः वृत्तपक्षः

वृत्तः । वृत्तपक्षः वृत्तपक्षः

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

समाप्तः [प] समाप्तः ।

प्रनुविषय, खोज, भाव ।
 [म] निष्ठ, संयोग, दरार ।
 बोध, नेत्री, निहाय, ओढ़ा
 [म] संकल्प, धाड़, नेत्र,
 इच्छा ।

सन्ध्या, (म) सञ्ज्ञायां त, सांघं
 दान, भंध्या नाम—दो० ।
 निमिषुष भंध्या विद्या
 सब, भाविकाय प्रदीप ।
 नाक्त परी षतु एदई,
 छिन्ना करई तन्नि रोप ।
 सन्निधये, [म] सविधान, समी-
 पता । [समीपे ।

सविधि, [म] निष्ठ, पान,
 सन्निपात [म] विदीप कारण ।
 सन्निहित, [म] निष्ठ, समीप,
 पहीस । [नतवार ।

सन्मान, [द] पादर, सव्याद,
 सन्मुख, [द] सामने, पानी,
 पादर, साक्षात् ।

सपथ, [म] सपथ, सीमांद ।
 सपथ, [द] छकदी ।

[सपदि, [म] नीध, कटपट,
 तत्त्वाध, सन्दी, तुरंत ।

सपथ, [म] गांठी न'दत ।
 सपथ, [म] गिरद, गांठी,
 पोर, नाठ के भाव ।

सपथ, [म] महापके, संगी,
 पांय म'त [कती ।

सप द'तस्य [म] गोडुरान-

सपथ [म] पुत म'दत ।

सपथ [द] सांय या पोषा,
 शी० । श्रिनि कोउ करै

गवड़ सन खेला । उरपा-
 वदि गदि प्रलय सपथ ।

पदात् सन्ध्या सपथ छाटा
 साय या बधा ।

सपथ [म] सपथ, समीप ।

सपथ (म) भांय का बधा ।

सपथ [म] भात संख्यायाधका ।

सप्तच्छपि, सप्तपि, (प.न.)

सप्त, अंगिरा, मगिट,
 पथि, प'प, पु'तस्य,

नरीषी । सप्तच्छपि दो० ।

सप्तपथ सपथि मगिट शुभ,

विद्यानिष्ठ वपान । भर

दाज नीतन भवित, या

दन्नि उर पान । ११ पु

सावमान. (स) अनादर, अ-
भाव । [नीतिविशेष ।

साम. (स) तीसरा वेद, राज-
सामर्थ्य. (स) वस्तु. पदार्थ, अ-
टाका, कारण, समूह द्रव्य,
सामान ।

सामध. (स) समधीमिश्रण ।

सामर्थ्य. (स) बल, शक्ति,
योग्यता ।

सामप्रायक. (स) पिता का अ-
मपर्यंदोप, यादृक्क्रिया ।

सामय (स) समय, वेला, काल ।

सामान्य. (स) साधारण, असा-
नसार ।

सामीप्य सामुद्र. (स. य) नि-
जटता, समीपता, समुप ।

सामुद्र. (स) पांगानोत ।

सामुद्रजन. (स) घामिन के बर्षों
का पानी ।

सायं. (स) संभ्रांकाश ।

सायक. सायक (स) बाण, तीर,
खड्ग, तथवार । [नान्त ।

सायं. (स) सायंकाश. दि-
न ।

सायुष्य. (स) सुखिविशेष, वृद्ध-
कीन ।

सार. (स) वक्त्र, अङ्ग, धर्म,
मन्त्र, इत्यादि शोभा, धृत,
धन, न्याय, नवनीत, शोभ,
शोभा, वन, वायु रोग,
येष्ठ नित्य, गुदा, शीर,
रक्षा, सार शब्द—शोभा ।
सार बीजं धीरल धरम,
सारवत् धृतसार । सारजु
सब को सांवरो, जिन
मोक्षो भंसार । १ ।

सारक. [स, फ] मेना पक्षी,
रक्षाकारक, जयपात्र, अ-
मातृगीटा ।

सारज. [स] गन्ध, मृग,
मौर, चातक, दीप, पात्र,
विष्णु धनु, धनुष, हरिष,
वाथी, कच, राजहंस, चित्र,
वस्त्र, मयूर । कामदेव,
वेश, आभरण, कर्पूर,
पुष्प, कोकिल, मेघ, सिद्ध,
राजि, भूमि, वायु, राग
विशेष । सारज शब्द—

दो० । विजि जानर कष
 संख जुष, कर बाइस यइ
 होय । पुंजग खंभनसुत-
 नद, खान बिछन हे सोय
 ॥ १ ॥ जित तफाव भुजंग
 पुनि, खो यइ नाग समान
 सारंग श्रीगगवान खी,
 भजिये पाठो जान ॥ २ ॥
 सारंग मुंदर कोष मत,
 रात दिवस बड भाग । खग
 जानो पद धन बहिय, घंअर
 पवित्रा राग ॥ ३ ॥ रवि
 सति दीपक नगन छवि,
 बेहरि कुंजर रंग । खलक
 दादुष दीवडस, ये खडिये
 सारंग ॥ ४ ॥ पपीहानान—
 दो० । खल नुकरु दान
 प डरी, खविष सारंग
 नाउं । खन खी हठे
 पविहारा, नहि न बने
 खवि जाउं ॥ १ ॥

सारंग [स] संदुत ।

सारंग [स] नड, यइद ।

सारंगी [स] नन्दनकारिणी ।

सारंगिक [स] व्याध, गिकारी ।
 सारज [स] नवनीत, नकुन ।
 सारतक [स] कदलीपूव, बने
 डा वृष ।

सारवी [स] रघवान्, रघ
 इक्ष्वा, रघादि बाइनों
 खी सांजनेवावा ।

सारद [स] नारदाता, नार
 देववाला, नारखती ।

सारदा [स] सरजती बाइ,
 सारदेनवाली, खी दाइनी
 खी हे बाइ । ख वि पप
 हे, परा छटय नानी बा
 यइय खान पद गुपतीन
 दूनरी पस्यंती ० ० नाक
 हृदय के मिरोभाग खान
 न. खिख गुणबुद्ध, १२। तो-
 खरी नखमा, नाके हल्ल
 खान नाकसुख बुद्ध, ३३
 खीवा बैयरी, नाके मुख
 खान तानन मुखपुत्र ॥ ४ ॥
 नारखती यइ बा खडिखि
 खिखित दंड के केखटे ।
 दण्डनाहिनी— ६२७ ६४

राजा । [इषा ।

चित्त, (म) केँडाइया, केँडाया

चित्त, (म) मोघ, चम, तुरत

चोच, [म] कृग, पतला, दुबला,
नाग, दुर्वल, निर्वल, चटा
हुषा ।

चीयत, [म] वितितदिन, जो
दिन चीय होय । [रस ।

चीर, [म] दुग्ध, दूध, चीर जल

चीरवाकोली [म] पानाम
ख्यात तद्भावे पसगन्ध ।

चीरपो [म] दुधिया, चीर का-
कोली तद्भावे पसगन्ध ।

चीरवत्ती [म] विचारकन्द ।

चीरमाक [म] फटा दूध ।

चीरशुच [म] चीर का कोली-
तद्भावे पसगन्ध ।

चीरशुक्ला [म] विचारकन्द ।

चीरी, [म] घन, मृग, चीरी,
वाँट, वरगद, वैचिषा
चोपर ।

चोपवा, [म] दुधिया । [रमी ।

चोरिका [म] दूध की चीर, चीर

चीराभितनया, (म) सप्ती,

कमला ।

चीरोदृष्ट [म] बर, गुजर, ची-

पर, पचाम पाकर, पर

पांच दृष्ट ।

चीरिवाधारा (म) चीरवाकोली

तद्भावे पसगन्ध । [मीका

चुद्र, [म] चल्प, चुका, चीटा,

चुद्रचन्दन [म] काचचन्दन ।

चुद्रगम्भू [म] चठकानून ।

चुद्रवटिका [म] विहिनी
कटिभूषण ।

चुद्रा, (म) दाच, कुशा, चुद्रा

मन्द—दीक्षा । चुद्राविका

कहि नटी, सङ्गमाची चो

चाच । इन सौ चुद्रा कहत

हे, मूरख नर चो राजा ।

चुद्रावली, [म] विहिनी, कटि

[भूषण ।

चुधा, (म) भूष, चाहरिखा ।

चुधा, (म) भूषा, चुभुचु, चुविता

चुधित, (म) भूषा चुधात ।

चुधित, (म) भवनाम्, कवक,

जस उद्धरत, जस उद्धरत ।

(च) गणार, देह स्थान, श्रीक.
 चेत, पुष्पभूमि, भूमि-
 खण्ड, भूमि, मरीर, गृह
 विह स्थान, सो ।
 अथ, (च) मरीरघाता, पाप्मा,
 ओष, बहुर, निपुष ।
 चैव, (च) केंवना, विताना, समय
 विताना, फूली का गुच्छा ।
 चैम, (च) कल्याण, युम, कुमच.
 चैरियत । [बार ।
 चैमखर (च) मुमकशी, मङ्गल
 चैमरी [च] चैमकरिणी, पचो
 विमेष, मुमकारिणी ।

चैमरा (च) बहुतपसव ।
 चैमा [२] कृपा, नाक ।
 चांम, [म] मन्देह, कोर, रीक,
 बन्द, मोर, केंद, रयं,
 उत्तम्व, उद्धरण, विरुना,
 चत्तायमानहोता, कोपवर,
 चत्तायमान । [ती, पृष्ठी ।
 चीनि-चीपी [द-स] चिति, पर
 चीपीप [६] नृप, राजा ।
 चीद्र [६] मधु, मदनाशी,
 मोध । [काम, वचामत ।
 चीर, [६] मुलन, नाहे का
 आ, [६] निदिनी, वरती ।

